मृगतृष्णा

पर्ल बक

लखनऊ
अशोक प्रकाशन
१९५६

प्रथम हिन्दी संस्करण १९५६

अनुवादक
गंगारत्न पाडेय

मुद्रक
स्टैंडर्ड प्रेस, प्रयाग

१

फुलवाडी शान्ति थी। उसकी चहार दीवारी के बाहर किसी के भी कदमों की प्रति ध्वनि नहीं सुनाई देती थी। हाँ झरने की धीमी आवाज लगातार एक मीठा सगीत-सा सुना रही थी। लगता था वाटिका की यह शान्ति भी एक योजना का अग थी—कुछ वैसी ही सजाई-सवाँरी जैसी और सब चीजें, लेकिन फिर भी सब कुछ एक दम प्राकृतिक मालूम होता था। योजना और प्रकृति दोनों का मेल सुन्दर था। सडक का और पानी नई से नई कलों द्वारा ऊपर उठाकर चट्टानों के पीछे से ऐसे उतारा गया था जैसे सचमुच वह एक पहाड़ी निर्झर हो। पत्थर की ऊँची दीवाल के सहारे बाँसों के झुरमुट मे आधा छुपा हुआ चट्टानों का एक टीला इस कला के साथ बनाया गया था कि वह नगर से दूर पहाड की चोटियों का सौंदर्य छीने लेता था। उस टीले की चट्टानों पर से जल की धारा गिरती थी और नीचे आकर एक स्वच्छ सरोवर बनाती थी। आम के तीन ऊचे-ऊँचे पेड़ इस सरोवर पर झुक कर अपने बुढापे का बिम्ब देख रहे थे और तीन होकर भी वह दूर के जगल का आभास देते थे।

फुलवाडी के उत्तर मकान था जो बिलकुल जापानी ढग का था। मकान बहुत बडा था पर उसकी छतें नीची थीं। मकान लकडी का बना हुआ सीधा सादा घर था और अब बुढापे की सफेदी उसपर आरही थी। बाँसों के झुरमुट उस मकान के बाहरी पर्दों का काम करते थे। बसत का मौसम था और जंगल की वनस्पति मे झुण्ड के झुण्ड फूल खिल रहे थे। सूरज की किरणें जब उन विविध रूप-रग वाले फूलों पर पड़ती थीं तब उनका सौंदर्य और भी निखर उठता था।

दोपहर का समय था। अपने पढने लिखने के कमरे में डा० सत्तन

सकाई एक पाण्डुलिपि तैयार करने में लगे थे। कुछ थककर उन्होंने अपनी निगाहें उठाईं और खुले हुए दरवाजा से बाहर फुलवाड़ी में नजर दौड़ाई। फुलवाड़ी का दृश्य लुभावना था। डा० सत्तन ने कलम रख दी और चटाई पर से उठ खड़े हुये। उन्हें अपने पैरों पर मन ही मन गर्व हुआ कि वह जकड़ नहीं गये। अपनी युवावस्था उन्होंने अमेरिका में बिताई थी और अब जीवन का जापानी ढंग अपनाने में उन्हें कई वर्ष लग गये थे। शुरू शुरू में तो उन्हें चटाई पर छोटी सी मेज के सामने पालथी मार कर घण्टों लिखते रहना असह्य-सा मालूम हुआ, लेकिन जैसे उन्होंने अमेरिका छोड़कर अपनी जन्म भूमि जापान लौटने का निश्चय किया था वैसे ही जीवन का जापानी ढंग भी अपनाने का संकल्प वह कर चुके थे। जापान लौटने का निश्चय उनके आत्मसम्मान ने—उनके जातीय गर्व ने किया था, एरीजोना के एक बन्दी गृह में जीवन बिताना उनके लिये असम्भव था। अमेरिका में उनके सामने दो ही रास्ते थे—या तो वह बन्दीगृह में बन्द हों और या जापान भेज दिये जायें। उन्होंने जापान आना ही पसन्द किया।

और जापान लौटकर वह जापान के ही बन गये। उनके गर्व—उनके आत्मसम्मान ने उन्हें अपने पूर्वजों की पद्धति पूरी तरह से अपना लेने की प्रेरणा दी। क्योटो नगर के बाहर उन्होंने कजूको खानदान की पुरानी खानदानी जागीर खरीद ली। युद्ध में कजूको परिवार के सब लड़के मारे जा चुके थे, परिवार तबाह हो गया था, और इसी लिये डा० सत्तन उसे खरीद सके। चोधरी कजूको स्वयं क्यूशो द्वीप के पहाड़ पर स्थित बौद्ध विहार में सम्मिलित हो गए थे और उनकी पत्नी अपने मायके चली गई थी। इस प्रकार कजूको परिवार समाप्त हो गया था। अब उनकी जगह डा० सत्तन सकाई, उनकी पत्नी और उनकी लड़की जोशुई ने ले ली थी। डा० सत्तन के एक लड़का भी था जिसका नाम केन्सन था और जो जोशुई से पाँच वर्ष बड़ा था। उसे अमेरिका छोड़ जापान आना पसन्द न हुआ। वह बन्दीगृह चला गया और वहाँ से अपने आप सैनिक सेवा के लिये तैयार हो गया। आखिरकार इटली में वह मारा गया।

कैन्सन की मृत्यु ने डा० सकाई के इस सकल्प को और दृढ कर दिया कि वह अमेरिका से ही दूर नही बल्कि अमरीकी ढंग से भी दूर हटकर पूरे जापानी बन जायें। क्याटो शहर युद्ध की बरबादी से बच गया था। यह पुरानी राजधानी आज भी वैसी ही थी जैसी एक हजार वर्ष पहले थी, हाँ इधर-उधर कुछ नये ढग की इमारत जरूर बन गई थी, लेकिन इन इमारतों की उन पुरानी इमारतों के सामने कोई महत्ता नही थी जो युगों से अपना सिर ऊँचा किये खड़ी थी, जैसे हिगाशी हांगन जी का मन्दिर। पुराने राजप्रासादों की फुलवाड़ियों को देखकर ही डा० सकाई ने अपने पूर्वजों के देश की आत्मा पहचानी थी और वहीं से उन्होंने चट्टानों, पहाडों, झरनों, छोटे छोटे पौधों आदि का सौन्दर्य ज्ञान पाया था। कत्सूरा राजप्रासाद का उद्यान उन्हें विशेष रूप से लुभावना लगा था—उसका शान्त जल प्रवाह, उसकी चट्टानें, पौधों और गुल्मों का सम्मिलन जो सामीप्य और दूरी का एक साथ बोध कराता था—यह सब उन्हें बहुत सुन्दर लगा।

जब युद्ध समाप्त हो गया और अमरीकी फौजों ने जापान पर अधिकार किया तो डा० सकाई इन फौजों और उनके सेनापतियों से बिलकुल दूर रहे। शहर मे पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली के वह एक प्रधान डाक्टर बन चुके थे और इसलिये उनकी अपनी स्थित भी सुरक्षित थी। उनके बिना लोगों का काम नहीं चल सकता था। अपने पास आने वाले मरीजों के साथ उनका व्योहार प्राय एक सा होता था। पर डा० सकाई व्यवहार कुशल भी थ और इसलिये उन्होंने श्रीमन्तों और अब बिगड़े हुये पुराने कुलीन परिवारों के प्रति अपना विनय व्यवहार भी विशिष्ट कोटि का रक्खा। इसमें उन्हें कोई अड़चन नही पड़ी।

एक बड़े आधुनिक अस्पताल म दिन भर काम करने के बाद डा० सकाई अपने घर जाते, कपड़े बदलते और अपनी पुस्तक—"दुर्बलता की बीमारियाँ"—पूरी करने में जुट जाते। पिछले वर्षों मे उन्होंने उस विषय पर बहुत अधिक अनुभव और ज्ञान प्राप्त किया था। अब फुलवाड़ी मे जाने के पहले उन्होंने अपनी फौनटेन पेन को

तरह से साफ किया। अपने घर में उन्होंने अमरीकी प्रभाव के नाम पर केवल फौनटेन पेन को ही स्वीकार किया था।

दरवाजे पर आकर उन्होंने अपनी फुलवाड़ी पर फिर एक गर्व और आनन्द भरी दृष्टि डाली। कहना चाहिये कि उन्होंने वाटिका से आनन्द प्राप्त किया। बात यह थी कि वाटिका का कोना-कोना और पत्ती-पत्ती उनकी जानी पहचानी थी और इसलिये उनकी दृष्टि केवल फूलों के सौन्दर्य पर ही नहीं टिकती थी, वह गिरे हुये पत्तों—रात में बनाई हुई दीमक की दीवालों आदि को भी तुरन्त खोज लेती थीं क्योंकि इनसे वाटिका का सौन्दर्य नष्ट होता था। इन सब का सुधार करने के लिये या इन्हें न सुधारने का जवाब तलब करने के लिये माली को खोजने की इच्छा उन्हें न हुई। उन्होने अपनी आँखे बन्द कर लीं और एक सूत्र का अस्फुट उच्चारण करते हुये कुछ सोचते रहे। जब उनकी आँखे खुली तो वाटिका उन्हे नई दृष्टि से नये रूप रंग मे सूर्य के प्रकाश में चमकती हुई ठीक वैसी ही सुन्दर नजर आई जैसी वह उसे देखना चाहते थे।

ध्यानस्थ होना डा० सकाई के लिये आसान न था। उनकी युवावस्था लास ऐनजिल्स की भीड़-भक्कड़ वाली गलियों में बीती थीं जहाँ वह घूमघूम कर तरकारियाँ और फूल बेचा करते थे। यह फूल और तरकारियाँ उनके माँ-बाप शहर से बाहर अपने एक पाँच एकड़ के फार्म मे पैदा करते थे बालक सकाई इस खेती बारी के काम मे भी उनकी मदद करता था। कालेज मे सकाई का अध्यवसाय उसे आगे बढ़ाता गया और मेडिकल कालेज मे उसे छात्रवृत्ति का पुरस्कार मिला। इस प्रकार अमेरिका में चिन्तन का अवसर ही नहीं मिला, चिन्तन की कला तो उन्होंने जापान आकर सीखी ठीक वैसे ही जैसे कोई वंशी बजाने की कला सीखता है। डाक्टर सकाई शाम को बंसी का आनन्द भी लेते थे।

युद्ध की विभीषिका समाप्त हो चुकी थी और अब डाक्टर सकाई को केवल एक चिन्ता शेष रह गई थी। यह चिन्ता थी अपनी पुत्री जोशुई की। जब उन्होंने जापान आने का निश्चय किया तो पन्द्रह बरस की बच्ची जोशुई ने भी उनका अनुगमन किया। ऐसा उसने किसी आशा-

पालन की दृष्टि से नहीं किया, आज्ञाकारिता उसमें इतनी अधिक और बातों में नहीं थी। अमेरिका उसने भय और आतंक के कारण छोड़ा था। अपने अमेरिकन सहपाठियों से वह भयभीत हो गई थी। वैसे तो वे सहपाठी सब के सब बड़े सहयोगी मित्र और मौजी जीव थे, पर एक दिन अचानक वे सब उसके शत्रु हो गए उनके सुन्दर चेहरे भयानक बन गए और हास्य की जगह उपहास ने, मुस्कान की जगह तिरछे तेवरों ने ले ली। यह परिवर्तन उसकी समझ में नहीं आया और उसने अपनी सबसे प्रिय सखी पॉली ऐण्ड्र्यूज से इसकी शिकायत भी की। उसने कहा, "लेकिन पॉली, मैं तो बदल नहीं गई, वही हूं जो पहले हमेशा थी।"

पॉली एक बनिये की लड़की थी। बोली, 'नहीं, तुम वही नहीं हो, तुम जापानी हो और मैं तुमसे घृणा करती हूँ।"

जोशुई ने फिर और कुछ नहीं कहा। वह फिर दुबारा स्कूल नहीं गई और कुछ दिन बाद उसके माँ बाप जहाज पर सवार होकर अमेरिका से रवाना हुए तब वह चुपचाप अपना गमगीन दिल लिए हुए उनके साथ चलदी। जिस देश को उसने अपना समझा था, जहाँ वह उत्पन्न हुई थी और जिसकी भाषा ही एक ऐसी भाषा थी जिसे वह बोलती थी उसी देश ने उसका तिरस्कार कर दिया—उसे बेगाना बना दिया। लेकिन फिर भी वह जापान को स्वीकार करने क लिए तैयार नहीं थी क्याकि उसकी दादी ने जापान में औरतों की दशा क सम्बन्ध में बहुत कुछ बता दिया था। उसका मन डामाडोल था, पर जब तक वह अपने पिता क घर म थी तब तक सुरक्षित थी। पर भविष्य अंधकारमय था।

डा० सकाई ने अपनी पुत्री की मनोदशा जानी पहचानी और उन्हे चिन्ता हो चली। जोशुई अब २० वर्ष की हो गई थी। आगे क्या हो? इतनी सुन्दर लड़की क लिए विवाह कभी भी समस्या नहीं हो सकता था पर प्रश्न यह था कि उसका विवाह होगा कैसे किसके साथ? उनके पास विवाह के अनेकों प्रस्ताव आ चुके थे पर वह इतने चतुर थे कि उन प्रस्तावों को उन्होंने जोशुई क सामने नहीं रक्खा क्योंकि वे जानते थे कि

वह तुरन्त ही उन्हें अस्वीकार कर देगी। उन्होंने कभी भी जोशुई से उसकी शादी की चर्चा तक नहीं की थी और अपनी पत्नी तरिद् को भी ऐसा करने से मना कर रक्खा था। मामला नाजुक था और वह उसे स्वयं ही सुलझाना चाहते थे। भय था कि यदि कहीं कोई गलत बात मुँह से निकल गई तो जोशुई शादी करने से ही इन्कार न कर दे।

डा० सत्तन सकाई इसी विचारधारा में कुछ देर तक दरवाजे पर खड़े रहे फिर अपने स्लीपरों को उतार कर काठ का खड़ाऊ पहन ली और वाटिका में सरोवर के समीप जाकर झरने का जलप्रवाह देखते खड़े रहे। बसन्त का समीर नई जिन्दगी लेकर बह रहा था। पर डा० सकाई अपनी कल्पना को नियन्त्रण में रखने वाले व्यक्ति थे और इसलिए मौसम का असर उन्होंने अपने आप पर न होने दिया। उल्टे जोशुई के सम्बन्ध में वह और भी अधिक चिन्तित हो उठे। इस वर्ष का बसन्त उनकी बेटी के लिये क्या लाया है? पिछले वर्ष जोशुई बहुत अधिक अस्थिर थी और उस अस्थिरता का कारण भी डा० सकाई ने भली भाँति समझ लिया था क्योंकि औषधि विज्ञान के साथ-साथ मनोविज्ञान का अध्ययन भी भली भाँति किया था। मनुष्य के मन और मस्तिष्क में या तो सुन्दर सामञ्जस्य होता है या फिर विषमता उत्पन्न होती है, इसे वह जानते थे। जोशुई को इसीलिए, उन्होंने अनहित कर कुछ औषधियाँ दीं और अपनी पाण्डुलिपि के १०० पृष्ठ टाइप करने में उसे प्रति दिन स्कूल लौटने के बाद व्यस्त कर दिया। फिर गर्मी जल्दी ही प्रारम्भ हो गई और जोशुई की चंचलता शांति में बदल गई। पर डा० सकाई को पूरा विश्वास हो गया कि जोशुई के सौम्य स्वभाव के पीछे एक प्रबल कामनाशील प्रवृत्ति छिपी हुई है। इसीलिए जोशुई का विवाह अब बहुत आवश्यक हो गया था।

बाँह के नीचे छिपी कलाई में बँधी घड़ी पर उन्होंने नजर डाली। अस्पताल में तो वह पश्चिमी पोशाक पहनते थे पर घर पर काले रेशम के जापानी वस्त्र पहनना उन्हें पसन्द था जिनमें कमर पर पेटी बाँधी जाती थी, पैरों में सपाट स्लीपर रहते थे या घर से बाहर निकलने पर काठ के

खड़ाउँ। इस पोशाक में इन्हें कुछ आजादी मालूम होती थी। लगभग एक बज रहा था; स्पष्ट था कि जोशुई को स्कूल से लौटने में देर हो गई थी। वह कहाँ घूम रही होगी? भोजन निःसन्देह तैय्यार होगा यद्यपि अपनी मालकिन के आदेश के अनुसार नोकरों ने अभी उन्हें खाने के लिए बुलाया नहीं था। वह लोग जोशुई का रास्ता देख रहे थे।

डा० सकाई फुलवाड़ी का सौंदर्य भूल गए। वह भल्ला उठे। यदि जोशुई १५ मिनट के अन्दर नहीं आती तो वह उसकी प्रतिक्षा नहीं करेंगे। वह अपनी सरल (शान्त) पत्नी को प्यार करते थे पर उन्हें अपने भोजन में तब अधिक आनंद आता था जब जोशुई भी उन दोनों के साथ हो। लेकिन फिरभी अब वह इस लड़की का अधिक दुलार नहीं करेंगे १५ मिनट बीतते ही वह बिना जोशुई के ही अपना भोजन कर लेंगे और यदि उनके खा चुकने पर भी जोशुई नहीं आती तो उसके लिए खाना भी नहीं रक्खा जायगा। वह अपने घर की व्यवस्था बिगड़ने नहीं देंगे। ठीक दो बजे वह अपने मरीजों को देखने के लिए अस्पताल चले जायगे।

अपने इस निश्चय को कार्य रूप देने की आवश्यकता डा० सकाई को नहीं पड़ी क्योंकि ठीक दस मिनट बाद जोशुई आ गई। दरवाजे पर की घंटी बजते हुये उन्होंने सुनी, दरवाजा खोला गया और बन्द किया गया। चट्टान पर जोशुई पश्चिमी जूतों की तेज आवाज सुनाई दी और नौकरानी ने उसका स्वागत किया।

पर डा० सकाई तालाब में अपनी दृष्टि डाले हुये घर की तरफ पीठ किये प्रतीक्षा में खड़े रहे। यह पुत्री का कर्त्तव्य था कि अपने पिता को खोजे। और क्षण भर बाद उन्हें उसकी मीठी आवाज सुनाई दी—"पिता जी मैं घर आ गई।" बिना मुस्कुराये हुए उन्होंने उसकी तरफ देखा—"तुम्हें बहुत देर हो गई।"

"पर पिता जी इसमें मेरा कोई दोष नहीं," उसने उत्तर दिया। खिली हुई वाटिका में सूर्य की प्रकाश धारा में देदीप्य उसके सौंदर्य को देखकर डा० सकाई कुछ सहम गए। कालेज से घर तक वह इसी सुन्दर छवि को लिए सड़क पर आई होगी? उसके बाल घने काले चमकीले थे, बड़ी-

बड़ी काली आँखें तीक्ष्ण चमकीली थी, सूर्य की गर्मी से उसके गाल गुलाबी हो गये थे और उसके ओंठ लाल थे। स्कूल से आकर चन्द मिनटों में ही उसने अपनी पोशाक बदल दी थी और अब एक मुलायम हरा जापानी घाँघरा पहने थी। सड़क पर कम से कम यह पोशाक पहन कर नहीं निकली यही सन्तोष था। उसकी कालेज की पोशाक भद्दी थी।

"तुम्हारा दोष कैसे नहा है?" —तीखे स्वर में उन्होंने पूछा।

"अमरीकी सिपाही सडक पर जा रहे थे," उसने कहा। "तमाम सिपाही थे। सभी को रुकना पडा।"

"तुम कहाँ रुकीं?" उन्होंने पूछा।

"मैं अस्पताल के फाटक के अन्दर चली गई थी जिससे कि मै उनके रास्ते में न पड़ जाऊँ।"

उन्होंने फिर और कुछ नहीं पूछा। "चलो घर चलें और भोजन करें। मेरे पास बहुत थडा अवकाश है। अस्पताल देर करके जाना मुझे पसन्द नहीं है। दूसरे छोटे डाक्टरों पर इसका बुरा असर पड़ता है।"

अपने पिता की दृढ कर्त्तव्य भावना से जोशुई परिचित थी और उसने तुरन्त विलम्ब के लिए क्षमा माँगी—"पिता जी मुझे बहुत खेद है।" वह जापानी भाषा में बोली क्योंकि जानती थी कि उसके पिता जी की यही इच्छा थी। पर जापानी बोलना उसे इतना अधिक पसन्द नहीं था जितना अंग्रेजी।

"तुमने बताया न कि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं।" डा० सकाई पीठ के पीछे हाथ डाले हुए उसके आगे-आगे चले। उनकी निगाह बराबर इधर-उधर घूम रही थी। "इस फूल को तो देखो," वह बोले, "यह इतना सुन्दर पहले कभी नहीं दिखाई दिया।"

"हाँ यह बहुत सुन्दर है;" जोशुई ने कहा।

उन्होंने जोशुई के स्वरों को तोला, फिर उसके चेहरे को पढ़ा, उसकी चाल भाँपी और इस प्रकार यह जानने का प्रयत्न किया कि उसके दिल व दिमाग मे कितनी गर्मी है। जब तक जोशुई की शादी न हो जाय तब तक उन्हें शाति नहीं मिल सकती। और इसी चिन्ता में वह एक ओर

चसन्त नहीं गवों सकने। पुत्री एक बोझ है, ऐसा बोझ जो सबसे अधिक मूल्यवान होता है और इसी लिए वह भारी भी होता है।

२

दोपहर में भोजन करते समय जोशुई ने अपने पिता की तीक्ष्ण पर छिपी हुई जिज्ञासु निगाहों को देखा समझा। अपने पिता का मान उसे हमेशा रहता था और उसके सम्बन्ध में उन्हें जा चिन्ता थी वह भी उसे मालूम थी। उस चिन्ता का कारण भी वह समझती थी। इसीलिए वह अपने आपको उनसे छिपाती रहती थी उसके पिता को यह नहा मालूम था कि वह क्या सोचती है या कि वास्तव में वह है क्या। अपने पिता की उपस्थिति में उसका व्यौहार नितात सुन्दर रहता था, पर डा० सकाई को इस बात का सन्देह था कि यह सुन्दर व्यौहार उसका वास्तविक रूप नहा था। पर वह इसके लिए उसे दोषी भी नहीं ठहराते थे और उनका यह विचार ठीक भी था। इस घर म जोशुई का जीवन एक दोहरा जीवन था। जीवन की यह द्विधा किसी असन्तोष से उत्पन्न नहीं थी, इसका कारण था उसमे क्रिया शक्ति का बाहुल्य। यह शक्ति, जोशुई के विचार से, उसमे इसलिए आई थी कि अपने जीवन के प्रथम १५ वर्ष उसने कैलीफोर्निया मे बिताए थे, उन गायों का दूध पिया था जो अन्न फल तरकारिया और मास खाती थीं। उसके शरीर म अनुभूति और शक्ति बाँध तोडकर बहना चाहती थी। उसका मस्तिष्क जिज्ञासु और शक्तिशाली मस्तिष्क था। और इस प्रकार वह शात और पीले चेहरांवाली जापानी लडकियों से बिल्कुल भिन्न लडकी थी। जापानी लडकिया उसे प्रशसा और घृणा भरी नजर से देखतीं। उसे वह अमेरिकन कहतीं और जोशुई अमेरिकन होने से इन्कार भी नहीं करती थी।

नी

"तुम बिल्कुल ठीक अमेरिकन लड़कियों की तरह चलती हो,' हारुमिशिया ने कहा था।

क्योटो शहर में कुछ अमरीकन औरतें दिखाई देती थीं यद्यपि यहाँ उनकी संख्या इतनी अधिक न थी जितनी टोकियो और ओसाका शहरों में थी। जोशुई ने उन्हें चलते फिरते गौर से देखा था और यह भी अनुभव किया कि वह सचमुच उन्हीं की तरह चलती थी। उसके पैर सीधे थे और चलते समय उँगलियों में कोई प्रभाव न आ पाता था। पर उसे जापानियों के छोटे छोटे पैरों से भी प्यार था यद्यपि वह इस प्यार का कारण नहीं जानती थी। हो सकता है कि अपने भीतर की उबलती हुई जिन्दगी के कारण ही वह लोगों को इतनी जल्दी प्यार करने लगी हो! अब अमेरिका की भाँति वह दूध, रोटी, मक्खन, अण्डे और मांस बेशक नहीं खाती थी पर चावल, मछली और तरकारियाँ तो वह जी भर खाती ही थी। और इसी पर आज उसकी माँ ने हँसी भी की।

"भला कौन सोच सकता है कि तुम एक पढ़े लिखे आदमी की लड़की हो,"—उसने कहा, "तुम तो एक किसान की लड़की की तरह खाना खाती हो।"

छोटी सी एक नीची मेज पर भोजन रक्खा था और उसके चारों तरफ सब लोग अपने पैरों का आसन लगाए बैठे थे। नौकरानी ने हरएक के सामने शोरबे से भरा हुआ सुनहली कलई का एक-एक कटोरा रखा जिसमें मूली और चुकन्दर के बढ़िया गोल टुकड़े तैर रहे थे। मेज के बीचोंबीच मछली और तरकारियों के तीन कटोरे रखे थे। नौकरानी यूमी ने लकड़ी की तश्तरियों में बढ़िया सफेद सूखा चावल परोसा। इन तश्तरियों पर काली और सुनहली नक्काशी बनी हुई थी। हरएक के सामने तश्तरी रखकर यूमी थोड़ा सा सर झुका देती। जब से अमरीकी फौजों ने जापान पर कब्जा किया और प्रजातन्त्र की हवा फैली तब से अब गम्भीर विनय की आवश्यकता नहीं रह गई थी। लेकिन डाक्टर सकाई इस अल्प विनय की आवश्यकता मानते थे। नौकरानी भी इससे प्रसन्न ही थी क्योंकि इससे इतना महसूस होता रहता था कि घर में कोई घर का स्वामी भी है। बेशक

घर के मालिक की यह आदत नहीं थी कि वह हमेशा घर की मालकिन और बेटी के साथ ही भोजन करे। लेकिन बाजार मे और परिवारों की नौकरानियो से उसने सुन रखा था कि लोग हमेशा ऐसा ही करते हैं। इस प्रकार उसने सोचा कि उसके मालिक डा० सकाई सचे जापानी से कुछ कम जापानी हैं और एक खरे अमेरिकन से कम और अधिक जापानी। और उसे अपने मालीक की इस विशेषता से सतोष था।

डा० सकाई ने अपनी पुत्री पर नीगाहे डालीं, चुपचाप उसका निरीक्षण किया और उन्हे लगा कि उसके चेहरे का रग अधिक गहरा है। उसके जो कपोल हमेशा पीले रहते थे वह आज लाल थ।"

"जब अमेरिकन सिपाही सडक से जा रहे थे तब क्या तुम धूप मे खडी रहीं ?" उन्होंने पूछा।

"हॉ में धूप मे ही खड़ी रही" उसने स्वीकार किया "मैं अपना छाता आज घर पर ही छोड गई थी। मैंने सोचा था कि आज धूप तेज नहीं होगी क्योंकि सुबह कलेउ करते समय पहाड की तरफ आकाश में बादल थे।"

"ऐसे बादल हमेशा दोपहरी तक साफ हो जाते हैं" डा० सकाई ने कहा। "वारिश की उम्मीद तो हम समुद्र की तरफ से आनेवाले बादलो से कर सकते हैं।"

मॉ ने भी जोशुई की ओर देखा। "सचमुच तुम्हारा चेहरा तो लाल है। भोजन के बाद तुम्हे अपने चेहरे पर कुछ सफेद पाऊडर लगा लेना चाहिए। लडकियों का इतना लाल चेहरा भद्दा मालूम होता है।"

"अच्छा होता में एकलौती सन्तान न होती" जोशुई ने मुस्कराते हुए कहा, "आप दोनों के पास मेरी जॉच पड़ताल करने के अलावा कोई काम ही नहीं रह गया।"

मॉ-बाप दूसरी ओर देखने लगे।

कमरे के सिरे पर से जहॉ वे लोग बैठ हुए थे फुलवाडी के खिले हुए फूल एक दूसरे से खेलते हुए दिखाई पड रहे थे कल जोशुई ने एक तॉबे का बना हुआ मेढक गुलदस्ते के नीचे रक्खा था उसके पिता ने शहर की सबसे कुशल अध्यापिका को उसे कला की शिक्षा देने के लिए

नियुक्त किया था वह एक विधवा स्त्री थी, छोटे कद और छरहरे बदन की जो अपने बेटे और उसके परिवार के साथ कत्सुरा नदी के किनारे रहती थी।

"कल मैं गुलाब के फूल तोड़ूगी" जोशुई ने कहा। गुलाब के फूलों के साथ मेहदी के फूलों का गुलदस्ता सुन्दर बनेगा" उसके पिता ने उत्तर दिया।

इस प्रकार जो वातावरण गम्भीर और असगत होता जा रहा था फिर से शात हो गया। जोशुई ने फिर कुछ नहीं कहा। वह अपने माता पिता के सामने तश्तरियाँ रखने मे व्यस्त रही और शात रहकर उसने उन्हें अप्रसन्न होने का अवसर न दिया। यदि उसका भाई जीवित होता तो उनके प्यार का भार वहन करने में उसकी मदद करता। उसके साथ वह अपनी अमेरिका की स्मृतियाँ भी सजो सकती थी। उसने अपनी बहन जोशुई को शायद अमेरिका आने का निमत्रण भी दिया होता, क्योंकि अब तक अपनी प्रेयसी के साथ उसकी शादी भी हो गई होती और उसके बच्चे भी होते। उसके भाई की प्रेयसी ने उसकी मौत का मातम मनाया। मातम मनाने के बाद उसने एक दूसरे व्यक्ति से शादी करली और तबसे उसका कोई समाचार न मिला। फिर भी जोशुई के दिमाग में उसकी याद ताजा थी वह एक छोटी-सी प्यारी प्यारी लडकी थी, उसके घने काले घुँघराले बाल उसकी सफेद गर्दन पर लहराते थे चमकीले अमेरिकन कपडे और ऊँची एडी के वह छोटे छोटे जूते पहनती थी और लास एंजिल्स के हाई स्कूल में एक बार उसे वसत की रानी भी चुना गया था। जोशुई के दिमाग में उसका यही वसत की रानी वाला चित्र बसा था, एक रुपहली सुन्दर पोशाक पहने हुए और घुँघराले बाल के ऊपर टिन बना चमकीला मुकुट धारण किए। उसका पिता गिरजाघर में काम करता था। सकाई परिवार हमेशा से बौद्ध रहा और इससे इसाई परिवारों को असुविधा भी होती थी। क्या बौद्ध धर्म अमरीकी दृष्टि से अनार्य धर्म नहीं? उसके भाई और माँ बाप के बीच इस प्रश्न को लेकर अक्सर विवाद हो जाया करता था डा० सकाई नहीं चाहते थे कि उनके बेटे का

विवाह एक गिरजा घर में हो। पर अब यह सब विवाद शांत हो गया था क्योंकि शादी होने का कभी अवसर ही नहीं आया, जब शादी का दिन आया तब उसका भाई मर चुका था, वह इसाइ परिवार एरीजोना के बन्दी गृह म बन्द था और सकाई परिवार यहाँ जापान क क्योटो शहर में आ बसा था। इस घर मे किसी ने शादी के दिन की चर्चा भी नहीं की लेकिन वह जानती थी कि उसके माँ बाप वह दिन भूल नही सके और वह खुद वाटिका मे चुपचाप एक पेड की आड़ में बैठकर अपने भाई के लिए जी भर कर रोई थी।

"तारक मत्सुई ने मुझे चाय का निमन्त्रण दिया है," उसके पिता ने कुछ देर बाद कहा, "निमन्त्रण पाँच दिन पहले आया था, चाय आज है।" वह भोजन समाप्त कर चुके थे और हरी ताजा चाय की चुसकियाँ ले रहे थे जो उन्हें बहुत पसन्द थी।

तारक मत्सुई डा० सकाई के सबसे धनी मरीज थे। उनका पित्ताशय बिगड़ा हुआ था और वह उसे निकलवाने के लिए तैयार नहीं थे श्री तारक अभी बुड्ढे नहीं हुए थे, उनके तीन लड़के थे, एक रूस मे बन्दी था, दूसरा नानकिंग पर हुए हमले पर मारा गया और तीसरा अब नौजवान था। अपने इस तीसरे लड़के को देखकर तारक मत्सुई बहुत प्रसन्न रहते थ क्योंकि उनका विश्वास था कि जापान अब कभी युद्ध में नहीं उतरेगा और इसलिए वह अपने इस बेटे को अपने पास रख सकेंगे। जापान के संविधान में भी तो यह स्वीकार कर लिया गया था कि जापान म अब कभी शस्त्री करण न होगा। अमेरिकन विजेताओं की यह माँग थी। इस प्रकार तारक मत्सुई अपने इस तीसरे बेटे पर स्नेह और सम्पत्ति की वर्षा कर रहे थ। अपने पहले दोनों लडकों को शिक्षा देने की आवश्यकता उन्हे नहीं महसूस हुई क्योंकि वह जानते थे कि उन्हें विवश होकर सैनिक बनना पड़ेगा और सत्ताधारी जिन भयावह युद्धो का जाल रच रह थे उनमे उन्हें अपनी बलि चढ़ानी पडेगी। पर उनका तीसरा बेटा कुनर अब टोकिओ के विश्वविद्यालय मे था।

मत्सुई खान्दान बहुत पुराना खान्दान था। क्योटो शहर मे रहने

उसकी शाखा को सबसे महत्वपूर्ण शाखा नहीं कहा जा सकता। हाँ वह सबसे अधिक रुढिवादी शाखा अवश्य थी और श्री तारक मत्सुई निस्सन्देह सर्व प्रथम और अकेले व्यक्ति थे, जिन्होंने युद्ध समाप्त होने के बाद चाय का त्यौहार फिर से शुरू किया था। उन्हीं के आदेश से डा० सकाई ने भी अमरीकी आधिपत्य समाप्त होने के बाद देश के फिर से स्वाधीन होने पर अपनी वाटिका के सबसे शांतभाग में एक चायशाला खोलने का निश्चय किया था। नए दृष्टिकोण के अनेक जापानी इस प्राचीन चाय त्योहार का मजाक उड़ाते थे, पर डा० सकाई को यह दृष्टिकोण असह्य था। उनका विश्वास था कि जापान की जातीय चेतना जाग्रत करने के लिए प्राचीन परम्पराओं, प्रथाओं और रीतियों को जल्दी से जल्दी फिर से प्रचलित करना बहुत आवश्यक था चाय त्योहार मे ललित कलाओं और प्रकृति के सम्बन्ध मे चिंतन मनन के साथ मधुर सामाजिक सम्भाषण, स्वादिष्ट भोजन और स्नेह सम्बन्धों का सुन्दर सयोग था इस समय वह अपना दोपहर का भोजन बहुत संक्षिप्त रूप मे कर रहे थे क्योंकि उन्हे मालूम था कि उनका शाम का भोजन चाय पार्टी मे बहुत सुन्दर होगा स्वादिष्ट शोरबे से शुरू होकर मछलियाँ, गोश्त, तरकारियाँ और अन्त में फिर हल्का शोरबा और मिठाइयाँ। और इन सबके साथ पुराने चाय के पेड़ों की भीनी-भीनी सुगन्ध वाली कोमल पत्तियों के चूर्ण से तैयार की गई गहरी ताजी चाय!

और चार घण्टों के इस उत्सव के बाद उन्हे अपने पुराने मित्र तारक मत्सुई से अलग बात करने का अवसर भी मिलेगा इसका कोई निश्चय न था। अगर मौका मिला तो वह उसका उपयोग करेंगे। तारक निश्चय ही अपने लड़कों की चर्चा करेंगे। और लड़कों की बात चलने पर यह असम्भव था कि अपने सर्व सुन्दर तीसरे बेटे कुबेर की चर्चा वह न करें। और कुबेर की चर्चा छिड़ने पर सर्व शोभन जोशुई की चर्चा अनिवार्य थी, ऐसा पिछले दो अवसरों पर हो चुका था।

इन्हीं विचारों में डाक्टर सकाई ने भोजन समाप्त किया। पिता और पुत्री में से किसी ने भी अपने मन की गाँठ नहीं खोली। सब चुप थे। श्री तारक मत्सुई का पुत्र कुबेर मत्सुई अब शादी के लायक हो गया था। वह

जोशुई से दो वर्ष बडा था। पुराना जमाना होता तो पिता पिता ने मिलकर शादी की बात पक्की कर ली होती। पर वह जानते थे कि अब इस नए जमाने म ऐसा नही कर सकते। हिरोशिमा और नागासाकी पर जो अणु बम गिरे थे उन्होने केवल इमारतों और इन्साना को ही नही बरबाद किया था। डाक्टर सकाई ने जोशुई से कुबेर क सम्बन्ध मे अभी तक कोई बात नहीं की थी पर उसकी माँ से जरूर यह स्पष्ट कर दिया था कि कुबेर इस शादी के लिए इच्छुक है और जोशुई का इस पर ध्यान देना चाहिए। माँ ने अपनी पुत्री को यह सब समझाया था, जोशुई ने भी इस पर विचार किया था पर वह कोई निश्चय न कर पाई थी। वह कुबेर की बात सोचने के लिए भी उत्सुक न थी। उसका मन अस्थिर था। निस्सन्देह उसे कुबेर से कोई घृणा न थी, उस जैसे सुन्दर, शिक्षित, सयत और आत्माभिमान पूर्ण युवक से कोई स्त्री घृणा कर ही नहा सकती। अक्सर जोशुई की उससे भेंट हो जाया करती थी, जानबूझकर नहा, अचानक। टोकियो के विश्व विद्यालय मे पढता था, पर छुट्टियां म घर चला आता था। अभी एकाध सप्ताह पहले वह मिला थी उससे वसन्तोत्सव के समारोह मे—सुन्दर गठित डील डौल वाला वह नोजवान, भूरी भूरी उसकी आँखें !! उसके साथ [illegible] पर जोशुई को किसी प्रकार का सकोच या असुविधा नहा अनुभव हुई, [illegible] देखकर वह स्वय कुछ शर्मा-सा गया था। उसका मस्तिष्क ऊँचा [illegible] असाधारण रूप से गारा था, अपनी हल्की-सी भी शर्म वह [illegible] सकता था। सफेद मुलायम चमडी से उसका स्वस्थ लाल [illegible] था और जोशुई की आँखें उसपर टिक गई थीं। [illegible] उसके अमेरिकन-सूट की प्रशसा भी कर दी थी। लेकिन [illegible] हुए भी जोशुई को कुबेर से प्रेम नहा हुआ और उसे [illegible] आश्चर्य हा रहा था, क्योंकि उसका मन प्रेम का भूखा [illegible] काँप रहा था और समर्पण के लिए तैयार था। वह [illegible] करना चाहती था, उसकी पत्नी बनना चाहती थी। [illegible] की भूख प्यार से ही मिटेगी। लेकिन फिर भी [illegible] उसका मन उससे हट जाता, उसकी भूख [illegible]

कुबेर धीमी आवाज में संयत-प्रश्न करता; जोशुई का मन होता उसे असंयत-कठोर उत्तर दे। पर वह इस असभ्य इच्छा को दबा देती। स्नेह-तरल बड़ी बड़ी आँखों से कुबेर उसकी ओर देखता तो वह दूसरी ओर देखने लगती। आखिर जब उसने अपनी ओर से किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं दिया तो कुबेर को क्या अधिकार था कि वह इस प्रकार इतने स्पष्ट और इतने गम्भीर-रूप में उसे प्यार करे!

यह मानसिक-संघर्ष चल रहा था जब उसने चुपचाप भोजन समाप्त किया और माँ-बाप को प्रणाम कर चल दी। कालेज जाने में उसे देर हो चुकी थी। जोशुई गई, डाक्टर सकाई और उनकी पत्नी बैठे चाय की चुसकियाँ लेते रहे। जोशुई ने अपने कमरे में जाकर अपनी कालेज की पोशाक पहनी अमेरिकन ढंग का ब्लाउज और घाँघरा जिनपर हरी और सफेद धारियाँ थीं। लम्बी बाँहों के बटनदार कफ थे, गला ऊँचा था। पर फाटक से बाहर आते ही उसने गले से बटन खोल दिए कि हवा गले में लग सके। छोटा सा रेशमी छाता खोल लिया—पिता की आलोचना याद थी।

३

सड़क पर शान्ति थी। उसने सोचा अमेरिकन सिपाही शहर में इधर-उधर बिखर गए होंगे—दर्शनीय वस्तुएँ, दृश्य देखने के लिए। टोकियो या ओसाका जैसे शहरों से यह लोग प्रायः क्योटो आ जाया करते थे। क्यों? शायद इनकी निर्देशिका पुस्तिकाओं में लिखा होगा कि क्योटो शहर में अब भी जापान की पुरानी संस्कृति बची हुई है। उसने सुन रक्खा था कि युद्ध के दौरान में अमरीकी बम-बाजों को यह आदेश दिया गया था कि क्योटो शहर को बरबाद न करें, जैसे जापानियों ने पेकिंग को बरबाद नहीं किया

था। उसके पिता को विश्वास नहीं था कि क्योतो शहर बच सकेगा क्योंकि उन्हें इस बात का विश्वास नहीं था कि अमरीकी लोग संस्कृति का मूल्य भी समझ सकते हैं। वह प्राय कहा करते थे, "हम मजबूर हैं, हमें साम्यवाद की बर्बरता या फिर अमेरिका की उद्दण्ड सभ्यता का शिकार होना ही पड़ेगा।"

जोशुई प्राय सोचती कि उसके पिता डाक्टर सकाई एक प्रतिवादी व्यक्ति हैं। वह यह भी जानती थी कि यदि कभी वह खुल कर यह बात कहने का साहस करे तो उसके पिता इस आरोप का सबसे अधिक विरोध करेंगे। वह शान्ति चाहते थे, शान्ति के लिए प्रयत्न करते थे। वह अमेरिका को सजा दे रहे थे, जोशुई के विचार से, इसलिए कि अमेरिका ने उन्हें बाहर निकाल दिया था और यह सजा थी केवल जापान को प्यार करना, जापान की प्राचीन परम्पराओं और उसके पुराने विश्वासों को प्यार करना। यह चाय का उत्सव ही लो। बड़े-बूढ़े लोग एक फुलवाड़ी में उस छोटे से मकान के भीतर बड़ी गम्भीरता के साथ शून्य में दृष्टि लगाए हरी चाय के चूरे का शोरबा पीने की प्रतीक्षा करें—कितनी हठीली बेवकूफी की बात है। पर उसके पिता जी का कहना था कि चाय पोषक-तत्त्वों से परिपूर्ण है, चाय उत्सव की सुन्दरता और उसके आध्यात्मिक पक्ष के अतिरिक्त चाय स्वयं ही हमारे शरीर को पुष्ट करने वाली है। जोशुई को यह सब पसन्द नहीं था। पिछले साल उसे अपने पिता के साथ मत्सुई परिवार के चाय-त्योहार में शामिल होना पड़ा था। उसके पिता इस त्योहार को चा-नो यू कहते थे क्योंकि यही उसका पुराना नाम था। उस त्योहार में सारी बातचीत बड़ी सतर्कता और सावधानी से गम्भीर बौद्धिक और आध्यात्मिक रखी गई, पर उससे जी ऊब गया। श्री मत्सुई ने चार चार पदों की छोटी छोटी कविताएँ इस ढंग से पढ़ी मानों वह उनकी रचना कर रहे हों, यद्यपि जोशुई जानती थी कि वह उन कविताओं पर घण्टों का समय बरबाद कर चुके थे। अगर कुबेर से कभी अधिक घनिष्ठ परिचय हुआ तो वह यह बात उससे जरूर कह देगी। लेकिन इस घनिष्ठता की प्रतीक्षा ही वह क्यों करे? अब जब कभी

उससे भेंट होगी तभी वह यह बात कह देगी।

इन्हीं विचारों में मग्न जोशुई सड़क पर चली जा रही थी। अपने विचारों का महत्व वह अपने आपको बार-बार जोर देकर मन ही मन समझाती जा रही थी क्योंकि यह उसे मालूम था कि यह विचार कभी उसके मुँह की भाषा न पा सकेंगे। उसकी माँ तक ऐसे विचारों को सुनने के लिए तैयार न होंगी और अगर उसने हठ करके सुनाना ही चाहा तो वह सर घुमा कर कानों को बन्द करके चुपचाप बैठ जाएंगी। कभी-कभी तो जोशुई का मन होता कि वह माँ के हाथ कानों पर से खींच ले और चिल्लाए; पर वह ऐसा कर न पाती थी। उसके भीतर अमरीकन जीवन की जो ऊष्ण और कोमलता थी उसपर जापान की कठोरता का परदा पड़ा हुआ था। वह एक ऐसे ज्वालामुखी की भाँति थी जिसका मुँह उसी की शान्त ठडी राख से ढक गया हो और जिसके भीतर उफान आ रहा हो।

धूप फैली हुई थी। जोशुई सड़क पर चली जा रही थी उसका छोटा सा छाता उसके साथ-साथ एक छाया वृत्त बनाता जा रहा था। उसकी निगाहें इधर-उधर थीं। कल पानी बरस गया था। आज, इसीलिये वाटिकाओं में पौधों, लताओं, और गुल्मों की हरीतिमा और फूलों का उल्लास और भी निखर आया था। मन्द बयार के भीने सौरभ में सास लेती हुई जोशुई चुपचाप सर उठाये चली जारही थी। उसके रक्त में शक्ति और आवेग लहरें ले रहा था और उसके कदम आगे बढ़ते जा रहे थे। उसका मन चाहता था की बाहें उन्मुक्त करके दौड़े जैसे अमेरिका में लड़कियों के झुंडो के साथ दौड़ा करती थी। वह लड़कियाँ पंखों की तरह अपनी बाहें पसारे हुये हँसी बिखेरती हुई स्वच्छंद पक्षियों की तरह पेड़ों की घनी छाया के नीचे दौड़ती थीं। जापान में वह इस तरह कभी नहीं दौड़ी और न कभी इस तरह लड़कियों को दौड़ते हुए देखा— छोटी छोटी लड़कियों को भी नहीं यहाँ वह भारी भरकम चमड़े के जूते पहनकर चलती थी या रबड़ के तलों वाले कपड़े के जूते पहन कर फिसलती हुई चलती थी।

वह अस्पताल के फाटक के पास पहुँच गई इसी के बाद उसका कालेज था। यहीं पर वह प्रातःकाल खड़ी रही थी जब अमेरिकन सिपाही सड़क से होकर जा रहे थे। जिज्ञासा भरी एक बिछलती चितवन के अलावा उसने उन सिपाहियों की ओर निगाह नहीं उठाई थी। वह सबके सब एक ही तरह के थे, हँसते बातें करते एक दूसरे को धक्का देते हुए। लोगों का कहना था कि यह अमरिकन सिपाही स्कूली लड़कों की तरह थे, सबके सब हमेशा धक्कम धक्का करते हँसते और हाथापाई में लड़ने का बहाना करते हुए। लोग एक दूसरे से पूँछते थे, "क्या अमेरिका में सबके सब छोकरे ही हैं?"

अस्पताल के फाटक पर लता के फूल खिले हुए थे। हरे और पीले पत्तों के बीच बैगनी फूलों के गुच्छे अगूरों के गुच्छों की तरह लटक रहे थे। यह इन्हीं फूलों का मौसम था और जोशुई को यह फूल पसद थे। उसके पिता को फूलों से विशेष प्रेम नहीं था। उनकी फुलवाड़ी मे सौंदर्य भी कठोर था, चट्टानें, चौड़ ताड़ के पेड़, जल प्रपात और बासों की कोठियाँ। फूलों की शोभा उसकी माँ की रसोई घर की फुलवाड़ी में दिखाई देती थी।

सदा की भाँति पिता का ध्यान आते ही जोशुई के हृदय में एक अद्भुत मिश्रित प्यार की भावना उत्पन्न हुई। प्रशसा और उदासीनता का समन्वितरूप उसके मन में हमेशा यह चाह बनी रही काश हम लोगों ने अमेरिका न छोड़ा होता। उसके पिता न यह समझते ही थे और न समझने की कोशिश ही करते थे कि अमेरिका की अपेक्षा जापान मे स्त्री का जीवन कितना कठिन है। जब कभी केलीफोर्निया की लड़कियों का ध्यान उसे आ जाता तो उसे लगता कि वह सब राजकुमारियाँ थीं। लेकिन यहाँ जापान में स्त्री कभी रानी बन ही नहीं सकती, यहाँ तो वह गुलाम हैं, दूसरे की सेवा अपना कर्तव्य करती हुई। और इसकी भी कोई आशा नहीं थी कि भविष्य मे उन्हें कभी रानी बनने का अवसर मिलेगा। उसके पिता प्रायः कहते थे, अमरीकियों के चले जाने के बाद जापान फिर वापस आ जायगा। वह कहते थे नवयुवक तब वैसा

न कर सकेंगे जैसा वह आजकल करते हैं। अमरीकी लोग तो मेहमानों की तरह थे और जब बाहरी मेहमान आते हैं तब उनके सामने घर के बच्चों को कुछ ऊपरी आजादी देना ही पड़ती है। पर मेहमानों के चले जाने के बाद कान भी गरम किये जाते हैं।

जोशुई ने एक ठंडी सांस ली और तब फूलों की मादक भीनी सुगंध उसके मस्तिष्क में समा गई। वह अस्पताल के फाटक पर पहुँच गई थी अपना छाता उसने बन्द कर लिया। फाटक के पीछे कोई खड़ा हुआ था एक लम्बा छरहरे बदन का नौजवान, एक अमरीकी। वह एक फौजी पोशाक पहने हुए था। हाथ जेबों में डाले हुए एक पैर दूसरे पैर पर चढ़ाये वह दीवाल के सहारे खड़ा था। उसने उसे देखा, चौंकी और वह उसकी ओर मुस्कराने लगा।

उसने कहा, "मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।"

आश्चर्य से वह बोल न सकी। वह उसकी ओर देखती रह गई, उसका मुंह खुला रह गया। वह श्वेतांग था नौजवान था और सचमुच सुन्दर था। हाँ और सचमुच वह सुन्दर था। उसकी आँखें नीली थीं जैसे विष्णुकांता के फूल। उसके बदन की खाल मुलायम और मनोहर थी उसके सफेद दाँत प्रसन्न मुख और भी सुन्दर बना रहे थे। वह स्वस्थ्य और सबल दिखाई देता था, उसके कंधे विशाल और कमर पतली थी जिसपर चमड़े की पेटी कमकर बँधी थी।

उसकी आँखों में मुस्कान छलक रही थी। उसने कहा, "मैं पसन्द हूँ?"

जोशुई का चेहरा लाल हो गया। वह उसकी ओर ऐसे देख रही थी जैसे मानो वह कोई अजनबी जीव था। पर वास्तव में वह इतनी देर इसी लिए देख सकी कि वह अजनबी नहीं था। उसे देखकर जोशुई को वह सब कुछ याद आ गया जो वह भूल चुकी थी, कैलीफोर्निया के स्कूल के लड़के, वह लड़के जिनपर उसकी निगाह पड़ने लगी थी जब उसके पिता ने अचानक हमेशा के लिये अमेरिका छोड़ देने का निश्चय कर लिया। इस नौजवान की आवाज भी उसके भाई की सी थी, जहाँ तक उसे याद था शब्दों का उच्चारण भी वैसा ही था।

"क्या तुम्हे अंग्रेजी नहीं आती ?" नौजवान ने पूँछा।

"अंग्रेजी तो मैं बोलती हूँ।" उसने सरलता से उत्तर दिया।

नौजवान ने आदर के साथ अपनी टोपी सर से उतार ली। "आज तक कभी भी मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई।" उसने कहा "मैं बहुत खुश हूँ।"

"क्यों बहुत खुश हो ?" उसने पूँछा।

"यह देखकर कि जापान मे जिस एक लडकी से मिलने की उत्कण्ठा मुझे हुई वह मेरी भाषा भी बोल सकती है।"

जोशुई मुस्कुराई। "मुझसे मिलने की उत्कण्ठा आपको कैसे हुई ? मैं ने तो आपको पहले कभी नहीं देखा।"

"आज सवेरे आपने मेरी ओर आँखे घुमाई थीं पर मुझे देखा नहीं" उसने कहा। लेकिन मैंने आपको इस लता कुंज के नीचे खड़े देखा था। इसे कुज ही कहती हैं न आप ऐसा ही कुज हमारे घर में है। इधर से जाते हुए प्रात मेरी दृष्टि इस पर पडी और मैं इसे देखने लगा क्योंकि इससे मुझे घर की याद आ गई, माँ की याद आ गई। और जब इधर देखा तो इसके नीचे आप खडी था—अपनी मनोहर छवि में।"

"मैं अमरीकियों के चले जाने की प्रतीक्षा कर रही थी।"

"हम लोग चले तो गए, पर मैं वापस लौट आया। वह लोग नारा* के दृश्य देखने गए हैं। तुम्हे मालूम है कि वह एक रमणीक स्थान है। हमें इस समय छुट्टी मिली हुई है। मैं नारा कभी भी जा सकता हूँ। पर मैंने सोचा कि यदि मैं यहाँ वापस आकर प्रतीक्षा करूँ तो शायद आपके दर्शन फिर हो सकें।"

"मैं अपने स्कूल जा रही हूँ।"

"तो अभी आप स्कूल म पढती हैं ?"

"कालेज में ! पर मुझे देर हो रही है, जाना चाहिए।"

अपनी टोपी हाथ म लिए हुए वह अब भी खडा था। उसके घुँघराले सुनहले बालों पर सूरज की रोशनी पड़ रही थी। उसका मुँह पतला-सा

*जापान का एक रमणीय स्थान

था, जबड़े वर्गाकार और गालों पर की हड्डियाँ कुछ उभरी हुई। वह बहुत स्वच्छ दिखाई दे रहा था।

"मैं आपसे परिचय करना चाहता हूँ," उसने कहा। उसकी आवाज गम्भीर और भारी थी, पर वह उसे नम्र और मधुर बनाए रहा।

"पर मैं ऐसा नहीं कर सकती," उसने सरलता से कहा, "मुझे जाना चाहिए, कृपया जाने दीजिए।"

"क्यों नहीं?" उसने हठ किया और उसके साथ-साथ चल दिया! जोशुई बड़े असमंजस में, आवेश में आ पड़ी। उसने अपनी छतरी तान ली पर अब वह क्या करे? अगर किसी परिचित व्यक्ति ने इस अमरीकी को इस प्रकार उसके साथ चलते देख लिया और जाकर उसके पिता से कह दिया तो उसे उनके भीषण-कार्य का भाजन बनना पड़ेगा। "कृपा करके आप चले जाइए," उसने कहा और उसकी ओर घूमकर पीछे देखे बिना ही वह आगे बढ़ गई।

पर वह पिछड़ा नहीं। "जापान में आप-जैसी सुन्दर लड़की से मिलने का कोई साधन तो होना ही चाहिए," उसने कहा। "यदि मैं आपके घर आऊँ, अपना परिचय-पत्र भेजूँ, आपके माँ बाप से मिलूँ?"

"अरे नहीं, नहीं!" उसने अधीरता से कहा। "आप नहीं जानते मेरे पिता जी कितना नाराज होंगे।"

"क्यों?"

"क्यों? क्योंकि वह नाराज होंगे।" उसने कहा।

"क्या उन्हें अमरीका पसन्द नहीं है?" उसने कुछ दृढ़ता और रुखाई से पूछा।

"वह अमरीका भली भाँति जानते हैं," उसने उत्तर दिया।

"अच्छा?"

"कभी हम वहीं रहते थे। पर जब लड़ाई शुरू हुई तब हम लोग यहाँ रहने चले आए।"

अब वह कालेज के फाटक के पास पहुँच गई थी, और यहाँ उसे इस अमरीकी से छुटकारा पा ही लेना चाहिए। यह उसका सौभाग्य ही था कि

उसे इसके साथ किसी ने देखा नहीं था। दोपहरी ढल रही थी और लोग अपने अपने घरों में एकाध घण्टे की नींद ले रहे थे।

"आपको मेरे साथ नहीं आना चाहिए," उसने विवशता के साथ कहा, "यदि आप नहीं मानते तो मैं सचमुच सकट मे पड़ जाऊँगी।"

"ऐसा है तो मैं नहीं आऊँगा," उसने तुरन्त कहा। "पर कल मैं फिर यहाँ आऊँगा। और यह मेरा परिचय-पत्र है।"—उसने अपनी जेब से एक छोटा-सा चमडे का डिब्बा निकाला। उससे एक पतला-सा परिचय-पत्र निकालकर उसने उसकी तरफ बढाया। जब तक जोशुई ने उसे ले न लिया उसका हाथ फैला रहा। उसपर छपा था—सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट एलेन कॅनेडी।

"क्या आप मुझे अपना नाम बताएँगी?" उसने पूछा।

उसके मन मे आया कि इन्कार कर दे, पर उसने अपनी आँखें उठाई उसकी ओर वह कितना खूबसूरत था, कितना विनम्र! किंचित मुसकान से खिला हुआ उसका मुख कितना भला था! और उसके मन में कुछ उन अमरीकियों से मिलने की एक गुप्त लालसा भी जग रही थी। उसका जीवन एकाकी था। जापानियों के बीच मित्र प्राप्त पाना उसके लिए कठिन था। उसके उस अमरीकी जीवन के सम्बन्ध में कुछ जानते-समझते ही न थे जो उसने कैलिफोर्निया में बिताया था। वह लोग तो उससे इसी कारण घृणा करते थे। उसकी प्रशसा के उनके मिथ्या प्रयासों में भी उनकी ईर्ष्या झलकती थी।

"मेरा नाम जोशुई सकाई है।"

"जोशुई सकाई," उसने नाम दोहराया, "यह न बताओगी कहाँ रहती हो?"

वह घबरा गई और इन्कारी का सर हिलाया। लेकिन उसकी बड़ी बड़ी जादूभरी आँखें अनुनय कर रही थीं, और वह उस अनुनय को अस्वीकार न कर सकी। उसके भीतर अनुराग की ऊष्णता जग उठी थी, मन चाहता था हँसे। समझ न सकी क्या करे क्या न करे, इसीलिए अपनी छतरी बन्दकर ली, फाटक के अन्दर भाग गई और बाँसों के

झुरमुट के पीछे जा खड़ी हुई। वह भी फाटक के अन्दर आया और इधर उधर देखता हुआ खड़ा रहा। फिर, तनिक देर रुक कर, अनमने मन से वह चल दिया। कुंज के नीचे वह फिर रुका। अब अचानक फूलों का सौरभ उसके तन मन को भेदने लगा। पहले उसे इस सुरभि का पता भी न चला था। जाने कैसे उसे इसका भान भी न हुआ था। वह सुरभि उसने जी भर अपने भीतर भर ली, बसा ली—वह मादक मधुरिमा जो सदा-सर्वदा के लिए उसके मन में छिपी हुई मनोहर कली की सहेली बनकर बसेगी। वह जाने की सोचता, पर कदम न उठते। रुका रहा, एक अनजानी अस्पष्ट आशंका से अभिभूत। आखिर उसके कदम कहाँ किस ओर बढ रहे थे?—मादक-लालसा के किस भँवर में वह फँसता जा रहा था?

बाँसों के झुरमुट के पीछे छिपी जाशुई उसे देख रही थी। उसने आश्चर्य भरी अपनी दृष्टि ऊपर को उठाई और फिर अचानक चल दिया।

तब वह झुरमुट की आड़ से बाहर निकली एक स्पष्ट पर सकोचभरी आशा लिए हुए कि वह अभी फाटक के बाहर छिपा होगा। पर वह वहाँ नहीं था। उसका बोझ उतर गया, पर उसे दुःख भी हुआ। उसने सोचा अब वह फिर कभी न दिखाई देगा। और इसी अनचाहे विश्वास में वह अपनी कक्षा में बैठी रही, उसके सुन्दर भोले मुख को याद करती हुई। उसके चेहरे की हर आकृति उससे भिन्न थी फिर भी वह कितना स्वाभाविक मालूम होता था!'—उसके बचपन का ही एक अंग जिसे वह अब तक भूल न सकी थी।

४

चाय त्योहार से तरो ताज़ा हुए डाक्टर सकाई अन्य अतिथियों के साथ

बैठे हुए थे। उनकी मुद्रा शान्त विचार मग्न थी। अब जापान के बहुत थोड़े से घरों में चाय-त्योहार अपने पूरे आध्यात्मिक महत्त्व के साथ मनाया जाता था। वह अपने को भी अभी इस कला में एक नौसिखिया ही मानते थे, क्योंकि कैलिफोर्निया में, जहाँ उनका बचपन बीता था, चायशाला जैसा कोई स्थान ही न था। उनके पिता उस नए देश के साथ अपना सामजस्य बिठाने में इतने व्यस्त और परिश्रान्त थे कि जो जापानी परम्पराएँ उन्हें याद भी थीं उन्हें भी वह अपने बच्चों को नहीं सिखा समझा पाते थे। इसलिए डाक्टर सकाई ने बड़े विनय के साथ मत्सुई परिवार के चिकित्सक और मित्र का पद स्वीकार किया था। उन्होंने अपने इस जापानी मित्र से यह स्वीकार कर लिया था कि यद्यपि वह अपने देश को लौट आए हैं, फिर भी वह इसमें एक अजनबी की तरह हैं और उन्हें जापानी बनने का पाठ नए सिरे से पढ़ना होगा।

"यह न समझो कि मैं सब भूल गया हूँ," डाक्टर सकाई ने कहा। "मैंने जापान के सम्बन्ध में जीवनभर पढ़ा और अध्ययन किया है। इसीलिए जब मेरे सामने जापान और अन्य स्थानों के बीच चुनाव का प्रश्न आया तो मैं समझ गया की मुझे स्वदेश वापस आना चाहिए। और जब यहाँ आ गया तो अब अफसोस के साथ यह देख रहा हूँ कि मुझे जापान के जीवन के सम्बन्ध में अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है।"

"आपमें सीखने की भावना है। और जहाँ भावना है वहां सब कुछ सीखा जा सकता है।"—श्री तारक मत्सुई ने कहा।

श्री मत्सुई स्वयं कभी भी जापान से बाहर नहीं गए थे। डाक्टर सकाई का स्वागत उन्होंने कुछ जिज्ञासा और कुतूहल के साथ किया। डाक्टर ऊँचे-पूरे डील डौल के आदमी, गम्भीर-मुद्रा हजार कोशिश करते कि सोलहों आने जापानी बन जायँ, पर अमरीकी ही बने रहते। और फिर भी उन्हें इसका पता न चल पाता। उदाहरण के लिए श्री मत्सुई ने आज ही दोपहर को डाक्टर सकाई के उबलते हुए उत्साह को देखा। चिन्तन की भावना जबरन नहीं पैदा की जा सकती। इसी विचार से श्री मत्सुई ने बातचीत शांति पूर्ण ढंग से चलाने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपने कामदार

रेशमी बक्स से चाय की केटली निकाली—वह केटली जिसे वह अपनी हर अन्य वस्तु से महत्वपूर्ण मानते थे। उसे निकालते हुए वह बोले, "यह केटली मेरे एक मित्र की है जो अब हमारे बीच में नहीं हैं। वह चा-नो-यू [चाय-त्योहार] में बड़े कुशल थे और हमेशा इसी केटली से चाय पीते थे। जब वह मरने लगे तब यह केटली मुझे दे गये। क्योंकि उनका लड़का—इकलौता लड़का इन जातीय परम्पराओं को हेय दृष्टि से देखता है।"

डाक्टर सकाई ने अपने घुटने झुकाते हुए बहुत बड़ी सावधानी के साथ उस केटली को हाथों मे लिया। एक बहुमूल्य पदार्थ असावधानी के साथ नहीं लिया जाता। जब श्री तारक मत्सुई ने उस केटली से चाय उड़ेलनी चाही तब दाहिने हाथ से उठाकर बाँये हाथ की हथेली पर उसे रक्खा और तब चाय उड़ेली। डाक्टर सकाई ने उस केटली को ध्यान से देखा, पीले हरे रंग की केटली जिसपर किसी प्रकार के चित्र या आकार नहीं बने थे। उसकी आकृति, रंग और बनावट शान्ति की द्योतक थी। चाय त्योहार के सभी बर्तन सुन्दर थे—उनका सौन्दर्य उनकी सादगी में था। पाँच अतिथि, पाँचों पुरूष पालथी मारे हुए चटाई पर सीधे तने बैठे थे और सब आराम से बैठे थे, वातावरण की पवित्रता और पूर्णता उन्हें शान्ति दे रही थी। यह लोग सौन्दर्य का रूप और भाव समझते थे। यह लोग कलाविद् दार्शनिक थे। इनकी अनुभूति थी कि चेतना का बाह्य रूप शून्य है और उनकी यह अनुभूति उन्हें सौन्दर्य की खोज में क्रमशः एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में भटका रही थी। सौन्दर्य की यह खोज आत्मा के लिए थी—आत्मा जिसमें मनुष्य और प्रकृति का सम्पूर्ण सामञ्जस्य है। इस प्रकार उनका विश्वास था कि सौन्दर्य के सिद्धान्तों मे जीवन के समस्त तत्व और उसकी समस्त व्याप्ति समा जानी चाहिए—वास्तुकला, शिल्पकला, चित्रकला—सब कुछ। आज श्री मत्सुई की चायशाला में इन्द्र धनुषों की सजावट दो ढंगों से की गई थी—कलियोंके सहारे और फूलों के द्वारा जिनके साथ एक लम्बी और एक छोटी पत्ती का संयोग मिलाया गया था। यह आभासहीन कलामुग्ध सौन्दर्य था, पत्तियाँ और फूल श्रद्धापूर्ण सावधानी

से सजाये गये थे। पर सब जानते थे कि यह सरलता स्वाभाविक जान भले ही पड़े पर वास्तव में थी प्राकृतिक सौन्दर्य से बहुत परे। कृत्रिमता की पूर्णता सरलता की सिद्धि में है। पूर्ण परिपक्व मस्तिष्क विकास की अन्तिम सीमा में सरलता की स्थिति में पहुँच जाता है।

त्योहार के कृत्यों और भोजन के समय कोई ऐसी बातचीत नहीं हुई जो असुविधाजनक होती। जब यह सब समाप्त होगया और सूर्यास्त का समय आया तब यह लोग उठे और श्री मत्सुई को धन्यवाद देते हुए प्रतीक्षालय की ओर चले। यहाँ वे लोग मन चाहे ढंग से बात कर सकते थे। श्री मत्सुई भी चन्द मिनट बाद उनके बीच आगये।

इन लोगों ने कभी अपने देश के बाहर कदम नहीं रक्खा था और इनकी बातचीत का विषय था अमरीकी प्रभाव के विरूद्ध अपने देश की संस्कृति को सुरक्षित रखना। डाक्टर सकाई को यह विषय बहुत प्रिय था। वे अमरीका को तिलाञ्जलि दे चुके थे। उनका हृदय और उनकी आत्मा जापान के स्वागत के लिए मुक्त थी। और इसीलिए प्राचीन जापान उसकी प्राचीन परम्परायें, उसमें गुणों और अवगुणोंकी इस लम्बी शान्ति चर्चा ने उनके भीतर एक नये व्यक्ति को जन्म दिया।

डाक्टर सकाई समझ गये कि जापान के लोगों ने विदेशियों के रहन सहन को क्यों अपना लिया। उनकी इस मूर्खता का कारण उनके सामने स्पष्ट हो गया। जब वह लोग प्रतीक्षा-गृह में बैठे हुए थे तब श्री तनाका ने कहा, "सभी जातियों में दुर्वृत्त लोग भी पैदा होते हैं। हर देश में कुछ ऐसे मूढ़ लोगों का जन्म होता है जिनकी शिक्षा, जिनका संस्कार असम्भव हो जाता है। वह जन्मना जंगली होता है, निःसन्देह पूर्व जन्म के पापों की काली छाया उनपर रहती है। उनका नियन्त्रण नहीं किया जा सकता वह अपने माँ-बाप को, अपने परिवार को दुखों में डालते हैं, अपनी बिरादरी के माथे पर वह काले धब्बे होते हैं और इसी कमज़ोर और चंचल स्थिर चित्त के लोग उनके साथी बन जाते हैं। हमारे बीच भी ऐसे लोग थे। एक शदी पहले युग के दुर्भाग्य ने उनका साथ दिया, उन्होंने हमारे देश के लोगों को समझाया कि पश्चिम की ताकतें जो एशिया का

आपस में बटवारा कर रही थी जापान को भी छूड़ लेंगी। हो सकता है उनकी बात ठीक ही हो—कौन जाने ! लेकिन हमारे देशवासी डर गये और इसी डर ने उन लोगों का गल्ला साफ कर दिया। उन्होंने सेना तैय्यार की, नउनी बेड़ा बनाया और मनूरिया पर कब्जा कर लिया। उन्हें आशा थी कि अपनी सुरक्षा के लिए वह एक साम्राज्य की सृष्टि कर लेंगे। और यहा से एक महान् परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। यदि हम मे साहस होता और हम भयभीत न हुए होते तो शायद हम अजेय भी बने रहते। श्री मसुई के साथ अपनी बात करने का अवसर न मिल सका और अब अवसर निकालना उन्हें उचित न जान पड़ा। दिन का यह उत्तरार्द्ध बहुत पवित्र ढंग से बीता था। उनकी आत्मा अतीत की पुण्य-स्मृति में नहा चुकी थी और उन्होंने जापानी जीवन के सच्चे-स्वरूप का और अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था। नौजवानों का और कल की बात सोचने का इस समय मन तैयार नहीं था। बहुत समय था इसके लिए।

श्री तनाका एक बुड्ढे आदमी थे। सत्तर वर्ष का परिवर्तन वह देख चुके थे। उन्होंने कभी पश्चिमी पोशाक नहीं पहनी थी और उनके घर में न एक कुर्सी थी न एक पश्चिमी खाट थी। एक सामान्य सम्पत्ति उन्हें विरासत में मिली थी और उसी के सहारे उन्होंने अपना जीवन बिताया था। हाँ, कठिनाइयाँ निरन्तर बढती ही जा रही थीं। उनके सब लडके हाल ही में लड़ाई में मारे जा चुके थे। उनके पिता दसियों पहले चीन के साथ युद्ध में मारे गए थे। वह युद्ध से घृणा करते थे और इसीलिए शिन्तो धर्म छोड़कर वह बौद्ध हो गए थे, क्योंकि शिन्तो धर्म एक ऐसे देश प्रेम की शिक्षा देते थे जो उन्हें स्वीकार न था। वह अपने आप को मानवतावादी कहते थे—मनुष्य मात्र को प्यार करनेवाला, और अमरीकियों के प्रति भी उनका व्यवहार सयत और विचार पूर्ण था।

"मेरे जीवन-काल में बड़ी निर्दयता बरती गई है," श्री तनाका ने बड़े गम्भीर भाव से कहा। किसी ने उन्हें रोका नहीं। डूबते हुए सूर्य सुनहले प्रकाश से भरी फुलवाडी के सामने वाले दरवाजे की ओर मुँह किए वह बैठे थे। "जब नागासाकी पर अणु बम गिराया गया तब मैं वहाँ

गया था यह देखने के लिए कि उसने क्या आफ्त बरपा की। आप जानते हैं कि नागासाकी में हमारे पूर्वजों की पुरानी ड्योढी है। पुराने मकान का अब नाम निशान नहीं रह गया। वह मकान मेरे सबसे पुराने छः सम्बन्धियों की समाधि था। उन्होंने अपना सारा जीवन वहीं बिताया था। नागासाकी का दृश्य देखने के बाद मुझसे अब रच मात्र भी निर्दयता नहीं देखी जाती। मुझसे अब दूसरों को धक्का देकर ट्राम गाडी पर नहीं चढा जाता। जानता हूँ बुड्ढा हूँ और मेरा हल्का-सा धक्का किसी का कुछ बिगाड नहीं सकता। पर मुझसे अब इतनी भी कठोरता सहन नहीं की जाती। लगता है इतनी निर्दयता यदि और हो गई तो यह ससार मेरे रहने योग्य न रह जायगा। मैं अब एक चींटी को कुचल नहीं सकता, एक बच्चे को रोता नहीं देख सकता। जितनी निर्दयता ससार मे बरती जा चुकी है उससे अधिक यदि कहीं भी कोई निर्दय काम होता है तो इस ससार म फिर मैं रह न सकूँगा। रोको इस निर्दयता के चक्र को, भगवान तथागत !!" उन्होने अपना दुबला पतला चेहरा ऊपर को उठाया और आँखें बन्द करलीं। डाक्टर सकाई ने अपना सर झुका लिया। उन्हें अपने हृदय मे एक तीव्र वेधक दु:ख की अनुभूति हुई जो मनुष्य को शक्ति भी देता है।

सब लोग उठकर चलने लगे। डाक्टर सकाई को अन्त तक पहाडो का पडोस घर में सीलन बनाए रहता था।

धीरे धीरे शान्त मन डाक्टर सकाई घर की ओर चले।

५

घर म प्रधान कमरे मे पत्नी डाक्टर सकाई की प्रतीक्षा कर रही थीं। उनकी अनुपस्थिति म आज दोपहर घर में जो कुछ हुआ वह सब भला वह उन्हें कैसे बताएँ? वह उनसे डरती थी क्योंकि उनके हृदय में अपने

पति के लिए सर्वाधिक आदर का भाव था और यदि उनमें साहस होता तो वह उन्हें खुलकर प्यार करतीं। पर जिसके लिए हृदय म इतना आदर भाव हो उसे खुलकर कैसे प्यार किया जाय? वह इतने तीक्ष्ण बुद्धि थे कि दाप उनकी दृष्टि से छिपाए न जा सकते थे और श्रीमती सकाई बहुत विनत था। और फिर अपने गुम-सुम हृदय में वह निरन्तर ऐसा पाप छिपाए रहती थीं जिसे वह कभी खुलकर स्वीकार न कर सकती थी। उन्हें जापान से प्रेम न था, अमरीका छोड़ना उन्हें पसन्द न था। अमरीका का वन्दी-गृह भी उन्हें पसन्द था, जहाँ उनके अन्य सब साथी-सगो थ। निस्सन्देह वन्दी शिविर कष्ट-दायक थे, उन सब यातनाओं का उन्हें ज्ञान था क्योंकि डाक्टर सकाई उन्हें सब कुछ बताया करते थे। लेकिन फिर भी वह अपने परिचितों मित्रों के साथ तो रहतीं, साथ-साथ रसोई बनाती, साथ साथ और सब काम-सफाई, सिलाई-बुनाई आदि हाते और फिर बैठकर आपस में बातें करने को भी काफी समय मिलता। और वन्दी शिविर में तो और भी अधिक अवकाश मिलता क्योंकि वहाँ रोजी कमाने का तो कोई प्रश्न ही न था। खाना तो मिलता ही था, चाहे कितना ही बुरा क्यो न हो। बन्दी शिविरों वाले रेगिस्तान की हवा भी गरम और शुष्क थी। यहाँ क्योतो शहर में तो इस वसन्त में भी मौसम नम था। और घर में ठण्डक थी। फुलवाड़ी में बहने वाला पानी, समुद्र का कोहरा और भय ही सारी कमजोरियों की शुरूआत है।

अपना हल्का पीत रेशमी घाँघरा पहने श्रीमती सकाई सिमटी बैठी थीं, गले में सफेद रेशमी पट्टी लपेट रखी थी। पैरों में सफेद सूती मोजे थे जिन के तले दोहरे और सिले हुए थे। उन्होने स्वयं ही इन मोजों को तैयार किया था। अपना हर काम श्रीमती सकाई सुन्दर ढग से करती थीं, आखिर उनका लालन-पालन तो जापान ही में हुआ था। परिवार गरीब था, नागासकी से और ऊपर उन्जेन के पास ऊँची पहाड़ियों पर उनका मकान और फार्म था। पास ही प्रसिद्ध गर्म-सोते थे। कभी-कभी वसन्त या शरद ऋतु में जब वह लोग घूमने जाते पहाड़ों का, वनों का, खिले फूलों का सौन्दर्य सम्भार देखने निकलते तब इन्हीं सोतों के गरम पानी म

मछली पकाई जाती थी।

उनके पिता गरीब थे। इतने गरीब थे, अपनी अनेक लड़कियों के बोझ से दबे हुए, कि एक दिन जब अखबार में उन्होंने पढ़ा कि अमरीका में रहने वाले नौजवान जापानियों के लिए योग्य वधुओं की आवश्यकता है तो उन्होंने अपनी इस बेटी का भी फ़ोटो भेज दिया और उसका नाम रजिस्टर में दर्ज करवा दिया। इस प्रकार वह अमरीका पहुँची। डाक्टर सकाई की माँ ने उन्हें पसन्द किया था और बेटे को अपनी पत्नी का सौम्य चेहरा प्रिय था। जब वह युवती थीं तब वास्तव में श्रीमती सकाई का मुख मनोरम था, भले ही बहुत सुन्दर न रहा हो। पर उन्हें अमरीका जाते समय यह न मालूम था कि वह एक डाक्टर की जीवन सङ्गिनी बनगीं जिसे उनके छोटे-छोटे माटे से पैर हाथ और भुके हुए घुटने पसन्द न आएँगे। डाक्टर ने उनके भोजन के सम्बन्ध में पूछताछ की थी। वह चावल, मछली और तरकारियाँ खाती थीं। बच्चे पैदा हुए। और जब डाक्टर सत्तन सकाई की हिदायतों के मुताबिक बच्चों को खिलाने पिलाने में माँ जरा भी असावधानी दिखाती तो उनका दिमाग गरम हो जाता। लेकिन उनका बच्चा लड़ाई में मारा गया। माँ अब बीते दिनों की बातें सोचती, कैसे उसने अपने बच्चे को गाय का दूध हठ करके पिलाया था, बच्चा कैसे दूध पीते समय रोता चिल्लाता था! वह सब व्यर्थ गया! अच्छा होता माँ ने अपने बेटे को वह सब कष्ट न दिए होते!! क्या फल निकला उन सब का? अपने बेटे की समाधि भी अब माँ को देखने को नसीब नहीं हो सकती! जब कभी केन्सन की याद आती श्रीमती सकाई के आँसू बह चलते।

पति के पैरों की चाप सुनाई दी। श्रीमति सकाई ने अपने आँसू पोंछ डाले। उठकर दरवाजे तक गईं और पति को अभिवादन किया। उन्होंने स्नेह सिक्त स्वर में अभिवादन का उत्तर दिया। उनके पीछे पीछे वह कमरे में गईं और जब वह बैठ गए, तो झुककर चाय की केतली उठाई पर डाक्टर सकाई ने रोका, "अब इस समय चाय नहीं, बहुत चाय पी चुका हूँ और बढ़िया से बढ़िया!"

एक बात के लिए श्रीमती सकाई जापान की कृतज्ञ थी! जापानी घोंघरा उनके पैरों की विकृति को छिपा लेता था। अमरीकी पोशाक में यह बात नहीं थी। उसके पहनने से पैरों की खराबी साफ दिखाई देती थी; और डाक्टर सकाई की दृष्टि बड़ी पैनी थी। वह बेशक कहते कुछ न थे, केवल अपना मुँह फेर लेते थे। पर इससे उन्हें और भी मार्मिक-कष्ट होता था।

पर आज अपराह्न में घर में जो कुछ हुआ वह सब उन्हें वह कैसे बताए? हाथ मुँह के सामने लगाकर उन्होंने खाँसा!

तुरन्त डाक्टर सकाई की निगाह ऊपर उठी, "क्या मामला है हरिकू?"

"समझ में नहीं आता तुम्हें कैसे बताऊँ?" वह बोलीं। डाक्टर सकाई ने देखा कि पत्नी की आँखों से परेशानी झलक रही है। उनकी हरिकू का मुख अब भी मनोरम था, सौम्य चेहरा, गोल-गोल बच्चों की सी भोली-भोली आँखें! जापानी औरतों के चेहरे पर गोल आँखें सुन्दर नहीं मानी जातीं, पर उन्हें वह गोल आँखें प्यारी लगती थीं।

"बताओ भी तो, मैं तुम्हें मार नहीं डालूँगा, पीटूँगा भी नहीं।" कुछ मुसकान के साथ डाक्टर सकाई बोले।

परिहास उत्साह-वर्द्धक था। "एक नवयुवक आज अपराह्न में आपको पूछते हुए आया था।"—बड़ी सावधानी से पत्नी बोलीं।

"मरीज रहा होगा?"

"नहीं, मरीज न था," हरिकू हिचकिचाई, और फिर साहस करके एकाएक कह दिया, "एक अमरीकी सिपाही था।"

डाक्टर सकाई के चेहरे पर के सभी भाव अचानक लुप्त हो गए। "लेकिन मैं तो किसी अमरीकी को जानता नहीं।"—वह बोले।

"वह भी आपको अपना परिचित नहीं बता रहा था", पत्नी ने कहा, "वह आपसे परिचय करना चाहता है।"

"लेकिन उसे मेरा पता कैसे मालूम हुआ, मेरा नाम कैसे जाना उसने?"

"कह रहा था उसके एक मित्र ने उसे बताया है।"

"तुमने क्या कहा उससे ?"

"मैंने बताया आप बाहर गए हुए हैं। तब उसने आपकी प्रतीक्षा करनी चाही, पर मैंने इसे उचित न समझा। मुझे भय था कि जोशुई किसी भी वक्त आ सकती थी और तब परिणाम अच्छा न होता।"

"बेशक।"

"मैंने उससे कहा कि मैं आपसे उसकी बात कह दूंगी। वह कह गया है फिर आएगा। उसने पूछा आप किस समय घर पर मिलेंगे तो मैंने कह दिया कि आपसे अस्पताल के दफ्तर में सबेरे दस बजे मिलना सबसे अच्छा होगा। मैंने कह दिया है कि आप अपरिचित लोगों से घर पर नहा मिलते।"

"बहुत ठीक !!" डाक्टर विचार मग्न हो गए। अपना निचला होठ दांतों के नीचे दबाकर बोले, "अमरीकी सिपाही ! सम्भव है किसी ने वहाँ मेरा नाम उसे बताया हो ?"

"हाँ .." पत्नी ने समर्थन किया। उनका दिल हलका हो गया था, बोझ उतर-सा गया ! उन्होंने सारी बात पति को बता दी और वह रुष्ट नहीं हुए। उनके रुष्ट होने की आशंका करना भी पाप था, क्योंकि आजतक उन्होंने कभी एक कड़ा शब्द भी न कहा था। लेकिन फिर भी हरिकू उनकी भावनाओं का इतना अधिक ध्यान रखती थीं कि उनके चेहरे पर आई हल्की सी विषाद या रोष की छाया भी उन्हें विकल कर देती थी। डाक्टर सकाई का आत्म-सयम चरम-कोटि का था, पर हरिकू से वह कुछ भी न छिपा पाता था। पैर छोटे थे तो क्या ?—हरिकू अत्यन्त सुन्दर रग से उठी, "तो अब मैं कुछ देखूँ-भालू। बहुत काम अभी बाकी है।"

डाक्टर सकाई ने मौन भाषा में स्वीकृति दी। मित्रों के साथ बिताए गए आनन्द और शान्ति पूर्ण अपराह्न की मानसिक उत्फुल्लता में वह परिवर्तन करने को तैयार न थे। हरिकू के चले जाने के बाद वह फुलवाड़ी की ओर मुँह किए चुपचाप बैठे रहे। अमरीकी सिपाही का ध्यान उन्होंने बलात् अपने मन से निकाल दिया। माली ने फुलवाडी के पत्थरों पर

पानी का छिड़काव कर लिया था; लता गुल्म सींचे जा चुके थे।

पत्नी ने धीरे-से पति की ओर देखते हुए कमरे की चिक उठाई और कमरे में प्रवेश किया। पति ने यह तो पूछा ही न था कि वह अमरीकी सिपाही था कैसा ? और उसे भी बताने की याद न रही। पर यह तो पति से दुराव की बात होती। इसलिए वह फिर आई। डाक्टर सक्राई की पत्नी हरिकू को यह अमरीकी युवक भला मालूम दिया था। कैलिफोर्निया में रहते हुए उन्होंने अनेक ऐसे स्वस्थ युवक देखे थे। पर पूछने पर इस युवक ने कहा था कि वह कैलीफोर्निया का रहने वाला नहीं है। हरिकू के मुँह से अचानक ही यह प्रश्न निकल गया था, "क्या तुम कैलीफोर्निया से आ रहे हो ?"

"ओह आप अँगरेजी बोल लेती हैं !!" आनन्द के अतिरेक में वह कह गया !

"हाँ, थोड़ा-सा," उन्होंने कहा, अपनी मुस्कान रोकते हुए, क्योंकि उसके दाँत अच्छे नहीं थे। अमरीकियों को सुन्दर सफेद दाँत अच्छे लगते हैं; पर जिस विकार ने हरिकू के पैर विकृत कर दिए थे सम्भवतः उसी ने उनके दाँत भी खराब कर दिए थे। उनके बचपन में किसी ने शायद इसकी कोई परवाह भी नहीं की; क्योंकि देहात में औरतें शादी होने पर अपने दाँत काले कर ही डालती थीं। खुद उनकी माँ के ही दाँत एकदम काले-काले थे—जैसे कोयले से गढे गए हों।

"तो क्या आप भी कैलिफोर्निया से ही यहाँ आए हैं ?"—हरिकू ने दुबारा पूछा था।

"आप भी क्यों कहा आपने ?"—उसने पूछा, "क्या आप खुद भी कैलिफोर्निया से यहाँ आई हैं ?"

"हम लोग वहीं से आए हैं।" उन्होंने कहा।

"मैं वर्जीनिया का रहने वाला हूँ", उसने कहा, "बहुत सुन्दर जगह है।"

"मैं तो नहीं जानती।" उन्होंने उत्तर दिया !

और इसके बाद उन्होंने यह बातचीत बन्द कर दी। अमरीकियों के

साथ उनका व्यवहार सर्वदा अत्यधिक मैत्री-पूर्ण रहता ही था। वह कुछ संयत हो गई। पर वह अमरीकी उन्हें वास्तव में बहुत भला लगा। वह कितना युवा, कितना स्वस्थ-सुन्दर था! उसका नाम था एलेन केनेडी। उसने अपने नाम का एक कार्ड भी उन्हें दिया था। नाम का उच्चारण उन्होंने उसका अनुकरण करके सीखा था। अँगरेजी का पढ़ना हरिकू ने कभी नहीं सीखा था।

अब हरिकू चुपचाप बरामदे को पार करती हुई अपने सोने के कमरे में गई। कमरा परदों से घेर कर बनाया गया था, परदे हटा दिए जाँय तो कमरा घर में मिल जाता। पर ऐसा कभी होता न था; हरिकू को अपने विश्राम के लिए एक स्थान चाहिए ही। आज अब कोई काम भी नहीं था, डाक्टर सकाई ने भोजन बनाने के लिए मना कर ही दिया था, जोशुई रात में डबल रोटी, दूध, चाय और मनचाही कोई चीज़ खा लेती थी। हरिकू स्वयं थोड़ा-सा चावल खाती थीं। सो फ़ुर्सत थी। उन्होंने अपनी छोटी सन्दूकची खोली और उसका सामान संवार कर धरने लगी। कुछ आभूषण थे उसमें, सम्भार की सामान्य वस्तुएँ, बेटे केन्सन का चित्र, कुछ और चित्र, अमरीका के लॉस ऐंजेल्स में उनके अपने मकान का चित्र जो अब उनका अपना मकान न रह गया था। अब उसमें नीग्रो लोग रहते थे।

परदा थोड़ा-सा हटा और जोशुई का मुसकराता हुआ चेहरा दिखाई दिया।

"माता जी आप यहाँ हैं।"

"तुम अपने पिता जी से मिलीं?"

"नहीं तो।"

जोशुई कमरे में आ गई। माँ ने तुरन्त देखा कि उनकी बेटी में कुछ परिवर्तन हो गया है—कुछ आनन्द-उल्लास भरा परिवर्तन! उन विस्फारित बड़ी-बड़ी आँखों में उल्लास चमक रहा था! जापानी लड़कियों की आँखें इतनी बड़ी कहाँ होती! जोशुई अपने शान्त चेहरे में सब कुछ छिपा लेना अभी सीख न पाई थी।

"तुम बड़ी प्रसन्न दिखाई देती हो!" माँ ने पूछा, "क्या बात है?"

जोशुई ने सर हिलाया, "कुछ भी तो नहा माँ! बसन्त आया है न!!"

पर क्या अकेला वसन्त ही उस मनोहर मुख की प्रत्येक भंगी को इतना उल्लासमय, इतना स्नेह-तरल बना सकता था हरिकू को सन्देह हुआ। वह अपनी पुत्री की ओर देखती रहीं, ध्यान से अपनी उस अनुभूति को स्मरण करती हुई जो बसन्त ने उनके मन में जगाई थी जब वह स्वयं बीस बरस की थीं। उस अवस्था में वह कठिन परिश्रम करती थी, अपने पिता के फार्म में बसन्त का समय खेतों के जोतने, बोने का काम करते बीतता था। गर्मी का प्रारम्भ होते ही खेतों में पानी भर जाता था और तब उन खेतों का जोतना और धान की बेड़ लगाना होना था। बसन्त का प्रभाव? न, हरिकू को कुछ भी स्मरण न आया?

पर पुत्री से उन्होंने कोई प्रश्न नहीं किया। जोशुई अपने पिता की पुत्री थी, माँ का अधिकार तो पुत्र पेन्सन पर था। अगर वह जीवित होता तो आज हरिकू की गोद में नन्हें-नन्हें बच्चे—पोती-पोते-खेलते होते अमरीकी चेहरे के प्यारे प्यारे बच्चे!! हरिकू को उनके अमरीकी होने की कोई चिन्ता न होती।

जोशुई उनकी बगल में खड़ी थी। उसने पेन्सन का एक चित्र उठा लिया। पेन्सन के कई चित्र थे, कुछ उस समय के थे जब वह बच्चा ही था! उसका एक चित्र युवती सेत्सू के साथ भी था। सेत्सू उसकी प्रेमिका थी। चित्र में उसके बाल ताजे कटे हुए थे, घुँघराली लटें बिछल रही थीं।

अचानक कुछ असन्तोष के स्वर में जोशुई ने कहा, "मैं चाहती हूँ पिता जी मुझे भी अपने बाल कटवाने की अनुमति देते!" उसके बाल सीधे लम्बे थे, पीछे बाँधकर उनका सुन्दर गोल-गुच्छा बनाया गया था। इतने लम्बे बालों में घुँघराली लटें कैसे निकालें?'

"वह आज्ञा नहीं देंगे," माँ ने कहा। वह भी सेत्सू की ओर देख रही थीं। "शायद अब सेत्सू के बच्चे भी खेलते होंगे।"

"बन्दी—शिविर में पैदा हुए होंगे," जोशुई ने कठोर सत्य कहा।

"हाँ," माँ ने कहा। 'पर वास्तव में यदि केन्सन जीवित होता और यदि वह लोग साथ रहे तो बन्दी शिविर में भी बच्चा की मुस्कान मधुर होती। अमरीकी लोग बन्दियों की हत्या तो करते नहीं। जर्मनी जैसा व्यवहार वहाँ बन्दियों के साथ नहीं होता। खाने को भी काफी मिलता था। मेरा ख्याल है बन्दी शिविर भी बहुत बुरा न था।"

"होगा, मैं क्या जानूँ।" जोशुई ने एक ठण्डी साँस भरते हुए कहा। उसके चेहरे से उल्लास की सारी झलक विलीन हो गई, यद्यपि बसन्त वैसा ही खिला था।

माँ ने यह ठण्डी साँस सुनी गुनी। क्या वह जोशुई को अमरीकी युवक की बात बता दे? नहीं, ऐसा करना ठीक न होगा, एक मनोरंजक सवाद के रूप में भी नहीं। हरिकू अपने आभूषण व चित्र आदि सँभाल कर रखने लगीं।

"मैं कपड़े बदलती हूँ माँ" कहकर जोशुई चली गई। हरिकू प्रसन्न थी कि उन्होंने कुछ कहा नहीं। वास्तव में वाक्-संयम बहुत सुन्दर गुण है।

उस बड़े मकान के एक कोने में जोशुई का अपना कमरा था। वह शीशे में अपना चेहरा देख रही थी। सामने फुलवाड़ी थी, सूर्य का सान्ध्य प्रकाश उस पर पड़ रहा था। शीशा एक चीनी फ्रेम मे मढा मेज पर लगा था। पालिश की हुई काली लकड़ी थी। जोशुई ने अपनी स्कूल की पोशाक उतार दी थी और एक पीत-गुलाबी रंग की घाँघर पहन ली थी जिस पर गुलाब के फूल कढे हुए थे।

अमरीकी लोग सुन्दर किसे कहते हैं? वह—जोशुई सुन्दर थी! उसका रंग तो साफ था, उसकी चमड़ी सफेद थी—ऐसी सफेद जैसे बादाम की गिरी। हाँ उसका अधरोष्ठ शायद अधिक भरा हुआ था! शायद वह स्वस्थ बहुत अधिक थी। उसके गालों पर ललाई थी, आड़ू या गुलाब के फूलों की-सी ललाई—उसके रेशमी घाँघर से अधिक लाल! उसकी आँखें जापानी आँखें थीं, शायद उसे ऐसी आँखें पसन्द न आएँ, यद्यपि वह सामान्य जापानी आँखों से भिन्न सुन्दर आँखें थीं। उसकी नाक

अमरीकी की निगाह में, बहुत नीची थी। यदि वह इस समय अमरीका में होती तो क्या उसके लिए मित्र ढूँढ सकना सम्भव होता? आखिर कार अब सब लोग बन्दी शिविरों से छूट भी गए थे। लोग कहते थे कि अमरीकी लोगों का व्यवहार उन बन्दी लोगों के साथ अब फिर दया पूर्ण हो गया था! अब कोई कष्ट न था, या बहुत कम था! अनेक अखबारों ने केन्सन की फौज के कारनामे छापे थे—इटली में उन्होंने कितनी बहादुरी दिखाई थी। कुछ अखबारों में तो केन्सन की वीरता की गाथा भी छपी थी! जिस पहाड़ी पर उसकी फौज को कब्जा करने की आज्ञा दी गई थी उस पर हमला करने वालों में केन्सन पहला सिपाही थी। वह सारी टुकड़ी का अगुआ था। इसीलिए तो वह मारा भी गया। जब अमरीकी अखबारों में केन्सन का चित्र और उसकी गाथा छपी और उसकी माँ ने देखा-सुना तो आँखों में आँसू भरे वह कह उठी थीं,—"बहुत बहादुर होना भी अच्छा नहीं होता।"

अगर कल वह अमरीकी फिर उससे मिला तो वह क्या करेगी? अपना नाम उसे नहीं बताना चाहिए था! लेकिन ऐसा करना तो बहुत अशिष्ट व्यवहार होता! अपनी भीतरी जेब से उसने एक छोटा-सा छपा कार्ड निकाला और धीमें स्वर में पढ़ा—एलेन केनेडी। घर पर लोग उसे एलेन कहते होंगे! भला एलेन का अर्थ क्या होता होगा? कौन जाने। केनेडी का भी कुछ न कुछ अर्थ अवश्य होगा! और फिर वर्जीनियाँ? उसे मालूम था कि वर्जीनियाँ बहुत—बहुत दूर है केलिफोर्नियाँ से। अमरीका के पूर्वभाग में है वह। इससे अधिक उसका स्कूली ज्ञान उसे कुछ बता न सका। कल वह एटलस में देखेगी। वह कार्ड उसने फिर अपनी जेब में रख लिया और शीशे में फिर अपना चेहरा देखा। अधरों की यह भङ्गिमा, झुकती हुई पलकें!! उसने अपनी हथेलियाँ अपने कपोलों पर रखा, वह गरम हो रहे थे। हथेलियाँ छोटी छोटी, ठण्डी थीं। हाथ उसके हमेशा ठण्डे रहते थे। यदि वह उसके हाथ छूना चाहे हाथ मिलाना चाहेगा—जैसा कि अमरीकी लोग करते हैं तो वह ऐसा नहीं करने देगी। एक लड़की की हथेली एक पवित्र अंग है। असावधानी के साथ

या अजनबी द्वारा उसे नहीं छुआ जाना चाहिए। केवल उसके पति को ही अधिकार है कि उसकी हथली से खेले।

जोशुई इस प्रकार मन ही मन गुन रही थी कि कमरे का पर्दा हटा और नौकरानी यूमी ने प्रवेश किया। अपनी नीली घाँघर पहने वह शीशा देखती जोशुई को देखती रह गई। तब जोर से उसने कहा, "आपको पिता जी बुला रहे हैं। फुलवाड़ी में हैं।"

जोशुई ने शीशा ढँक दिया—"कह दो मैं आ रही हूं।"

डाक्टर सकाई फुलवाड़ी में देवदास वृक्षों के नीचे टहल रहे थे। हरी मखमली घास नीचे बिछी थी और हवा में भीनी भीनी महक बह रही थी।—"बेटी आ रही हैं।"—यूमी ने आकर कहा।

"क्या कर रही थी?" डाक्टर सकाई ने पूछा।

"शीशे में अपना मुँह देख रही थीं।" यूमी ने उत्तर दिया।

यूमी चली गई और डाक्टर सकाई खड़े रह गए। जोशुई शीशे में अपना मुँह देख रही है!! इसका तात्पर्य? ऐसा तो नहीं कि उसने भी उस अमरीकी को देखा हो? सम्भव है आज प्रात उससे कुछ परिचय हो गया हो, कुछ बात-चीत हुई हो? अमरीकी सिपाहियों को लड़कियों से बात करते कुछ हिचक थोड़े ही है, और जोशुई सुन्दर है—बहुत सुन्दर! तथ्य मालूम होना चाहिए। कोई बात रहस्य बनकर न रहनी चाहिए। औरतों—लड़कियों के सम्बन्ध में अमरीकियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। पर जोशुई—उनकी बेटी—को कोई बाजारू लड़की नहीं समझा जाना चाहिए।

धीमे धीमे कदम रखती—पिता की ओर बढ़ती हुई जोशुई को उनकी तीखी भेदक आँखों का सामना करना पड़ा। उनकी भौंहें ऊपर को चढ़ी हुई थीं। स्निग्ध रोष छलक रहा था! भौंहों के संगम स्थल पर एक गाँठ सी पड़ गई थी, दोनों भौंहें ऊपर को चढ़ी हुई किसी चिड़िया या तितली के खुले परों जैसी मालूम होती थीं। पर कौन कह सकता था कि तितली को उनकी आँखों पर झुकने का साहस भी हो सकता था?

डाक्टर सकाई अपना रोष और आवेग सँभाल न सके। 'मुझे

लगता है तुम मुझसे कुछ छिपा रही हो?"

जोशुई को ऐसे आकस्मिक हमले का अभ्यास न था। वह चौंक-सी पड़ी। अमरीका में डाक्टर सकाई एक क्रोधी व्यक्ति थे, प्रायः बिगड़ जाते, तुरन्त पश्चाताप करते; पर रुष्ट होने पर अपना क्रोधावेग सभाल न पाते। इधर जबसे जापान वापस आए, वह शान्त हो चले थे, चिन्तन मनन के अभ्यास से उन्होंने आत्म-सयम का अच्छा साधन किया था।

जोशुई ने अपना सर उठाया, "क्या छिपा रही हूँ मैं आपसे?"

"मैं मूर्ख नहीं हूँ," क्रोध के साथ डाक्टर सकाई बोले।—"केवल औषधियों का ही ज्ञान नहीं है मुझे, मैं एक मनोवैज्ञानिक भी हूँ। तुम्हारी मनोदशा बदल गई है। तुम कल तक जो लड़की थीं वह आज नहीं हो। तुम बदल गई हो, कुछ परिवर्तन हुआ है तुम में।"

"कुछ भी तो नहीं हुआ," उसने कहा। "पर शायद आप ठीक ही कहते हैं। आज अमरीकी सिपाहियों को देखकर मुझे वह तमाम बातें याद आ गईं जिन्हें मैं समझती थी मैं भूल गई हूँ। जीवन के पन्द्रह बरस मैंने वहाँ बिताए हैं पिता जी, और केवल पाँच वर्ष यहाँ।"

डाक्टर सकाई ने सर हिला कर इशारा किया अनुगमन करने के लिए। वह उद्वेलित थे, मन अशान्त था, बैठ नहीं सकते थे। जोशुई सब समझ रही थी, और दोनों देवदास वृक्षों के नीचे टहलते रहे। सन्ध्या की अरुण आभा वाटिका की हरीतिमा से मिलकर अद्भुत सौन्दर्य की सृष्टि कर रही थी।

"तुम मुझ पर भरोसा रख सकती हो," पिता ने कहा, "तुम्हें मुझ पर भरोसा रखना चाहिए। समझो तो तुम्हीं मेरा सब कुछ हो, तुम्हीं मेरा सब कुछ रही हो। तुम्हारी माँ एक अच्छी माँ है। मनुष्य को और क्या चाहिए? पर तुम्हारा मस्तिष्क मेरा जैसा है। तुम मेरी बेटी ही नहीं, मेरी सखा भी हो। तुम्हारा भाई तुम्हारी माँ जैसा था, तुम मुझ जैसी हो।"

"मैं तो बहुत भिन्न हूँ," जोशुई विद्रोह के स्वर में तुरन्त बोली।

"हाँ, आज, इस समय, तुम मुझसे भिन्न हो," डाक्टर ने कहा, "पर भविष्य में ऐसा न होगा। एक पीढ़ी का अन्तर, अवस्था का अन्तर इस

समय बहुत स्पष्ट पतन है। बाद में जब तुम्हारा जीवन व्यवस्थित हो जायगा और अपनी स्वाधीनता दिखाने के लिए तुम्हें मेरे विरुद्ध विद्रोह करना आवश्यक न होगा, तब तुम समझोगी कि तुम कितनी अधिक मुझ जैसी हो।"

जोशुई को लगा पिता ने प्यार का झीना आवरण उसे चारों ओर से अपने भीतर समेटे ले रहा है। वह उस बन्धन से अपनी शक्ति भर निकल भागना चाहती थी पर जितना ही वह भगने का प्रयत्न करती उतना ही वह आवरण उसे और भी अपने भीतर समेटता। उसके दिल में वह शस्त्र छिपे थे—वह तेज चाकू जिनसे वह इस आवरण को छिन्न भिन्न कर सकती थी। पर यह आवरण भी तो कोई कठोर आवरण नहीं था, झीना, कोमल-बादलों जैसा!! उसने अपनी भीतरी जेब में हाथ डाला और एक छोटा-सा कार्ड निकाल लिया। बिना एक शब्द भी कहे उसने वह कार्ड पिता की तरफ बढ़ा दिया। नाम पढ़ने के लिए डाक्टर सकाई झुके, तुरन्त समझ गए और अपनी जेब से ठीक वैसा ही एक दूसरा कार्ड निकाला।

"आपको यह कार्ड कहाँ मिला?" आश्चर्य विह्वल जोशुई ने कहा।

"यही सवाल तो मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ," डाक्टर सकाई ने गम्भीरता से कहा।

"किसी ने—मुझे दिया है," उसने कहा।

"वह यहाँ भी आया था—जब मैं घर पर नहा रहा, और यह कार्ड वह तुम्हारी माँ को दे गया था।" और भी अधिक गम्भीर स्वर में वह बोले।

उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा।—डाक्टर सकाई की रोष कुटिल भौहें और बेधड़क आँखें उसपर झुकी हुई और वह उनकी ओर ऊपर को दृष्टि उठाए, भयभीत न होने का सकल्प किए हुए।

"आह! जोशुई!!" पिता ने बड़े बोझिल स्वर में कहा।

उसकी आँखें झुक गई और निःशब्द उसने वह छोटा-सा कार्ड पिता के हाथ में रख दिया। उन्होंने दोनों कार्ड अपनी जेब में रख लिए। "तुमने

देखा न, मैं ठीक कह रहा था ?"—वह दुःखभरे कोमल-स्वर में बोले। "मेरी बच्ची ! अब तो मुझे बताओ, क्या हुआ ?"

पर वह न बता सकी। बड़ी-बड़ी बूँदें उसकी आँखों से बह चलीं। दोनों फिर टहलने लगे। जोशुई ने अपनी बाहों में अपने आँसू पोंछ लिए।

"मेरा कहा मानो, अपने माँ-बाप से दुराव न करो," एक लम्बे मौन के बाद पिता ने कहा।—"विश्वास रखो, तुम्हारे कल्याण की किसी बात में मैं बाधक न बनूँगा। अभी तो मैं सोचता हूँ कि यदि तुम मुझे छोड़ जाओगी तो मेरा हृदय टूट जायगा, पर मैं जानता हूँ ऐसा होगा नहीं। मेरा दिल तो पहले ही टूट चुका है।

उसने अपना सर उठाया, "नेल्सन की मृत्यु से ?"

"नहीं, बहुत पहले !! तुम्हारे या नेल्सन के जन्म से भी बहुत पहले ! जब मैं नवयुवक था मैं—पर जाने दो, अब उस सबसे क्या मतलब ?"

सचमुच अब उस सबसे क्या मतलब था ! वह लगभग पचास वर्ष के थे और उनकी युवावस्था में क्या कैसी घटना घटी, जोशुई ने विचार से, अब उसका महत्त्व क्या रह गया था। वह नहीं जानना चाहती कि वह घटना क्या थी, कुछ डर-सा लगा उसे। लगा उसके पिता हमेशा वैसे ही रहे होंगे जैसे वह उसके सामने रहे, गर्वीले कठोर कोमल, हठी और अपने सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति पर नियंत्रण रखने वाले। वह स्वयं अपने सम्बन्ध में सोचना चाहती थी।

"अच्छा तो जोशुई, बताओ तुमने यह कार्ड अपने पास क्यों रखा ?" पिता ने कुछ प्यार मनुहार और अनुनय भरे स्वर में कहा !

पिता की दया ने विजय पाई। जोशुई सिसकने लगी और सिसकते हुए उसने कहना शुरू किया, अपने आँसू और अपनी सिसकियाँ रोकने का प्रयत्न करते हुए—"मैं क्या बताऊँ, कैसे बताऊँ !! बताने लायक कुछ है भी तो नहा ! उसने मुझे अस्पताल के लता कुंज के पास रोका, मेरा नाम पूछा और मैंने बता दिया ! बस, इतनी ही बात है।

"कितनी बार तुमने उसे देखा है ?"

"केवल एक बार—आज—मैं सत्य कहती हूँ। उसने मुझे आज

सवेरे देखा था, जब सब अमरीकी सिपाही सड़क पर जा रहे थे, और वह वापस लौट आया! मैंने उसे सवेरे और सिपाहियों के साथ नहीं देखा!"

सत्य ज्ञात हो जाने पर पिता का हृदय पिघल गया।"—उसने जो कुछ किया उसका दोष मैं तुम्हें नहीं देता। हाँ, अपना नाम बताने से तुम इन्कार कर सकती थी। पर, जैसा तुम कहती हो, तुम अमरीका में तो बहुत-बहुत दिन रह चुकी हो न? लेकिन अब हम लोग अमरीका वापस नहीं जाएँगे। अब हम हमेशा यहीं रहेंगे। मेरी बच्ची, तुम्हारा जीवन अब यहीं—जापान में बीतेगा। यहीं तुम्हारी शादी होगी। शादी के मामले में मैं तुम पर कोई दबाव नहीं डालूँगा, इसका वचन देता हूँ। तुम स्वयं अपना निर्णय करोगी। हाँ, यह जरूर है—," अपने मन का बोझ हल्का करते हुए डाक्टर सकाई कहते गए, "शादी बचपन में जब—मनोविज्ञान की दृष्टि से—शादी की अवस्था—इच्छा प्रारम्भ हो, तभी करना अच्छा होता है। बहुत अधिक विलम्ब करना—विशेषकर लड़कियों के लिए—अच्छा नहीं होता। तब नैसर्गिक प्रेरणा कुंठित हो जाती है, जीवन में अन्य विषय—समस्याएँ हावी हो जाती हैं। अमरीका में मैंने देखा अनेक स्त्रियों की नैसर्गिक प्रेरणा मर जाती है। वह अर्थ चिन्ता में, लाभकर रोजी के चक्कर में पड़ी रहती हैं जो, अपने आपमें चाहे जितनी अच्छी बात हो पर जो उनके नारीत्व को समाप्त कर देती हैं। सो इस विषय में हमें अपना रास्ता भी सोचना चाहिए। यदि तुम कुवेर मसुई से शादी नहीं करना चाहती तो दूसरा वर ढूँढना चाहिए। निर्णय-चलन तुम करोगी—मैं कोई राक्षस नहीं कहलाना चाहता—अपनी बेटी पर अपना निर्णय लाद कर!"

पिता बेटी को शान्त करना चाहता था, सान्त्वना देना चाहता था। बेटी को पिता के इस प्रयत्न पर दया आ रही थी। पर इस प्रयत्न के पीछे जो अकथनीय प्यार छिपा था उसका भी भान उसे था और वह पिता की मनोदशा के विपरीत कुछ कह न सकी। "मैं अभी कालेज में अपनी पढ़ाई समाप्त कर लूँ। एक वर्ष का कोर्स बाकी है। मैं छोड़ना नहीं चाहती।"

"बेशक, मैं सहमत हूँ," पिता ने कहा," तो अब हम और कुछ कहना नहीं है न? हम एक दूसरे को स्पष्ट रूप से समझते हैं न?'

"हां," जागुई ने अनिच्छापूर्वक धीमे स्वर में कहा।

"अच्छा तो—" वह रुका और जागुई के देखते उन्होंने वह दोनों कार्ड अपनी जेब से निकाले और उनके अनेक टुकड़े कर फेंक दिए। आओ, घर चलें, रात हो रही है।" वह चल दिये।

रात सचमुच हो चली थी। देवदारु वृक्षों के नीचे खद्योत माला चमकने लगी थी।

६

एलेन कनेडी अशान्त मन मोटे गद्दों पर करवटें बदल रहा था। जापानी बिस्तर धोखेबाज थे। लेटने पर पहले पहल तो वह बहुत मुलायम मालूम होते थे—मोटे गद्दे कोमल परों से भरे और रेशम से ढके हुए और नीचे की मोटी दरियाँ। पर थोड़ी देर लेटे रहने के बाद नीचे की लकडी के फर्श की सख्ती जैसे धीरे धीरे ऊपर आ जाती और जिसकी हड्डियों से लोहा लेने लगती। पर असली बात यह है एलेन काफी थका हुआ नहीं था। शत्रुभाव, हर्षोन्माद और वासना से उसका खून उबल रहा था। उस सुन्दर लड़की ने उसके सयम को, उसकी योजनाओं को उसकी आदतों को—सबको अस्तव्यस्त कर दिया। युद्ध-काल में सामान्य सिपाहियों के बर्बर असयमित जीवन से वह घृणा करता था, पर अब असयम की वही वासना उसे अपने भीतर दिखाई दे रही थी। उसे विश्वास न था कि स्वार्थ और वासना से प्रेरित होकर किसी स्त्री के शरीर का उपभोग करने की भी क्षमता उसमें है, पर आज वह उसमें स्पष्ट, सबल और सक्रिय थी। उसने सकल्प किया था कि अपनी वासना की तृप्ति वह कभी वेश्या घर से न करेगा, पर आज वह अदम्य वासना उसके विरुद्ध उमड़ रही थी। उसका मन चाहता कि वह उस लड़की का ध्यान एक

सुन्दर चित्र के रूप में करे, पर वह उसे केवल एक रमणी रूप में ही सोच पाता।

एकाएक वह उठकर बैठ गया, अपनी लम्बी बाँहों से अपने पैर समेट कर घेर लिए और सर घुटनों पर झुका लिया। उसका मन उद्विग्न था, प्रम और वासना का यह घोल उसे खल रहा था। उसने सोचा प्रम और वासना की यह अभिन्नता शायद उसकी माँ से उसे मिली है—उसकी माँ वह लघु शरीर रमणी जिसमें अद्‌भुत इच्छा शक्ति भरी थी। एक वेश्या के सम्मुख तो वह नपु सक हो जाता था। कुछ ऐसा था ही वह। वासना तृप्ति के पहले प्रेम उसके लिए आवश्यक था। क्या यह उसके पु सत्व के लिए लज्जा की बात न थी? ऐसे युवक—जगली जीवों जैसे सिपाही—भी सेना में थे जो वासना से उबलते हुए वेश्यालय में जाते और डींग हाँकते हुए वापस आते। उसे ईर्ष्या हो रही थी सबसे अधिक इस बात पर कि वह अपने को जगली या असभ्य नहीं समझते थे। सेवा में ऐसे ठूस भरे हुए थे। और यह लोग बडे मजे की जिन्दगी बसर करते थे। पर वह स्वयं तो जैसा था। दुश्यन्त जरासन्ध न बन सकता था।

वह उठ खड़ा हुआ। कहाँ तक बहाना करे कि उसे नींद लगी है? अपनी शाल उसने लपट ली। हर जापानी होटल अपने अतिथियों को ओढने के लिए शाला देता है। सुरुचि जापान का अचूक गुण है और शायद इसीलिए यह देश उसे प्यारा भी लगता था। सस्ते सूती कपडे नीले और सफेद रगों में सुन्दर ढग से बनाए गए थे। जापानियों की सुरुचि म चूक तभी आती जब वे पश्चिमी ढंग अपनाने की कोशिश करते। जापान की मनोहर छींटें, सुन्दर बर्तन मुलायम रेशम और सबसे अधिक सुन्दर उनके घर—यह सब उसकी माँ का बहुत ही आनन्ददायक होंगे—बशर्ते वह इस आनन्द उपयोग के लिए तैयार हो। श्रीमती सकाई ने आज दोपहर उसे अपने घर मे प्रवेश नहीं करने दिया था लेकिन फिर भी उसने घर का भीतरी भाग—सुन्दर कमरे, कागजों के आवरण, सूर्य के हीरक प्रकाश में उनका सौन्दर्य सब देख लिया था। कमरों के बाद फुलवाड़ी जिसमें एक झरने की रुपहली धारा उसे दिखाई दी थी। अभी तक शिक्षित

जापानियों से मिलने का सुयोग उसे मिला ही न था। अधिकारी अमरीकी छावनियों में किसी भी जापानी को लाने के सख्त विरोधी थे। रेलगाड़ियों पर भी जापानियों से मिलने की इजाजत नहीं थी। निम्न श्रेणी के जापानियों से मिलने की उसे स्वयं इच्छा नहीं थी। उसकी दृष्टि में एक निम्न श्रेणी का जापानी और विशेषकर जापानी महिला निम्न श्रेणी के अमरीकियों से भी बहुत नीचे जीव थे।

लेकिन लताकुंज के नीचे जिस सुन्दर लड़की को उसने देखा वह इसी घर का उजाला थी और उसका नाम जोशुई—उसका उच्चारण भी वह न कर सकता यदि जोशुई ने स्वयं उसे न सिखाया होता। उसका सुन्दर चेहरा तो वह भूल ही नहीं सकता था, कितना पवित्र कितना मोहक बड़ी बड़ी आँखें और भरा हुआ अधर। पूर्वी लोगों की आँखें उसे पसन्द आने लगी थीं और वह अंग्रेजी भी बिल्कुल अमरीकियों की तरह बोलती थी यद्यपि सरलतापूर्वक नहीं उसका लहजा अच्छा था और वाणी कोमल। उसने उम्दा पालन पोषण पाया था और वह भी असाधारण। अच्छा पालन पोषण पाने वाली लड़कियाँ अपने आप को छिपाती थीं और अमरीकियों को अपने से मिलने का कोई अवसर ही न देती थीं। किन्तु जोशुई अमेरिका में रह चुकी थी और उसका ज्ञान परिमार्जित था। फिर भी वह लज्जालु थी। और यदि वह लज्जालु न होती तो शायद उसका मन न मोह सकती थी।

वह दरवाजे पर खड़ा था जो एक छोटे से कोने पर के बाग में खुलता था—यह बाग होटल की बाहरी दीवाल के मोड़ से कुछ भी बड़ा नहीं था। फिर भी उसमें एक सरोवर था—छोटा सा और दो एक बौने पेड़ भी थे। उस द्वार पर खड़े-खड़े उसके मन में प्रश्न उठा—आखिर इस लड़की जोशुई से मैं क्या चाहता हूँ। इस प्रश्न के साथ एक और परिकल्पना उठी—यदि मैं अपनी लालसा को बढ़ने देता हूँ या यों कहें कि उसकी तुरन्त रोक थाम नहीं करता तो उसका परिणाम क्या होगा। जाहिर था कि इस मामले में परेशानी सामने थी और सम्भव था दिल टूटने की नौबत आ जाय। दूसरा कोई नतीजा हो ही नहीं सकता था। जोशुई उन

तितलियों में से नहीं थी जिनको प्यार करके परे हटा दिया जाय।

रात अँधेरी और शान्त थी। छोटी-छोटी दीवालों के पार अँधेरे आसमान म दूर के पहाड़ों की रेखाएँ और भी अन्धकारमय प्रतीत होती थीं। वह—एलेन केनेडी—इस क्योटो शहर के ऐतिहासिक सौन्दर्य को देखने आया था पर अभी तक देख कुछ न सका था। तो फिर अपनी इस योजना को ही वह कार्यान्वित क्यों न करे। पर कोई भी निश्चय करने के लिए रात का यह समय ठीक ही कहाँ था ?—यह वक्त चौबीस घण्टों में सबसे बुरा समय है जब मन और मस्तिष्क शिथिल और रंजीदा से हों, जब अपने भीतर का गुनारू अपनी आत्मा पर की आस्था को भी डिगा रहा हो विकल्प ने उसे झकझोरा हो। कल सुबह उठकर वह अपनी गाइड बुक देखेगा और अपनी योजना बनाएगा। क्योटो शहर में उतना ही रुकेगा जितना उसके ऐतिहासिक सौन्दर्य के देखने के लिए आवश्यक होगा और फिर टोकियो वापस चला जायगा। व्यस्त रहने से वह इस लड़की जोशुई को भूल जायगा। यह भी सम्भव था कि वह खुद ही अपने आप को छिपा ले जैसे और जापानी लड़कियाँ छिप जाया करती थीं।

एक निश्चय हो जाने से उसके मन का बोझ हलका हो गया। वह फिर लेट गया, आँखें बन्द कर लीं। शरीर की मास पेशियाँ अब कुछ ढीली पड़ गईं, हड्डियों से गद्दों का द्वन्द्व बन्द हो गया और आराम और गर्मी महसूस होने लगी। खुले दरवाजे के सामने खड़े-खड़े उसका शरीर ठंडा हो गया था।

७

दूसरा दिन आया। अगर पानी बरस रहा होता तो जोशुई के लिए घर रुके रहना आसान हो जाता। कालेज में उसे केवल गणित का घण्टा

पढना था और गणित से उसे केवल अरुचि थी। उसे कुछ जुकाम भी था या वह कल्पना कर सकती थी कि उसे जुकाम है। रात नींद में भी वह अशान्त रही थी और तड़के जब जगी तब देखा गद्दे नीचे से खिसक गये थे। हल्का मुलायम तकिया लेकर लेटी थी अगर सख्त जापानी तकिया लेकर लेटती तो गर्दन मजबूती से उसम जमी रहती और वह करवट भी न ले सकती। दूसरी जापानी लडकिया ने ऐसा तरीका सीख लिया था पर जोशुई न सीख पायी। उसके साथ यही तो दिक्कत थी—जीवन जैसा यहाँ या वैसा वह स्वीकार न कर पायी थी और न स्वीकार करने का सकल्प ही था। उसके माता पिता उसकी अपेक्षा अधिक बहादुर थे मतलब यह कि उसके पिता मजबूर करते और माँ मन्जूर कर लेती और यों उनका जीवन पूरा का पूरा जापानी बन चला था। और इसीलिए जोशुई इस व्यवस्था के विरुद्ध अपने छोटे मोटे विद्रोह बनाये रही। जापानी तकिये की अस्वीकृति इन्हीं विद्रोहों में से एक थी। जोशुई का विद्रोह अपनी माँ को बल देने के निमित्त भी था।

पर दिन सुहावना था। आसमान साफ था। इस स्वच्छ आसमान म सूरज की किरणें नाचने लगीं, दूर पर्वत की चोटियों के पास बादलों की झीनी झीनी सी रेखा थी जो सूर्य के प्रकाश में पिघल चली। विवश होकर जोशुई को बिस्तर छोड़ना पडा और जब दिन इतना स्वच्छ और सुहावना था तो विवश होकर उसे सुन्दर नवीन पीत वस्त्र धारण करने पड़े। जाने क्यों उसका मन हो रहा था कि आज वह अपनी जापानी घाँघर पहने लेकिन तब स्कूल में वह तमाशे की चीज बन जाती। जीवन स्पष्टतः विरोधी विभागों म बँट रहा था।

पर ये पीत वस्त्र भी मुलायम थे, कड़े-कड़े बटन नहीं लगे थे, गर्दन पर कामदार सफद कालर उसके काले बालों से मिलकर सुहावना मालूम हो रहा था। अपने बालों में उसने तेल नहीं लगाया, यह भी एक अन्तर उसम दूसरी लड़कियों से हो गया। छोटे-छोटे मुलायम बाल उसकी कर्ण-पाली से खेल रहे थे। वह अगर घुँघराले नहीं थे तो बिल्कुल सीधे भी नहीं थे।

कनेउ के लिए जब वह गयी तो पिता ने तेज निगाहों से उसे देखा।

"आज मैं नियत समय पर कालेज नहीं जाऊँगी," उसने कहा, "आज मैं कुछ जल्दी जाऊँगी जिससे भूमिति पढने के लिए मुझे एक घण्टे का समय मिल जाय।"

पिता ने समझा कि इसका तात्पर्य यह है कि जोशुई अमरीकी युवक से सम्भावित मुलाकात करना चाहती है। यदि वह विदेशी उसकी खोज करेगा भी तो कालेज वह उसी समय आयेगा जिस समय कल उसने जोशुई को वहाँ देखा था।

"जल्दी जाने में ठंडक रहेगी," उन्होंने उत्तर दिया, "आज कल की अपेक्षा दिन अधिक गरम रहेगा।"

भोजन करते समय पूरी शान्ति रही। माँ एक शब्द भी नहीं बोलीं। चुपचाप तीनों उठे। जोशुई तुरन्त फुलवाड़ी में चली गयी। फूल, पत्तियाँ टहनियाँ जो कुछ मिले चुनकर सुन्दर गुलदस्ता बनाने के लिए। उसके लिए यह काम मनोरंजन का भी था और उपहास का भी। पिता उसके इस काम की आलोचना किया करते, कभी-कभी प्रशंसा भी करते और इसीलिए वह प्रशंसा स्मरणीय हो जाती। वसन्त का मौसम था। जोशुई फुलवाड़ी में घूमकर मनचाही चीजें ढूँढने लगी। फूल अभी कम थे—गर्मी में फूलों की बहुतायत होती है। और गुलदस्ता मौसम का प्रतीक होना चाहिए। खोजते खोजते उसे मन चाहे फूल पत्तियाँ—सब कुछ मिल गया। सब कुछ लेकर एक मेज के पास [illegible] उसने गुलदस्ता सजाना शुरू किया। उसके पिता अपने [illegible] में बैठे उसका यह व्यस्त कार्यक्रम देख रहे थे। गुलदस्ता [illegible] जोशुई कुछ दूर हटकर उसका निरीक्षण करने लगी और [illegible] आवाज आयी "सुन्दर! बहुत सुन्दर!!"

जोशुई घूम कर मुस्कराने लगी। [illegible] पश्चिमा निकलने के अपताल जाने को तैयार खड़े थे। [illegible] सुन्दर [illegible] थे उनकी पैन्ट [illegible] हाथ में [illegible] कुछ [illegible] बिल्कुल जापानी नहीं मालूम [illegible]

इतनी आसानी से नहा पहन सकता था। अमरीका की यादगार जोशुई के मन में उन्हाने जगा रक्खी थी। पर यह बात कही जाने वाली न थी और उसने कही भी नहीं।

"बहुत सुन्दर," उसके पिता ने कहा "फूलो के रङ्गों की सजावट के सम्बन्ध मे तो मैं कुछ नहीं कह सकता, पर हाँ तुम्हारी रचना मौलिक है।" कह कर वह मुस्कराये और चल दिये।

इस प्रकार दिन प्रारम्भ हुआ और बढ चला।

एक के बाद दूसरी सड़क पार करती हुई जोशुई आगे बढी। वह यह नहा स्वीकार कर सकती थी कि इन सड़कों पर वह किसी को खोज रही थी। पर कम से कम उसने अपना नियत रास्ता बदला नहा। स्कूल वह जल्दी आयी, लड़कियों के कमरे में गयी और अपनी डेस्क पर बैठकर तत्परता से अपना काम शुरू कर दिया। मन मस्तिष्क को व्यस्त रखने के लिए भूमिति अच्छा सामान था। हाँ, उसने वृत्त बनाये, वृत्तों के भीतर त्रिकोणों का अध्ययन किया कोणों की नाप जोख की—सब रस्म अदायगी थी, सब निर्जीव, यद्यपि अपने आप में सुन्दर। इस प्रकार बनी हुई ये आकृतियाँ निर्जीव थी, जिनमें कभी जीवन था उनके अवशिष्ट ढाँचे मात्र सयुत ककाल जिनसे आत्मा विमुक्त हो चुकी थी लेकिन फिर भी चचल कल्पना और उन्मन हृदय को शान्ति देने में समर्थ। बड़े ध्यान से जोशुई काम करती रही, जब तब नमस्कार का उत्तर देने के अतिरिक्त उसने सर भी नहीं उठाया। और इसी प्रकार दिन बीतता रहा। वह अपनी कक्षाओं में गयी और चली आयी अपने को दूर-दूर असम्बद्ध और विरक्त महसूस करता हुई सी। शाम को और दिनों से पहले वह घर चली गयी। सड़कें बिल्कुल सुनसान थीं। उसने मन में सोचा जरूर वह अपने साथियों के पास अपनी टुकड़ी में चला गया है। और न जाने का कोई कारण भी तो न था। निस्सन्देह अब वह उसे कभी न देख पायेगा।

दूसरे दिन उसका तबियत अच्छा नहीं थी। सवेरा पिछले सवेरे की अपेक्षा अधिक सुहावना था। पर जोशुई जब जागी तब निरुत्साह और बेमन। वह अपने कमरे में ही पड़ा रही और जब वह बाहर न निकली

तो माँ ने नौकरानी यूमी को भेजा।

"मैं रजीदा हूँ" जोशुई ने कहा "मेरा ख्याल है मैं बीमार हूँ।"

यूमी यह सनसनी खेज समाचार माँ बाप के पास ले गयी। सुनकर वे एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

"तुम्हारा व्यवहार उसके प्रति कठोर रहा है," श्रीमती सकाई ने अपने पति से कहा। वह स्वय इतनी विनम्र थी कि यह उलाहना भी बड़े ही विनत शब्दों मे कह पायी।

"मैं तो बिल्कुल कठोर नही रहा" डाक्टर सकाई ने कहा, "उसके गुलदस्तों की प्रशसा के अतिरिक्त कल तो मैंने उससे कुछ कहा भी नहीं। और तुम जानती हो रात को मे बडी देर मे घर आया था।"

"कल नहीं परसों," श्रीमती सकाई ने जोर दिया।

"परसों तो हम दोनों एकमत थे" डाक्टर सकाई ने दृढता के साथ कहा, "और तुम्हे याद होगा कल सुबह वह कितना प्रसन्न थी और उसने कैसे गुलदस्ते सजाये थे। कल तो वह बिल्कुल शान्त थी।"

"आज सवेरे गुलदस्ते के फूल सब मुरझा गये हैं," श्रीमती सकाई ने तर्क किया "तुम स्वय देख लो। इसका अर्थ यह है कि कल भी उसके हाथ गर्म थे—उसे बुखार था।"

अपनी बात कहते हा श्रीमती सकाई उठ खड़ी हुई और जोशुई के कमरे की तरफ चल पड। चुपचाप वहाँ जाकर अपनी बेटी पर निगाह गड़ाकर वह खड़ी हो गई। जोशुई के हाथ रेशमी गद्दे के बाहर फैले हुए थे, उँगलियाँ मुडी हुई और निश्चल था। श्रीमती सकाई ने अपनी बेटी की दाहिनी हथेली म अपनी तीन अँगुलियाँ रख दी।

"तुम्हारे बुखार है, तुम्हारा शरीर रूखा है मै जाकर तुम्हारे पिता से कहती हूँ।"

'वे तो मुझे कडुवी-कडुवी दवा देंगे।" जोशुई ने शिकायत की।

"उससे तुम्हें लाभ ही होगा।" माँ ने कहा—

वह उठ खड़ी हुई और चिन्ताभरी दृष्टि से अपनी बेटी के चेहरे को देखती रही।

"मुझे बताओ तुम्हें क्या तकलीफ है।" उन्होंने बेटी को पुचकारा।

"कुछ नहीं," जोशुई ने एक आह भरी, "यही तो मुश्किल है—मुझे कुछ भी महसूस नहीं होता कुछ भी नहीं। मेरा मन सब चीजों से शून्य हो गया है।

"यह तो बुरी बात है।" श्रीमती सकाई ने कहा, "इस अवस्था में तुम्हें कुछ न कुछ तो महसूस होना ही चाहिए, चाहे असन्तोष ही क्यों न हो।"

जोशुई ने उत्तर नहीं दिया और श्रीमती सकाई उत्तेजित हो अपने पति के पास चली गयीं। "तुम्हें जाकर खुद देखना चाहिए। बच्ची को कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है। वह वहाँ लेटी हुई है उसकी हथेलियाँ गरम हैं और वह समझ नहीं पाती कि तकलीफ क्या है।"

"तब तकलीफ कुछ भी नहीं है।" डाक्टर सकाई ने तेजी से कहा। वे उठ खड़े हुए और कमरे से बाहर चले गये, रास्ते में केवल अपना डाक्टरी बैग लेने के लिए रुके। बैग बिल्कुल दुरुस्त था—सब चीज ठीक से सजाई हुई। वे अपनी बेटी के कमरे में गये। दरवाजा खटखाया और अन्दर चले गये।

"तो तुम्हें कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है?" उन्होंने प्यार से कहा।

'कुछ नहीं" जोशुई ने उनकी तरफ देखे बिना कहा।

"तुम फिर मुझसे कुछ छिपा तो नहीं रही?" उन्होंने कुछ तेजी से पूछा।

"कुछ नहीं" उसने उत्तर दिया।

डाक्टर ने थर्मामीटर जोशुई के मुँह में लगाया और उसके बगल में चिन्तित बैठ गये। "कल तुमने उस अमरीकी को नहीं देखा?" वे बेधड़क पूछ बैठे।

जोशुई बोल न सकती थी, सर हिला दिया। डाक्टर ने प्रतीक्षा की, थर्मामीटर हटाया। "मैंने किसी को नहीं देखा," जोशुई ने कहा, "मैं स्कूल गयी, अपना काम किया और चली आयी।"

"यह विचित्र अनुभूति शून्यता तुम्हें कब से महसूस हुई ?" उन्होंने पूछा, "तुम्हें बुखार तो नहीं है।"

"सुबह मैं जगी और मेरा मन न हुआ कि मैं उठूँ।"

डाक्टर सकाई ने समझदारी से काम लिया, अपने विचार जोशुई पर व्यक्त न किये। क्या यह अनुभूति शून्यता इसलिए है कि कल उसने उस अमरीकी युवक को नहीं देखा ?

"ऐसी स्थिति में तुम्हें चुपचाप यहाँ बिस्तर पर पड़े रहना चाहिए।" उन्होंने कहा, 'हल्का खाना खाओ, सो सको तो सो जाओ और अपने दिमाग को परेशान मत करो। अगर मेरी जरूरत हो तो बुला लेना, मैं तुरन्त आ जाऊँगा।

"धन्यवाद पिताजी !'

डाक्टर उठ खड़े हुए और अपनी बच्ची के चेतना शून्य चेहरे को देखते रहे। जोशुई ने उनकी ओर नहा देखा। उसने अपनी पलकें नीची करलीं। और धीरे धीरे आँखें बन्द करलीं। डाक्टर ने इतना तो मान लिया कि जोशुई का चेहरा पीला था और इसलिए एक दिन का विश्राम उसके लिए लाभ कर होगा। उन्होंने अपना बैग उठाया और चल दिये। बाहर जोशुई की माँ प्रतीक्षा कर रही थीं। वे बोले," जोशुई बीमार नहा है। सम्भवत मौसम के अचानक बदल जाने से उसकी यह हालत हो गयी है। जानती ही हो जाड़ा इस वर्ष बहुत देर मे समाप्त हुआ है और अचानक हवा बदल गयी है। जोशुई जैसी भावुक लड़की क लिए ऐसा परिवर्तन हमेशा तकलीफ दे होता है। मैंने उसे अपने बिस्तर पर ही रहने को कह दिया है।

"धन्यवाद" श्रीमती सकाई ने विनम्रता से कहा, "अब मुझे मालूम हो गया कि मुझे क्या करना है।"

डाक्टर सकाई चले गये। उनके जाने के बाद घर बिल्कुल शान्त हो गया। श्रीमती सकाई ने सबसे पहले गुलदस्ते को बदला लाल नीले रङ्ग के फूलों को निकाल दिया, गुलदस्ते का बर्तन भी बदल दिया। फिर बास की एक नयी शाख लेकर उसके साथ साथ दो सितारे जैसे

सफेद फूलों का मेल मिलाया और गुलदस्ता बन गया। फूलों का चमन और सङ्गठन उन्होंने कभी सीखा नहीं। पर आज का यह गुलदस्ता पसन्द आया विशेषकर इसलिए कि डाक्टर सकाई उसमें दोष निकालने के लिए मौजूद नहीं हैं। गुलदस्ता रखकर श्रीमती सकाई एक क्षण देखती रहीं। तब तक यूमी ने आकर कहा, "आज घर में मछली नहीं है।"

"क्या कहती है?" श्रीमती सकाई ने कुछ उत्तेजित होकर कहा, "अभी कल एक मछली थी। मैंने उसे छोटे सरोवर में डाल दिया था, वही काफी होगी।"

"वह मर गयी।" यूमी ने कहा।

"असम्भव" श्रीमती सकाई जैसे चीख उठी।

पर बात ऐसी ही थी। किसी अज्ञात कारण से मछली मर गयी थी। यूमी ने उसे छोटे तालाब से निकाल लिया था। यह छोटा तालाब भी शीशे का एक बड़ा बर्तन था जो रसोई घर के पास जमीन में गाड़ दिया गया था और जिसमें बाजार से लाकर मछली रक्खी जाती थी ताकि वे जिन्दा और ताजी रहें। वह मछली यूमी के हाथ में निर्जीव पड़ी थी।

"इसे गाड दो।" श्रीमती सकाई ने रंजीदा होकर कहा। मैं खुद बाजार जाऊँगी और मछली वाले से शिकायत करूँगी। वजन बढ़ाने के लिए उसने मछली को कुछ ज्यादा खिला दिया होगा।" मछली का बदन फूला हुआ था।

बाजार दूर नहीं था और यूमी घर में थी ही। फिर भी वह जोशुई को बताने के लिए गयी कि मैं बाजार जा रही हूँ। जब उन्होंने पर्दा हटाया तो जोशुई सो रही थी। श्रीमती सकाई ने उसे जगाया नहीं। चुपचाप चली आयीं। उन्हें खुशी हुई कि जोशुई को चाहे जो तकलीफ हो उसने जोशुई की नींद नहीं छीन ली।

"वह सो रही है," उन्होंने यूमी से कहा, "मैं अभी तुरन्त वापस आ जाऊँगी।"

"अच्छी बात है मालकिन," यूमी ने कहा वह कुछ कपड़े धोने की तैयारी करने लगी। जब तक वह कपड़े धो चुकेगी तब तक मालकिन बाजार से आ जाएँगी और वह मछली और साग तैयार करने के लिए फुरसत पा जाएगी।

दिन बड़ा सुहावना था। धूप बढ़िया गरम थी यूमी नित्य की भाँति बहुत तड़के उठी थी। कपड़े धो चुकने के बाद उसे कुछ नींद सी महसूस होने लगी। घर शान्त था। रसोई घर में वह चुपचाप कुछ मिनटों के लिए सो सकती थी। वहाँ उसे कोई सोते हुए देख भी न सकता था। अगर मालकिन वहाँ आ भी जाय तो वह कह सकती थी कि वहाँ वह चूल्हा जलाने के लिए उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। सो लकड़ी का एक तकिया बनाकर वह रसोईघर के फर्श पर लेट गयी और तुरन्त उसकी आँखें बन्द हो गयीं। वह एक देहाती लड़की थी—स्वस्थ और हर क्षण खाने और सोने के लिए तैयार। और जब वह सोती थी तो इतनी गहरी नींद कि उसे जगाना आसान न था। इसीलिए वह यह न सुन पायी कि मकान के सदर दरवाजे पर कोई खटखटा रहा है। फुलवाड़ी के फाटक में कभी ताला नहीं बन्द होता था और श्रीमती सकाई उसे थोड़ा सा खुला छोड़ गयीं थीं।

इस खटखटाहट से जगने वाली जोसुई थी। वह हल्की नींद सोती थी और उसका कमरा मकान के एक पार्श्व में सदर दरवाजे से नजदीक ही था। उसने दरवाजे पर आवाज सुनी। लकड़ी के किवाड़ों पर पतले बन्द मुट्ठी की और फिर खुले हाथ का थपथपाहट और तब घण्टीका बजाना, वह जगी, सुनती रही और तब उसने पहले मा को और फिर नौकरानी को पुकारा। कोई न बोला। दरवाजे की खटखटाहट और तेज होती गयी। सो मजबूर होकर उसे खुद उठना पड़ा। अपनी पीली घांघर पहनी, बाल सँवारे और बाहर आयी। चुपचाप दबे पैर वह निकली यह देखने के लिए कि बाहर कौन है और इस सावधानी से कि बाहर का व्यक्ति उसे न देख पाये।

वही था। दरवाजे पर किवाड़ खड़खड़ा रहा था और घर में

उत्तर देनेवाला न था। वह पीछे हट गयी, लकड़ी की दीवाल के सहारे ताकि आगन्तुक उसे देख न पाये। उसने सोचा चुपचाप खड़ी रहने पर आगन्तुक उसकी उपस्थिति का अनुमान न कर सकेगा वह फिर वापस चला जायगा। वह चुपचाप खड़ी रही। दरवाजे का खटखटाना बन्द हो गया। तब उसके मन में आया कि झाँककर देखे वह चला गया या नहीं। बड़ी सावधानी से उसने अपना सर बाहर निकाला अमरीकी गया नहीं था। वह दरवाजे की सीढी पर बैठा इधर उधर देख रहा था। वह जल्दी से पीछे हट आयी, पर उतना जल्दी भी नहीं। उसने सुना कि वह हँस रहा है। उसे उसके धीमे हास्य मय और चुटकी भरे शब्द सुनायी दिये,—"मैं तुम्हें देख रहा हूँ जोशुई।"

वह हिली नहीं, उसकी सास बन्द होने लगी। यदि वह अपने कमरे मे भाग जाय तो क्या वह उसका पीछा करेगा। तब तो यह बड़ी बुरी बात होगी। उसके कमरे में तो उसे आ ना ही नही चाहिए। माँ कहाँ गयी? यूमी कहाँ गयी? उसे सोता छोड़ कर तो दोनों बाहर जा नहीं सकतीं।

वह गम्भीर स्वर, हँसी से भरे हुए फिर सुनायी दिये, "जोशुई तुम मेरे पास आओगी या मैं तुम्हारे पास आऊँ?"

इस प्रश्न ने जोशुई को विवश कर दिया। उसने अपनी घाघर की कमरबन्द कसी, अपनी सादी पोशाक सँभाली और पूरी मर्यादा के साथ बाहर आयी।

"मेरी माँ जरा देर के लिए बाहर गयी हैं। वह जल्दी ही वापस आ जायेंगी। तब तक मैं नौकरानी को आप के पास भेजती हूँ इतना कहकर वह तुरन्त घर के अन्दर चली गयी और यूमी को खोजने लगी। पर यूमी का कहीं पता ही नहीं चला। उसने कई बार उसे पुकारा पर कोई उत्तर न मिला। रसोई घर सूना जान पडता था। यूमी नहीं मिल रही थी। तो अब उसने पास स्वय दरवाजे पर जानेके अलावा और चारा ही क्या था।

"मेरी माँ जल्दी ही वापस आ जायेंगी।" उसने फिर लडखडाते हुए कहा। उसका चेहरा मारे शर्म के तमतमा रहा था।

"मैं तुम्हारी माँ से मिलने नहीं आया," उसने कहा। वह उठ खड़ा

हुआ, टोपी उतार कर हाथ में घुमाने लगा।

जोशुई असहाय चुपचाप खड़ी रही, वह क्या करे? वह उसे अन्दर बुला नहीं सकती थी। माँ इस अजनबी का अन्दर आना समझ नहीं सकती थी—कोई भी नहीं समझ सकता था।

"जोशुई सकाई, तुम स्कूल नहीं गयीं?" उसने पूछा।

"नहीं, मेरी तबियत कुछ भारी थी।"

"तुम तो खिले गुलाब सी दिख रही हो" उसने उत्तर दिया।

जोशुई के हाथ बँध गये और अनजाने ही वह हाथ मलने लगी। उसकी यह स्थिति देखकर अमरीकी युवक बोला।"मेरा ख्याल है तुम नहीं चाहती कि मैं यहाँ रुकूँ।"

"ऐसी बात नहीं है।" जोशुई ने उलाहने का खण्डन किया, "बात यह है कि इस समय मैं घर मे अकेली हूँ और इसलिए——।"

"... . तुम नहीं जानतीं कि मेरे साथ क्या व्यवहार करो क्योंकि तुम एक अच्छी लड़की हो।"

यह कहना तो बिल्कुल गलत था कि जोशुई अकेली थी। उसने बिना सोचे समझे यह बात कह दी थी। उसने अर्धस्फुट स्वर मे कहा, "कृपया चले जाइए।"

बेशक जोशुई को यह बात नहीं मालूम थी कि उसकी आँखों में चमक थी, उसके कोमल होठों में लालिमा थी और उसका नन्हा सा मनोहर मुखड़ा, जब उसने अमरीकी की ओर देखा, उस फूल की तरह था जो सूर्य का प्रकाश पाकर खिल रहा हो। वह एक कदम उसकी तरफ बढ़ा, उसकी वासना का तीव्र उफान जिसे वह अब तक दबाये हुए था उसके सारे शरीर पर हावी हो गया। अब वह उसे रोक न सकता था। वह अन्धा हो गया था। वह जोशुई का चेहरा न देख सकता था, अपने कदम न रोक सकता था। जोशुई के निकट पहुँच वह उसके ऊपर झुका अन्तर्चेतना में इस बात का प्रयास करता हुआ कि वह अपनी अदाम वासना को रोके, पर यह जानता हुआ कि यह वासना रोकी नहीं जा सकती। केवल उसके अधर चूम लेना ही काफी होगा। एक

युवती के अधर, कोमल और पवित्र और इस फुलवानी में जहाँ की वायु सुगन्धित थी और जहाँ झरने की कलकल के अलावा और कोई शब्द न था। वह अकेली थी, खुद उसीने बताया था कि वह अकेली थी। वासना की पीड़ा से दबे हुए उसने तेजी से अपनी बाँहों में कर्मभेदी कोमलता के साथ उसे समेट लिया। तब उसने उसका मुखड़ा देखा, ठीक उसकी आँखों के नीचे वह खिला हुआ फूल, उसके अधरों के नीचे लाल लाल कपोल। उसने अपना सर झुकाया और अपने अधर उसके अधरों पर रख दिये, उसकी उखड़ी उसासों को पीता हुआ। अपना एक हाथ उसने खाली कर लिया ताकि जोशुई का सर थाम सके क्योंकि वह उसे इधर उधर हिला रही थी। अचानक वह शान्त हो गयी, द्वन्द्व रुक गया और वह उसकी बाँहों में स्थिर हो गयी।

यही वह मुहूर्त था जिसका सपना वह सारी रात देखता रहा था वह मुहूर्त जिसकी कल्पना करने योग्य अनुभूति जोशुई में नहीं थी। आखिरकार वह उसकी बाँहों में लगभग बेहोश सी हो गयी। धीमे धीमे वह उससे अलग हुआ अपनी बाहों में अब भी उसे थामे हुए।

जोशुई उसकी ओर देख न सकी। उससे बच भगने की कोशिश भी उसने नहीं की। हाँ अपना सर घुमा लिया, अपना कपोल उसके कन्धे पर रख दिया ताकि वह उसका चेहरा न देख सके। वह झुका और अपना मुख उसके सर पर रख दिया, उसके बालों पर जो इतने कोमल इतने काले थे।

"*यह होना ही था*" उसने धीमे से कहा।

वह बोल न सकी, और जब वह नहीं बोली तब उसने उसकी ठुड्डी पकड़ कर उसका चेहरा अपनी ओर घुमाया। "*तुम जानती हो यह होना ही था?*" उसने पूछा।

"*मैं नहीं जानती*" धीमे से वह बोली "पहले मैंने कभी ऐसा नहीं किया।"

उसकी इस भोलेपन की स्वीकृति ने युवक का हृदय आनन्द से भर दिया।

" श्रो " कहकर अपना सर झुका लिया।

"अब नहीं" उसने मिन्नत की "पहली बार इतना ही बहुत है। मैं क्या करूँ? मुझे सोचना पड़ेगा कि आखिर इस सबका मतलब क्या है।'

"इसका मतलब यह कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

"तुम तो मुझे जानते नहीं।"

"प्यार करने के लिए पुरुष को स्त्री के परिचय की आवश्यकता नहीं रहती। प्यार करके ही वह उसका परिचय पाता है।"

"आह, यह जापान है।"

"तुम और मैं—पुरुष और स्त्री।"

जोशुई की निगाह फाटक पर थी, उसकी माँ वापस आ रही होंगी। निश्चय ही नित्य की भाँति वह बाजार गयी होगी और शायद यूमी भी साथ चली गयी है।

"मैं यहाँ रुक नहीं सकती, मेरी मा आ जायगी।"

"अच्छा है मैं उनसे मुलाकात कर लूँ।" उसने तुरन्त कहा।

'नहीं, नहीं" वह कुछ उत्तेजित सी बोली। "बात इतनी आसान नहीं है मेरे पिता अमरीकियों से घृणा करते हैं। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं।"

पिता का नाम आते ही वह उससे दूर हट गयी। युवक ने भी जोशुई के इस परिवर्तन को देखकर उसे रोका नहीं।

"क्या तुम हमेशा अपने पिता की आज्ञा मानती हो जोशुई?"

"हाँ मैं उनकी आज्ञा मानना चाहती हूँ।"

"क्या तुम मुझे एक मौका दोगी?"

"मौका?"—

"कि मैं तुम्हें अपना परिचय दूँ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?" जोशुई ने उसास भरी।

"मैं इसका रास्ता निकाल लूँगा डार्लिङ्ग।"

जोशुई इस डार्लिङ्ग शब्द को भूल चुकी थी, अब उसे भूल चुकी थी। एक बार केल्सन ने इस शब्द का प्रयोग उस लड़की के लिए किया था

जिसके साथ उसकी सगाई हो चुकी थी। यह एक प्यार का शब्द था। लालसा से ओत प्रोत गम्भीर स्वरों में इस शब्द को सुनकर वह काँप उठी। ऐसा प्यार उसे कहाँ मिल सकेगा? ऐसा प्यार तो केवल अमरीका में ही मिल सकता है। वह लोग प्यार करने से डरते नहीं।

अचानक उसने उसकी ओर भरपूर देखा। "मैं तुम्हारा विश्वास करूँगी एलेन। क्या मैंने तुम्हारे नाम का ठीक उच्चारण किया?"

"जैसा मैं तुम्हारे मुह से सुनना चाहता हूँ" उसने देखा कि वह फिर उसपर झुक रहा है। "ओह अब तो तुम्हें जाना चाहिए।"

"अब हम कहाँ मिलेंगे? क्या मैं यहाँ आऊँ?"

"नहीं! नहीं!! मुझे सोचने दो।"

"कल लताकुंज के नीचे?"

"हाँ।"

उसने फिर अपना सिर झुकाया और एक बार फिर जोशुई ने उसके सशक्त, कोमल और अनुनय भरे ओठों को अपने अधरों पर पाया। वह खो गये। इस बार जोशुई सब समझती थी। वह उसे प्यार करती थी। अचानक पत्तों की खड़खड़ाहट सुनायी दी। वे चौंके। उनके अधर बिछुड़े। दरवाजे पर छाये हुए बाँस के झुरमुट की ओर उन्होंने देखा। नये कोमल, हरे बाँस के पत्ते हवा के एक हल्के भँवर में नाच रहे थे। "कितना सुन्दर आश्चर्यमय!" जोशुई ने धीमे से कहा।

"क्या वहाँ कोई है?" उसने पूछा।

कुछ देर के लिए वे एक दूसरे को भूल गये और नाचते हुए पत्तों को देखते रहे। और तब उसे याद आया कि वह अब भी अमरीकी युवक की बाँहों में बँधी है। उसने अपने को अलग किया और घर के भीतर भाग गयी।

८

अपनी कमजोरी जोशुई को अकल्पनीय सी मालूम पड़ रही थी। आखिर वह इस सब के लिए तैयार कैसे हो गयी? इस उलझन से वह आश्चर्यजनक ढंग से सँभली और दूसरे दिन सवेरे अपने पात परिधान में कालेज के लिए चल दी। उसके हाथ में छोटा सा सफेद सा छाता था जिसके किनारे छोटे-छोटे फूल बने हुए थे उसकी बाँह के नीचे अच्छी खासी पोथियाँ था और हाथ में ताजा बनाया हुई पेंसिलों का एक बक्स था। इसीलिए न तो उसके माता पिता ने कुछ पूछा और न उसने कुछ बताया स्पष्ट था कि वह कालेज में डटकर काम करने जा रही है। यही उसकी इच्छा भी थी।

पर कालेज के फाटक तक पहुँचने से पहले ही वह उससे मिला। वह बहुत सवेरे से यहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसकी पोशाक नयी और साफ थी और वह नित से अधिक सुन्दर लग रही थी। उसकी आँखें सूर्य की धूप में चमकते हुए सागर जैसी नीली थीं।

"मैं यहाँ तुम्हें बुलाने के लिए आया हूँ।" जोशुई को देखते ही उसने साहसपूर्वक कहा।

वह डर गयी। आज के से दिन क्या किसी प्रकाशमय का रोना भी आ सकता था! उसने सोचा मुझे अपना आत्मनता न भूलना चाहिए। उसने तिरस्कार करने की कोशिश की? उसे इस बात का दुःख हुआ कि अन्य लड़कियों की भाँति वह चश्मा नहीं पहन आयी थी।

"मुझे प्रसन्नता है कि तुम इतनी सुन्दर हो," उसने कहा "तुम्हारे सौंदर्य से मग्न हो गया हूँ।"

"माफ कीजिए, मुझे स्कूल जाना है।" उसने अनुनय की।

वह गम्भीर हो गया। "जोशुई सफाई, मेरी छुट्टी के केवल पाँच दिन शेष हैं। क्योटो शहर में मैंने कुछ नहीं देखा—क्योटो जो संसार के सर्वाधिक प्रसिद्ध नगरों में है। क्या आज तुम मेरे साथ चलकर शहर में जो कुछ है दिखा दोगी—यह तुम्हारा कर्त्तव्य है देश प्रेम के नाते!"

भयभीत जोशुई की जबान बन्द हो गयी।

"क्या यह एक पवित्र कर्तव्य नहीं है?" उसने जोर दिया।" मैं एक अनजान अमरीकी हूँ। मैं तुम्हें इस बात की याद नहीं दिलाना चाहता कि हम तुम्हारे देश पर कब्जा किये हुए हैं। थोड़ी देर के लिए मान लो कि मैं एक यात्री हूँ। मैं अपने साथ जापान की सुन्दर अनुभूतियाँ वापस ले जाना चाहता हूँ। इसीलिए मैं सबसे सुन्दर शहर में आया हूँ। जब मैं फिर अमेरिका जाऊँगा—जापान फिर कभी न लौटने के लिए, तो मैं वहाँ हर एक को क्योटो शहर की बात बताऊँगा, कैसे मैंने अपनी यात्रा की; अपने जीवन का—सबसे आनन्दपूर्ण समय कहाँ बिताया, कैसे मैंने यहाँ की सुन्दर कृतियाँ देखीं जिन्हें मैं कभी भूल नहीं सकता।"

अमरीकी युवक की हँसती हुई नीली आँखों के दबाव में वह झुक गयी। हलका हास्य उसकी नस-नस में दौड़ गया। "तुम बड़े लेमावने हो पर मैं चल नहीं सकती। मैं अपने अध्यापक से क्या कहूँगी? सम्भव है कि कोई हमें एक साथ देखे मेरे पिता बहुत ही क्रुद्ध होंगे।"

उसके पौरुषमय कन्धे हिले। "माफ कीजियेगा। परिपाटी यह है कि स्त्री हमेशा सकट मोल लेती है। प्रलोभन की बात भुला दो। तुम्हें स्कूल जाना ही चाहिए।" हँसी की रेखा उसकी आँखों से विलीन हो गयी वे साथ साथ स्कूल के फाटक तक चले। युवक ने जोशुई की किताबें अपने हाथ में ले ली और जोशुई को याद आया कि अमरीका में कभी कभी लड़के उसकी किताबें ले चलते थे। यह वहाँ की परिपाटी थी। वह साथ साथ चल रही थी, मन ही मन इस लज्जा से दबी हुई कि वह नहीं चाहती थी कि उसके इन्कार को इतनी जल्दी स्वीकार कर ले। वह जो कर रही थी, ठीक था पर मन चाहता था कि विवेक की इतनी शालीनता उसमें न होती

तो अच्छा होता। कर्तव्या कर्तव्य का यह विवेक न होता तो गलत कामों का करना भी सुखदायी होता।

अपनी लम्बी लम्बी आँखों की कोर से वह उसे देख रही थी और वह उसकी ओर देख रहा था। उसकी आँखों में फिर नीलापन आ गया था और उसके अधर फिर कुञ्चित हो रहे थे जैसे वह हँसना चाहता हो।

"इन पुस्तकों को मैं लताकुंज की जड़ों में छिपाकर रख सकता हूँ।" उसने संकेत किया। "जड़ें मोटी हैं—एक दूसरी पर मुड़ी हुई और बड़ी बड़ी मैंने देखा है वे तुमको भी छिपा सकती हैं।"

"मैं स्वय रख दूँगी," उसने कहा—ये अविश्वसनीय शब्द उसने कहे।

पर वास्तव में उसने पुस्तकें छिपा ही दीं। किसी ने उसे देखा नहीं—अभी बहुत सबेरा था—उसने पुस्तकें जड़ों के नीचे रख दीं और युवक के पास आगयी और तब दोनों जल्दी जल्दी एक तङ्ग गली में चल [illegible]।

"क्योटो शहर की बाबत मुझे बताओ।" उसने कहा [illegible] ही वह शहर के सम्बन्ध में जानना ही चाहता हो और [illegible] व्यक्ति आत्मा को शान्त करने के लिए जोशुई गम्भीरता [illegible] बताने लगी।

"यह बहुत पुराना शहर है। एक समय [illegible] हमारी राजधानी रहा है। इसमें चौदह सौ पुराने [illegible] से अधिक व्यक्ति इसमें रहते हैं, इसमें प्राचीन [illegible] हैं जिन्हें संसार में सर्वोत्तम माना जाता है।

"मेरे छोटे से रहनुमा, मुझे [illegible]।" उसने कहा।

उसने सोचा फुलवाड़ी में [illegible] गुल्म, शान्त सरोवर, [illegible] ऐसे स्थान पर न ले गयी [illegible]।

"यह स्थान जो [illegible] जो बहुत प्रसिद्ध है। [illegible] से घिरा हुआ [illegible]

बालुका के निष्प्राण सागर में इधर उधर सूखी चट्टानों के द्वीप से खड़े थे। बालुका पर कोई चौड़ी वजनदार चीज स्थिर लम्बी निश्चल कुटिल रेखाएँ बनाकर चली गयी थी।

"यह फुलवाड़ी है!" उसने पूछा। एक क्षण के लिए वह अपने उद्देश्य को भूल गया। यहाँ कुछ ऐसा था जिसे वह समझ नहीं पा रहा था, एक अपरिमित महत्व, एक व्यापक शालीनता जो कल्पना में नहा समा रही थी।

"सब कुछ देख लोगे," जोशुई ने गम्भीरता पूर्वक कहा, "चाहो तो पत्थर गिन डालो।"

युवक ने पत्थर गिने। कुल मिलाकर पन्द्रह झुण्ड थे।

"यह सब द्वीप नहीं," जोशुई ने समझाया, "कुछ तो निश्चय जलमुर्ग के आकार के बनाये गये हैं।" अपनी उँगली से उसने इशारा किया। "और उधर वह जंगली वनरव के उपाकार में।" पत्थर अनगढ़े अपनी प्राकृतिक स्थिति में थे। जल और वायु ने ही इन्हें आकार दिया था और उन्होंने लाकर उन्हें यहाँ विश्राम कराया था। पर यह भी सच है कि वे जलमुर्ग जैसे दिखायी दे रहे थे।

"क्या तुम इस फुलवाड़ी को ठीक ठीक समझती हो?" युवक ने पूछा।

"नहीं, पूरा पूरा तो नहीं," जोशुई ने स्वीकार किया, "मैं तो केवल इसलिए कुछ जानती हूँ क्योंकि पिता जी मुझे यहाँ लाये थे। वह समझते हैं। कम से कम उन्हें इसका ज्ञान है। यह वाटिका अपने निर्माता की निर्मल आत्मा का प्रतीक है। यह प्रसिद्ध और बहुत प्राचीन वाटिका है। अगर यहाँ हम चुपचाप कुछ घण्टों तक रुकें तो इसे कुछ कुछ समझने लगेंगे।"

उसने अपना सर हिलाया "मैं रुक नहीं सकता, मुझे जीवन अधिक पसन्द है।"

सो जोशुई उसे एक पुराने राजप्रसाद के हरे भरे उपवन में ले गयी; एक मोहक स्थान जहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ पुरानी वाटिकाओं का सम्बन्ध आकाश से जोड़ रहीं थीं। लेकिन फिर भी यह कोई प्यार करने का स्थान

न था। इस वाटिका की रखवाली होती थी, इसकी हर पत्ती सुरक्षित थी। उसे कोई काम करने वाला नहा दिखायी दिया, अपने ही जैसे कुछ लोगों को छोड कर और कोई नहीं दिखता था। और वे भी दर्शक मालूम होते थे। लेकिन यहाँ कोई ऐसा जङ्गली पन नहीं था जो उस आजादी दे सके। वह प्रभावित हुआ, प्रशसा भी की उसने, पर भीतर ही भीतर दबा-दबा-सा, बँधा बँधासा चलता रहा। जोशुई का हाथ छूने का भी साहस उसका न हुआ। वह भी अलग अलग रही। उस लगा कि जोशुई यहाँ की है यहाँ रम गयी है पर वह वहाँ का न था।

दोपहर होते होते उसका मन राजप्रासादों, मन्दिरों और देवताओं से भर गया। "मुझे भूख लगी है," अचानक उसने कहा। 'पालिश किये हुए पत्थर पर में मीलों चल चुका हूँ। अब हम लोग बैठकर खाना खायेंगे और तब सवारी से शहर के बाहर चलेंगे। मैं कुछ देहाती क्षेत्र देखना चाहता हूँ।"

जोशुई की स्वीकृति स्वप्न जैसी थी। इतना स्वीकार कर चुकने के बाद—एक दिन की यह चोरी कर चुकने के बाद—हर बात क लिए तैयार दिखाई देती थी। और इस विचार से ही अमरीकी का रक्त तेजी से दौड़ने लगता था।

भोजन के समय वह काफी प्रसन्न रही, उसके प्रश्नों का उत्तर देती हुई, हास्य में योग देती हुई और उस यह बताती हुई कि होटल में उपस्थित लोग कौन क्या हो सकते हैं। पहले वह यहाँ कभी नहीं आयी थी। एक तङ्ग छिपी हुई गली म सुनसान-सा स्थान था एक, जिसमें ताजी हरी चाय और सूखे बरफ जैसे सफेद चावल ही प्रलोभन की वस्तु थे। होटल में एक क्लर्क था जा भूरे रग का सूट पहने हुए था। एक बुड्ढा आदमी अकेला बैठा अपना घर छोड़कर यहाँ खाना खा रहा था, एक अधेड़ सज्जन जो स्वाद के भूखे थे, घर म बच्चों की भरमार के कारण खाना यहाँ खा रहे थे—यह सब जोशुई ने अपने साथी युवक को समझाया।

पर बाद में पहाड़ी पर चलकर जोशुई गम्भीर और अलग अलग सी हो गयी।

"पहाड़ी के निकट जाकर उन्होंने सवारी छोड़ दी—सवारी जिसका सफेद खच्चर ऊँघता सा दिखाई देता था। बुड्ढा गाड़ीवान बिल्कुल गूँगा बना था—वर्दी पहने एक अमरीकी उसके सामने था। बाँसों के सहारे बिछायी हुई ईंटों के रास्ते वे पहाड़ी पर चढे। यह एक सुनसान स्थान मालूम पड़ता था, फिर भी एलेन सशक था। ईंट बिल्कुल साफ बुहारी थीं किनारे किनारे झाड़ियाँ बाँसों के सहारे बडी सुन्दरता से लगायी गयी थीं। हरी मखमली घास की एक टुकड़ी दिखायी दी और वह रुक गया।

"यह सुन्दर स्थान है, मखमल सा कोमल, है न जोशुई? आओ, यहीं बैठें।"

जोशुई ने बात मान ली। घुटनों के बल, उससे कुछ दूर वह बैठ गयी। उसके सुन्दर बाल गीले हो चले थे और उसके मत्थे पर चिपक रहे थे। उसके ओठ लाल थे। वह एक क्षण उसकी ओर देखता रहा और दोनों के बीच जो दूरी थी उसे लाघ जाने का अपना साहस तोलता रहा। अचानक वह उसके पास जा बैठा और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"जोशुई?"

जोशुई ने अपनी स्वच्छ बडी आँखें घुमा दीं। "अमरीका के सम्बन्ध में मुझे कुछ बताओ," उसने कहा।

अमरीका। अमरीका तो उसके विचारों से इस समय बहुत दूर था।

"आज प्रातः सारे समय मैं तुम्हें जापान दिखाती रही," जोशुई ने कहा, "अब तुम मुझे अमरीका दिखाओ। मुझे केलिफोर्निया की याद है। तुम अपने प्रान्त वर्जीनियाँ, और अपने माता पिता के सम्बन्ध में बतलाओ क्या वे जीवित हैं?"

उसने अपना हाथ खींचा नहीं और न वह उससे दूर ही हटी। पर वर्जीनियाँ की बात करना और अपने घर के सम्बन्ध मे उससे पूछना—यह सब पूछना तो फिर उसे अपने से दूर भगा देना था।

"यह सब जानने की मेरी बड़ी इच्छा है," उसने अनुनय की।

बड़ी अनिच्छा के साथ उसने कहा, "अच्छी बात है। मैं एक छोटे से

कस्बे में रहता हूँ यानी मेरा मकान एक छोटे से कस्बे म है जो रिचमाण्ड से बहुत दूर नही है।"

"रिचमाण्ड ?"

"हाँ, टोक्यो जैसा शहर, पर इतना बडा नहीं," उसने समझाया, "केवल वर्जीनियाँ की राजधानी है।"

"अपने घर के सम्बन्ध म बताओ" जोशुई ने फिर अनुनय की।

वह उसकी हथेली की ओर देखने लगा और बडे प्यार से उसकी उँगुलियों से खेलने लगा। उँगुलियों में कोई अँगूठी नही थी। जोशुइ किसी प्रकार का आभूषण नही पहने थी।

"लकड़ी का बना हुआ एक बड़ा सा मकान है," धीमे स्वरों म वह बोला, "लकड़ी पर सफेद पालिश है, छ सफेद बड बडे थम्मे हैं, पुराना मकान है—पिता जी के बाबाका बनवाया हुआ उसके चारों तरफ एकडा जमीन है मेरा ख्याल है एक हजार एकड हागी, जङ्गल है पहाड़ियाँ हैं और है एक नदी।"

"बडा सुन्दर मालूम होता है," जाशुई ने उसास भरी।

"दरवाजे के बाद अन्दर एक बड़ा हाल है, एक चौडा जीना है और सब तरह के जरूरी कमरे हैं।"

"तुम्हारा कमरा कहाँ है ?" उसने पूछा।

"ऊपर, सामने की ओर बाईं तरफ।"

"अमरीका की दरिया, तस्वीरें, पर्दे और तमाम चीजें मुझे याद हैं," उसने कहा।

"हाँ और इसी तरह की चीजें हैं," उसने कहा।

"बिस्तर, पायेदार कुर्सियाँ और मेजें ?"

"हाँ, और सब पायेदार"

"तुम्हारे परिवार में कौन कौन हैं—माता पिता ?"

"और मैं—और कोई नही।"

"तुम इकलौती सन्तान हो ?"

"हाँ, अकेला।"

इसके बाद जोशुई गम्भीर हो गयी। "शायद तुम बहुत बहुमूल्य हो," उसने कहा।

वह हँस पड़ा, "कभी-कभी मैंने भी ऐसा ही सोचा है।"

वह कुछ देर सोचती रही। "और तुम्हारी माँ —वह कैसी है?"

"हाँ मेरी समझ म "

"मेरा मतलब है देखने म।"

"ओ!" वह समझ गया। "कुछ छोटी सी है,—दुबली सी, बहुत सुन्दर, लेकिन वह सख्त है,—बहुत सख्त।"

"और तुम्हारे पिता?"

"एक बहुत बड़े आदमी, शान्त—और मेरा खयाल है सुस्त। मेरी माँ तो यही कहती हैं।"

"वे कुछ काम भी करते हैं?"

"वे एक वकील हैं, लेकिन वकालत नहीं करते। मेरा ख्याल है उन्हें वकालत करने की जरूरत है ही नहीं—जब से मेरे बाबा मरे..."

जोशुई समझ गयी--इसका अर्थ है सम्पत्तिशाली होना। लेकिन उसने सम्पत्ति का नाम अपनी जबान से नहीं लिया। नीचे एक छोटी पहाड़ी पर उगे हुए बाँसों के झुरमुट को देखती रही। नीचे दूर क्योटो शहर फैला हुआ था जो वास्तव में इतनी दूर नहीं था जितनी दूर मालूम होता था।

"मुझे जल्दी ही घर जाना चाहिए," जोशुई ने अचानक कहा, "कालेज बन्द होने के समय मुझे घर जरूर पहुँच जाना चाहिए।"

युवक को ध्यान आया दिन जल्दी जल्दी बीत रहा है। मोड़ कर अपनी बाहों का तकिया बनाते हुए वह घास की पाटी पर लेट गया। "अभी नहीं जोशुई।"

जोशुई ने उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जिसे वह समझ न सका। निस्सन्देह वे आँखें भयभीत तो न थीं?

"मेरे पास लेट जाओ जशुई।"

उसने अपना सर हिला दिया और उसकी सफेद गर्दन पर तब लज्जा

की लाली दौड़ गयी।

"क्यों नहीं डार्लिंग ?"

उसने उत्तर नहीं दिया। पर युवक ने देखा उसका निचला होठ काँप रहा था जिसे उसने अपने दाँतों के बीच दबा लिया।

"क्या तुम मुझसे डरती हो ?" उसने बड़ी कोमलता से पूछा।

"हाँ, कुछ-कुछ," उसने स्वीकार किया।

"मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

उसने फिर अपना सर हिला दिया।

उसने बड़ी कोमलता से पूछा, "क्या तुम भूल गयीं कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ?"

"नहीं" उसने धीमे से कहा, "मुझे हमेशा याद रहेगा। लेकिन तुम क्यों मुझे प्यार करते हो ?"

अब घूम कर उसने उसकी ओर देखा अपनी बड़ी बड़ी गम्भीर आँखों से। वह अचानक उठ बैठा। सचमुच वह क्यों उसे प्यार करता है ? वह जो कुछ करना चाहता था उसे जोशुई ने असम्भव बना दिया। "मैं नहीं जानता," उसने कहा, "मैं खुद अपने से पूछता हूँ। मेरा ख्याल है मैं प्यार का भूखा हूँ। मुझे यहाँ ऐसा कोई नहीं दिखायी दिया जिसे प्यार कर सकूँ। केवल एक तुम—!"

'थोड़े ही दिनों में तुम वापस चले जाओगे।"

"मैं फिर वापस आऊँगा।"

वह मुस्कराई। "तो फिर हम प्रतीक्षा कर सकते हैं," उसने कहा, "यह जरूरी नहीं है कि हम अभी इस बात का फैसला करें कि तुम क्यों मुझे प्यार करते हो।"

अचानक वह उठ खड़ी हुई उसके चेहरे को देखती हुई। और तब उसी तरह अचानक पहाडी के नीचे दौड चली—तेजी से अपने हल्के पैर बढाती हुई। और एलेन के पास उसका अनुगमन करने के अलावा और कोई रास्ता न था—कुछ-कुछ रीझा हुआ और कुछ रूठा हुआ। गाड़ी तक पहुँचने के पहले जोशुई रुकी नहीं और तब हाँफती हुई वह

बोली "जापान में रहती हुई मैं इस प्रकार कभी नहीं दौडी। केलिफोर्निया में मैं ऐसे दोडा करती थी किन्तु यहाँ नहीं—कभी नहीं।"

बुड्ढे गाडी वाले ने उसे घूर कर देखा। घोड़ा भी चैतन्य हुआ और जोरों से हिनहिनाया।

"क्या यही दिन का अन्त है?" एलेन ने पूछा।

"हाँ एक दिन का—तुम्हारे साथ पहले दिन का एलेन केनेडी," उसने उत्तर दिया।

इससे पहले जोशुई ने एलेन का पूरा नाम कभी नहीं लिया था और उसने नाम के प्रत्येक वर्ण पर अलग अलग जोर दिया, शायद इस बात का वादा करती हुई कि ऐसे दिन और आयेंगे।

इस प्रकार प्रारम्भ में जो दिन असाधारण असम्भव मलूम होता था, उसका अन्त इस स्वप्निल आनन्द में हुआ। अपनी पुस्तकें उसे लताकुँज की जडों के नीचे वैसी ही रखी हुई मिलीं। किसी ने उन्हें देखा नहीं था।

देर हो चुकी थी और बुड्ढे जमादार को छोड कर सब जा चुके थे। वह अपने छोटे से कमरे मे बैठा सो रहा था—यही उसकी आदत थी। प्राय जब कभी विद्यार्थी चले जाते और कालेज का अहाता बिल्कुल शान्त हो जाता तो वह अपने कमरे मे बैठा बैठा सो जाता। उसने न तो जोशुई को आते देखा न जाते। सडक पर भी वह रुकी नहीं, केवल एक मिनट के लिए वह ठहरी—एलेन केनेडी को विदा करने के लिए।

"लेकिन मैं अभी क्योटो शहर अच्छी तरह देख नहीं पाया हूँ," एलेन ने उलाहना दिया, "मैंने अभी नारा नहीं देखा। हर यात्री को नारा देखना चाहिए।"

"तुम्हें अपने मित्रों के साथ जाना चाहिए था," उसने उत्तर दिया, "इसमें मेरा क्या दोष?"

"इसमें तुम्हारा ही दोष है," उसने तर्क किया, "मैंने तुम्हें देखा और फिर मुझे यह मालूम करना पड़ा कि आखिर तुम हो कौन।"

एलेन का व्यवहार इस समय जोशुई के साथ कुछ बच्चों का सा रहा, परिहास से भरा हुआ। उसका मन्तव्य अपने ही पक्ष की पुष्टि था। अपने

उद्देश्य की गम्भीरता से वह स्वयं ही भयभीत हो रहा था, अपने मसूबों की छानबीन करने का उसका मन नहीं होता था। दूसरे लोगों को नित्य वह जो कुछ करते देखता था, वह सब करने की तो उसकी इच्छा न थी। वह यह विश्वास करना न चाहता था कि वह भी औरों की भाँति है और न वह यही विश्वास करना चाहता था कि जोशुई उन सामान्य जापानी लडकियों की भाँति है जो टोकियो शहर में अमरीकी लडकियों का हास्य जनक अनुकरण किया करती हैं।

जोशुई उसकी ओर दुःख और आश्चर्य भरी निगाह से देख रही थी। उसका चेहरा गम्भीर था। एलेन को यह देखकर आश्चर्य हुआ।

"क्या तुम चाहते हो कि मैं कल तुम्हारे साथ नारा चलूँ?" उसने पूछा।

"यह मेरी प्रार्थना है।"

वह उसकी ओर देखती रही। "मुझे सोचने का मौका दो" आखिर उसने कहा।

"मैं कैसे जानूँगा कि तुमने क्या सोचा, जोशुई?"

"यदि मुझे चलना होगा तो कल सुबह मैं यहाँ बिना अपनी किताबें लिए हुए आ जाऊँगी।"

"मैं प्रतीक्षा करूँगा।"

वे विदा हो गये। एक दूसरे से हाथ तक नहीं मिलाया जैसे एक दूसरे की दबी हुई और डरावनी लालसाओं से परिचित हों।

६

जोशुई अपनी कमजोरी और शैतानी से खुद ही परेशान थी। वह घर भी ऐसे वापस गयी जैसे ठीक कालेज से आ रही हो। उसके पिता घर

नहीं आये थे। वह किसी संकटापन्न रोगी को देखने गये थे। इसलिए जोशुई और उसकी माँ को उनको बिना अकेले ही भोजन करना पड़ा। जोशुई के लिये यह और भी कठिनाई की बात हुई। यदि नित्य की भाँति पिता होते तो उसके लिए अपना गम्भीर्य और मौन बनाये रखना सरल होता। उसकी माँ तो इतनी विनम्र, इतनी अच्छी, इतनी भोली थीं। उन्हें केवल एक ही लालसा थी—उनकी बच्ची प्रसन्न रहे। उनकी भेदक दृष्टि और मार्मिक प्रश्नों से निभ पाना और भी कठिन हो गया। जोशुई को झूँठ से घृणा थी पर अब वह झूँठ न बोले तो क्या करे ?

"आज तो स्कूल में बहुत गर्मी रही होगी ?" माँ ने पूछा।

"मेरा कमरा उत्तर तरफ है," जोशुई ने उत्तर दिया और माँ के सामने छोटी तश्तरियाँ सजाने में व्यस्त हो गयी।

"तू रहने दे", माँने कहा, "मुझे बहुत कम भूख है। तुझे बताने की तो मुझे हिम्मत ही नहीं होती।"

"बताओ माँ क्या बात है ?" जोशुई ने पूछा ?

"संकट की स्थिति मत्सुई परिवार में है। कुवेर बीमार है। तुम्हारे पिताजी को आशका है कि उसे आन्त्रिक रोग है।"

जोशुई को चिन्तित होना ही चाहिए था, "कुवेर ! ओह ! परमात्मा करे हालत खतरनाक न हो। उस परिवार का वह आखिरी लड़का है।"

"और कितना अच्छा लड़का है," माँ ने कहा।

"मैंने भी हमेशा सुना है वे बड़े अच्छे हैं," जोशुई ने उत्तर दिया। उसने अपना सर झुका लिया और खाने लगी। पलकें ऊपर नहीं उठायीं।

"तुम्हारे पिताजी अपना बडा उत्तरदायित्व समझते हैं," माँ कहती गईं।

"श्री मत्सुई उनके सबसे अच्छे मित्र हैं," जोशुई ने उत्तर दिया।

"केवल यही बात नहीं है," माँ ने कहा," तुम्हारे पिताजी कुवेर की बात भी सोचते हैं। यह नौजवान लडका उन्हें बहुत पसन्द है। अक्सर उसके सम्बन्ध में वे—तमाम तरह की कामना किया करते हैं।"

जोशुई जानती थी कि उसके पिता की क्या कामना है। पर अपनी रक्षा के लिए भी वह उत्तर न दे सकी। वह गुप्त प्रेम के स्वप्न में बैठी रही। उसकी समस्त चेतना, इस स्थान से इस घर से और अपने माता पिता से बहुत दूर थी। शरीर और हृदय—दोनों से ही वह उनको छोड़ चुकी थी और अमरीकी युवक को अपना चुकी थी। अब बहाना करने से कोई लाभ न था सत्य को वह तभी तक छिपा सकती थी जब तक उसे पता न चल जाय कि यह युवक करना क्या चाहता है। उसने अनेक अमरीकी युवक देखे थे यद्यपि उनमें एक भी इस जैसा नहीं था। जिन्हें उसने देखा था वे सब सड़कों पर शोर गुल मचाने वाले छोकड़े और छैले थे, शराबी सिपाही-छीन झपट करने वाले, खीसे निकालने वाले शैतान थे। हाँ, कवायद के समय वे साफ सुथरे, शान्त और आज्ञा पालक होते थे। ठीक सीधी रेखाओं में चलते थे, एक साथ उनके पैर उठते और एक साथ जमीन पर गिरते थे। कवायद के समय बिना आज्ञा के वे न दाहनी ओर देखने न बाँई ओर और निगाहें सब की एक साथ घूमती। पर कवायद से अलग वे टुकड़ों टुकड़ों में बँटे जाते और हर टुकड़ी शोरगुल मचाने वाली होती। जोशुई इन सब से घृणा करती थी, इन सबसे बचती थी अपने आपको उनसे छिपा लेती थी। जिन जापानी लड़कियों को ये लोग पकड़ ले जाते थे उनसे उसे और भी घृणा होती थी। वह इन लड़कियों जैसी नहीं थी—वह अनुपम थी। पर यह युवक भी तो अनुपम था। इसीलिए उनका प्यार औरों जैसा नहीं हो सकता था। पर अब वे करें क्या ?

वह अपनी माँ को खोई खोई सी, कभी कभी झूठ मूठ उत्तर देती रही जब खाना हो चुका, उसने देखा उसकी माँ उसे व्यग्र नेत्रों से देख रही है।

"क्या तुम मुझसे कुछ छिपा रही हो ?" माँ ने पूछा।

"हाँ, एक समस्या है जो स्कूल में पढते पढते पैदा हो गयी," जोशुई ने कहा। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि ऐसे उत्तर इतनी आसानी से कैसे सूझ रहे हैं। सत्य के आवरण में छिपे हुए ये उत्तर सफेद झूठ थे। जानती थी कि इस झूठ के लिए किसी दिन उसे दुखी होना पड़ेगा। पर



इस समय जब उसके दिल और दिमाग में प्यार की वह सुन्दरी छवि भरी थी, वह इसकी परवाह नहीं कर रही थी।

शाम को उसने बहुत थके होने का बहाना किया और जल्दी ही अपने बिस्तर पर चली गयी। रात सुहावनी थी, आसमान साफ था और खुली हुई खिड़कियों से वह तारों भरे आसमान को देख रही थी। लगता था हवा में कुछ नमी है, कुछ स्थिरता है, जिससे तारे बहुत ही कोमल और बड़े दिखायी दे रहे हैं। वे टिमटिमा नहीं रहे थे बल्कि एक पीली आभा में चमक रहे थे जैसे दूर रेशम के दिये जल रहे हों। क्या वह भी इस समय यही सोच रहा होगा कि वे लोग क्या करें? जब दो व्यक्तियों में प्यार हो जाय तब क्या निष्क्रिय बैठ सकना सम्भव है? हर क्षण कुछ न कुछ होता ही रहता है। कैलिफोर्नियों में पढ़ी पत्रिकाओं की कहानियाँ उसे याद आने लगी। वहाँ प्यार का परिणाम हमेशा परिणय ही होता था। उसे प्यार का चुम्बन मिल चुका था, प्रिय ने अपना निश्चय बता दिया था। इसलिए अब शेष यही था कि वह विवाह का दिन निश्चित करे, यदि परिपाटी में कोई परिवर्तन न हुआ हो। क्योंकि जापान में युद्ध ने बहुत कुछ बदल दिया था। सम्भव है अमरीका में परिपाटी न बदली हो विशेष-कर वर्जीनियाँ में।

जोशुई ने उसास भरी, उसका चेहरा याद आया, वह मुस्कराई और मन चाहने लगा कि रात जल्दी समाप्त हो।

१०

मौसम ने सूरज के साथ मिलकर फिर सुनहला जाल बिछाया। किरणों ने जोशुई को जगाया और जागने पर उसे माँ के दर्शन तो हुए पर वह

पिता से न मिली। "रात में वह बहुत देर मे आये थे," माँ ने बताया। "उन्होंने कुवेर का आपरेशन किया था, कुवेर की हालत अभी सङ्कट से बाहर न थी क्योंकि आँत फट गयी थी और डाक्टर सकाई अभी बहुत चिन्तित थे। वह बिल्कुल तड़के घर आये थे और कह रक्खा था कि सुबह नौ बजे तक यदि वह न जागें तो उन्हें जगा दिया जाय।"

जोशुई साढे आठ बजे कालेज के लिए चल दी। पिता के उपयुक्त सन्देश घर मे कह दिया और फिर सब कुछ भूल गयी। रात में कुछ हल्की वर्षा और आँधी आयी थी, सड़कें अब भी गीली थीं और आसमान सुहावना था। एलेन अपने नियत स्थान पर था उसकी प्रतीक्षा करता हुआ। फाटक पर का चौकीदार इस समय गम्भीर दृष्टि से सड़क की ओर देख रहा था। जोशुई ने उसे देखा और रुक गयी और एलेन उसे देखते ही उसकी ओर बढा। कालेज के पश्चिम वाली तङ्ग गली म उनकी भेंट हुई।

"उसने तुम्हें नहीं देखा" एलेन ने कहा।

"हम लोग पीछे की गली से रेलवे स्टेशन चलेंगे," जोशुई ने कहा, "यहाँ से नारा का रास्ता एक घण्टे से भी कम है।"

हाथ म हाथ देकर दोनों गीली सड़क पर चल दिये। ऊपर झुके हुए पेड़ो से बूदें हल्की वर्षा की तरह उन पर गिर रहीं थीं। जोशुई एक साफ नीले रङ्ग का सूती दुपट्टा लिए थी और एक सफेद ब्लाउज पहने थी और पानी की बूदें इन पर ऐसे स्पष्ट बिन्दु बनाती चलती थी जिनसे उसकी चमड़ी साफ झलकती थी। सरपर हैट तो वह कभी लगाती ही नहीं थी। पानी की बूदें उसके बालों और चेहरे पर पड़ रहीं थीं।

"फूल पर ओस की बूदे," उसने कहा।

जोशुई उसकी ओर मुस्कुरा दी, उसकी आँखों में प्यार की तरलता छलक रही थी।

प्रात काल की गाडी में भीड़ नहीं थी और एलेन ने कम से कम सेकेण्ड क्लास में सफर करने का आग्रह किया। जोशुई ने देखा या देख कर भी न देखा कि यात्रियों की जिज्ञासा पूर्ण निगाहें आश्चर्य कर रही थीं

कि एक भले घर की जापानी लडकी एक अमरीकी के साथ दिखायी दे। कोई रोक तो नहीं सकता था पर किसी की दृष्टि ने भी उसका अनुमोदन नहीं किया। महिलायें उसकी ओर गर्व और घृणा से देखतीं और पुरुष कुछ रोष भरी दृष्टि से। जोशुई कोशिश कर रही थी कि इस सबको न समझे और तेजी के साथ अंग्रेजी भाषा में उसे मार्ग में पड़ने वाले स्थानों का विवरण बताती जा रही थी।

"नारा जापान की पहली स्थायी राजधानी थी," उसने स्पष्ट और कुछ ऊँचे स्वर में कहा, "पहले पहल हम लोगों की कोई निश्चित राजधानी नहीं थी। प्रत्येक शासक अपनी राजधानी जहाँ चाहता बना लेता था। पर पहली शताब्दी में नारा राजधानी निश्चित हो गया और फिर सात शासकों के शासन काल तक बराबर वही राजधानी रहा। उसके बाद राजधानी नगावका शहर को बदल दी गयी। यह शहर भी क्योटो शहर के पास ही है।"

"नारा में हम लोग क्या देखेंगे?" उसने पूछा। वह जानता था कि जोशुई उसके लिए नहीं औरों के लिए बोल रही है।

"जो तुम चाहो," उसने उत्तर दिया, "वहाँ दूकाने हैं, महल हैं, मन्दिर हैं, समाधियाँ हैं, बुद्ध की महान मूर्ति है और राजकीय उद्यान हैं।"

"उद्यान देखेंगे;" उसने तुरन्त कहा, "काफी बडा है न?"

"बारह सौ एकड़ से भी अधिक।"

"तो फिर उद्यान ही देखेंगे।"

सावधानी के साथ उससे दूर बैठी हुई वह उससे बातें करती रही आखिर तेज सीटी देकर गाड़ी नारा स्टेशन पर पहुँच गयी दोनों बाहर आये। बडे रस्मी तोर से जोशुई ने रिक्शे तय किये और दोनों उद्यान की ओर चल पडे। यात्रियों की रोष और घृणा भरी आखों की स्मृति दूर करने के लिये और अधिक समय की आवश्यकता थी। पार्क में घण्टे भर तक वे घूमते रहे और तब एक सुनसान स्थान पर पहुँचते ही वह अपने आप को न रोक सका। वही आगे आगे चल रहा था। अचानक वह घूमा और उसे अपनी बाहों पर उठा लिया।

चुम्बन की स्वीकृति का प्रश्न तो कोई प्रश्न ही नहीं था। अब वह अनजानी बात न थी। वह चुम्बन जाना पहचाना था और उसमें असह्य मधुरता थी वह उसकी भूखी थी। अब भी उसके लिए वह एक अनुभव की बात थी, वह इच्छा की अपने आप में एक पूर्ति थी।

पर युवक के लिए यह केवल भूमिका थी, एक प्रश्न जो कभी-कभी अपरिचितों से भी पूछा जाता था, और अधिक खोज के लिए एक आमंत्रण। उसने बारम्बार उसका चुम्बन किया, प्रतिबार पहले से अधिक सान्निध्य और स्नेह के साथ, एक बाँह से उसकी कमर को लपेटे हुए और दूसरी से उसकी ठुड्डी उठाये हुए। और तब चुम्बन का अन्त होने पर उसके अनिवार्य परिणाम से—स्वाभाविक अगले कदम से विवश और प्रेरित होकर उसने उसे अपनी बाँहों में उठा लिया और चीड़ वृक्षों के नीचे घास की मखमली पाटी पर लिटा दिया। चीड़ वृक्षों की हरी घनी छाया उनको ढँक रही थी। वह उसी के बगल में लेट गया, आधा उसको ढकते हुए। उसके हाथ काँप रहे थे, साहस के बावजूद।

एक क्षण में ही जोशुई युवक की जल्दबाजी का कारण समझ गयी। उसने उसका हाथ पकड़ लिया और उसका मुँह बलपूर्वक हटा दिया।

"रुको!" उसने धीमे से कहा, "यह कोई तरीका नहीं है, एलेन केनेडी।"

उसके स्वर में फटकार स्पष्ट थी और वर्जीनिया के एक बड़े खानदान में पले हुए और कोमल संस्कारों वाले युवक की आत्मा उसकी वासना के विरुद्ध उठ खड़ी हुई। सैनिक जीवन रुक्षता अभी उसके जीवन में गहरे न उतर पायी थी। उसने कोशिश तो की थी कि वीरता और अक्खड़पन से मिली हुई एक सनकी मनोवृत्ति बना ले—ऐसी मनोवृत्ति जो उसके साथी आधुनिक नौजवानों में थी, जो जीवन और मृत्यु दोनों का एक साथ मुकाबला करते थे। पर उसका यह सनकीपन अभी ऊपर ही ऊपर था। सैनिक जीवन के वर्ष अभी इतने कम बीते थे कि उनका कुछ अधिक असर न हो पाया था। जोशुई की दुःखपूर्ण आवाज सुनते ही उसकी वासना विलीन हो गयी, उसकी छाती में उसने अपना मुँह छिपा लिया

और शान्त लेट गया।

कुछ मिनटों तक वह भी चुपचाप लेटी रही और उसका सर उसकी छाती पर रक्खा रहा। तब धीरे से सहारे के साथ वह अलग हट गयी और उठकर बैठ गयी। युवक अपनी पीठ के बल लेटा हुआ वृक्षों की हरीतिमा देखता रहा। आखिर जोशुई ही कुछ दृढता से बोली, "मैं नहीं जानती मैं वास्तव में हूँ क्या, जापानी अधिक हूँ या अमरीकी। मेरा ख्याल है कि अन्य किसी बात से बढकर मैं अपने पिता की बेटी हूँ, मैं केवल सकाई हूँ। हम सकाई लोग सामान्य कोटि के लोग नहीं हैं, हम कुछ उच्चाकोटि के लोग हैं। यह जरूरी है कि हम लोग अच्छी तरह से परख लें कि हम लोग एक दूसरे को कैसे प्यार करते हैं। हमें कुछ न कुछ निश्चय कर लेना चाहिये। तो हम लोग एक दूसरे से विदा हों। या—"

वह अधिक न बोल सकी। वह यह कल्पना भी न सहन कर सकी कि यदि उसने सचमुच यही कह दिया, "हाँ, हम एक दूसरे से विदा हो जायें।" लेकिन उसे अपने पिता की तो सोचनी ही है, अपने पिता का गम्भीर चेहरा उसे याद रखना ही है और सकाई वंश के गौरव से उसे शक्ति ग्रहण करनी है। उसके पिता वे हैं कि उन्होंने अमरीकी वन्दी शिविर से जापान के जीवन को वेरण्य समझा है।

"तो क्या हमें आज ही सब कुछ निश्चित कर लेना होगा!" उसने पूछा।

जोशुई ने दृढतापूर्वक सर हिलाया, "हाँ जरूर।"

"क्यों?"

उसे पहले कुछ हिचकिचाहट हुई और फिर दृढतापूर्वक बोली, "क्योंकि जब कभी हम अकेले होते हैं तुम मुझ पर आक्रमण कर देते हो।"

जोशुई के इस साहस से वह भयभीत हो उठा, "ओह! जोशुई, यह बात!"

"क्यों क्या यह हमला नहीं है!" उसने पूछा और अपनी बड़ी-बड़ी

आँखे उसने उसके चेहरे पर गडा दी।

"हाँ, कह सकती हो अगर तुम्हें ऐसी भाषा पसन्द हो," उसने अनमने ढग से स्वीकार किया।

"मैं अपने आप को भी क्षमा नहीं करूँगी," उसने तेजी के साथ कहा, "यदि मैं तुम्हारे साथ एकान्त में आती हूँ तो मुझे स्वयं भी अपने ऊपर उत्तरदायित्व स्वीकार करना चाहिए।"

"केलिफोर्निया में तुमने बहुत बडी बडी बातें सीख डाली।"

"मैंने यह केलिफोर्निया में नहीं सीखा। मैंने यह यहाँ—जापान में सीखा है, अपने पिता से।"

"एक कठोर पिता से?"

"शायद"

जब उसने इसपर और कुछ न कहा तो वही बोली, "और शायद एक लड़की के लिए यह अच्छा भी है।" उसने अपने घुटनों को अपनी बाहो में समेट लिया और उन्हीं पर अपना सर झुका लिया।

उसके गले पर मक्खन की सी पीतिमा थी। थोड़े से मुलायम लम्बे बाल पीछे की गाठ से बच निकले थे और वे चीड वृक्षों से आनवाली सुगन्धित वायु की लहरों में झोके ले रहे थ। उसका सर कन्धों पर बड़ी सुन्दरता से सजा हुआ था। उसकी बाँहे गोल और गोरी थीं, कुहनी के नीचे हाथ खुले हुए थे और उनकी हथेलियाँ बड़ी सुन्दर लग रही थीं। अक्सर जापानी लड़कियोंके हाथ और पैर सुन्दर नही होते। जोसुई सफेद मोजे और सैण्डिल पहने हुए थी इसलिए वह उसके पैर नहीं देख सकता था।

"अपने जूते उतारो," उसने अचानक कहा, "मुझे अपने पैर देखने दो। क्या वे भी इतने ही सुन्दर हैं जितनी सुन्दर तुम्हारी हथेलियाँ?"

जोसुई एकदम लाल हो गयी और युवक आश्चर्यचकित हो गया। वह उछलकर उठ खड़ी हुई और उससे दूर हट गयी। "अब मैं तुम्हारे साथ नहीं रुक सकती," उसने गुस्से के साथ कहा, "अब मैं तुम्हारे पास नहीं रुकूँगी। तुम मेरा अपमान करते हो एलेन केनेडी सामर्सो अपमान

करते हो। कम से कम मैं अपनी इज्जत तो करती ही हूँ। बस हो चुका। मैं समझ गयी तुम्हारी भावनाएँ क्या हैं। प्यार ! क्या है प्यार ? मैं नहीं चाहती ऐसा प्यार।"

वह चल दी। एलेन उछलकर उसके पीछे दौड़ा और उसका हाथ पकड़ लिया। "जोशुई मैंने क्या कह दिया ? तुम क्यों नाराज़ हो गयीं ? क्या कोई ऐसी बात है जो मैं नहीं समझ पाता ?" उसने उसके कन्धे पकड़ लिए। "जोशुई, जवाब दो।"

वह उबल पड़ी, उसकी आँखे जल रही थीं, कपोल लाल थे और रोष भरे ओंठ विकृत हो रहे थे। तुम जवाब देते हो एलेन केनेडी। मैंने पूछा, "हम लोग क्या करेंगे ? और तुम कहते हो मुझे अपने पैर दिखाओ।"

वह आगे न कह सकी, अपना सर घुमा लिया और उसकी पलकों के नीचे से आँसू निकल पड़े। एलेन का दिल पिघल गया और सच्चाई मंजूर करने के लिए वह तैयार हो गया। "जोशुई मैंने उत्तर इसलिए नहीं दिया क्योंकि मैं जानता ही नहीं कि मैं क्या उत्तर दूँ।"

"यदि तुम नहीं जानते तो तुम्हें मेरे बदन पर हाथ नहीं लगाना चाहिए।"

उसके हाथ जोशुई के कन्धे पर से गिर गये। "तुम ठीक कहती हो।"

वह कहती गई, "यदि तुम नहीं जानते कि क्या जवाब दो तो कृपा करके टोक्यो चले जाओ, अमरीका चले जाओ, अपने घर चले जाओ, आज ही। भूल जाओ कि तुमने मुझे कभी देखा था और मुझे भी भूल जाने दो—"

"भूल सकोगी ?"

"हां, अभी मैं भूल सकूँगी, बाद में नहीं जानती।"

उसके छरहरे झुके हुए बदन को देखता हुआ वह खड़ा रहा। और उसके मौन के बाद वह टूटे शब्दों में बोली, "मैं घर जाना चाहती हूँ।"

वो दूसरी गाड़ी से वे क्योटो वापस आ गये और स्टेशन पर ही एक दूसरे से विदा हो गये क्योंकि जोशुई ऐसा ही चाहती थी।

"पर जोशुई मैं तो तुम्हें न भूल सकूँगा।"

धर्म्मी

"भूल सकोगे, भूल जाओगे ।"

"यदि न भूल सकूँ—तो क्या तुम्हें पत्र लिख सकता हूँ ?"

"नहीं, पत्र न लिखना ।"

वह चल दी नमस्कार भी नहीं किया, हाँ, एक तीखी पैनी [illegible] दृष्टि से एक लम्बे क्षण तक उसे देखती रही, और तब, यद्यपि वह तब तक उसकी ओर देखता रहा जब तक वह सड़क की भीड़ में खो नहीं [illegible], उसने मुड़कर एक बार भी नहीं देखा ।

रहा एलेन, सो वह अपने होटल वापस आया, अपना [illegible] बाँधा और दूसरी ही गाड़ी से टोक्यो रवाना हो गया । अब उसे [illegible] थी । जितनी ही जल्दी वह काम में व्यस्त हो जाय उतना ही अच्छा ।

११

"कुबेर पहले से ठीक है," जोगुई ने [illegible] स्वच्छ, बढ़िया है और नयी दवाओं [illegible] है ।"

"मुझे प्रसन्नता है," जोगुई ने [illegible]

वे जानते थे कि जोगुई [illegible] आज ही प्रात: अपनी पत्नी [illegible] मामला क्या हो सकता है ।

"उसने मुझसे कुछ नहीं [illegible]"

"यदि मैं उससे पूछती हूँ [illegible] होने लगती है । [illegible] है ।"

"उसे नहीं [illegible]" डाक्टर सकाई निश्चिन्त [illegible] अवस्था के कारण है । [illegible]

पता नहीं। इन सब मामलों को मैं अपने हाथों में लूँगा।"

कोई दूसरा अवसर होता तो श्रीमती सकाई ने उनसे शान्त रहने को कहा होता। पर इस समय उन्होंने केवल यही कहा, "बेशक आप बिल्कुल ठीक कहते हैं।"

अपराह्न में डाक्टर सकाई ने जोशुई से बात छेड़ी, "कुबेर मत्सुई को एक पूर्ण जापानी युवक कहा जा सकता है पर फिर भी वह आधुनिक ढंग का युवक है। अपने व्यवहार और विचार में वह कभी-कभी क्रान्तिकारी हो जाता है। अपने पिता का वह सम्मान करता है पर वह उनतक सीमित नहीं है, उनसे आगे सोचता है, चलता है। एक दिन आयेगा जब कुबेर एक बड़ा महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा। अच्छा होता यदि तुमने उसके सुन्दर स्वास्थ्य को देखा होता। जब मैंने आपरेशन किया तो उसका रक्त कितना स्वच्छ और लाल था!"

"लेकिन फिर भी उसकी आँतें विकृत हो चुकी थीं!" जोशुई ने कुछ निर्दयता के साथ उन्हें याद दिलाया।

डाक्टर सकाई कुछ क्षुब्ध हो उठे, 'अन्तकोष्ठ तो आदिम इन्सान की विरासत है, अब इसकी आवश्यकता ही नहीं है। सो इसके लिए कुबेर को कोई दोष दिया नहीं जा सकता। और अब तो उसे किसी प्रकार की तकलीफ होगी ही नहीं।"

उसका मन कहता था कि कुबेर का विचार भी उससे दूर रहे। पर फिर भी वह इस चर्चा को बढाती ही गयी,—जैसे अपने आपको दण्ड देने की, अपने भाग्य के शीघ्र परख करने की कोई प्रेरणा उसे विवश कर रही हो। "पिता जी, आप जो कुछ सोच रहे हैं, कह क्यों नहीं देते!" वह बेहिचक कहती गयी, "आप चाहते हैं कि मैं कुबेर से शादी करूँ, तो फिर स्पष्ट कहते क्यों नहीं!"

डाक्टर सकाई आपे से बाहर हो गये "तुम एक हठीली शैतान लड़की हो।" वे जोर से बोले, "तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं क्यों तुमसे साफ साफ नहीं कह पाता। तुम अमरीकी लड़कियों की तरह हो। अगर तुम्हें मालूम हो जाय कि मैं तुमसे क्या आशा करता हूँ तो तुम उसे

ध्वस्त कर दोगी !"

डाक्टर यह कह तो गये पर अपने आपे पर उन्हें स्वयं ही खेद हुआ और अब प्रत्युत्तर के लिये वह तैयार थे। अवसर और उम्मीदें अब वे खो चुके थे। वे जानते थे कि जोशुई कभी भी उनकी बात नहीं मानेगी। पर उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह विनम्र थी।

"पिता जी मुझमें परिवर्तन होने लगा है। मैं इस बीच बहुत कुछ सोचती रही हूँ। मुझे अब ऐसा लगता है कि एक जापानी से ही शादी करना मेरे लिए ज्यादा अच्छा होगा जैसा कि आप मुझे समझाते रहे हैं। बेशक मैंने कभी-कभी यह सोचा है कि शायद अमरीका जाना मुझे अधिक पसंद आये लेकिन अब मैं वहाँ कभी नहीं जाऊँगी। मैं इसी देश की हूँ सो चाहे कुबेर से शादी हो चाहे और किसी से। और कुबेर, जैसा कि आप कहते हैं, एक अच्छा युवक है और जीवन में मुझे केवल एक अच्छा जीवन संगी चाहिए।"

कुछ इतना विचार मग्न होकर, इतना गम्भीर और दुखी होकर जोशुई ने यह सब कहा कि उसके पिता को विश्वास न हुआ कि वही यह सब कह रही थी। उनका क्रोध जाता रहा और कुछ रुँधे गले से बोले, "जोशुई, मेरी बच्ची—इतनी समझदारी, मुझे आश्चर्य हो रहा है। क्या मैं—क्या तुम चाहती हो कि मैं कुबेर के पिता से बात करूँ ?"

अपनी बड़ी-बड़ी दुखी आँखों से जोशुई ने पिता की ओर देखा, "जैसी आप की इच्छा हो पिता जी।"

डाक्टर सकाई कुछ चौंके, "तुम बीमार तो नहीं हो मेरी बच्ची ?"

"नहीं पिता जी मैं बिल्कुल ठीक हूँ। इतनी अच्छी तो मैं एक लम्बे अरसे से नहीं रही।" और तब अपने पिता को भयभीत सा देखकर उसने मुस्कराने की कोशिश की। "आखिरकार, मैं सयानी हो रही हूँ, जानते हैं मैं बीस बरस की हो गयी ?"

वे प्रसन्न हो गये पर फिर भी उखड़े उखड़े से रहे। "विश्वास रक्खो, मैं कोई जल्दबाजी नहीं करूँगा।" उन्होंने गम्भीरता पूर्वक कहा, "मैं कुबेर को भी इस मामले में जल्दबाजी नहीं करने दूँगा।"

"धन्यवाद, पिता जी !" उसने कहा अभिवाद न करके वह चल दी और फुलवारी के सरोवर में जाकर पत्थरों को सजाने लगी। उसने पत्थर इकट्ठे किये, चिकने, गोल, मुड़े हुए, पानी की रगड़ खाये हुए और उनमें से जो कम खूबसूरत थे उन्हें फेंककर बीस-तीस पत्थरों के गुट सजाने लगी। स्वच्छ जल में उनके रंग चमक रहे थे। कभी-कभी कोई पत्थर जो बाहर निस्तेज मालूम होता था पानी के भीतर जाकर चमकने लगता। पत्थरों को इतने सहारे और धीमे से उठाती और रखती थी कि जल में पड़नेवाला उसका प्रतिविम्ब विगड़ने नहीं पाता था।

एलेन ने उसे एक भी पत्र नहीं लिखा। एक महीना बीत चुका था, उनको अलग हुए और उसने उसे एक पत्र भी नहीं लिखा। जोशुई प्रसन्न थी कि उसे उसका पता नहीं मालूम था और वह उसे पत्र नहीं लिख सकती थी। क्योंकि ऐसी रातें आँखों में ही बीत चुकी थीं जिनमें, अगर उसे पता मालूम होता, अपनी दुर्बलता और अपने असहाय विषाद से विवश होकर उसने एलेन को पत्र लिख दिया होता—उससे प्रार्थना की होती कि वह वापस चला आये या फिर उसे ही बुला ले। अगर उसने ऐसा लिखा होता और उसका उत्तर भी आता तो फिर कभी न कभी देर सबेर उनके सम्बन्धों का अन्त भी हो जाता क्योंकि उसका स्वाभिमान् यद्यपि इस समय वह पराजित था, फिर उभड़ पड़ता। परिणाम यह होता कि उनके प्यार के मूल में ही घुन लग गये होते।

क्रमश: एक के बाद एक रात प्रतीक्षा में बीतती गयी, सप्ताह पर सप्ताह बीतने लगे और इन जीती हुई रातों के बीतने के साथ साथ अपना भविष्य भी उसे दिखायी पड़ने लगा सीधा सादा जापानी महिला के जीवन का अनिवार्य भविष्य, विवाह, पति, बच्चे और परिवार। आधुनिक नारी की ऊँची वार्ताएँ इस अनिवार्य को धारण नहीं कर सकती थी। सो, जैसा उसने अपने पिता से कहा था, कुवेर को ही क्यों न स्वीकार कर ले। धीरे-धीरे वह कुवेर के विचार से अपने को अभ्यस्त बना रही थी। उसका चेहरा वह याद करती, पीला कुछ बड़ा चेहरा जिसकी रूपरेखा बुरी मरी मरी, भारी भारी थी पर जिसकी मुद्रा कोमल और सरल थी। उसकी आवाज

भी उसे याद थी, एक मधुर धीमी आवाज। फिसलते हुए शब्द, कुछ मीठे मीठे, वह अंग्रेजी मुश्किल से बोल पाता था। "भाषा के मामले में तो मैं मूर्ख हूँ।" उसने एक बार उससे कहा था। और उसे इस का परवाह भी नहीं थी कि वह मूर्ख है या नहीं। उसे देखकर कम से कम विरक्ति तो नहीं होती थी। वह हमला वर भी नहीं था, अपने आपको उसपर लादना नहीं चाहता था। तो धीरे धीरे शायद वह उसे अच्छी तरह प्यार भी करने लगगी, कम से कम उसका आदर तो कर ही सकती थी। सबसे बढ़कर तो उसे सामान्य सज्जनता चाहिए थी और युकर म उसे वह सज्जनता जितनी मिली उतनी अन्य म नहीं दिखायी दी थी।

एक गोल हरा हरा सा पत्थर अपनी हथली से रगड़कर उसको चिकनाया और पानी म छोड़ दिया। उसकी हरीतिमा खिल उठी, एक धीमा मनोहर रङ्ग जिसम उद्दण्डता नहीं थी, चमक दमक नहीं थी।

१२

टोक्यो म ग्रीष्म ऋतु बहुत ही उष्ण थी। आधुनिक ढग से तारकोल और बालू की बनी हुई सड़कें अपनी सचित गमी से जल उठती थीं और अक्सर बिजली फल हो जाती जिससे प्राय सबस अधिक गर्मी म ही पखे बन्द हो जाते। इस असह्य को सहने का भी केवल एक ही ढग था कि अपने आपको काम म व्यस्त कर दे।

"लेफ्टिनेन्ट कनेडी महोदय।" एक सिपाही दरवाजे पर डाक लिए खड़ा था ' घर की डाक है महोदय।"

"छोटी मेज पर उधर रख दो। पहले मुझे यह रिपोर्ट तैयार करनी है।"

"अच्छी बात है महोदय," सिपाही ने सलाम किया, दस बारह चिट्ठियों का एक बण्डल सावधानी से मज पर रख दिया और चल दिया।

उसका परिवार। पिता, माता, ताइयाँ, ताऊ, चचेरे भाई बहिन—सबने उसको प्यार से भरे पत्र लिखे थे और जापान जैसे एक असभ्य दूर देश में उसके निवास को बलिदान की सी महत्ता देते थे। उसकी माँ के पत्रों का प्रारम्भ हमेशा होता था, "प्यारे बेटे तुम्हें घर आने की इजाजत कब मिलेगी।"

"टाइप राइटर पर तेजी से रिपोर्ट तैयार करता हुआ वह तेजी से काम करता रहा। लेफ्टिनेण्ट एक सुभीते की पदवी थी जिसमें तमाम कर्तव्य छिप जाते थे, खासकर वह कर्त्तव्य जो उसमें ऊँचे अफ्सर या तो पूरा करने की परवाह नहीं करते थे या जिनके पूरा करने की योग्यता ही उनमें न थी ऐसे सेनापतियों को वह जानता था जो शुद्ध भाषा नहीं बोल सकते थे, शब्दों के ठीक हिज्जे भी जिन्हें नहीं मालूम थे। और जब उन्हें पता चला कि एलेन विश्व विद्यालय का स्नातक है तो लिखने पढने का ढेरों का ढेर कार्य उसके ऊपर मढने लगे। और एलेन को इस काम में एक अन्तर्गूढ़ आनन्द मिलता, शुष्क नीरस विषयों की रिपोर्टें जैसी आज वह तैयार कर रहा था—अधिकृत जापान की कुछ नागरिक संस्थाओं के सम्बन्ध में तैयार करने में भी वह उन्हें भाषा और शैली का एक नमूना बना देना चाहता था यह नहीं कि उन्हें पढने वाला हर कोई इस तथ्य को जान जायगा। पर उसे अब एक आनन्द आता जापान के सम्बन्ध में कुछ भी लिखने हुए और अपने आप वह स्वीकार करता था कि इसका कारण जोशुई है। उसी के माध्यम से वह जापानी लोगों के साथ अपने सम्बन्धों में कुछ वास्तविकता अनुभव करने लगा था। यद्यपि जोशुई उसके लिए अभी एक पहुँच के बाहर सर्वाधिक सुन्दर लडकी थी। उसमें सौन्दर्य था, और सौन्दर्य के साथ वैसा ही साहस भी क्योंकि उसने उसे प्यार किया था और इसीलिए उसकी भावनाओं को रोक सकना उसके लिए कठिन था। लेकिन उसने उन्हें रोका था।

और जब कभी वह उसके विचारों में आ जाती दिन में बीसों बार, रात में अनेकों बार वह उसके दिमाग में आती तो प्रायः वह सम्भाव्य की कल्पना करने लगता। अगर परिणाम जो हुआ है उससे भिन्न होता, अगर

उसने उससे शादी करने का प्रस्ताव किया होता, जैसा कि वह निस्सदेह करता यदि वह एक अमरीकी लड़की होती जिससे वह इसी तरह प्यार कर चुका था—तो क्या होता। कल्पना म मादक भरी चिन्ता दाचिका म वह खो गया। अगुलियाँ टाइप राइटर पर निस्तब्ध हो गयी। वे जापान म रह सकते थे? क्या वह जापान म अपना जीवन बिताने के लिए राजी होता? अथवा वे अमरीका में रह सकते थे। अमरीका म ऐसे अनेक स्थान थे जहाँ वह उसके साथ सुख से रह सकता था, उनके बच्चे—आह उनके बच्चे! क्या उनके बच्चे होना जरूरी था। शायद बच्चों की कामना जोशुई को होगी, लेकिन उसे भी तो बच्चों की कामना थी। उसने तो हमशा इस बात की कल्पना की थी कि एक दिन शादी होगी—फिर बच्चे—केवल एक अकेला बच्चा नहीं, जैसा वह स्वयं एक था, जो उतने बड़े मकान में लाड़ प्यार म बिगाड़ा गया, वह मकान जो बच्चों से भरा होना चाहिए था। यह तो उसने तय सा समझ रक्खा था कि उसके बच्चे उस मकान में रहेंगे। अगर युद्ध न शुरू हुआ होता तो अब तक किसी न किसी अमरीकी लड़की के साथ बड़े आनन्द से उसकी शादी हो चुकी होती क्योंकि जोशुई को उसने कभी देखा ही न होता। कुमारी सैन्धवी लवङ्ग से ही उसकी शादी हो गयी होती, माँ तो उसे अनेक बार अपनी बेटी कहकर पुकार चुकी हैं और जब कभी उसकी उपस्थित में उन्होंने उसे पुकारा है तो अधिक बल देकर प्यारी बेटी ही कहा है।

"सैन्धवी को मेरे माथे मत मढ़ो माँ," उसने माँ को चिढ़ाने के लिए कहा था, "हो सकता है किसी दिन मैं खुद उससे शादी करना चाहूँ।"

"आह चुप रह," उसकी माँ ने प्रसन्न मीठी आवाज में कहा था, "जब से तू बड़ा हुआ है बहुत शैतान हो गया है, मैं खूब जानती हूँ।"

सम्भवत पत्रों की उस ढेरी म सैन्धवी का पत्र भी होगा। वह बहुत जल्दी-जल्दी तो नहीं लिखती थी, फिर भी उसके पत्र [illegible] आते थे—लम्बे आनन्ददायी पत्र जो घर शहर के समाचारों से भरे होते थे। सैन्धवी अपने घर म रहती थी, सम्पर्क पर ही उसका [illegible] बहुत दूर नहीं था। बचपन से ही वे [illegible]

यह है कि तीन पीढ़ी पहले इन परिवारों मे विवाह सम्बन्ध हो चुका था।

"कितने दिन पहले माँ ?" उसने एक बार अनायास माँ से पूछ लिया था।

"काफी पहले, इतना पहले कि अब कोई खतरा नही है," माँ ने कुछ तेजी से विनोद में कहा था—

उसने बाँह बढाकर चिट्ठियाँ उठा ली और एक एक करके देख गया। माँ की चिट्ठी, चर्च धर्माधिका की, दो चिट्ठियाँ जाने किसकी, और हाँ एक, बडा लिफाफा सैन्धवी का। सैन्धवी की कोई भी चीज छोटी न होती, केवल उसकी सुन्दर कमर को छोड कर। वह लम्बी और सुगठित शरीर की थी, दिल और दिमाग से उदार और विशाल। उसने सोचा किसी दिन वह उसे प्यार भी कर सकता है पर अभी तो उसकी इच्छा यही थी—जाने क्यों यह असङ्गत इच्छा थी कि वह उसे जोशुई के सम्बन्ध में सब कुछ बताये।

"मुझे विश्वास है कि वह मेरी बात समझ जाएगी," उसने मन ही मन कहा—लिफाफे के चिकने मोटे कागज को काट कर उसने लिफाफा खोला। भीतर तीन दोहरे पत्र मुडे हुए रक्खे थे जिनमे सैन्धवी की हस्तलिपि थी—अक्षर बडे बडे थे पर फैले हुए नहीं।

"प्रिय एलेन" से हमेशा उसके पत्र शुरू होते थे। वे एक दूसरे को जब तब पत्र लिखते आ रहे थे क्योंकि वह अपने स्कूल म रहती थी और यह विश्वविद्यालय मे। "प्रिय एलेन, ऐसा वसत तो पहले कभी आया ही नहीं। हो सकता है कि इसके पहले मैंने वसत देखा ही न हो। इस वर्ष मुझे अवकाश मिला है।"

धीरे धीरे वह पत्र पढता गया, उसकी आँखो के सामने अपना घर, शहर, परिचित सम्पर्क और पडोसियों तथा सम्बन्धियो के जाने पहचाने चेहरे एक एक करके घूम गए। फिर भी यहाँ दूर टोकियो शहर म बैठे हुए उसे यह सब के सब ऊपर से बहुत दूर मालूम हो रहे थे, जैसे वह किसी दूसरे ससार के प्राणी हों। और बात भी यही थी। वे दूसरे ससार मे रहते थे और सभवत इस देश, जापान की बात वह नहीं समझ

सकते थे,—जापान जिसकी राजधानी टोकियो थी। वह चाहे जितना समझाये, चाहे जो कुछ करे या ना करे वे लोग उसकी बात समझ ही नहीं सकते थे। उन्हें समझाने का कोई रास्ता ही नहीं था। उसे तो केवल यह चुनना था कि किस संसार में वह रहना चाहता था और किसके साथ।

सावधानी से पत्रों को मोड़कर लिफाफों में रख दिया और तब शून्य दृष्टि से टाइपराइटर की ओर देखता बैठा रहा।

केवल उसके पिता ने पत्र नहीं लिखा था। वह बहुत कम पत्र लिखते थे और बहुत कम बोलते भी थे जहाँ तक उसे याद था उसके पिता ने कभी भी किसी विषय पर अधिक बात नहीं की—इतनी भी नहीं कि उसे याद रखा जा सके। कम जितनी बात किसी विषय पर की जा सकती थी, उतनी ही वह करते थे। उनकी सुशांति के सम्बन्ध में जब कोई कुछ कहता तब वह एक मीठी मुस्कान के साथ कहते कि उनकी पत्नी इतनी बातें कर लेती हैं जितनी दो आदमियों को करनी चाहिए, और उनकी बातें हमेशा मजेदार होती हैं।

एलेन जानता था कि वह अपने पिता को ठीक—ठीक समझ नहीं सका। अभी तक यह बात कभी उसके दिमाग में आई ही नहीं थी कि उन्हें समझ लेना जरूरी है आज उसका मन कहता था कि अच्छा होता यदि वह उन्हें अच्छी तरह समझता होता। तब वह उन्हें जोशुई के सम्बन्ध में लिख सकता और उनसे पूछता—क्या पूछता ?

पूछने को तो केवल एक ही प्रश्न था और वह उसे खुद अपने आपसे ही पूछना था। क्या वह जोशुई को इतना प्यार करता था कि उससे शादी कर सके ? उसमें आज जो वासना थी—यह जो अहर्निशि जागने वाली कामना थी क्या इसे सच्चा प्रेम कहा जा सकता था ? यह तो वह जानता था कि अभी तक उसने किसी को प्यार नहीं किया था। पर अब क्या वह सचमुच प्रेम करता था जोशुई से ?

चिट्ठियाँ उसने मेज की दराज़ में रख दीं, स्नान किया और पोशाक पहन कर तैयार हो गया क्योंकि उसे अपने कर्नल के यहाँ दावत में जाना

था। यह कर्नल और उसकी पत्नी—एक सुन्दर जोड़ा था भले आदमियों का जो बेचारे यह नहीं समझ पाते थे कि अपने अधीन इन दुर्निवार मौजी सिपाहियों से कैसे पेश आया जाय। पिछली बार जब वह उनके साथ भोजन करने गया था तब कर्नल की पत्नी ने कहा था, "किसी भी मामले में ये लोग गम्भीर होकर कदम नहीं उठाते। ऐसा लगता है जैसे तितली रानी के युग में यह जिन्दगी बिता रहे हों।"

उनके आशय को वह समझ गया था। नारा के राजकीय उद्यान में उसने स्वयं भी कुछ वैसा ही अनुभव किया था। कभी-कभी तो यह विश्वास करना भी असम्भव हो जाता था कि यह जापानी वही लोग हैं जिन्होंने कुछ ही समय पहले अमरीकियों का भीषण संहार किया था। वह स्वयं तो उस बात को एकदम भूल ही सा गया था; यद्यपि इस युद्ध में उसने अच्छी तरह वार किए और झेले थे। ऐसा लगता था कि प्रशान्त के द्वीपों के जङ्गलों से निकल निकलकर अमरीकियों का संहार करनेवाले उन छोटे कद के सिपाहियों का जापान की इन हरी भरी पहाड़ियों से, नीले कोट पहने यहाँ के किसानों से; और जापानी घाँघरा पहने सुन्दर-सुन्दर लड़कियों से किसी तरह का कोई सम्बन्ध ही न था। जोशुई से तो निस्सन्देह उनका कोई सम्बन्ध था ही नहीं—उससे जो अपनी आकृति के अतिरिक्त अन्य सब दृष्टियों से जापानी की अपेक्षा अमरीकी अधिक थी; विशेषकर अपने अँगरेजी शब्दों के उच्चारण की पूर्णता की दृष्टि से।

मस्तिष्क के अन्तर्स्तर से जोशुई का नाम ऊपर आते ही उसका हृदय चचल हो उठा। मन चाहा कि बाँहें फैलाकर जोशुई को समेट ले—जैसे वह सचमुच वहाँ उपस्थित हो। उसे स्वयं अपने ऊपर विश्वास न हो रहा था कि भोजन के बाद इस प्रश्न को कर्नल के सम्मुख उठाने का साहस उसमें है या नहीं, यद्यपि मन चाहता था कि वह ऐसा करे। कर्नल की पत्नी एक सभ्य और सुसंस्कृत महिला थी और भोजन के बाद वह हमेशा पुरुषों को कुछ समय के लिए अकेले छोड़ देती थी।

पर, इतने पर भी उसे साहस न हुआ कि खुल जाय। भोजन सुन्दर स्वादिष्ट था, जापानी खानसामा ने पकाया था और जापानी "लड़के"

ने ही परोसा था। भोजन के बाद एलेन का साहस उसे इस आकस्मिक प्रश्न तक ले गया, "अमरीकी अधिकार के दौरान में कितने अमरीकी सिपाहियों ने जापानी लड़कियों से शादी करके उन्हें अपनी पत्नी बनाया होगा?" इस प्रश्न से कर्नल का चेहरा कुछ दुखी हो गया। "इसके भी आँकड़े मेरे ख्याल से कहीं रखे ही होंगे। मेरा मन नहीं होता कि उन्हें देखूँ। तुम्हारा मतलब विवाह से है या केवल—?"

"मेरा मतलब विवाहों के ही आँकड़ों से है।"

"विवाह तो शायद बहुत नहीं हुए," कर्नल ने कुछ आशा भरे स्वर में कहा, "पर अगर तुम्हारा मतलब दूसरी बात से है तो उसके आँकड़े कौन जानता है? मेरा ख्याल है कि हजारों दोगले बच्चों से भी अन्दाज नहीं लगाया जा सकता कि वास्तव में कितना क्या हो रहा है। मेरी तो समझ में नहीं आता कि हमारे लोगों में इतनी अधिक कामुकता कहाँ से आ गई? मैं एक पुराना अफसर हूँ, पर मुझे भी यह सब देखकर आश्चर्य हो रहा है।"

"इन बच्चों का क्या होगा?" उसने बड़े ध्यान से पूछा।

कर्नल का चेहरा और अधिक दुखी हो गया। "मैं नहीं जानता। बार्कले—मेरे सहायक—का कहना है कि अभी उस दिन उनकी पत्नी ने एक पड़ोसी के घर में एक बच्चा छिपाया हुआ पाया था, और वह सम्भ्रान्त व्यक्ति घराना है। सारी रात बार्कले और उनकी पत्नी उस घर से एक बच्चे के रोने के कारण सो न पाए, और जब उनकी पत्नी पूछने गई तो वह बच्चा घर की दादी ने छिपा रखा था, मारे शर्म के—"

"बार्कले ने क्या किया?"

"मेरा ख्याल है उन्होंने कैथोलिक अनाथालय को सूचना दे दी और वे लोग बच्चे को उठा ले गए। उस परिवार ने बड़ी कृतज्ञता मानी, उन्होंने भी जो एक सुन्दर सी लड़की थी। बच्चा अजीब आकृति का था, वह कह रहा था, कि एक घृणास्पद मिश्रण था वह। मैं तो इस सब पर कुछ भी विश्वास नहीं करता, पर किया क्या जाय?"

स्पष्ट था कि जोसुई की चर्चा नहीं चलाई जा सकती थी।

से कुछ जल्दी ही चल दिया, भोजन के बाद थोड़ी देर तक कर्नल के पास बैठा और फिर रिपोर्ट पूरी करने के बहाने उठ खडा हुआ।

अब छुट्टी लेकर मनोरंजन करने की उसकी इच्छा मर सी गई। शाम को चलचित्र देखना भी कम पड गया। गमा भर वह एकाध बार ही नाच म शामिल हुआ, कोई सुन्दर लडकी ही न दिखाई दी जो उसे आकर्षित करती और न घर मे ही किसी की स्मृति उसे बेचैन कर सकी। उसे विश्वास था कि सेन्धवी लवग भी उसके हृदय में प्रेम नहा उत्पन्न कर सकती, हाँ उससे बात करने मे भले ही कुछ आनन्द आ जाए। जीवन में अब कोई रस नहीं रह गया था।

और मन में निराशा का यह भाव उठते ही उसे यह भी मालूम हो गया कि जीवन का रस वास्तव में कहाँ था। जीवन के इस रस को उसने अपने आप मे प्रवाहित देखा था जब वह जोशुई के साथ था। सो एक सुनसान गरम रात वह जोशुई के सारे स्मृति चित्र एक एक कर पलटने लगा लता कुज के नीचे जोशुई, जब अपने चारों ओर दृष्टिपात करते हुए उस पुराने शहर को देखने मे व्यस्त उसकी आँखों ने पहले-पहल उसे खोज लिया था, जोशुई अपने घर मे कोने से उसकी ओर झाँकती हुई पहली और अन्तिम बार अपनी जापानी पोशाक में ! कितनी सुन्दर लग रही थी वह अपने उस विशाल भवन में जो अपनी सादगी म ही इतना आकर्षक था ! शायद उसका ससार ही सबसे अच्छा था—गौरव और परम्परा का ससार। उस ससार के उच्च आदर्शों की अवहेलना करने के बजाय जोशुई ने उसी म रहना पसन्द किया था। वह केवल एक "अच्छी लड़की" ही न थी, उससे बहुत अधिक थी। जब वह अपने आपको न रोक सका था और उसे चूम लिया था तब भी उसने अनुभव किया था कि अपनी तीव्र लालसा न होने हुए भी जोशुई ने बडी हिचकिचाहट के साथ इसकी अनुमति दी थी। उसने सोचा यह बेचारी लड़की अपने ही प्यार के आवर्त में फँस गई, अपनी द्विधा से ही न निपट पाई। और उसने भी उसे धोखा दिया था। अपने आपको वह केवल यही कहकर सन्तोष दे पाता था कि समय रहते ही वह दूर हट आया था।

इस प्रकार उसने सम्बन्ध में सोच-सोचकर, बार-बार उसका चित्र मानस पटल में उतार उतारकर वह यह अनुभव करने लगा कि ऐसा करना मूर्खता है। क्योंकि जैसे-जैसे दिन बीतते गए, एक एक करके उसके परिचित गर्मी से ऊब कर पहाड़ों पर या समुद्र तट की ओर चल दिए, कर्नल एक पखवारे के लिए अमरीका को रवाना हो गए और तब उस सुनसान गर्मी में यह सब करने की एलेन की आदत सी पड़ गई। अगस्त का महीना आधा बीतते-बीतते उसे ऐसा लगने लगा कि एक बार, अपनी परीक्षा लेने के लिए, उसे जोशुई से मिलना ही चाहिए, यह निश्चित विश्वास करने के लिए कि वास्तव में वह उसे इतना भुला सकता था कि एक दिन किसी दूसरी लड़की से शादी कर सके। निश्चय ही वह इतनी सुन्दर तो नहीं थी जितनी उसके मन में बनी बैठी थी।

१३

क्योटो शहर में भी गर्मी बहुत तेज रही पर डाक्टर सकाई को इतना अवकाश ही नहीं मिला कि वे गर्मी की बात सोचें। ऊपर से निश्चिन्त दिखते हुए भी जोशुई की सगाई के मामले में वे तेजी से आगे बढ रहे थे। उन्हें सख्त अफसोस हो रहा था कि उनके जीवन के इतने वर्ष अमरीका में क्यों बीते। जापान की वैवाहिक धारणाएँ भी उन्हें नहीं मालूम मजबूर होकर उन्हें एक पुरानी पोथी के पन्ने उलटने पड़ रहे थे, दूसरों से पूछना पड रहा था और इस एहतयात के साथ कि दूसरों को उनके अज्ञानता का पता न चलने पाये। उन्हें निश्चित करना था कि उनकी पुत्री का विवाह एक पुराने धनी परिवार में किस प्रकार सम्पन्न हो। व्यस्त तो वे रहते ही थे, एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे। अब उन्हें ऐसा लग रहा था। कि अपनी बेटी के लिए नये वस्त्रों, गोटों, रेशमी वस्त्रों आदि का भी



चुनाव उन्हें ही करना चाहिए। साथ ही जोशुई का मौजूद रहना भी उन्हें जरूरी मालूम हुआ क्योंकि वह अपनी अकारण जबर्दस्ती नहीं लादना चाहते थे। औचित्य की सीमा के भीतर जोशुई को अपने मन की चीज चुनने का अवसर मिलना ही चाहिए और औचित्य की विचार से ही जोशुई की माँ का भी उपस्थित रहना जरूरी था। फिर भी उन दोनों के मौजूद रहने पर भी अन्तिम निर्णय हर बात में डाक्टर साहब का ही रहा। और उस निर्णय के निर्धारण में सकुई परिवार और उस परिवार की सुरुचि और रीति-नीति का विचार सब से अधिक हावी रहा।

डाक्टर सकाई का कहना था कि उन्हें अपनी बेटी से वैसे आज्ञा पालन की माँग भी नहीं करना चाहिए जैसे उनके पूर्वज करते थे। अगर जोशुई चाहे तो वह तो इस बात के लिए भी तैयार थे कि यहाँ अपने घर में वह कुवेर से गेर स्त्री तरीके से मिल भी ले। वह इस बात के लिए तो तैयार न थे कि शादी से पहले वह कुवेर के साथ बाहर लोगों की नजर में पडे; हाँ कुवेर उससे मिलने के लिए उनकी उपस्थिति मे घर कभी भी आ सकता था। इस प्रकार शादी से पहले, जो आधे सितम्बर म होना तय हो चुकी थी, कुवेर कई बार आया, पर आने से पहले हर बार अपने आने के दिन और समय की सूचना दी और सकाई परिवार की सुविधा का ध्यान रक्खा।

डाक्टर सकाई और श्रीमती सकाई ने हर बार उसका स्वागत किया। पहली बार तो दोनों कुवेर के साथ बराबर उपस्थित रहे, पर उन्होंने देखा कि जोशुई बहुत कम बोली चाली, कुवेर के हर प्रश्न का उत्तर उसने नम्रता के साथ 'हाँ' या 'नहीं' में दे दिया, पर स्वय कुछ कहा नहीं।

"शायद हम लोगों को उन्हे छोडकर अलग हट जाना चाहिए था?" डाक्टर सकाई ने रात में अपनी पत्नी से कहा।

"आखिरकार हम लोग इतने वर्ष अमरीका में रहे भी तो हैं।" श्रीमती सकाई ने सुझाया।

"पर अब हम लोग जापान में हैं।" कुछ चिढते हुये से डाक्टर बोले।

चौरनबे

चे नहीं चाहते थे कि अब कोई भी बात वैसी हो जो केलिफोर्निया में होती है। अपने दोस्तों और परिवार वालों को अनेक बार अमरीका के उन बन्दी शिविरों की याद दिलाया करते थे जिनमें जापानी बन्दी रक्खे जाते थे, यद्यपि ये बन्दी शिविर अब बहुत दिन हुए उजड़ चुके थे और उनके बन्दी जापानी अमरीका भर में बिना किसी खास कठिनाई के बस गये थे।

"जोशुई को अमरीका की याद आती है।" श्रीमती सकाई ने कहा, "उसे इस बात पर शायद कुछ आश्चर्य भी हो रहा हो कि जिस पुरुष के साथ उसे विवाह करना है उससे वह अकेले बात भी नहीं कर सकती।"

इसलिए अगली बार जब कुबेर आया तो कुछ मिनट तक मौसम, फसल आदि की बातचीत करने के बाद डाक्टर सकाई ने इशारा किया और वह और श्रीमती सकाई चल दिये। जब वे लोग चले गये तब कुबेर मत्सुई एक मौन हँसी हँसा और विनम्र प्रसन्नता के साथ जोशुई से बोला "आपके पिता जी भी क्या ही विलक्षण व्यक्ति हैं" अपनी धीमी आवाज में कुबेर ने यह कहा यह आवाज जिसे अगर वह चाहता बहुत बुलन्द उठा सकता था, पर वैसा वह कभी नहीं करता था।

"आपको वह कैसे विलक्षण मालूम पड़े?" जोशुई ने पूछा।

"वह हममें से हर एक से अधिक जापानी हैं और फिर भी, वह स्वयं नहीं जानते कि, उनके भीतर कुछ ऐसा है जो कभी जापानी हो ही नहीं सकता, वह हजार कोशिश करें। अमरीका की छाप उन पर पड़ चुकी है।"

"मेरा अनुमान है वह दया तो मुझ पर भी पड़ चुकी है।" जोशुई बोली।

"हाँ, आप पर भी," कुबेर ने कहा, "लेकिन मैं तो अमरीकियों को पसन्द करता हूँ।"

"उनको भी जो यहाँ अधिकार किये हुए हैं!" जोशुई ने सन्देह पूर्वक पूछा।

"हाँ, उनको भी," कुबेर ने कहा, "मैं हमेशा उनके कामों को तो पसन्द नहीं करता और अक्सर उन पर तरस भी आता है। उनका काम भी

तो बड़ा जटिल है।"

"क्या काम है उनका?"

कुबेर फिर हँसा, "उनका काम है हम जापानियों को अमरीकी बनाना, जितना असम्भव है।"

"फिर भी वह हम लोगों को बदल रहे हैं।" जोशुई ने कहा।

"कुछ को," कुबेर ने स्वीकार किया।

"तो आपका मतलब है कि इनके चले जाने पर फिर सब कुछ वैसा ही हो जायगा जैसा पहले था!" जोशुई ने प्रश्न किया।

"शुरू में तो हम लोग अति जापानी हो जायँगे," कुबेर ने उत्तर दिया। "जापानी भावना अत्यधिक प्रबल हो उठेगी; हम अपने अतीत की खोज करेंगे; अपनी राष्ट्रीय आत्मा खोजेंगे; फिर दो एक पीढ़ी बाद शायद फिर परिवर्तन होगा। शुरू में हम जिसका तिरस्कार करेंगे, बाद में उसकी परीक्षा भी करेंगे, और अंशतः उसे स्वीकार भी कर लेंगे। अपने आप को, अपने भविष्य को पहचानने में हमें पचास वर्ष लग जायँगे और कौन जानता है कि तब तक दुनियाँ क्या से क्या हो जायगी!"

जोशुई सुनती रही। कुबेर बात सुन्दर ढङ्ग से करता था, कुछ चिन्तन के साथ और उसमें अपने पिता की सी हेकड़ी नहीं थी।

"आपको डर नहीं लगता?" जोशुई ने पूछा।

"हमें डर क्यों लगे?" उसने उत्तर दिया, "मैं एक पुराने कदीमी खानदान का आदमी हूँ और आपको मालूम है हम लोग दकियानूसी विचारों के आदमी हैं। जो दकियानूसी जमाना आगे आ रहा है वह तो हमारे अनुकूल रहेगा ही, अफसोस तो मुझे उन हजारों बच्चों के लिए होता है जो अनाथालयों में पल रहे हैं, जिनके पिता अमरीकी हैं, जिनकी माताएँ जापानी हैं और जो इसीलिए अनाथ हैं।"

जोशुई को आश्चर्य हो रहा था कि उसने इन बच्चों की बात तो कभी सोची ही नहीं। अगर वह एलेन केनेडी के सामने झुक गयी होती, अगर उसने उससे शादी ही करना चाहा होता तो उनके भी बच्चे इन्हीं अनाथ बच्चों की भाँति होते। क्या वह—एलेन, और वह स्वयं अपने बच्चों को इस

तरह छोड़ भागते ?—नहीं उनके लिए ऐसा करना असम्भव था।

"ये बचारे छोटे छोटे-बच्चे ?" कुबेर अपनी दयाभरी वाणी में कह रहा था, "अच्छा होता यदि ये पैदा ही न हुए होते।"

अचानक जोशुई की इच्छा हुई कि वह कुबेर से सब कुछ बता दे। वह कितना दयालु था, यह दयालुता उसकी सज्जनता का एक अङ्ग थी। उसे आशा थी कि कुबेर उसकी कहानी भी दयापूर्वक सुनेगा और शायद सहानुभूति पूर्वक समझेगा भी कि यह सब कैसे हुआ। क्या उसे यह सब कुछ कुबेर को बता नहीं देना चाहिए, क्योंकि आखिर वह उसकी पत्नी होने जा रही है। उसने आँखें ऊपर उठाकर उसकी ओर देखा, बिना यह सोचे समझे कि यही प्रश्न उसकी आँखों में भी था।

वह मुस्कराया। "क्या क्या बात है ? आप कुछ पूछना चाहती हैं ?"

"आपने कैसे जाना ?" वह चौंक पड़ी।

"आपके चेहरे पर आपका प्रश्न लिखा हुआ है। आप क्या सोच रही हैं, यह भी उसमें देखा जा सकता है।"

"क्या मैं सोच भी रही हूँ।" जोशुई टालती गयी। वह समझ न पा रही थी कि सब कुछ कह डालने का उपयुक्त अवसर यही है या नहीं। पर निस्संदेह कह तो उसे सब कुछ देना है ही जिससे उन दोनों के बीच कोई रहस्य छिपा न रह जाय।

"शायद आप मन ही मन यह सोच रही हैं यह शख्स कैसा है जिसके साथ मेरी शादी होने जा रही है ?" कुबेर ने कहा।

"क्या हर एक स्त्री ऐसा प्रश्न पूछती नहीं है ?" जोशुई ने फिर टाला।

"बेशक, सभी ऐसा प्रश्न पूछता हैं।"

वे जापानी ढङ्ग से झुके हुए बैठे थे। कुबेर उससे कुछ दूरी पर बैठा था और जोशुई को इससे बहुत राहत मिली हुई थी। कुबेर अपने आपको अभी इतनी छूट दे ही नहीं सकता था कि शादी से पहले वह जोशुई को छू ले। फिर भी उसने जोशुई के पिता से कहा था कि यह अच्छा होगा कि वे परस्पर बातचीत करके एक दूसरे को समझ लें।

कुबेर सोचता रहा, फिर बोला—"मेरा ख्याल है मैं कोई बहुत

व्यक्ति नहीं हूँ। मजबूर होकर मुझे थोड़े दिनों के लिए फौज में भर्ती होना पड़ा था पर उतने दिनों में मुझे वहाँ जो कुछ सिखाया गया, उस सबने मुझे ठीक उसका उल्टा व्यक्ति बना दिया है। अब मैं किसी जीव को मार नहीं सकता। मुझसे आप यह भी आशा नहीं कर सकतीं कि मैं चूहों को भी मार सकूँ। उन्हें मैं आजादी से घूमने देता हूँ। सैनिक अफसरों की ऊँची और भोंड़ी गर्जना मैंने इतने दिनों तक सुनी है कि अब कभी कभी मन में आता है कि अपने शेष जीवन में अपनी आवाज कभी ऊँची उठने ही न दूँ। मैंने लोगों को छोटी छोटी गलतियों के लिए पिटते और ठोकरें खाते देखा है। इसलिए मुझमें यह हिम्मत नहीं कि एक बच्चे को भी एक हल्की चपत तक लगा सकूँ। निर्दयता का नङ्गा नाच मैंने इतना अधिक देखा है कि अपनी दयालुता ही अब जीवन का सहारा रह गयी है। और यह भावना स्वयं अपने को ही राहत देने के लिए है। इसे कमजोरी भी कहा जा सकता है। यह तो मैं जानता हूँ कि मैं स्वयं निर्दयता के जहर का मुकाबला कर सकता हूँ—यह जहर जो एक छूत की बीमारी की तरह एक से दूसरे तक फैलता जाता है, पर मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि और दूसरे लोग भी ऐसे हों और एक दिन ऐसा आयेगा जब इंसान की उस निर्दयता का खात्मा हो जायगा।"

जोशुई ने आज तक कभी कुवेर को इतनी गम्भीरता से और इतना अधिक बोलते नहीं सुना था और यह सब सुनकर वह कृतज्ञ हुई। वह जानती थी कि कुवेर यह सब इसलिए कह रहा है कि उसकी नजरों में वह अपने आपको स्पष्ट कर सके। अपना कर्तव्य समझकर वह अपना विश्लेषण कर रहा था। और अनजाने ही वह जोशुई के प्रश्न का उत्तर भी दे गया। अगर वह किसी अन्य व्यक्ति के साथ अपने घर की बात करती तो अपनी दयालुता से विवश वह हठ करता कि वह अपने उसी प्यार में सफल हो, या कम से कम वह स्वयं उसके मार्ग से तब तक के लिए हट जाता जब तक वह इस प्यार को भूल न जाय, स्वयं बदल न जाय। जोशुई को सन्देह न था कि वह इस प्यार को भूल जायगी, उसे विश्वास था कि वह स्वयं बदल भी जायगी। लेकिन वह प्रतीक्षा नहीं

करना चाहती थी। वह चाहती थी कि उसका विवाह हो जाय क्योंकि विवाह हो जाने से उसका मन व्यस्त रहेगा, कम से कम उसका समय बीतता तो चला जायगा।

"आपने अपनी बात जिस प्रकार मुझे समझाई उसके लिए मे आपको धन्यवाद देती हूँ," उसने कहा, "आपके लिए मेरे हृदय में सम्मान है। विचार है कि एक स्त्री या पुरुष में दयालुता सबसे बड़ा गुण है। मेरा ख्याल है कि दयालुता मुझमें भी है।" और तब उसने कुबेर की ओर उस दृष्टि से देखा जिसमें उसके विचार से प्रेम की अरुणिमा थी। सदियों से जापान में शादियों बिना प्यार की भूमिका के होती आ रही थी। केवल सम्मान सहानुभूति को ही काफी समझा जाता था। कम से कम उसके पूर्वज तो ऐसा ही समझते थे।

उसकी इस चितवन का सम्मान कुबेर ने रस्मी तौर से झुककर किया और डाक्टर सकाई के घर उसकी यह दूसरी मुलाकात समाप्त हुई।

१४

अगस्त का यह महीना इतना गरम रहा कि शहर के पुराने लोगों ने एक स्वर से यह घोषणा की कि यह गर्मी अमरीकियों द्वारा हिरोशिमा और नागासाका पर छोड़े गये अणुबमों का ही परिणाम है। अगस्त की सोलहवीं तारीख की रात को क्योटो शहर के समीप डायमजी पर्वत पर जब उत्सव की आग जलायी जाती है तब उस आग के जलाने वालों को उस पर्वत की हवा मे भी कोई ठण्डक नहीं मालूम पड़ती है।

डाक्टर सकाई बहुत अधिक थक गये थे। अणुबमों के शिकार हुए दोनों शहरों से अचानक ऐसे रोगियों की बाढ़ सी आ गयी थी जिनके घर ही नहीं रहे थे। उनकी प्रसिद्धि एक मुख से दूसरे मुख तक बढ़ते

बिनाने

बहुत दूर तक फैल चुकी थी और असाध्य रोगी अपनी अन्तिम आशा लिए हुये उनके पास पहुँच रहे थे। उनका जीवन बचाने में डाक्टर सकाई की लगन और तत्परता बढ़ती ही जाती थी और उसके साथ-साथ सभी अमरीकियों के प्रति उनका क्रोध भी निरन्तर बढ़ता जा रहा था।

इस सञ्चित उष्णता ने स्वयं डाक्टर सकाई को ही बीमार बना दिया और कई दिनों तक वे घर से बाहर निकलने में मजबूर रहे। वे भलीभांति जानते थे कि बीमार पड़ने पर वे सामान्य बीमारों से भी अधिक बेकाबू हो जाते थे। वे जानते थे कि उन्हें बिस्तर से उठना नहीं चाहिए, फिर भी वे बिस्तर पर रुक नहीं पाते थे, उन्हें खीझ होती थी और उस खीझ से वे खुद ही लड़ते थे और चिन्तन तथा अपने उपवन में शान्ति पाने का प्रयास करते थे। गर्मी का असर उनकी फुलवाड़ी पर भी पड़ा था और इसलिए उनका सौन्दर्य देखने के बजाय उनकी दृष्टि सूखे पीले झाड़ों पर पड़ती, तालाब में मरती हुई मछलियाँ उनकी आँखों को तर कर देतीं और पानी सूखता हुआ उनका झरना उनके दिल को सुखाने लगता।

एक दिन जब वह बेमन से थे उन्हें सदर दरवाजे की घण्टी लगातार तेजी से बजती हुई सुनायी दी। जाहिर था कि चौकीदार सो गया था और यद्यपि डाक्टर सकाई घण्टी से बहुत दूर थे, फिर भी उन्होंने जाकर फाटक खोल दिया। सामने एक ऊँचा पूरा अमरीकी अफसर वर्दी पहने खड़ा था।

डाक्टर सकाई देखते रह गये, "आप क्या चाहते हैं!" उन्होंने पूछा।

"डाक्टर सकाई से मिलना चाहता हूँ," उत्तर मिला।

"कहिए, मैं वही हूँ।"

डाक्टर सकाई की भौहें तन गयीं जैसे उस अमरीकी को निरुत्साहित करने के लिये। क्या ये लोग अब सम्भ्रान्त नागरिकों के घरों पर भी धावा बोलेंगे!

"मेरा नाम एलेन केनेडी है।" आगन्तुक ने कहा।

नाम डाक्टर सकाई के लिए बिल्कुल परिचित था। उसे भूलने की

उन्होंने कोशिश की थी पर भूल न सके थे।

"मैं आपको नहीं जानता," उन्होंने कुछ कठोर रूखे स्वरों में कहा।

आगन्तुक मुस्कुराया। "ठीक है, पर आपकी पुत्री से मेरी मुलाकात है।"

"मेरी बेटी को अवकाश नहीं है।"

"तो डाक्टर साहब, क्या मैं आपसे बात कर सकता हूं!"

डाक्टर सकाई ने तुरन्त कोई उत्तर नहीं दिया वह एक अमरीकी अफसर को टका सा जवाब दे देने के सम्भावित नतीजों पर वह गौर कर रहे थे। मानी बात थी कि एक अधिकारी को इस प्रकार धता नहीं बताई जा सकती थी।

"मैं अस्वस्थ हूँ," वे बोले "तबियत ठीक होती तो मैं अस्पताल गया होता। मैं चाहता हूँ कि मेरे विश्राम में कोई बाधा न हो।"

दोनों व्यक्ति एक दूसरे को तौलते हुए तेज निगाहों से एक दूसरे को देखते रहे।

"मैं फिर आऊँगा," एलेन ने कहा।

"कोई जरूरत नहीं है," डाक्टर सकाई एक गम्भीर स्वर में बोले।

"मेरा ख्याल है जरूरत है," एलेन ने कहा। "दर असल मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ कि जरूरत है।" उसे मन ही मन आश्चर्य और कुछ भय सा हुआ यह देख कर कि इस सुन्दर पर रूखे जापानी के विरुद्ध उसके हृदय में क्रोध उत्पन्न हो रहा था। आखिर इस व्यक्ति का क्या अधिकार था कि अपने घर आने से एलेन को रोक दे। आखिरकार वह घर जोशुई का घर था। वह जापान में है जहाँ के लोग पराजित और उनके गुलाम हैं, भावना उसके भीतर काम कर रही थी।

बड़े गर्व और बड़ी शान से डाक्टर सकाई बोले, "इस बात पर आप जोर नहा दे सकते।"

"आप की लड़की से मुझे मिलना है और मैं मिलकर ही रहूँगा," एलेन केनेडी ने वैसे ही प्रत्युत्तर दिया।

डाक्टर सकाई आपे से बाहर होगये ौर ा उन्होंने मल्कुम

और यह भी महसूस किया कि उनका यह क्रोध अमरीका में इतने दिन रहने का परिणाम है जहाँ पर उन्हें न बचपन में और न स्कूल में ही आत्म-संयम की शिक्षा मिली थी। पर बात अब बहुत आगे बढ़ चुकी थी। अब अपने क्रोध को सँभाल सकना उनके बूते की बात न थी और यह क्रोध न केवल उस अमरीकी के ऊपर था बल्कि खुद अपने ऊपर भी था। आखिर वे पूर्ण रूपेण जापानी क्यों न बन सके?

"मैं अमरीकियों को अपने यहाँ नहीं आने देता," उन्होंने चिल्लाकर कहा और जोर देकर दरवाजा बन्द करने की कोशिश की।

एलेन केनेडी के हृदय मे भी भावनाओं का द्वन्द्व था। यद्यपि एक विजयी जाति का होना उसे हृदय से पसन्द नहीं था फिर भी वह भावना जाने अनजाने उसके अन्दर समा चुकी थी। अमरीकी होने के नाते उसके जो अधिकार थे उनकी घोषणा तो वह डाक्टर सकाई के सामने न कर सका पर फाटक बन्द करते हुए डाक्टर सकाई का सक्रिय विरोध वह कर बैठा। बात दोनों के लिए लज्जा की थी, दोनों का इसमे अपमान था और दोनों ही इस लज्जा और अपमान को महसूस भी कर रहे थे, फिर भी दोनों का द्वन्द्व चल रहा था,—जापानी डाक्टर सकाई फाटक बन्द करने की कोशिश कर रहे थे और अमरीकी एलेन उसे खोल देने की कोशिश में जुटा था।

फाटक से सबसे अधिक समीप पर की रसोई थी। नौकरानी यूमी दोपहर के भोजन के बर्तन साफ करके और फर्श धोकर उसी रसोई घर में चुपचाप सो रही थी। विजेताओं की विदेशी भाषा के शब्द ऊँचे स्वर में सुनकर वह जाग पड़ी और दौड़ती दरवाज़े के पास आयी। उसके होश गुम हो गये जब उसने देखा कि घर के मालिक दरवाजा बन्द करने के लिए एक हट्टे कट्टे अमरीकी अफसर से झगड़ रहे हैं। वह चिल्लाई और चीखती हुई अपनी मालकिन को खोजने दौड़ पड़ी।

श्रीमती सकाई और जोशुई एक साथ बैठी हुई शादी के लिए कुछ कपड़े सिल रही थीं। उनकी आन्तरिक शान्ति पर यूमी की चीख ने एक विस्फोट का काम किया।

"अरे मालकिन, मालिक एक अमरीकी अफसर से लड़ रहे हैं।"

श्रीमती सकाई उठकर कमरे से बाहर भगा। यूमी उनके पीछे चली।

जोशुई अपने स्थान से नहीं हटी। वह समझ गयी कि एलेन वापस आ गया पर कितने बुरे समय और कितने बुरे ढग से वह आया! वह फाटक पर आया ही क्यों? उसने उसे पत्र क्यों न लिख दिया? लेकिन अब वह यहाँ रुक नहीं सकती थी। चाहे जैसी लड़ाई हो रही हो, या तो उसे भी उसम शरीक होना चाहिए या उसे शान्त करना चाहिए।

सो एलेन केनेडी को अपनी प्रेयसी दिखायी दी। वह छरहरी छोकरी एक नीली और सफेद रग की घाघर पहने हुए जिस पर फूल कढे हुए थे, वह उसकी ओर चली आ रही थी। आज वह उसकी स्मृति से भी अधिक सुन्दर थी। उसका चेहरा पीला था जिसमें अनुनय भरी थी और चूँकि एलेन अब तक फाटक के अन्दर आ चुका था, वह उससे मिलने के लिए आगे बढा।

डाक्टर सकाई खडे हाँफ रहे थे। अब उनके दोनों होठों में जैसे द्वन्द्व हो रहा था और उनके सामने श्रीमती सकाई और यूमी अङ्ग रक्षक जैसी खडी थीं। वे पराजित हो चुके थे। उन्होंने देखा कि उनकी पुत्री कुछ हिचकिचाई, झिझकी और सहसा उस अमरीकी की बाँहों में बँध गयी। यह सच है कि उसने उन बाँहों से छूटने की कोशिश भी की पर डाक्टर ने इसका अर्थ यह लगाया कि यह कोशिश वहाँ पर उनके, उनकी पत्नी और नौकरानी के मौजूद रहने के कारण थी। उन्हें विश्वास था कि यदि जोशुई अकेली होती तो यह कोशिश कभी न की जाती। जोशुई हाथ से जा चुकी थी, वे यह समझ गये। अब केवल दाँव पेंच की बात शेष रह गयी थी।

अपनी निष्ठामयी पत्नी की ओर घूमकर वे बोले, "अपनी बेटी को मेरे पास ले आओ", और वे विहान सम्मान का लिए हुए घर के भीतर चले गये।

उन्हें कुछ मिनटों के लिए एकान्त की आवश्यकता थी। वे सङ्कल्प कर चुके थे कि इस अमरीकी को अब भी खदेड़ बाहर करेंगे और उन्हें इत्मीनान था कि दाँव पेंच से ऐसा करना मुश्किल भी न होगा।

सी बात थी कि वे इस अमरीकी से उसकी असली मंशा पूछें। उन्हें विश्वास न था कि उसकी मंशा किसी कदर भली मंशा हो सकती है। अमरीकी लोग जापानियों से शादी करना नहीं चाहते, यह बात उन्हें मालूम थी और इसके प्रमाण उनके पास थे। आवश्यकता पड़ने पर वे उन प्रमाणों को पेश करेंगे। लेकिन अपनी पत्नी की उपस्थिति में वे यह सब कैसे कर सकेंगे। एक गहरी सांस लेकर वे गद्दे पर बैठ गये। उनके पैर उस जापानी ढंग से मुड़े हुए थे, जो उन्होंने बड़े अभ्यास के साथ सीखा था।

वह इसी मुद्रा में बैठे थे जब ये लोग उनके पास आये। अमरीकी युवक अब काफी विनम्र हो चुका था। "डाक्टर सकाई मुझे बड़ा दिली अफसोस है। मैं नहीं समझ पाता कि थोड़ी देर के लिए उस वक्त मेरे भीतर क्या समा गया था। वास्तव में मुझे इस बात का कोई हक न था कि अपने आपको इस प्रकार जबरन आप पर लादूं।"

डाक्टर सकाई ने कोई उत्तर नहीं दिया। आगन्तुक को एक गद्दे पर बैठने का इशारा किया और यह देख कर उन्हें खुशी हुई कि उसे उस पर बैठने में कठिनायी पड़ी। जोशुई को उन्होंने खड़ी रहने दिया और यूमी की ओर इतनी कड़ी निगाह से देखा कि वह कमरा छोड़कर भाग गयी। श्रीमती सकाई चुपचाप उनके पीछे झुककर बैठ गयीं।

अचानक वह नौजवान उठकर खड़ा हो गया। शायद उसके पैर—लेकिन—नहीं वह जोशुई को बैठने की जगह देने के लिए खड़ा हुआ था।

"आप कहाँ बैठियेगा?" उसने धीमी आवाज में पूछा।

"कृपा करके मेरी चिन्ता न कीजिए," परेशान जोशुई ने प्रार्थना की।

"मैं आपकी चिन्ता करता हूँ," उसने कहा।

"बैठ जाओ," डाक्टर सकाई ने गम्भीर स्वर में अपनी बेटी से कहा।

वह अपनी माँ की बगल में झुककर बैठ गयी और एलेन फिर गद्दे में किसी प्रकार तकलीफ से बैठ गया।

डाक्टर सकाई चुप रहे, प्रतीक्षा करते रहे। प्रार्थना उनसे की जानी चाहिए। आखिरकार यह परिस्थित उनकी उत्पन्न की हुई नहीं है। चोट

उन्होंने खायी है। पर साथ ही उनकी मंशा थी कि, एक बार मसला सामने आ जाय तो वे न्याय करेंगे, शान्ति पूर्वक बात सुनेंगे पर वह कठोर और अडिग बने रहेंगे।

"पिताजी," जोशुई ने धीमी आवाज में शुरू किया।

डाक्टर सकाई ने इतनी तीखी और कठोर दृष्टि से उसकी ओर देखा कि वह चुप हो गयी।

अमरीकी युवक उसकी रक्षा के लिए आगे बढ़ा। "जोशुई बोलना तुम्हें नहीं चाहिए, यह काम मेरा है।"

इस प्रकार एलेन का विवश होकर बोलना पड़ा। "आज जब मैं क्योटो शहर आया तो मेरा मन अस्थिर था। केवल एक बात मेरे मन में स्पष्ट थी कि मुझे जोशुई से एक बार जरूर मिलना है और वह भी इसलिए कि मैं खुद अपने आप को परख सकूँ, यदि ऐसा सम्भव हो, और देखूँ कि मैं सचमुच उसे कितना प्यार करता हूँ और यह कि क्या मैं उसके बिना रह भी सकता हूँ या नहीं। अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका हूँ कि जोशुई से अलग मेरा जीवन सम्भव नहीं है। इस निष्कर्ष में आपके साथ जो यह दुखद संघर्ष हो गया इसका भी हाथ है जरूर; पर वास्तव में जोशुई के पीले और खुले हुए मनोहर चेहरे ने यह निष्कर्ष स्थिर कर दिया।"

"तो फिर बताओ," डाक्टर सकाई रूखे स्वर में बोले," तुम यहाँ किस मतलब से आये हो?"

"मैं आपकी बेटी को देखने आया हूँ।"

डाक्टर सकाई जोशुई की ओर घूमे," क्या तुम इस आदमी को जानती हो?"

"हम बेशक एक दूसरे को जानते हैं," एलेन केनेडी ने जल्दी से उत्तर दिया। और तब उसने बड़े आहिस्ते और बड़े अच्छे ढङ्ग से अपने और जोशुई के परिचय की छोटी सी कहानी सुनायी और यह भी संकेत किया कि कैसे थोड़े ही घन्टों में वे एक दूसरे से अलग होने को तैयार हो गये थे।

"तो अब फिर तुम लौटकर क्यों आये हो?" डाक्टर सकाई ने पूछा।

"क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं उसे कितना प्यार करता हूँ।" एलेन ने कहा।

डाक्टर सकाई निर्मम रहे। "प्यार तो तुम उसे कर ही नहीं सकते। उसकी सगाई मेरे मित्र के बेटे कुवेर मत्सुई के साथ हो चुकी है। एक पखवारे में ही शादी होगी।"

एक क्षण तक युवक प्रतिमा जैसा बैठा रहा और तब जोशुई की ओर घूमकर बोला," क्यों यह सच है?"

जोशुई ने सर हिला दिया। उसकी आँखों से आँसू बह चले।

"अच्छा होता तुमने मुझे बता दिया होता," उसने कहा।

एक क्षण तक वह विचार मग्न चुपचाप बैठा रहा। तब फिर जोशुई से बोला, "जोशुई मैं जानता हूँ कि मैं तुमसे एकान्त में नहीं मिल सकता। इसलिए मुझे तुमसे ऐसे बात करनी होगी जैसे हम लोग अकेले ही हों। और तुम्हें उसी तरह मुझे उत्तर देना होगा। बोलो, जिस आदमी से तुम्हारी सगाई हुई है, क्या तुम उसे प्यार करती हो?"

"नहीं" उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया। "पर वह बहुत अच्छे आदमी हैं।"

"जोशुई, सच सच बताओ, क्या तुम मुझे प्यार करती हो?"

उसने आसुओं से गीला अपना मुँह ऊपर उठाया, "हाँ, एलेन केनेडी!"

"तो क्या तुम मेरे साथ शादी करोगी?"

अमरीकी ढंग, डाक्टर सकाई ने सक्रोध सोचा, हमेशा दूसरों पर हावी होना, चिर आक्रमण की पाशव प्रवृत्ति। "सगाई तोड़ी नहीं जा सकती" वह गरज कर बोले, "जापान मे ऐसा नहीं होता।"

"मेरा ख्याल है कि यदि सगाई के दोनों पक्ष आपस मे ही तय करलें कि वे शादी नहीं करना चाहते तो सगाई टूट सकती है—कम से कम आधुनिक जापान में?" एलेन ने पूछा।

डाक्टर सकाई डिग गये। उन्होंने अपना गला साफ किया और अपना एक एक हाथ एक एक घुटने पर रख कर सामने की फर्श की ओर

ताकते हुए बोले, "मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ।"

"पिता जी, बताइए," जोशुई ने प्रार्थना की।

"यह एक ऐसी बात है जो मैंने आज तक किसी से नहीं कही।" डाक्टर सकाई कुछ भरे भरे दबे से स्वर में बोले, "अपनी पत्नी को भी मैंने यह बात नहीं बतायी।" अपनी बोझिल भौंहों के नीचे से उन्होंने उस दयामयी रमणी की ओर देखा। "क्षमा करना, मैंने यह बात तुम्हें भी नहीं बतायी। बरसों बीते, मैं तो इसे भूल ही गया था और इस समय भी केवल अपनी बेटी के कारण यह बात याद आयी।"

"मेरी चिन्ता मत करिए," श्रीमती सकाई धीमे से बोलीं।

"जोशुई,—मेरी बच्ची, डाक्टर सकाई ने शुरू किया, "यह सम्भव नहीं है कि तुम एक अमरीकी से शादी कर सको। मैं यह इसलिए कहता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ, यह अमरीकी नौजवान भी वह सब नहा जानता जो मैं जानता हूँ। यह सच हो सकता है कि वह तुम्हें प्यार करता हो, यह भी सच हो सकता है कि तुम भी उसे प्यार करती हो, पर प्यार में विवेक नहीं है। प्यार तो केवल एक भावना है जो आती है और चली जाती है—समाप्त हो जाती है और जीवन स्थिर गति से चलता रहता है।"

वह इतने गम्भीर और दुख भरे स्वरों में बोल रहे थे कि सब उनकी बात सुनते ही रहे। घर में शान्ति इतनी गहरी थी कि वे धीमे धीमे स्वर जो कभी सुनायी ही नहीं देते थे आज अचानक अत्यन्त मुखर हो उठे थे। सामने पेड की पत्तियाँ संगीत के स्वरों में बोल रही थी, झरने की झर झर अचानक बहुत तेज हो गयी थी, चिड़िया को जाने क्यों शोर करना सूझा था।

"जब मैं अमरीका में था," डाक्टर सकाई ने बडी व्यथा के साथ शुरू किया, "मैं युवक था। एक अमरीकी लडकी को मैं प्यार करता था मैं कह सकता हूँ कि वह लड़की भी मुझे प्यार करती थी। हम दोनों ने अपने अपने प्यार की स्वीकृति एक दूसरे को दे दी थी। मेरे माता पिता ने आपत्ति की। पर मैं तो अमरीकी ढङ्ग से पाला पोसा गया था और मुझे ऐसा लगता था कि जो कुछ मैं अपने जी जान से चाहता हूँ उसे अस्वीकार

करने का उन्हें कोई हक नहीं है।"

श्रीमती सकाई अचानक तनकर सीधी हो गयीं। उनकी हथेलियाँ एक दूसरे से गुँथ गयीं और वे उन्हीं की ओर देखती रहीं। डाक्टर सकाई ने उनकी ओर नहीं देखा।

"ओ माँ," जोसुई चीख उठी। उसकी साँस बन्द सी हो रही थी। उसके पिता कहते गये," मैं सब त्याग करने के लिए तैयार था," रूखे अविचल स्वर से वे कह रहे थे। "मैं अपने माता पिता को भी छोड़ने को तैयार था और तब अचानक जाने क्या हुआ, उसका भाई पिस्तौल लेकर मुझे मारने की धमकी देने आया। यह एक रात की घटना है जब मैं यूनिवर्सिटी से देर में घर लौट रहा था। उसे कैसे मालूम हुआ कि मैं उस रास्ते से आता हूँ, बेशक उस लड़की ने ही उसे बताया होगा। अपनी पिस्तौल मेरी छाती से लगा कर वह बोला, 'देखो, मेरी बात सुनो' ये ही उसके शब्द थे, 'मेरी बहन को तुम छोड़ दो। हम लोग किसी अधम जापानी को अपने परिवार म नहीं चाहते।' हाँ, यही उसने कहा था। और फिर इसके बाद मैंने उस लड़की को कभी नहीं देखा।"

"बस इतना ही?" एलेन ने पूछा।

"किस मुँह से तुम पूछते हो, बस इतना ही?" डाक्टर सकाई ने गरम हो कर पूछा, "उस समय तो मेरे यही सब कुछ था और आज फिर यही मेरे लिए सब कुछ है" अपनी अंगुली उठाते हुए उन्होंने कहा, "क्योंकि मैं तुमसे साफ कह देना चाहता हूँ कि मेरी बच्ची के साथ भी यही बीतेगा।"

"मेरे परिवार मे लोग पिस्तौल उठाकर किसी को धमकी नहीं देते", एलेन ने कुछ गर्व के साथ कहा।"

"ठीक यही घटना घटेगी," डाक्टर सकाई ने जोर देकर कहा। "हो सकता है पिस्तौल न उठे, कोई दूसरा हथियार काम मे आये; पर इतना तो मैं जानता हूँ कि अपने परिवार मे वे लोग किसी अधम जापानी को स्वीकार नहीं करेंगे।"

"मैं आपकी भावनाओं को समझता हूँ," एलेन ने सहानुभूति पूर्वक

कहा ; "लेकिन डाक्टर सकाई, यह बात बहुत पुरानी है, तब की जब जाशुई पैदा भी नहीं हुई थी। अब परिस्थिति बदल गयी है।"

डाक्टर सकाई जोर से हँसे "मैं अखबार पढता हूँ। परिस्थिति कुछ वैसी तो नही बदली। तुम्हारे अनेक राज्यों में आज भी श्वताङ्गों और इतर लोगों के बीच विवाह की अनुमति नहीं है। तुम्ही बताओ क्या तुम्हारे परिवार के लोग काले लोगों के साथ एक ही मज पर बैठकर खाना खाते है ?"

एलेन का चेहरा उसके चौंकने को छिपा न सका, "मरे दिमाग म तो जोशुई को काली जाति का समझने का कभी खयाल ही नहीं आ सकेगा।"

जोशुई के कपोलों पर लाली दौड गयी, "मैं एलेन केनेडी से एकान्त मे बात करूँगी," अचानक उसने घोषणा की। "अब तो सब कुछ थपले में है। पहले हम लोगों को आपस में स्पष्ट और स्थिर हो लेने दीजिए पिता जी।"

कुछ ऐसे सकल्प के साथ वह उठ खडी हुई कि उसके पिता उसे रोक न सके और, शायद अगर रोक सकते भी तो रोकते नहीं। सो जाने दो उन्हें, फुलवाड़ी में जाकर बात कर लें। इस अवस्था में बातें आती भी बहुत हैं। पर अपने जीवन का कटु रहस्य उन्होंने बता दिया है और उसे वे भूल नहीं सकते।

इस प्रकार डाक्टर सकाई अपनी पत्नी के साथ अकेले रह गये। वे अचल बैठी रही। तब तिरछी आँखों पति ने उनकी ओर देखा। पहले उनकी गुथी हथलियाँ दिखायी दीं और तब उन्होंने देखा कि वे काँप भी रहीं हैं। अपना दाहना हाथ बढाकर उन्होंने उन हथेलियों पर रख दिया। "वह दिन धन्य था जिस दिन मैंने तुम्हारा चित्र देखा," वे बोले, "जिस क्षण मैंने तुम्हें देखा, मैं समझ गया कि तुम एक अच्छी सहधर्मिणी होगी, यद्यपि तुम्हारा वह चित्र इतना सुन्दर सुखद नहीं था जितनी वास्तव में तुम निकलीं। तुम मेरे लिए केवल सौभाग्य ही सौभाग्य लेकर आयीं। अगर मैंने दूसरा रास्ता अपनाया होता तो मेरी जिन्दगी

कितनी अभाग्य पूर्ण हो गयी होती। उस हत्यारे को मैं धन्यवाद देता हूँ कि उसने मेरी छाती से पिस्तौल लगा कर मुझे सही रास्ता तो दिखा दिया।"

अपनी सिसकियों से संघर्ष करती हुई श्रीमती सकाई बोलीं, "मुझे विश्वास है, आप उससे डरे नहीं होंगे।"

"डर तो मैं गया था;" डाक्टर सकाई बोले, "तुरन्त मैं लौट पड़ा। मैंने उसे विश्वास दिलाया, कुछ भी हो मैं उसकी बहन से शादी नहीं करूँगा। यह तो सच्ची बात है।"

"भूल जाइए," उनकी पत्नी ने प्रार्थना की। अपने हाथ धीरे से डाक्टर की हथेली के नीचे से उन्होंने खींच लिया और बाहों से आँसू पोंछ लिए, "अब हम लोग अपने देश में हैं। और देशों की बातें अब याद करने की जरूरत नहीं है।"

"ठीक कहती हो," वे बोले, "लेकिन तुम समझ सकती हो कि जो कुछ मैं भूल गया था उसे आज फिर क्यों कहा।"

"फिर भी", वे अनुनय भरे स्वरों में बोलीं।

"अगर मैं भूल न गया होता, तो जाने कब का तुम्हें यह सब बता चुका होता।" डाक्टर ने दृढ स्वर में कहा।

स्थिति श्रीमती सकाई के लिए असहनीय होती जा रही थी। वे बड़ी नम्रता और शालीनता के साथ उठीं और पति को सर झुकाती हुई धीमे स्वर में बोलीं, क्षमा कीजिएगा, मुझे कुछ और काम करने हैं।"

वे कमरे से निकल गयीं और उस कमरे में चली गयीं जिसमें थोड़ी देर पहले जोशुई के साथ कपड़े सिल रही थीं। महीन सफेद रेशमी कपड़ा उठाकर वे सिलने लगीं। सावधानी के साथ हर बार आँखें भर आने पर वे उन्हें पोंछ डालतीं थीं जिससे आँसू रेशम को बरबाद न कर दें। एक सुन्दर लड़की तो वे कभी भी नहीं रहीं। वे अपने आपको भली भाँति जानती थीं, एक खेतिहर लड़की थीं वे, चेहरा उनका चौकोर और धूप से तपा हुआ था। डाक्टर सकाई ने उन्हें चुना नहीं था, चुनने का काम तो डाक्टर साहब के माता-पिता ने किया था। वे स्वस्थ और आज्ञाकारिणी

थीं, देखने में भी और जीवन में भी; पर डाक्टर सकाई अपने असफल प्रेम से इतने दुखी थे कि उन्हें इस बात की चिन्ता ही नहीं थी कि वे कैसी थीं, कैसी नहीं।

अचानक श्रीमती सकाई ने सुई रख दी। हो सकता है इस पोशाक की जरूरत ही न पड़े; सो इसके सीने से फायदा ही क्या?

१५

उधर फुलवाड़ी में दोनों नौजवान बाँसों के झुरमुट के पीछे थे जो इस मौसम में बहुत घना हो गया था। एक लकड़ी के बेंच पर अगल-बगल बैठे वे दोनों एक दूसरे से आबद्ध हो रहे थे और एक क्षण के लिए उनकी कथा थम गयी थी। उसका प्यार कैसा था यह समझने की शक्ति उसमें नहीं थी और न वह इसका दावा ही कर सकता था। वह केवल इतना ही जानता था कि वह उसे कुछ ऐसा प्यार करता है जैसा कि प्यार उसने कभी जाना ही नहीं। और इसका मतलब चाहे जो कुछ भी हो, उसका निश्चय था कि जोशुई को प्राप्त करने के लिए, जो भी सामने आये, झेलना होगा।

"तुम जानती हो, मेरे अलावा किसी और से तुम शादी नहीं कर सकती हो," उसके होठों पर होठ रखे हुए उसने कहा।

"हाँ, अब मैं जानती हूँ," टूटी हुई आवाज में वह बोली।

"हम लोग भग चलेंगे," उसने बेधड़क कहा," तुम अमरीकी हो जोशुई, हम लोग अमरीकियों की भाँति काम करेंगे। हमें इस प्रकार आज्ञा पालन नहीं करना है मानों हम निरे बच्चे हैं।"

"नहीं हम भग कर नहीं जा सकते," जोशुई ने दृढ़ता पूर्वक कहा। अपनी बाहें उसने उसकी कमर में डाल दीं और उसका सर उठाया ताकि

उसका चेहरा दिखाई दे। "कुबेर मत्सुई को तुम नहीं जानते, वे वास्तव में बहुत भले आदमी हैं। मर्यादा के अनुकूल मुझे उन्हें सब कुछ बताना ही चाहिए। वे मेरी बात समझ लेंगे।"

एलेन के मन में एक अनुचित इच्छा सी उत्पन्न हुई कि अच्छा होता यदि यह मत्सुई इतना भला न होता। जोशुई को एक कठोर जापानी से, जैसे उसके पिता थे, छीन ले जाना ज्यादा आसान होता।

"मैं उस व्यक्ति से मिलना नहीं चाहता," अचानक उसने कहा।

"यह काम मेरे लिए छोड़िये," जोशुई बोली, "मुझे अपने माँ बाप से बात करनी चाहिये। पिताजी की बात हमें हर छोटे छोटे मामले में माननी चाहिए, समझे एलेन केनेडी?"

"सुनो जोशुई, मेरा इतना भारी भरकम नाम लेना बन्द करो, केवल एलेन काफी है।"

"एलेन," उसने दोहराया और ऐसे कहती गयी जैसे उसे बीच में किसी ने टोका ही न हो। "जो अहम मसला है उसमें हम पिता जी की बात नहीं मान सकते। हम अलग नहीं हो सकते। लेकिन जब वे इस बात को महसूस कर लेंगे, और मैं उन्हें यह बात महसूस कराऊँगी, तब यह हमारा कर्तव्य हो जायगा कि उन्हें विकल्प का पूरा पूरा अवसर दें।"

अब विवाह का संकल्प कर लेने के बाद हर बात में झुकने के लिए तैयार था। "जैसा तुम चाहो, हाँ जो हो जल्दी हो।"

अपना सर उसकी छाती पर रखती हुई वह बोली, "हाँ जल्दी।"

आश्चर्य था कि जब इतना महत्व पूर्ण निश्चय हो गया तो उनका प्रेम प्रदर्शन समाप्त सा हो गया। वे गम्भीरता पूर्वक एक दूसरे से सटे हुए बैठे रहे। वह उसकी हथेली से खेलता रहा जैसे वह कोई खिलौना हो। और फिर भी उसका ध्यान कहीं और था। महान समस्यायें ऐसी समस्यायें जिनकी रूपरेखा का उसे पता नहीं था, जो उन्हीं दोनों को लेकर उत्पन्न हो रहीं थीं—उसके सामने आ रही थीं और बीच के सागर को पार करती हुई अमरीका में उसके घर में केन्द्रित हो रही थीं। उसके परिवार के लोग क्या सोचेंगे? उसने तय किया कि उन लोगों को वह कुछ नहीं बताएगा। वह

तब तक प्रतीक्षा करेगा, जब तक वे लोग जोशुई को देख न लें। यह कोई तर्क की तो बात थी ही नहीं। वे लोग इस अनुपम स्त्री को देखें तो इस सुकुमार, सुन्दर लडकी को, जो अपनी सुकुमारता के साथ साथ कितनी शक्ति-शाली भी है। यद्यपि वह इतनी बच्ची थी फिर भी कितनी बुद्धिमान थी। और यही एक बात उसे और भी तकलीफ दे रही थी। लेकिन वह बहादुर भी थी। वह अपनी कल्पना में उसे अपनी माँ के पास अपने विनम्र गर्व और दृढता भरे दुलार के साथ जाती हुई देख सकता था। निस्सन्देह उसकी मोहिनी दुर्निवार होगी।

सो इस प्रकार एलेन ने जोशुई से रहस्य छिपाया, अपना या जोशुई का रहस्य नहीं, बल्कि जीवन का रहस्य छिपाया, जिसकी परम्पराओं को वे तोड रहे थे। पर वे नौजवान थे, पर्याप्त शक्ति थी उनमें, और [illegible] तो आजकल टूट ही रही थीं। अन्य अमरीकियों ने जापानी [illegible] से शादी की थी और उन्हें घर ले गये थे। कुछ शादियों के [illegible] निकले और कुछ के बुरे। तो जब उनमें साहस है तो भला [illegible] के परिणाम भले क्यों न होंगे? लेकिन जोशुई के दिमाग [illegible] बोझ डालना उसे पसन्द नहीं था। इस सगाई का [illegible] तोड़ना था—और जल्दी ही तोडना था—और अपने [illegible]— इतना ही उसके लिए काफी था। एलेन का यह विचार [illegible] कि जोशुई की सगाई किसी दूसरे व्यक्ति से हो चुकी है।

"किसी दूसरे व्यक्ति से शादी करने का वचन [illegible]" वह अचानक पूछ बैठा।

"क्यों न देती?" उसने कहा। "[illegible] शादी करनी ही थी। तुमने तो मुझसे शादी [illegible]"

निस्सन्देह यह उसकी भूल थी, [illegible] नहीं सकता था।

"हमारी शादी कब हो सकेगी?" [illegible]

"शादी कैसे हो जाय!" [illegible] कुबेर से बात करनी चाहिए। [illegible]

'हूँ" वह उदास सा हो गया। "यह सब काम तुम्हारे साथ छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता। लेकिन छोड़ना ही पड़ेगा। ये चीज़ें जैसा तुम समझ पाती हो मैं नहीं समझ पाता।"

लेकिन अचानक उसे ईर्षा हुई। 'तो निश्चित है कि तुम अपने इस जापानी से शादी नहीं करोगी? इससे तो यह सब झंझट खतम हो जायगा।"

जोशुई ने अपनी हथेली उसके होठों पर रख दी। "हुश, तुम मुझे बता चुके हो कि मैं अमरीकी हूँ। यदि ऐसी बात है तो फिर मैं अमरीका से ही शादी करना चाहती हूँ।" प्यार की कातर नज़रों से उसने उसे देखा "मैं तुमसे शादी करूँगी।"

दोनों फिर एक दूसरे की बाँहों में बँध गये। पुराना प्रबल वासना उसके रक्त में दौड़ गया। उसके दिल की धड़कन में समा गयी। उसका गला रुँध सा गया। "जोशुई अधिक विलम्ब न होने देना। अपनी ओर से मैं कल से ही तैयारी शुरु कर दूंगा। मुझे अपने अफसर कर्नल से सब बताना होगा—उसकी सहायता लेनी होगी। हो सकता है उसकी सहायता से कुछ जल्दी हो सके। हमें जल्दी करना चाहिए। तुम वहां अपने पिता जी से निपटो उन्हें बहुत विलम्ब न करने देना।"

"नहीं, नहीं," उसने कहा, "यदि कुचेर को सब मालूम हो जाता है तो वे देर नहीं करेंगे।"

"अच्छा तो मुझे पाँच बजे की गाड़ी पकड़ना है। मैं बिना छुट्टी लिए बाहर हूँ, यद्यपि एक दिन के लिए भी मुझे निकलना नहीं चाहिए था।"

"पत्र लिखना, एलेन।"

"तुम मुझे लिखना प्रिय।"

"मुझे अच्छी तरह लिखना नहीं आता,—पर जैसा भी लिख पाऊँगी, लिखूँगी।"

दोनों अलग हुए। वह डर रही थी कि कहीं घर से पिताजी न चीखने लगें या एलेन को ही गाड़ी की देर हो जाय।

"आज ही रात को पत्र लिखना, सुनती हो, जोशुई।"

"मैं कोशिश करूँगी, पर तुम भी लिखना, एलेन।"

"मेरे बजाय पत्र टाइपराइटर लिखे तो बुरा न मानना।"

"नहा, नहा," उसकी 'नहा' एक लम्बी 'नहा' रही जैसे दीर्घ निश्वास हो।

दानों अलग हुए और जब वह अलग खड़ी हुइ तो उसे अपना प्रतिबिम्ब सरोवर में दिखाई दिया। प्रेम म इतना दु ख क्यों छिपा रहता है? वह उसे बहुत प्यार करती थी। अच्छा हाता यदि वह कुबेर को प्यार कर पाती और इस प्रकार सब को प्रसन्न रख सकती। अगर वह लता कुञ्ज क नीचे उस दिन न खडी हुई होती, जब अमरीकी सिपाही उधर से गुजर रहे थे, तो न उसने एलेन को देखा होता और न एलेन ने उसे और सब कुछ उतना ही आल्हादमय रहता जितना अब कभी न हो सकेगा। उसन माता पिता को उस प्यार से चोट पहुँची थी जो प्यार स्वयं उसके भीतर इतनी उत्तजना और इतनी व्यथा कर रहा था और एलेन न पढ़ म वहाँ वजानियों म, कौन जाने क्या होगा? लेकिन वह इतनी अच्छी बहू बन कर जायगी कि कोई उससे घृणा कर हा न सकेगा।

आखिरकार वह घर के अन्दर गयी। उसे आश्चर्य हा रहा था कि पिता जी ने उसे अब तक बुलाया नहीं। य कहीं दिखायी नहीं दे रहे थे। जरा देर में ही उसकी माँ उस कमरे से निकला जो पिता जी क पढ़ने और सोने का कमरा था और जिसक पर्दे कभी हटाये नहीं जाते थे।

"तुम्हारे पिता जी की तबियत अच्छी नहीं है" माँ ने बताया। "दिन उनके लिए बहुत भारी रहा। आज रात तुम्हें उनसे बात न करनी चाहिए। अगर तुम्हें कुछ कहना ही है तो मुझसे कहो।"

माँ बेटी अपने आप म सिमटी सी एक दूसरे क पास खड़ी रहा। जाणुई सोच रही थी कि माँ के दिल पर और अधिक चोट अब कैसे पहुँचाए? और फिर भी बात उसे कहनी ही थी। प्रेम एक भयानक प्ररक शक्ति है। वह उसे निर्दयता चरम सीमा तक लिए जा रहा था यद्यपि उसे निष्ठुरता से घृणा थी और सर्वदा वह एक सुकुमार बेटी ही

बनी रही। और अब वह अपनी माँ के दिल को भी चोट पहुँचाने जा रही थी। ऐसी माँ के दिल को जिसने जीवन भर कभी कोई कठोर शब्द नहीं कहा था और जिसका सारा जीवन उस परिवार की मंगल कामना में ही अर्पित हो चुका था। उसकी आँखों में आँसू भर आये, शब्द शक्ति न रही और करुणा भर नेत्रों से माँ की ओर देखती रही।

माँ ही उससे बदले बोलीं, "तुम इस अमरीकी से शादी करना चाहती हो? चाहती हो न?"

"हाँ, माँ, पर मन चाहता है कि मुझे यह शादी करने की इच्छा न होती। अच्छा होता मैंने इसे कभी न देखा होता। तब मैं कुबेर से शादी कर सकती और खुश रह सकती, क्योंकि अन्य किसी का मुझे ज्ञान ही न हुआ होता। मैं भी उसे उसी तरह प्यार करना सीख लेती जैसे आप पिता जी को करती हैं। आप ने तो शादी से पहले पिता जी को नहीं देखा था?"

उसकी माँ मुस्कराई तक नहीं। उनका शान्त स्निग्ध मुख ज्यों का त्यों बना रहा। "वह जमाना और था। मेरी जिन्दगी तुम्हारी जिन्दगी से बिल्कुल ही भिन्न थी। मैं तो केवल आज्ञा-पालन करती थी, यही मेरा भाग्य था।"

"किन्तु आप सुखी तो रहीं!" जोसुई ने जोर से कहा।

"हाँ" उसकी माँ ने उत्तर दिया। "किन्तु मेरे सुख की प्राप्ति आसान थी। मुझे इतने सौभाग्य की आशा नहीं थी जितना मुझे मिला है।"

वे अब तक खड़ी ही थीं। जोसुई ने अपना हाथ माँ के कन्धे पर रख दिया। "माँ, क्या आप मेरी यह बात समझ सकती हैं कि मैं उसे इतना अधिक प्यार करती हूँ कि जो कुछ करती हूँ उसके लिए मैं विवश हूँ?"

माँ ने एक विचित्र और अकथनीय दुःख भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। "कल मैं न समझ सकी होती, आज समझ सकती हूँ।"

अपनी बेटी की ओर से उन्होंने अपना मुँह घुमा लिया। उनके पीले पीले होंठ काँप रहे थे।

"माँ, ऐसा न करो", जोशुई ने कहा। 'यह तो बहुत पहले की बात है, पिता जी भूल चुके हैं।"

'वे भूले नहीं हैं," माँ ने एक धीमे पर दृढ स्वर में कहा।

"यह तो उनका विक्षत गर्व था जिसने यह सब याद दिला दिया", जोशुई ने तर्क किया। "आप जानती हैं वे कितने गर्वीले हैं।"

"नहीं, यह गर्व नहीं था" माँ उसी भरे स्वर म बाला। "यह उनका विक्षत प्रेम था। इसी कारण तो उन्होंने अमरीका छोड़ना चाहा। उनका घायल प्रेम—हाँ, वह अमरीका को भी प्यार करते थ, और जब वे लाग उनके विरुद्ध हो गये, जैस वह अमरीकी लडकी भी उनक विरुद्ध हो गयी,—यह सब उनके घायल प्रेम की ही कहानी है जो उनकी युवावस्था से प्रारम्भ हुई और उनक अमरीका छोड़ने तक निरन्तर गहरी और कडुवी होती गयी। अमरीका उनका देश था।"

"ओ, माँ, माँ," जोशुई उसासों म बोली। वह समझ नहीं पाती थी कि माँ का कैसे सान्त्वना दे।

"तुम्हारे लिए उस अमरीकी को प्यार करना स्वाभाविक है", माँ कहती गयी। "और इसलिए तुम्हे उससे शादी करनी ही चाहिए। कुबेर से शादी करना तुम्हारे लिए ठीक न होगा। जो कुछ तुम्हारे पिता जी न कर सके वही तुम्हे सम्पादित करना चाहिए और तुम्हें अमरीका वापस जाना चाहिए। जापान तो मेरा देश है—केवल मेरा और इसीलिए मैं तुम्हारी सहायता करूगी।" जीवन म पहली बार दाा महिलाओं ने एक दूसरे को गले लगाया। उनकी आँखों से आँसू टपक रहे थे।

१६

सवेरे डाक्टर सफाई उठे तो उसका शरीर चेतन्यशून्य सा था,

गम्भीर थी। अपनी जिस पत्नी को वह अब तक एक सरल आज्ञाकारिणी महिला समझते थे, रात में उसका भिन्न रूप दिखायी दिया। उसने उनके विरुद्ध जोशुइ का पक्ष लिया और जोशुइ के इस दुखद व्यवहार का कारण उन्ही को ठहराया। कुछ ऐसा वक्र तर्क उसने रक्खा कि चूँकि डाक्टर सकाई उस अमरीकी लड़की से शादी नहीं कर पाये थे जिसको अपनी युवावस्था में उन्होंने प्यार किया था, इसलिये जोशुई को एक अमरीकी से शादी करनी ही चाहिए।

आधी रात को घण्टों यह विवाद चलता रहा। डाक्टर बोले, "देखो, विश्वास करो कि मुझे उस शादी से बच निकलने के सौभाग्य पर बड़ी खुशी है। नहीं तो सोचो, जब उन्होंने मुझे बन्दी शिविर में रखना चाहा था तो परिवार की क्या दशा होती? मैं समझता हूँ मेरे बच्चे होते। वे कहाँ जाते? क्या वे भी बन्दी शिविर में जाते? उन मिश्रित रक्त के बच्चों को मैं यहाँ जापान तो न ला सकता। तुम जानती हो यहाँ ऐसे लोगों को किस नजर से देखा जाता है। वे बच्चे किसी देश के बच्चे न होते, दुनियाँ के निवासित जन्तु होते वे। नहीं, मैं सचमुच प्रसन्न हूँ कि उस मूर्खता से मैं बच गया और मैं कोशिश करूँगा कि हमारी बच्ची भी इस जाल में न फँसे।"

उनके इस तर्क पर पत्नी ने एक ऐसी घोषणा की जो समझ में ही न आती थी। "और मैं कुवेर मसुई की रक्षा करूँगी। मैं एक भले सुन्दर जापानी युवक की रक्षा करूँगी। उसे ऐसी लड़की से शादी न करने दूँगी जो एक अमरीकी से प्रेम करती है। जोशुई उसकी पत्नी नहीं हो सकती। अगर आप कुवेर से यह सब कुछ नहीं बताते तो मैं जाकर सब कुछ बता दूँगी।"

डाक्टर सकाई को स्वप्न में भी इस बात की आशा न थी कि जीवन की इतनी लम्बी अवधि तक उनके पार्श्व में रहने वाली मृदु शान्त सरल महिला इतना विद्रोह, इतना दृढ़ संकल्प छिपाए हुए थी। उन्होंने कभी उसका यह रूप देखा ही नहीं था और इसी लिए उन्हें शक हो रहा था कि कहीं यह निराशा और विरक्ति का परिणाम न हो। अपनी जापानी नारि

कीं इस भयानक निरीक्षण को वे जानते थे जो निराशा और विरक्ति से कहीं ज़्यादा गहरे अवसाद में बदल जाती थी। एक जापानी के लिए जीवन और मृत्यु के बीच की गहरी खाई तुरन्त भर जाया करती है। इस तरह की बात में न उन्हें कभी झिझक होती है और न उसकी पूर्ति में विलम्ब लगता है। कल अपने जीवन का जो रहस्य उन्होंने बताया, उनकी पत्नी ने अपने हठ और अविवेक में उसका बिल्कुल गलत अर्थ लगा लिया। उस रहस्य का अर्थ उसने एक नारी-सुलभ व्यक्तिगत आक्रमक समझा और डाक्टर सकाई जानते थे कि अब इस धारणा को बदला नहीं जा सकता था। यह बिल्कुल सम्भव था कि वह स्वयं ही श्री मत्सुई या कुबेर के पास चली जाती और यदि उसे मना किया जाता, या घर से बाहर निकलने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता तो स्वयं अपनी जान पर खेल जाती।

सो सवेरे डाक्टर सकाई बिस्तर से कराहते हुए से उठे। अपने मन में उन्होंने निश्चय किया कि उनके लिए आशा की किरण केवल उनकी बेटी थी जो कम से कम एक शिक्षित युवती तो थी।

लेकिन तब जोशुई का कहीं पता न था। जब बिस्तर से उठने लायक उनका मन हुआ तब बड़ी देर हो चुकी थी—लगभग दोपहरी हो चुकी थी और यूमी ने बताया जोशुई दस बजे ही चली गयी थी। यूमी ने दोपहरी का नाश्ता एक भयानक शान्ति के वातावरण के बीच लाकर रक्खा, वह जानती थी कि घर में कितनी कैसी उथल-पुथल हो चुकी है। जब उन्होंने उससे पूछा कि मालकिन कहाँ हैं तो उसने जवाब दिया कि सोयाबीन तैयार कर रहीं हैं। श्रीमती सकाई ने इस बार तैयार सोयाबीन बाजार से नहीं खरीदा था और घर पर ही उसे तैयार कराने का निश्चय किया था। इस काम मे अगर कोई दराज देता, तो बिगड़ जाती। घर में डाक्टर सकाई को कोई शान्ति न दिखायी दी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि अस्पताल चले जाँय और वहीं काम में व्यस्त हो जाँय।

"क्या तुम्हारी छोटी मालकिन बता गयी हैं कि वे कहाँ जा रही हैं?" उन्होंने यूमी से पूछा जब वह उनकी हैट और छड़ी लेकर आई।

"वे कह गयीं हैं कि कालेज कुछ पुस्तकें लेने जा रहीं हैं।"

यह झूँठ था। जोशुई बिना किसी से कुछ कहे गयी थी। पर अपने मालिक का पीला चेहरा देखकर यूमी ने सोचा कि झूँठ बोलना उन पर दया होगी। उन्होंने इस पर कुछ नहीं कहा और चल दिये।

जाशुई उस समय कुवेर से बातचीत कर रही थी। रात में वह सो नहीं सकी थी। बिस्तर पर चुपचाप लेटे लेटे रात गुजार दी थी और सवेरा होने होते उसके मन का निश्चय सकल्प बन गया था। कुवेर से वह जितनी ही जल्दी मिले, उतना ही अच्छा है। सबसे अधिक जरुरी तो यह था कि पिता जी से मिलने से पहले ही वह कुवेर से मिल ले। वह चाहती थी कि पिता जी से कहे, "पिता जी, सब निश्चित हो गया। जैसी परिस्थिति है उसमें कुवेर मुझसे शादी करना नहीं चाहता। और इसीलिए अब हमारे निश्चय के बदलने का कोई कारण नहीं रहा।" जब पिता जी से वह इतना कह चुकेगी, तब एलेन को पत्र लिखेगी जिसमें भिन्न शब्दों में यही समाचार होगा। वह उसे सूचना देगी कि वह तैयार है और अब वह बताये कि उसे कहाँ उसके पास आना चाहिए।

मस्तिष्क में यह निश्चय स्पष्ट हो जाने पर और भावनाओं का वेग शान्त होने पर वह सो गयी थी। जब वह जगी तब भी तडका ही था। उठ कर उसने स्नान किया और एक गहरे नीले रँग की पोशाक पहनी। उसका ख्याल था कि इस पोशाक में वह कुछ अधिक मोहक न दिखायी देगी। सीधे सीधे बाल सँवार लिए और न चेहरे पर लाल पाउडर लगाया और न होठों पर लाली। यूमी ने जो कुछ भी खाना दिया, खा लिया और अपनी माँ से भी मिले बिना चल दी।

कुवेर ने अपनी दिन चर्या की जो रूप रेखा उसे बतायी थी उससे वह जानती थी कि वह अपने आफिस देर से जाता है। इसलिए वह एक पार्क में चली गयी और एक छोटी सी झील के किनारे एक छोटी सी बच पर कुछ देर बैठी रही। कुछ मौसमी फूल अभी समय से पहले ही खिल रहे थे और झील में सुनहरी मछलियाँ सुन्दर दिखायी दे रही थी। वायु में एक नवीन शीतलता थी, गमा आखिरकार समाप्त हो चली थी। इस चरम शान्ति

में बैठी हुई उसे ऐसा लगा कि जैसे वृद्धि और विकास पर विराम लग चुका हो, जैसे धरती शान्त, स्थिर हो चुकी हो—गहरी नींद मे सो गयी हो। स्वय उसके जीवन का भी एक पर्व समाप्त हो चुका था—उसका प्रारम्भिक यौवन उसका बालापन—अब उसने अपने लिए एक महिला का जीवन चुना था। यदि वह बोदी या डरपोक होती तो अपने वर्तमान एकाकीपन से डर गयी होती। पर न वह बोदी थी न डरपोक। उसे अपने भीतर अनन्त शक्ति का अनुभव हो रहा था, जो कुछ सामने आये, सब से निपट लेने की क्षमता। उसकी स्वाभाविक निर्भीकता ने ही उसे विश्वास की क्षमता दी थी, विश्वास न केवल अपने ही ऊपर बल्कि हर एक ऐसे व्यक्ति पर जिस पर विश्वास करने का उसका मन हो, और एलेन पर उसे पूरा पूरा विश्वास था। उनका ससार बदल रहा था और साथ-साथ वे दोनों जो कुछ भी आये सब का सामना कर सकते थे।

दोपहर से कुछ पहले वह उठी और शहर के प्रधान राजपथ पर आग बढ़ी, उस आधुनिक ढंग की इमारत की ओर जिसमे मत्सुई लोगों के कार्यालय थे। लिफ्ट से वह छठी मंजिल पर पहुँची। वहाँ मत्सुई परिवार का दरवाजा उसके लिए खुल गया। पश्चिमी ढग की पोशाक पहने एक नौजवान जापानी सामने आया।

"मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ ?" उसने अँग्रेजी म पूछा।

उसने भी अँग्रेजी म ही उत्तर दिया, "कृपया श्री कुबेर मत्सुई से कह दें कि कुमारी सकाई आप से कुछ बात करना चाहती हैं।"

अगर उसने जापानी भाषा म उत्तर दिया होता तो कहा नहीं जा सकता कि इतनी जल्दी उसकी सुनवाई होती या नहीं। लेकिन अब तो वह युवक तुरन्त वापस हुआ और थोडी ही देर म स्वय कुबेर भूरे रग का पश्चिमी सूट पहने हुए प्रसन्न मुख दिखायी दिया। मर्यादा और स्वागत की सटीक मुद्रा म वह आगे बढा। दोनों ने सर झुकाया, हाथ नहीं मिलाये।

"पधारिए," कुबेर ने कहा।

"डरती हूँ, आप बहुत व्यस्त होंगे," जोसुई जापानी भाषा में बोली।

"मैं बहुत अधिक व्यस्त तो कभी नहीं रहता," कुबेर ने किंचित मुस्कुराहट के साथ कहा। "क्या अपने सिक्रेटरी को बुलाऊँ?"

यह उसने इसलिए कहा कि शायद जोशुई को उसके साथ अकेले आफिस में जाना पसन्द न आये।

"नहीं, कष्ट न कीजिए," जोशुई बोली।

कुबेर ने रास्ता दिखाया और दोनों आफिस के भीतर पहुँचे। दरवाजा कुबेर ने थोड़ा खुला ही छोड़ दिया था।

"कृपया बैठिये" वह बोला और एक आरामदेह पश्चिमी कुर्सी उसके लिए आगे बढ़ा दी। कमरा काफी बड़ा था और मेज कुर्सी आदि सब अच्छे मजबूत थे। सफेद दीवालें खाली थीं, केवल उसकी मेज के पीछे सुन्दर लिपि में कुछ लिखा हुआ था।

वह अपनी नियत कुर्सी पर नहीं बैठा। एक वैसी ही कुर्सी लेकर, उसने जोशुई को दी थी, वह इस ढंग से बैठा मानो वह अपने घर के कमरे में थे। इस प्रकार उसके सामने बैठी जोशुई को मन ही मन बड़ा दुःख हो रहा था कि वह इतने निर्मम उद्देश्य से यहाँ आयी है। उसके सामने वह बैठा था, एक स्वस्थ, गठा, पुष्ट, दयालु पुरुष, उसका गोल सुन्दर चेहरा, मुस्कान से खिला हुआ, उसकी भूरी आँखें जोशुई पर स्नेह रश्मियों की वर्षा करती हुई। जोशुई को उस चेहरे में अपने ऊपर सहज विश्वास दिखायी दिया अपने सम्बन्ध के प्रति आल्हाद दिखायी दिया और अपने सौभाग्य पर पूर्ण आस्था दिखायी दी। उस चेहरे में बड़ी आसानी से पढ़ा जा सकता था कि असफलता या विषाद की कभी कोई रेखा उस पर नहीं आयी, एक धनी मानी रईस का प्यारा बेटा, अपने पिता के सर्वस्व का उत्तराधिकारी। यदि वह एलेन से कभी न मिली होती तो कुबेर का प्यार उसके लिए कितना आनन्दमय होता।

फिर उसने अपने आप को ही झिड़का। कैसे कुबेर का प्यार आनन्द-दायी होता? जीवन का चरम तत्व है प्रेम और यदि उसने कुबेर से शादी की होती तो उस प्रेम से तो कभी उसका परिचय ही न होता।

अपना चमड़े का बटुआ दोनों हाथों में लिए हुए वह आगे झुकी।

जोशुई ने चोट की, "मे आपसे शादी नही कर सकती, कुबेर।"

वह फिर भी अविचल बैठा उसकी ओर देखता प्रतीक्षा करता रहा। जोशुई ने सोचा चाट का असर उसपर बहुत गहरा होने वाला है।

"सारा दोष मेरा है,' उसने तजी से कहा 'मुझे वचन देना ही नही चाहिए था—यह मरा ही दोष था। मे जानती थी कि मेरे हृदय म क्या छिपा हुआ था। पर मैंने सोचा था कि वह सब बीत चुका,—मर चुका है। और अब मेरी तनिक भी आशा और इच्छा के बिना अब फिर वह सब जीवित हो गया है।"

वह बड़ी सावधानी से और कुछ रुखाई से बोला, "क्या आप अपनी बात स्पष्ट करेंगी?"

जोशुई ने अपने बटुए की ओर देखा। "बीते बसन्त से मैंने एक अमरीकी को देखा था। समय नहीं बीत पाया कि हम दोनों एक दूसरे को प्यार करने लगे। हमने इस प्यार के विरुद्ध फैसला किया और वह मुझसे दूर चला गया। मैंने सोचा था कि मैं इस सपने को भूल जाऊँगी लेकिन कल वह वापस आ गया। वह भी विवश था। अब हम जानते हैं कि हम एक दूसरे को भूल नहीं सकते और इस सत्य को आपसे छिपाना अन्याय होगा।"

अपने पीले होठों का उसने गीला किया "आपने मुझे बताया, इसके लिए धन्यवाद।" उसने कहा।

वह प्रतीक्षा करती रही कि कुबेर कुछ और कहे और उसे बोलने म जितना विलम्ब हुआ, जोशुई उसकी ओर देख भी न सकी। पर उसने कहने लायक और कुछ शेष भी तो नहीं दिखायी देता था।

आखिरकार उसने पूछा, "आपके माता पिता क्या कहते हैं?"

"वे इसकी स्वीकृत नहीं देते," उसने उत्तर दिया। "पर मेरी माँ ठीक वैसा ही सोचती हैं जैसा मैं—कि मैं जो कुछ कर रही हूँ, वही मुझे करना चाहिए। पिता जी तो बेहद रुष्ट हैं। वे कोई भी रचनात्मक रास्ता बताते ही नहीं। आप जानते हैं व अमरीका से घृणा करते हैं। उनके लिए तो यह बड़ी भयानक बात है कि मैं अमरीका वापस जाऊँ।"



"कुबेर, मैं एक आश्चर्यजनक और निष्ठुर कार्य करने आयी हूँ। कितना कठिन है !" थोड़ा देर ठहर कर वह बोली। कुबेर अविचल बैठा रहा। "आपको मुझसे डरने की जरूरत नहीं है।"

"लेकिन अमरीका को प्यार करती है," कुबेर ध्यानस्थ सा बोला। "मैं तो हमेशा से जानता हूँ कि आपको अमरीका से प्यार है। मैंने सोचा था कि कभी अवकाश के समय में आपको वहाँ ले जाऊँगा। अमरीकी व्यापारियों के साथ हमारा व्यापार चलता है और जब देश पर अमरीकी अधिकार समाप्त हो जायगा तब हमारा यह व्यापार और भी अधिक बढ़ेगा। मेरी योजना थी कि हम लोग महीनों वहाँ—शायद केलिफार्निया में रहेंगे।" अचानक वह सामने की ओर झुका और अपना चेहरा अपने हाथों म छिपा लिया।

"मुझे अफसोस है, बहुत अफसोस है," वह बुदबुदायी।

"ठीक है," हाथा से मुँह ढके वह बोला "ठीक है कोई दूसरा रास्ता नहीं है। आपको स्वय यहाँ आकर मुझे बताना आपके लिए बड़े गौरव की बात है। निस्सन्देह मुझे कुछ समय तक रुकिए—मुझे अपने विचारों को सयत कर लेने दीजिए।"

"मैं आशा करती हूँ कि आप अन्य किसी को चुन लेंगे," उसने कहा, और यह भी महसूस किया कि यह कितनी मूर्खतापूर्ण बात थी।

"वह तो मैं सोच ही नहीं सकता," उसने कहा।" अपने हाथ उसने अपने चेहरे पर से हटा लिया और जोशुई को यह देखकर राहत मिली कि वह रो नहीं रहा था यद्यपि उसकी आँखों में प्यार और विषाद भरा हुआ था, जिसकी वर्षा उस पर हो रहा थी। "मेरा अनुमान है कि हम लाग अब दुबारा कभी अकेले न मिल सकेंगे ?"

"मेरा खयाल है इसकी आवश्यकता न होगी," उसने उत्तर दिया। "न मिलना ही हम लोगों के लिए आसान होगा।"

"तो यदि आप अनुमति दे, तो मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ अभी कह दू।"

"बेशक, मैं मना नहीं करती," उसने उत्तर दिया।

जोशुई ने महसूस किया कि दिल कुछ हल्का हो रहा है और वह जाने को इच्छुक थी। फिर भी कम से कम उतनी देर तो उसे रुकना ही होगा जब तक कुबेर अपने दिल की बात न कह ले।

वह आग की ओर झुका और अपनी कुहनियों को अपने घुटनों पर रख लिया ताकि जोशुई की आँखों में गहरे देख सके। 'जोशुई मुझे कहने में देर नहीं लगेगी। केवल इतना कहना है कि अगर कभी भी तुम्हें मेरी आवश्यकता प्रतीत हो, किसी भी कारण वश हो, तो निस्संकोच चली आना अभिमान या गर्व की भावना से संकोच न करना।"

"ओह, कुबेर," वह "बोली, मुझे बड़ी खुशी होगी। कोई जरूरत नहीं पड़ेगी लेकिन आप कितने भले हैं।"

उसने मुस्कराने की कोशिश की। "मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि मेरे और आपके बीच का मार्ग खुला रहे।"

वह उठ खड़ी हुई, अशान्त थी, किसी प्रकार छुटकारा पाना चाहती थी।

"मैं इसका वचन देती हूँ, कुबेर।" यह एक असंगत शब्द था जो उसके मुँह से निकल गया और कह चुकने बाद उसने भी महसूस किया। वचन! क्या उसने अपना वचन पूरा किया था। लेकिन अब उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और पहली बार उसे उसके हाथ की उष्णता का अनुभव हुआ। वह कोमल, उष्ण और बड़ा सा हाथ जो उसकी हथेली को पूरा पूरा ढक लेता था जिसके नीचे उसकी हथेली कितनी छोटी पर कितनी दृढ़ थी।

और तब कुबेर विचलित हो उठा और अचानक उसकी आँखों में आँसू झलक आये लेकिन वह मुस्कुराया और अभिवादन के लिए झुका, वह भी झुकी और सब समाप्त हो गया।

जब वह चली गयी तब कुबेर कुछ देर आराम कुर्सी पर पड़ा रहा। इस दुर्घटना का वेग उसने अपने ऊपर से एक भयानक लहर की तरह बह जाने दिया। बहुत दिन पहले वह जब एक छोटा सा लड़का था, उसके पिता जी ने उसे सागर की लहरों से खेलना सिखाया था। तब वे

लोग क्यूशू के समुद्र तट पर रहते थे और गर्मी के दिनों में वह अपना अधिकांश समय लहरों से खेल कर ही बिताता था। तैरना तो उसने बहुत जल्दी सीख लिया था पर बिना श्रम और थकावट के तैरना उसे पिता ने ही सिखाया था।

"तुम सागर से जीत नहीं सकते," पिता जी ने उससे कहा था। "वह काल की तरह अनन्त है और भाग्य की तरह अपरिवर्तनशील। सागर की तुलना में मनुष्य मछली से भी छोटा है। इसलिए सागर से मत भिड़ो लहरों का मुकाबला मत करो। समर्पण करदो और जैसे लहरें बहें उनका अनुगमन करो और तब देखोगे कि तुम अनायास ऊपर उठ आते हो, सागर स्वयं तुम्हें ऊपर उठायेगा।"

आज उसे ये शब्द याद आ रहे थे। जो कुछ उसने अभी अभी सुना था उससे अभिभूत हो गया था। जोशुई के प्रति अपने प्रेम के निश्चय पर वह विश्वास करने लगा था। अन्य किसी स्त्री को कभी उसने प्यार नहीं किया था। अन्य लोगों की भाँति वह भी विलास भवन गया था। दोस्तों द्वारा दी गयी दावतों में शरीक हुआ था, सुन्दर लड़कियों के साथ हँसा था, उनका सङ्गीत सुना था, लेकिन जोशुई के अतिरिक्त अन्य किसी को उसने पत्नी रूप से न चाहा था। और अब वह कभी भी उसकी पत्नी न हो सकेगी। यह विचार ही भयङ्कर था कि कुछ देर के लिए उसे चक्कर सा आ गया जैसे उसके पैरों के नीचे से धरती खिसकती जा रही हो, जैसे लहरें उसके सर को कुचले दे रही हों। उसने आँखें बन्द कर लीं। अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठ गया और निरन्तर निस्पन्द और निरपेक्ष बैठा रहा, विषाद उसे चारों ओर से घेर चक्र बनाता रहा। यही होना था—यही होना चाहिए।

लगभग एक घण्टे बाद उसने अपनी आँखें खोलीं और तब उठ खड़ा हुआ। चाय के बर्तन से एक प्याली चाय अपने लिए उडेली और धीरे धीरे उसे पीने लगा। उसे थकान और ठढक महसूस हो रही थी, मानो वह सचमुच समुद्र में लहरों के नीचे रहा हो और इस ठढकसे वह आसानी से छुटकारा न पा सका हो।

फिर भी आधा घन्टे बाद उसने अपनी मेज पर की घन्टी बजायी। उसका सिक्रेटरी आया और उसे वह पत्र लिखाने लगा। साथ ही सोचता जाता था कि घर पहुँचते ही उसे सब कुछ पिता जी को बताना होगा। शादी की तैयारियाँ एकदम बन्द हो जानी चाहिए, निमन्त्रण वापस हो जाने चाहिएँ। जोशुई के लिए उसने उपहार म देने को जो हीरे मोती इकट्ठे किये थे वे तो अब वापस नहीं हो सकते थे।

१७

"मैंने कुबेर से पहले ही सब बता दिया है," जोशुई ने कहा।

डाक्टर सकाई आधी रात तक घर नहीं लौटे थे पर जोशुई बैठी उनकी प्रतीक्षा करती रही थी। उसकी माँ का सब मालूम था शादी। की पोशाकें तहा कर रख दी गयी था क्योंकि अब उनकी कभी जरूरत नहीं पड़ेगी। माँ के दिल की भावनाएँ क्या थी, जोशुई को पता न था। उन्होंने पोशाकों को सावधानी से बनायी, जोशुई को नहीं छूने दिया। और उन कीमती चीजों को सुन्दर लकड़ी के बक्सों म बन्द करके गोदाम में रख दिया। शाम का सारा वक्त इसी काम में बीत गया और माँ ने जोशुई से एक भी प्रश्न नहीं पूछा यह भी नहीं पूछा कि कुबेर ने क्या कहा।

"बहुत देर हो गयी है," पिता जी ने उत्तर दिया जब जोशुई ने उनसे अपनी बात सुनने के लिए कहा।

"मैं जो कुछ कर चुकी हूँ, यह जब आप को बता न दूँ मुझे नींद न आएगी।"

सो अपनी निराशा और अपनी थकान को छिपाते हुए वे बैठ गये और उनके पास खड़ी जोशुई ने उनसे कहा कि उस अमरीकी से शादी करने के लिए सकल्प कर चुकी है।

"मेरी समझ में नहीं आता, मैं अपने मित्र तारक ममुई से कैसे बता दूँ और न यही समझ में आता है कि कुबेर से कैसे कहूँगी?" उन्होंने कहा। इस पर "जोशुई ने कहा कुबेर को सब मालूम है क्योंकि मैंने सब कुछ उसे बता दिया है।

"तुमने उसे बताया?" पिता ने पूछा उन्हें विश्वास न हो रहा था। "तुमने इतना साहस कैसे किया? देखो, तुममें अभी से कितना परिवर्तन आ गया है।"

"कुबेर इतने भले हैं कि मैं सब उनसे कह सकी।" उसने सर झुकाये हुए कहा।

"कुबेर इतने भले हैं—कुबेर इतने भले हैं!" पिता ने व्यंग भरे स्वर में दुहराया। "लेकिन लगता है वे इतने अच्छे नहीं हैं कि तुम उनसे शादी कर सको।

"वे बेशक अच्छे हैं" जोशुई ने साहस के साथ कहा, "पर बात केवल इतनी है कि मैं एक दूसरे व्यक्ति से प्यार करती हूँ और कुबेर इसे समझते हैं।"

"पर इससे हमारी अपमान की कालिख तो नहीं धुलती," पिता ने कटु स्वर में कहा।

वे क्रोध से भरे हुए दुखी मुद्रा में बैठ गये। उनकी थकान जोशुई उनके चेहरे पर देख सकती थी। उनका सुन्दर चेहरा मोम जैसा पीला पड़ गया था और बड़ी बड़ी आँखें धस गयी था। तब उन्होंने तेजी से तीन बार अपनी हथेलियाँ एक दूसरे से गूँथ दीं। "यह अमरीकी तुमसे कभी शादी नहीं कर सकेगा।"

"वह करेगा," जोशुई ने दृढ़ता से कहा।

"कैसे वह तुमसे शादी करेगा?" उसके पिता ने पूछा। "अमरीका में शादी गिरजाघर में होती है। कानूनी विवाह वहाँ मान्य नहीं। वे लोग ऐसे विवाह को मान्यता न देंगे और फिर विवाह का उत्सव कैसे हो? अतिथि कहाँ से आये? तुम्हारी शादी के गवाह ही कौन होंगे? और अमरीकी दृष्टिकोण से गवाह बहुत जरूरी है।"

"मुझे उत्सव और अतिथियों की चिन्ता नहीं है," जोशुई ने कहा, "और धर्म हमारा है ही क्या ? पिता जी, हमारा कोई गिरजाघर नहीं है।"

"मैं एक बौद्ध हूँ," डाक्टर बोले। "अमरीकियों के अपने देवता हैं, अपने पुरोहित हैं और हमारे अपने। विवाह बौद्ध मन्दिर में होगा, देवताओं और पुरोहितों के सामने।"

"मुझे विश्वास है—वह इसके लिए तैयार होंगे आप जो कुछ चाहेँ, सब कुछ वह करने के लिए तैयार होंग।" जोशुई ने कहा।

"हाँ, केवल तुम्हे मेरे घर मे छोडने के लिए तैयार नहीं हैं," पिता ने क्रोध भरे स्वर म कहा। "इतना वह नहीं कर सकता। चोर की तरह मेरे घर घुस कर वह मेरी निधि ले गया और अब वापस नही करेगा। और मैं उससे क्या चाहता ?"

उनका सर और नीचे झुक गया फिर भी जोशुई की ओर निगाहे डालने पर उन्होंने देखा कि उस चेहरे में झुकने की कोई निशानी न थी। उसका भरा लाल निचला होठ वैसा ही दृढ था, उसमे कोई कम्पन न था। अचानक डाक्टर ने स्वय समर्पण कर दिया; अपने पैरों पर उठ खड़े हुए और एक हाथ से जोशुई को अलग हटा दिया। इस हटाने में केवल इतनी ही नम्रता थी कि उसे प्रहार नहीं कहा जा सकता था। "जो मन म आये, करो," उन्होंने रूखे, तेज स्वर में कहा, "अमरीका जाना चाहती हो, जाओ, लेकिन जब वहा से वे लोग तुम्हे खेद बाहर करें, जैसे हम सब को खेद बाहर किया है, तो मेरे पास वापस मत आना।"

जोशुई ने अपना सर उठाया वैसा ही गर्व और क्रोध उसमें भरा था, जैसा स्वयं डाक्टर मे "मैं आपके पास वापस नहीं आऊँगी, पिताजी, इसका वचन देती हूँ।"

१८

टोकियो में एलेन अपने कर्नल से बात कर रहा था। आफिस में दोनों व्यक्ति अकेले बैठे थे। कागजी काम ढेर का ढेर मेज पर रक्खा था और कर्नल जब तब आँखें घुमाकर उसकी ओर देख लेता था। कर्नल को ऐसा मालूम हो रहा था, यह काम रक्खे-रक्खे अपने आप बढ़ता जा रहा था और जैसे जैसे एलेन का वार्तालाप बढ़ता उसकी परेशानी भी बढ़ती जा रही थी

"बेशक, यह तुम्हारा अपना निजी मामला है," अफसर ने अनमने ढङ्ग से कहा, "फिर भी मेरे दिल में तुम्हारे लिए अच्छा ख्याल रहा है। तुम्हारे भीतर एक सामान्य सैनिक से अधिक योग्यता और सामर्थ मैंने देखी है। सामान्य सैनिक वृत्ति जहाँ जैसी है, ठीक है; लेकिन उत्तम सैनिक तो वे ही होते हैं जिनमें मामूली सिपाही से कुछ अधिक गुरुता होती है, गम्भीरता होती है। अगर तुम चाहते तो बहुत ऊँचे उठ सकते थे। मेरा तो यही ख्याल है। लेकिन इसमें भी शक नहीं कि तुम अपने लिए एक जापानी पत्नी चुनते हो तो फिर इसका अवसर नहीं मिल सकेगा। अगर मनुष्य सैनिक वृत्ति में फौजी नौकरी में ऊँचे उठना चाहता है तो उसकी पत्नी का उसमें बड़ा महत्वपूर्ण हाथ रहता है।"

"मैं जानता हूँ आप ठीक कह रहे हैं," एलेन केनेडी ने कहा। उसने सोचा सैन्धवी उसके लिये अत्यन्त उपयुक्त पत्नी होती। वह जो अपने ढँग की अनुपम सुन्दरी थी, व्यवहार-कुशल और सीधे साधे मिजाज वाली थी, जिसमें मूर्खता छू तक नहीं गयी थी। लेकिन वह क्या करे, उसे सैन्धवी से प्रेम नहीं।

"क्या तुम कुछ अपना प्रबन्ध नहीं कर सकते?" कर्नल ने जोर देते

हुये सुझाया। "जापानी लोग इन मामलों को उस दृष्टि से नहीं देखते जिससे हम अमरीकी देखते हैं। यहाँ सिपाही अनेक प्रकार से प्रबन्ध कर लेते हैं और वे लड़कियाँ उनसे शादी करने की उम्मीद भी नहीं रखतीं। जापानी लोग तो जितना ऊँचे उठकर शादी कर सकते हैं करते हैं। वे प्यार की चिन्ता थोड़े ही करते हैं, प्यार तो एकदम भिन्न वस्तु है।"

अफसर एक शिक्षित व्यक्ति था। वह जानता था कि इन्द्रिय वासना यद्यपि एक ही सहज प्रवृत्ति से प्रेरित है फिर भी उसकी पूर्ति के साधन व्यक्ति व्यक्ति में भिन्न हैं। उसके सामने जो भावुक, सुकुमार, सुन्दर युवक बैठा था, जिसकी नीली आँखों से दृढ़ता टपकती थी, वह एक सामान्य सिपाही की अपेक्षा अधिक जटिल प्रकृति का मालूम देता था वासना की आग उसके भीतर जले, तो जल सकती है पर उसे शान्त केवल प्रेम भरी कल्पनाओं से ही किया जा सकता था। उसकी वासना पाशव वासना नहीं थी फिर भी वह एक निश्चित आवश्यकता थी। और चूँकि वह केवल शारीरिक आवश्यकता न थी—मन और आत्मा की भूख थी, इसीलिए उसको सन्तुष्ट कर सकना अत्यन्त कठिन था।

"मेरा ख्याल है," एलेन ने अनमने ढंग से कहा, "यदि मैं वैसा कुछ कर सकता जिसे आप 'प्रबन्ध करना' कहते हैं तो शायद मेरे लिए अच्छा होता। पर दुर्भाग्य वश मैं ऐसा कर नहीं सकता।"

अफसर ने सर हिलाया। "ठीक है, सब मनुष्य एक ही तरह के नहीं होते। कुछ दिन ठहरो, मैं इस मामले में सोच लूँ। एलेन तुरन्त उठ खड़ा हुआ, समझ गया कि बर्खास्तगी तय है। "क्या मैं ।"

"कुछ निश्चय कर लेने पर मैं तुम्हें बुलाऊँगा," अफसर ने कहा। वह अपने कागजों की छान बीन करने में जुट गया था।

"क्षमा करियेगा, एक और बात कहनी है," एलेन ने अपने स्थान पर खड़े खड़े दृढ़ता के साथ कहा, "हम अपना निश्चय पक्का कर चुके हैं। अब सोचने विचारने की बात नहीं है। सवाल केवल इतना है कि अपने निश्चय को कार्य रूप देने के लिए क्या और कैसे करना होगा। संक्षेप में मैं आप से केवल इतना जानना चाहता हूँ कि अगर कोई

अमरीकी एक अच्छे घराने की जापानी लड़की से शादी करना चाहता है तो उसे क्या करना होता है ?"

कर्नल उबल पड़ा। "मैंने कह दिया मुझे इस विषय पर सोच लेने दो, समझे। मैं यह नहीं बर्दाश्त कर सकता कि मेरा एक सर्वोत्तम अफसर बिना कुछ सोचे विचारे ऐसा कदम उठाये। इस वक्त मुझे सोचने की फुरसत नहीं। उन्हें देखते हो ?" कहते हुए उसने कागजों के ढेर की ओर इशारा किया।

"जी हाँ", एलेन बोला और चुपचाप चल दिया।

वास्तव में कर्नल चाहता यह था कि घर जाकर पत्नी से इस मामले में राय ले, लेकिन एक अविवाहित युवक—एलेन—यह कैसे समझ पाता ? जैसे ही एलेन कमरे से बाहर हुआ, कर्नल ने काम करने का बहाना छोड़ दिया। बैठे बैठे सोचता रहा और सोचते सोचते नई सिगरेटों का धुआँ उड़ा डाला। तब फोन पर अपनी पत्नी को बुलाया। पत्नी ने बताया कि वह बिल्कुल बेकार बैठी थी।

"मेरा ख्याल था कि तुम आज ब्रिज खेलने जा रही होगी ?" उसने पूछा।

"आज नहीं कल," उसने याद दिलाया।

"अच्छा ! तो मेरा ख्याल है, मैं जल्दी ही खाना खाने चला आऊँगा। अभी अभी मुझे एक चिन्तनीय संवाद मिला है।"

अपने आफिस से वह निकल आया, अपनी पोशाक पहनी और घर के लिए चल दिया। रास्ते में वायु स्वच्छ सुहावनी थी और मालियों के छोकरे सुन्दर सुन्दर बड़े बड़े लुभावने फूल लिए सड़कों पर घूम रहे थे। इतने इतने बड़े फूल जितने बड़े नीले गेंद वह अपनी पत्नी के खेलों के लिए खरीदता था। उसकी पत्नी एक सफल पत्नी थी। हर काम ठीक समय से जान जाती थी, ठीक समय से करती थी। एक अफसर की पत्नी ऐसे ही होनी चाहिए। अपने से छोटे दर्जे की औरतों से ऐसा व्यवहार करना जिससे यह न मालूम हो कि अनुग्रह कर रही है और अपने से बड़ों के प्रति उचित मर्यादा पूर्ण आदर दिखाना उसे आता था। वह हँस मुख

भी थी, पर बहुत अधिक नहा। सैनिक का जावन एक महिला क नाते—एक अफसर की पत्नी के नाते—बड़ी गम्भीरता से स्वीकार कर लिया था।

घर में पत्नी उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। प्रसन्न मुख वह रमणी देखने में बड़ा सुन्दर लगती थी। आँख उसकी भूरी थीं और बालों का रग भी भूरा था। यद्यपि कर्नल को इस बात का शक था कि बालों की सफेदी छिपाने के लिए वह तरह तरह के उपाय काम म लाती थी फिर भी उन्होने उसके इन छोटे-छोटे रहस्यों का पता लगाने की कोशिश कभी नहीं की। यह तो नही कहा जा सकता कि उनकी पत्नी बुद्धिमान थीं फिर भी उसम मनुष्यो को परखने की क्षमता थी। अपना शृङ्गार करते समय वह एकान्त पसन्द करती थी और कर्नल इस बात का जानते थे। आज जब वे घर पहुँचे तो मुस्कुराये।

"तुम बहुत सुन्दर दिखती हो, क्या भोजन तैयार है?"

"हाँ आज मैंने आपकी मन चाही चीज तैयार की है।"

"बहुत सुन्दर।"

एक जापानी लखपती रईस के मकान पर अमरीकी फौज ने अपना अस्थाई अधिकार जमा लिया था। कर्नल इसी मकान म रहता था। उसके सुन्दर रोशनीदार बड़े कमरे म भोजन करते समय उसने पत्नी को दुखद समाचार सुनाया।

"केनेडी, एक ऊँचे घराने की जापानी लड़की के जाल में फँस गया है," उसने यकायक शुरू किया। "वह उससे शादी करना चाहता है।"

"ऐं, यह क्या राबर्ट," उसकी पत्नी कुछ ऐसे ढग से बोली जिसम उलाहना सा भरा था मानो राबर्ट चाहता तो इसे रोक सकता था।

"मैं सब जानता हूँ," उसने कहा। "पर हम कर ही क्या सकते हैं। मैंने उससे वह सब कुछ कहा जो इस समय तुम्हारे दिमाग में है।"

"क्या वह इसे एक अस्थायी रूप नही दे सकता?"

"यही तो मैंने उसे सुझाया था।"

"फिर!"

कर्नल ने होठों पर लगे हुए शोरवे को चूसा और मूछों पर लगे शोरव

को रूमाल से पोंछा। "मेरा ख्याल है केनेडी कोई बहुत बुद्धिमान नौजवान नहीं है," उन्होंने सावधानी के साथ कहा "और मेरे ख्याल से उसमें नैतिकता का भी सवाल नहीं है,"

"तब फिर?" पत्नी ने पूछा।

"वह कुछ अति-संस्कृत सा मालूम होता है," कर्नल सोचते हुए बोले, "मेरा मतलब समझीं? वह ऐसा नहीं कर सकता कि वासना तृप्ति के बाद अपने साथी को छोड़ भगे और जिन लड़कियों के साथ ऐसा किया जा सकता है, वे उसे पसन्द नहीं आतीं। उसका मन ऐसी ही लड़कियों पर टिकता है जो इस प्रकार के व्यवहार की आशा नहीं करतीं।"

"ओह, तो वह आदर्श प्रेमी है," उसने सीना फुलाते हुए कहा।

"हो सकता है," कर्नल ने स्वीकार किया, "या जो कुछ भी तुम नाम देना चाहो। लेकिन मैंने ऐसे आदमी देखे हैं जो बिना आदर्श प्रेमी बने प्रेम कर ही नहीं सकते। मुझे तो यह सब वाहियात मालूम होता है, वास्तविकता से एक दम दूर। ऐसे आदमियों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मुझे तो ऐसे आदमी पसन्द हैं जो कुछ पैसों के लिए लाइन लगाकर खड़े हो सकते हैं और जरा देर में सब खतम करके फिर अपने काम में जुट जाते हैं।"

कर्नल की पत्नी शारीरिक और मानसिक—दोनों ही दृष्टियों से कुछ आश्चर्यजनक ढंग से आरामदे थीं। उनके सामने इस तरह की बातें बिना सकोच कही जा सकती थी और वे इस सब का कतई बुरा नहीं मानतीं थीं। आपका मंतव्य यह तुरन्त समझ जाती थी। साथ ही साथ उन्हें पुरुष प्रकृति का पूरा ज्ञान था और इसीलिए वे किसी के प्रेम में नहीं फँसती थीं।

"दो से अधिक मत लो, राबर्ट," पति को दूसरा ग्लास भरते देखकर कहा, "आप जानते हैं कि दोपहरी में शराब का असर आप पर क्या होता है।"

"ठीक कहती हो," कुछ सुस्त से कर्नल बोले। पत्नी ने एक बढ़िया पेय तैयार किया जो कुछ खट्टा और सुगन्धित था। कर्नल को मीठी चीजें

पसन्द नहीं थी। "हाँ तो!" कर्नल ने पूछा।

"मैं सोच रही हूँ," पत्नी ने उत्तर दिया। वह शराब बहुत कम पीती थी लेकिन पति के साथ पीने से कभी इन्कार नहीं करती थी। पति के कहने पर वह हमेशा पीने के लिए तैयार हो जाती थीं पर अपनी ओर से कभी भी पीने का उत्साह नहीं दिखातीं थी। वे इतनी समझदार थीं कि इस प्रकार के उत्साह से वह दूर रहतीं थीं।

कुछ मिनटों के बाद वे बोलीं "देखिए मैं बतलाती हूँ। आप उसे छुट्टी क्यों न दे दें!"

"आजकल!" कर्नल बोले, "जब कोरिया सर पर है!"

"उसे घर भेज दीजिए। घरेलू वातावरण में उसे डाल दीजिए। वह वर्जीनियाँ में रहता है, क्यों न? याद है न, वह तस्वीरें उसने हमें दिखायीं थीं अपने मकान की वह बड़ासा सफेद मकान, खम्भों वाला? जल्दी उसे घर भेज दीजिए। अपने कागजी घोड़े दौड़ाइए। बेशक, घर में उसे ऐसी लड़की मिल जायगी। जिससे वह सब कुछ भूल जायगा। मेरा अनुमान है सारा मामला केवल सयंम की बात है न कि कोई आध्यात्मिक समस्या।"

उसकी भूरी आँखें पति की ओर चमकीं और वे दोनों हँसने लगे। वे दोनों जब तब आपस में भद्दे मजाक भी कर लिया करते थे। पर दोनों जानते थे कि दिल से दोनों साफ हैं।

"बड़ी चतुर हो तुम," उन्होंने गद्‌गद् होकर कहा। शराब का कुछ कुछ नशा उन पर हो चला था। उस बड़े कमरे में धूप खिल रही थी। जीवन के ऊँचे स्तर का विश्राम और सुरक्षा का साजो सामान सब उसमें मौजूद था।अपनी बाँह फैलाकर उन्होंने पत्नी को अपनी ओर खींच लिया और उसका गहरा चुम्बा लिया।





20/75

कुबेर मत्सुई थक तो बहुत गया था पर फिर भी वह घर जल्दी नहीं गया। शरीर से अत्यन्त कोमल होते हुए भी वह स्वस्थ और सुदृढ मनुष्य था जो शरीर से कभी न थकता किन्तु मनसे शीघ्र ही थक जाता था। अगर उसका कोई धर्म था तो यही हर हालत में सुख और सन्तोष का आवरण बनाये रक्खे। इसे वह अपने माता पिता के प्रति अपना एक कर्तव्य मानता था क्योंकि वही उनकी एक मात्र जीवित सन्तान था। अपने पिता का सम्मान वह सबसे अधिक करता था क्योंकि उन्हे मालूम था कि अपने सिद्धान्त की रक्षा में उन्होंने बडे त्याग किये हैं। जापान के व्यापार पतियों में उनके पिता ही अकेले व्यक्ति थे, जिन्होंने लड़ाई से बहुत पहले यह घोषणा की थी कि सरकार की सत्ता पर अधिकार जमाये हुए सैन्यवादियों की नीति गलत थी। जब वे जापानी संसद की एक समिति के सम्मुख बुलाए गये तो उन्होंने स्पष्ट कहा था, "हम शक्ति के भरोसे एक साम्राज्य की रक्षा नहीं कर सकेंगे।"

"इंगलैण्ड ने तो ऐसा किया है," एक सेनापति ने कहा था।

"लेकिन अब जमाना बदल गया है" श्री तारक मत्सुई ने उत्तर दिया था। "आज के चीन की तुलना तीन सौ वर्ष पहले के हिन्दुस्तान से नहीं की जा सकती। जापान की गुलामी चीनी लोग बर्दाश्त न करेंगे। वे कभी एक गुलाम कौम रहे ही नहीं।"

"अगर हम साम्राज्य निर्माण की नीति पर दृढ़ नहीं रहते," सेनापति ने दृढता से कहा था, "तो हमें खुद किसी साम्राज्य का शिकार बन जाना पड़ेगा। यह मत सोचो कि पश्चिमी देशों ने साम्राज्य का विचार छोड़ दिया है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका या तो एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में तो विराट

हो ही रहा है। साथ ही अमरीका साम्राज्य के सपने भी देख रहा है।"

"वे व्यापार के सपने देखते हैं," श्री मत्सुई ने भी वैसी ही दृढ़ता से कहा था।

"व्यापार—व्यापार!" सेनापति क्रोध से बोल उठा था, "सभी साम्राज्यों का प्रारम्भ व्यापार से ही होता है। अंग्रेज भी हिन्दुस्तान में व्यापार ही करने गये थे। पर उसका परिणाम हुआ तीन सौ वर्ष तक अंग्रेजी साम्राज्य। अगर हम एशिया पर आधिपत्य नहीं जमाते तो अमरीकी लोग आ डटेंगे।"

"यह भी याद रखिए, महोदय कि आज की दुनियाँ में रूस भी है," श्री मत्सुई ने नम्रता से कहा, "और अमरीका की अपेक्षा रूस अधिक खतरनाक है।"

सेनापति क्रोधावेश में इतने जोर से बोला कि उसके शब्दों से सारा हाल गूँज उठा, "ठीक है जनाब, हम एक एक से निपट लेंगे।"

श्री तारक मत्सुई चले आये थे। अपमान तो उनका हुआ नहीं, इसके लिए वह बहुत अधिक सम्पत्तिशाली थे, उनका परिवार बहुत पुराना और सम्मानित परिवार था लेकिन समझदारी के साथ उन्होंने अवकाश जैसा ले लिया था। उस दिन से मत्सुई परिवार के हितों की उपेक्षा की जाने लगी थी और अभी हाल में जब से देश पर अमरीकी अधिकार हुआ, उस परिवार के हित फिर से पनपने लगे। उसी बीच कुवेर का बड़ा भाई मर चुका था और उनका दूसरा भाई रूस में खो गया था। माँ बाप के इस अत्यधिक दुख में कुवेर का प्रयत्न निरन्तर यही रहता कि वह उन्हें प्रसन्न रक्खे और उसने देखा कि इसका सबसे सुन्दर साधन था, उनके सामने हमेशा प्रसन्न दिखना। इसीलिए उसने कभी भी अपने किसी भी असन्तोष को उन पर प्रकट होने नहीं दिया और इस दृढ़ आत्मसंयम ने उसे एक आत्म नियंत्रित और अनुभवी व्यक्ति बना दिया था।

घर जाते समय उसके कदम नित्य के अभ्यास के कारण आगे बढ़ते जाते थे और उसका दिमाग ऐसा उपाय सोचने में लगा था जिससे वह इस समाचार को अपने पिता से इस प्रकार सुना पाये कि उन्हें कम से कम

आघात लगे। उसे अपने पिता को विश्वास दिलाना था कि यह चोट कोई कडी चोट नहीं है। उसकी माँ तो इस समाचार को भी वैसे ही ग्रहण कर लेगी जैसे उसके पिता। वे पुराने ढंग की जापानी महिला थीं, अपने आप को इतना अधिक और इतने सुन्दर ढंग से अपने पति के अस्तित्व में डुबो चुकीं थीं कि अब वह उनकी छाया मात्र थीं केवल एक प्रतिबिम्ब जिसमें स्वत कोई सार नहीं होता।

सन्ध्या थी, स्वच्छ, शान्त वातावरण था और सड़कों पर माली फूलों की डलियाँ लिए हुए कतार बाधे बैठे थे। कुबेर ने एक नजर उन सब को देखा यह खोजने के लिए कि कोई ऐसे फूल उनमें तो नहीं हैं जो उसके पिता के फुलवाडी में न हों। आखिरकार उसे एक मन्दकान्ति भौतिक आभा वाला पुष्प दिखायी दिया जिसकी पखुड़ियाँ स्वर्णिम केन्द्र पर सिमटी हुई थीं। रुक कर उसने फूल का गमला खरीदा और कागज में उसे लपेट कर स्वय ले चला। अमरीकी अधिकार के पहले कोई भला आदमी इस प्रकार फूलों के गमले को लेकर चलने की बात सोच ही नहीं सकता था। लेकिन अब इसे प्रजातन्त्री जीवन का ढंग समझा जाता था। उसे इस प्रकार की स्वाधीनता में आनन्द आता था।

कुबेर का ख्याल था कि इस प्रकार नये फूलों की भेंट देना पिताजी को बहुत प्रसन्न कर देगा। उसने सोचा कि यह भूमिका होगी उस बुरे समाचार की। किस रूप वह यह समाचार उनसे कहेगा, इसका निश्चय उसने परिस्थिति पर छोड़ दिया। उसे आशा थी कि जल्दी ही वह यह समाचार उन्हें सुना देगा क्योंकि पिता जी को यह समाचार ज्ञात हो जाने के बाद कुबेर के लिए अपने आप को सँभालना आसान हो जायगा क्योंकि आखिर उसे अपने पिता को यह विश्वास दिलाना होगा कि उसे इस समाचार से कुछ वैसी परेशानी नहीं हुई जिसकी आशंका उन्हें हो सकती थी और यह कि आखिर एक ऐसी औरत को अपनी पत्नी नहीं बनाना चाहता जो बेमन उससे शादी करे।

नित्य की भाँति उसके पिता इस समय फुलवाडी में टहल रहे थे। उनका वाटिका प्रेम अद्भुत था, फुलवाडी में उन्हें मनचाहा पूरा पूरा

आनन्द कभी मिलता ही न था क्योंकि फुलवाड़ी उनके दृष्टिकोण से कभी भी परिपूर्ण बन ही न पाती थी। जो कमियाँ एक आगन्तुक की दृष्टि में आ ही न सकती थीं वे भी उनकी तीखी दृष्टि से न छिप सकती थीं।

इस समय कुबेर ने अपने पिता को फूलों की क्यारियों के बीच खड़े देखा। एक आरक्तिम और स्वर्णिम पुष्प गुल्म को वे ध्यान से देख रहे थे।

"देखो तो कुबेर," पिता ने पुकार कर कहा, "मुझे लगता है इस वर्ष इतने सुन्दर फूल नहीं आये जितने गत वर्ष थे।"

कुबेर ने अभिवादन किया। "अभी आकर देखता हूँ। लेकिन पिता जी, पहले यह देखिए क्या यह मुकाम पुष्प अपनी फुलवाड़ी में है। मेरा ख्याल है मुझे कहीं दिखायी नहीं दिया।"

श्री मत्सुई ने उत्सुकता के साथ अपने हाथ आगे बढ़ा दिये। पिता के इन बढ़े हुए हाथों को देख कर कुबेर चौंक पड़ा। वे हाथ इतने दुर्बल हो गये थे कि उनकी एक एक हड्डी स्पष्ट दिखायी पड़ती थी। तो उसके पिता सचमुच इतने दुर्बल हो गये थ। उसने पिता के चेहरे की ओर देखा और वहाँ भी उसने वही दुर्बलता देखी। नित्य की भांति श्री मत्सुई जापानी लिबास में थे और उनकी गर्दन खुली हुई थी। और कुबेर उनकी हँसुली के पास के गड्ढों को और चिपटे हुए कर्णपुटों को स्पष्ट देख सकता था। वह पिता से अधिक लम्बा था, उसका शरीर इतना ताकत वर और भरा पुरा था जितना कि उसके पिता का कभी नहीं रहा और इस समय वह अपने वृद्ध पिता पर ऐसी ममता भरी दृष्टि से देख रहा था जैसे पिता अपने पुत्र को देख रहा हो। वह प्रयत्न पूर्वक हँसा—"यह फूल आपकी फुलवाड़ी में नहीं है। सचमुच आपके लिए आज मैं एक नया फूल खोज लाया।"

उसके पिता के सूखे से चेहरे पर मुस्कराहट के साथ झुर्रियाँ और गहरी पड़ गयीं। "मैं तो इसे सम्भव ही नहीं समझता।" श्री मत्सुई का उद्यान फूलों के लिए प्रसिद्ध था।

पिता पुत्र दोनों उस छोटे से फूल का सौन्दर्य देखने में तन्मय हो गये।

"अच्छा तो इसे हम कहाँ लगाएँगे?" श्री मत्सुई ने उत्सुकता के साथ पूछा। "इन लाल और सुनहले फूलों के पास तो लगाएँगे नहीं। तुम्हारी माँ इस नये फूल को बहुत पसन्द करेंगी। यह उन्हीं से मिलता जुलता है। इसे मैं यहाँ लगाऊँगा क्योंकि अपनी खिड़की से वे इसे यहाँ देख सकेंगी।"

फूल को लगाकर उन्होंने रगड़ कर अपने दोनों हाथों की मिट्टी साफ की। दृश्य सुहावना था, वायु आनन्द दायिनी थी और कुबेर ने इसी मौके को ठीक समझा।

"पिता जी मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे आपके लिए वह फूल मिल गया। इससे आपको एक ऐसा समाचार सुनना भी आसान हो गया जो कुछ इतना आनन्द प्रद नहीं है। मेरा विवाह नहीं होगा।"

श्री मत्सुई पुत्र की ओर घूमे। "इसका मतलब!"

"कुमारी सकाई ने यह शादी न करने का निश्चय किया है," कुबेर ने शान्त भाव से कहा।

श्री मत्सुई की पलकें झँप गयीं, एक क्षण वह बोल न सके। कुबेर ने पिता को लगी इस तात्कालिक आघात का लाभ उठाया। "इससे आपको परेशान नहीं होना चाहिए पिता जी," उसने धीमे स्वर में कहा, "जाने क्यों मुझे बराबर ऐसा लगता रहा है कि यह शादी कभी हो नहीं पायेगी। मेरा ख्याल है कि डाक्टर सकाई ने अपनी बेटी पर जरूरत से ज्यादा प्रभाव डाला है, आपके प्रति आपकी मैत्री से विवश होकर। आप जानते हैं वे आपका कितना आदर करते हैं। उन्हें बहुत तकलीफ होगी। हमें कुछ ऐसा सोचना चाहिए जिसमें उनकी तकलीफ कम हो। कुमारी मत्सुई ने बेशक बहुत अच्छा किया जो समय रहते ही मुझे सूचना दे दी।"

"क्या उसने स्वयं ही—," उसके पिता लड़खड़ाये।

"हाँ," कुबेर ने नितान्त शान्त भाव से कहा "आप जानते हैं वे

बिल्कुल अमरीकी स्वभाव की हैं। वे स्वय मेरे दफ्तर मे आयीं और अपनी भावनायें मुझे बतायीं। वे एक अमरीकी से शादी करना अधिक पसन्द करती हैं।"

"क्या ऐसा अमरीकी कोई है ?" श्री मत्सुई ने पूछा।

"मालूम होता है, है," कुबेर ने कहा। "परिस्थितियों को देखते हुए, मेरा तो विश्वास है कि यही सबसे उत्तम रास्ता है।"

श्री मत्सुई अब इतना सँभल चुके थे कि नाराज हो सकें। "बेशक, यही सबसे अच्छा रास्ता है, उसमें कोई सन्देह नहीं। इस तरह की नौज वान छोकरी हमारे इस प्राचीन परिवार के उपयुक्त हो ही नहीं सकती, लेकिन मेरे बेटे, तुम्हारा क्या हाल होगा ?"

कुबेर मुस्कुराया। "आप तो देखते हैं मैं बिल्कुल प्रसन्न हूँ।"

श्री मत्सुई ने अपने हाथ बढ़ाकर अपने बेटे की बाँह पकड़ ली। उन्हें यह देखकर सन्तोष हुआ कि उनका बेटा इतना सबल, इतना दृढ और इतना कोमल था। उनका विश्वास पुन स्थिर हुआ। "लेकिन मेरे बेटे, तुम्हारे लिए यह कितने अड़चन की बात रही होगी कि वह छोकरी तुम्हारे सामने आकर बात करे।"

"बिल्कुल नहीं, पिताजी," कुबेर ने चलताऊ ढंग से कहा। "मुझे तो उसकी साफगोई बहुत पसन्द आयी। एक नयी चीज थी। कुमारी सकाई एक समझदार लड़की हैं। मेरा ख्याल है यहाँ की अपेक्षा वे अमरीका में अधिक प्रसन्न रहेंगी। आखिर जिन्दगी के शुरू के पन्द्रह साल उन्होंने केलिफोर्निया में बिताये भी तो हैं। मेरा ख्याल है वहाँ इतने दिन रहने के बाद वे कभी भी पूरी तौर से जापानी नहीं हो सकतीं। हम तो केवल डाक्टर सकाई की बात सोचनी चाहिए। एक अद्भुत पुरुष हैं वे। बहुत झेल रहे हैं। जिस देश में थे वह छूट गया, जिस देश में हैं वहाँ का जीवन उनसे जीते नहीं बनता।"

हाथ में हाथ डाले दोनों धीरे धीरे घर की ओर चल रहे थे।

"तुम्हारी माँ को कैसे यह खबर सुनायी जाय ?" श्री मत्सुई ने धीरे से कहा।

"उन्हें अभी तुरन्त मत बताइए," कुबेर ने सुझाया। "नित्य की भाँति हमें चलकर भोजन कर लेना चाहिए और, उसके बाद आप अकेले यह समाचार उन्हें सुनायें। कल प्रात हम लोग तय करेंगे कि डाक्टर सक्काई से कैसे मिला जाय। शायद बहुत जल्दी मिलना ठीक न होगा। उन्हें अपने आपको सँभालने का मौका मिलना चाहिए—अपना मन स्थिर करने का उन्हें समय चाहिए। और जब तक उनका मन स्थिर न हो, हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

श्री मत्सुई कुबेर की बाँह के सहारे झुक गये। "मुझे तो केवल तुम्हारी चिन्ता है बेटे। तुम्हारे दिल पर चोट न लगे तो—"

"मुझे चोट लग ही नहीं सकती," कुबेर ने कहा और झुक कर पिता की ओर मुस्कुराया जो आँखें ऊपर उठाये उसकी ओर देख रहे थे।

कुबेर की भूरी आँखों में इतनी स्पष्ट चमक थी, उसके धीमे स्वर इतने सबल, सम्पन्न थे कि श्री मत्सुई को उसकी इस बात पर विश्वास भी हो गया।

२०

"ऐसी बात है, तो फिर," कर्नल ने कहा, "तुम अपने घर जा सकते हो। मेरे नौजवान दोस्त अगले गुरुवार रवाना हो जाओ। जितनी लम्बी छुट्टी चाहो, ले सकते हो। हाँ, इतनी लम्बी नहीं कि बेजामालूम हो।"

एलेन अपने अफ़सर पर हँसा। "यह न सोचिए कि मुझे बेवकूफ बना दिया गया।"

कर्नल ने अपने कागजों पर से अपना सर उठाया नहीं। कागजों की एक बड़ी फाइल पर वे दस्तखत कर रहे थे। आज वे बड़ी कुशलता, तत्परता तथा आत्म विश्वास के साथ काम कर रहे थे।

"कौन किसको बेवकूफ बनाना चाहता है?" उसने कुछ गुस्से से कहा, "मुझे इसकी कोई परवाह नहीं कि तुम बेवकूफ बनते हो या नहीं। मैं चाहता यह हूँ कि तुम अपने घर जाओ और सोचो। अपने घरेलू वातावरण में वापस जाओ; अपने परिवार को देखो और अपने देश की लड़कियों को देखो।"

"उससे कोई फर्क पडनेवाला नहीं, महोदय।"

"फर्क पड सकता है," कर्नल ने कहा। "और यदि कोई फर्क नहीं पड्ता तो फिर यहाँ वापस मत आना।"

ये शब्द कर्नल ने अचानक अपने खूबसूरत नौजवान के दुराग्रह से खीचकर कहे थे। इस केनेडी पर कर्नल ने अपना बहुत सा समय अपनी नेक सलाहें और अपनी ममता निछावर कर रखी थी। और अब उसे क्रोध आ रहा था कि अब यह सब कुछ एक जापानी छोकरी के लिए बरबाद होने जा रहा है। सुरुचि हो, कर्नल सोच रहे थे, अच्छी बात है लेकिन क्या सुरुचिपूर्ण अमरीकी लडकियाँ हैं ही नहीं? जातियों का मिश्रण उन्हें पसन्द नहीं था। वैसे ही हजारों अर्ध अमरीकी जापानी बच्चे, हजारों अर्ध अमरीकी चीनी बच्चे गन्दे पडे थे ठीक वैसे ही जैसे हिन्दुस्तान में हजारों अर्ध अंग्रेज हिन्दुस्तानी बच्चे भरे पड़े थे। युद्ध का यह एक अभिशाप था और अमरीकी सरकार भी इसे पसन्द नहीं कर सकती थी। अमरीकी सरकार जहाँ अमरीकियों के लिए सुरक्षित करने का प्रयत्न करती थी, ये सिपाही वहाँ खुद ही इस योजना को चौपट किये देते थे। और अब केनेडी भी। वासना की बात तो समझ में आ सकती थी खासकर जब सिपाही विदेश में हो लेकिन शादी।

"धन्यवाद महोदय," एलेन ने कहा।

"ओह, वापस तो तुम आओगे ही।" कर्नल ने कुछ कर्कश स्वर में कहा।

एलेन चला गया। केवल तीन दिन। तीन दिन में वह क्या कर सकता था। कर्नल ने जो जाल उसके लिए बिछाया था और जिसमें फँसने के लिए वह मजबूर था, उसपर उसे बहुत क्रोध आ रहा था।

[illegible] के इस [illegible] में [illegible] हुई थी। [illegible] की [illegible] है [illegible]! [illegible] की [illegible], लेकिन [illegible] । [illegible] एक [illegible] है [illegible] नहीं [illegible] है । [illegible] में [illegible] को [illegible] देखकर ही वह [illegible] हो उठता । लेकिन अब उसको केवल एक [illegible] थी कि [illegible] में ही रहे—हमेशा के लिए [illegible] जोसुई के साथ रहे वहीं एक सुमन हो । अपनी [illegible] पर उसे दुःख और [illegible] हो रहा था क्योंकि इस समय वह [illegible] पूर्वक [illegible] सकता कि कभी घर वापस न आएगा, कभी अपने माँ बाप से न मिलेगा [illegible] इस बात का विश्वास हो पाता कि वह जोसुई के साथ [illegible] जीवन बिता सकता है । इतनी निर्दयता के साथ उसकी इच्छाओं को पहले कभी नहीं कुचला गया था । जीवन में उसे [illegible] से कभी [illegible] नहीं पड़ा था । इकलौता बेटा था, इसीलिए उसे कभी निराश नहीं किया गया था और इस समय भी वह निराशा के सामने झुकने को तैयार नहीं था । उसने अब तक जब जो कुछ चाहा था पा लिया था ।

केवल तीन दिन !

"अपना सामान बाँधो" कर्नल ने कहा था, "मैं तुमसे और कुछ नहीं सुनना चाहता । मेरी सलाह है कि तुम उस लड़की से दुबारा मिले बिना घर चले जाओ ।"

ठीक, एलेन यह बात नहीं मान सकता । वह पहली ही गाड़ी से [illegible] आएगा । घर तो उसे बेशक जाना ही पड़ेगा । घर न जाना [illegible] भयानक अवश्य होगी जितना खतरा उठाने के लिए वह तैयार न था । पर जोसुई को किसी तरह समझाना होगा कि वह वापस आ जाएगा [illegible] चाहता था कि जापानी लोग इतने सशक्त, इतने तत्पर और इतने [illegible] न हों । उसे सन्देह था कि जोसुई इन सबके सामने टिक पायेगी या नहीं ।

यह सन्देह उसे इतना अधिक अशान्त बनाये दे रहा था कि वह इसे सहन नहीं कर पा रहा था । पर मैं उसे अब तक किसी चीज़ में आनन्द

नहीं आ सकता था जब तक वह जोशुई के सम्बन्ध में निश्चिन्त न हो जाय। और यह निश्चिन्तता केवल एक प्रकार से ही मिल सकती थी कि वह उससे शादी करले जितनी जल्दी हो सके, वह शादी कर लेगा। लेकिन कैसे ? शादी की अनुमति लेने में यों युग बीत जाते थे, और उसके लिए तो कर्नल ने शायद रास्ता ही बन्द कर रक्खा था। जापानी लोगों में शादी कैसी होती है ? अथवा वह जोशुई को समझाये कि—

उसने जोशुई को तार भेजा कि वह दूसरे दिन दोपहर की गाड़ी से आ रहा है। आज की गाड़ी तो मिल नहीं सकती थी। बहुत देर हो गयी थी। उसने तय किया कि वह अपना सामान बाँध कर तैयार कर लेगा, अमरीका जाने की हर तैयारी पूरी कर लेगा और तब शेष सब क्षण जोशुई के साथ बितायेगा। वह उसे, अपनी प्रियतमा को, फुसलाएगा, गोद में लेगा, प्रलोभन देगा और इतना प्यार करेगा कि शादी हो या न हो वह उसकी हो जायगी, उससे कुछ भी इन्कार नहीं कर सकेगी। और जब उनका प्यार प्रणय में परिणत हो कर स्थायी—अटूट हो जायगा तब वह अमरीका जा सकेगा और वहाँ से फिर तुरन्त वापस आ जायेगा।

अथवा इससे भी अच्छा रस्ता है। अपने कमरों की ओर जाते समय उसका दिमाग तेजी से काम कर रहा था। वह अपना तबादला करा लेगा। अमरीका में ही रुक सकेगा वह। सम्भव है राजकीय कार्यालय में ही उसे स्थान मिल जाय। वर्षों का अनुभव था उसके पास—प्रशान्त के द्वीपों में, जापान में, कोरिया में और फिर जापान में—बहुत कुछ तो वह कर चुका था देख चुका था। अमरीका में सरकारी दफ्तरों में वह काम का आदमी साबित हो सकता था और तब जोशुई भी उसके पास आ सकती थी। वह जन्म से एक अमरीकी नागरिक थी और इसलिए उसके अमरीका ले जाने में कोई दिक्कत भी नहीं हो सकती थी।

उसका दिल हल्का हो गया। ऐसा लगा कि कर्नल का चलाया फंदा भी उसके हित में ही था। अपने परिवार वालों को राजी करने में उसे कुछ समय लग सकता था। कौन जाने जापानियों के सम्बन्ध में उनके

दिमाग में कैसे ख्यालात भरे हों। उसे खुशी हो रही थी कि उसने अपने पत्रों में अपनी माँ को यहाँ के सुन्दर दृश्य, यहाँ के मनमोहक अनुभव और जापानी जीवन के आनन्द, उल्लास के वर्णन भली भाँति लिख भेजे थे। और सब बातें उसके सन्तोष के अनुकूल होती तो वह यहां जापान में ही रहना पसन्द करता। यह एक सुन्दर देश था, सरल जीवन था यहाँ का और यहाँ के लोग मनोहर थे। हां यहां वे लोग सचमुच अब उसे मनोहर लगने लगे थे। कभी कभी विचित्र अनुभव भी होते थे—जब जङ्गलों की रातों में भयावने सपनों से एकदम जाग उठता था, जहाँ किसी क्षण टूट पड़ने वाला खतरा रहता था एक जापानी का, नङ्गा, सादे शरीर पर ही गहरे रङ्गों को पोते हुए अदृश्य जैसा जापानी सिपाही जो तब तक न दिखायी देता था जब तक फासला कुछ ही फीटों का न रह जाय। उसने सीख लिया था सोना इस तरह कि आधा जागता रहे जिससे दुश्मन की उपस्थित उसके हल्के पैरों की चाप सब कुछ सुनायी पड़ सके। एक बार जब वह सो ही रहा था अचानक वह उठ खड़ा हुआ था और पतली धार वाला अपना छुरा एक जापानी की छाती में चुभो दिया था। पर वह इस हत्याकाड का अभ्यस्त कभी न बन सका। वह हत्यारा न था। उस जापानी की हत्या का भयानक सपना वह कभी कभी देखता था। उस जापानी की खाल सख्त थी, उसका छुरा जब उसकी छाती में चुभा तब—

अचानक वह एक तारघर की ओर मुड़ा और जोशुई के लिए समाचार भेज दिया 'कल अपराह्न में आ रहा हूँ। घर जाने का हुक्म मिला है।' इतना लिख कर वह रुक गया। इस समाचार से तो वह काँप उठेगी। और उसे भयभीत करना ठीक नहीं था। उसने पेन्सिल की नोक दाँतों से काटी और फिर लिखा। 'आमरण तुम्हारा एलेन।'

२१

तार उसी रात आ गया। डाक्टर सफाई ने उसे लिया और जोशुई को देने के पहले उसे पढा। जोशुई ने घण्टी की आवाज सुनी थी, तार लाने वाले का देखा था और उसे सन्देह हो गया था कि तार उसी के लिए था। उसके दिमाग मे न आया कि वह पिता द्वारा तार के पढे जाने पर आपत्ति उठाये। देर सबेर वह स्वय ही उन्हें पढने को दे देती।

पिता ने तार बिना किसी टीका टिप्पणी के जोशुई को दे दिया। लेकिन उनके चेहरे पर कुछ चमक आ गयी।

जोशुई ने धीरे धीरे वह तार दो बार पढा। उसे उस तार में वही सब मिला जो एलेन चाहता था। घर जाने का हुक्म उसे जोशुई के कारण ही दिया गया। वह एक अफसर था और उसकी कीमत थी। उसे जाना पड़ेगा और वह उसे बताना चाहता था कि उसके साथ शादी करने के लिए कृतसकल्प है।

लेकिन यह हो केसे सकता था? उसकी तीक्ष्ण बुद्धि ने सब तथ्यों का सिंहावलोकन किया और परिस्थिति निपट लेने का निश्चय उसे मिल गया।

"शादी तुरन्त हो जानी चाहिए," उसने अपने पिता से कहा।

"मै इसकी इजाजत नहीं देता," पिता ने जोर से कहा" उसे घर जाने दो। हम उसकी प्रतीक्षा करेंगे, देखें वह वापस लौटता भी है या नहीं।"

"अगर हमारी शादी नहीं हो जाती तो मैं उसके साथ चली जाऊँगी, जैसे बन पड़ेगा, वैसे," जोशुई ने घोषणा की।

"मैं तुम्हें कमरे मे बन्द कर दूँगा," पिता ने गुर्राकर कहा।

वह हँस पड़ी—ऐसी हँसी जिसमें तनिक भी मिठास न थी। उसकी हँसी को सुनकर पिता को सख्त सदमा पहुँचा। उसका सुन्दर सा चेहरा घृणा और कठोरता से भर गया था। पिता की ओर वह वक्र दृष्टि से देख रही थी। "क्या आप समझते हैं कि आप मुझे कमरे में बन्द कर पाएँगे? वे आपका घर ढहा देंगे। क्या आपने देखा नहीं कि अमरीकी लोग किस प्रकार का बर्ताव कर सकते हैं? भला क्या उनका विरोध किया जा सकता है? यह मत भूलिए कि वे लोग हमारे विजेता हैं!"

"मुझे अब तुमसे कुछ भी लेना देना नहीं रहा!"

"और मैं उनके साथ चली जाऊँगी।"

उसकी माँ इन दोष भरे स्वरों को सुनकर दौड़ती हुई आयी। यूमी उसे बरामदे में मिली और अँगूठे से इशारा करते हुए फुस फुसाकर कहा, "सड़क पर लोग हैं।"

"जोशुई! जोशुई!" श्रीमती सकाई ने चिल्ला कर कहा, "वे तुम्हारे पिता हैं। इतनी दुष्ट न बनो।" और वह बाप बेटी के बीच में आकर खड़ी हो गयी। एक एक हाथ से दोनों को दूर हटाती हुई। पर दो में से किसी ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। दोनों एक दूसरे की ओर घूरते रहे।

"इस विदेशी की परीक्षा लेने के लिए परमात्मा ने एक मौका दिया," डाक्टर सकाई क्रोध से उबलते हुए बोले "लेकिन यह बेशरम लड़की उसके घर जाने से पहले ही उससे शादी करना चाहती है। ताकि वह इससे बचकर न निकल जाय। मैं तो अब ऐसा सोचने लगा हूँ कि पाप उसकी ओर से नहीं, इसकी ओर से शुरू हुआ है। यही फाटक पर खड़ी रही कि लोग इसे देखें, यही छिप छिपकर उससे मिलती रही। मुझे शर्म है कि यह मेरी लड़की है।"

छत की ओर देखते हुए डाक्टर सकाई ने अपनी दोनों बाहें फैला दीं।

श्रीमती सकाई जोशुई की ओर घूमीं। "तुम इतनी जल्दी शादी नहीं कर सकतीं। शादी में वक्त लगता है। उसे शादी करने की आज्ञा

तो मिलनी ही चाहिए।"

"मैं तो उसके साथ जाऊँगी," जोशुई ने हठ किया।

"वह अपने माता पिता की ओर बारी बारी से देखने लगी और उसने देखा कि दोनों ने उसके विरुद्ध सॉठ गाठ करली है। यह दृश्य उसने पहले कभी न देखा था, कम से कम जब से केन्सन इटली मे मारा गया और वह इकलौती सन्तान रह गयी तब से तो उसने यह दृश्य कभी न देखा था।

"जो मेरी इच्छा है, मैं करूँगी," उसने कहा और तब घूमकर वह अपने कमरे की ओर भाग गयी। माता पिता अकेले अपना दु:ख समेटने के लिए खडे रह गये।

"हम लोग क्या करेंगे ?" डाक्टर सकाई ने एक अदभुत विनय के साथ कहा।

"वह इतनी हठीली है" श्रीमती सकाईने दु:ख के साथ कहा, "कि सोचो नो वह अमरीका मे पाली पोसी गयी है अब उसे बदला नहा जा सकता।"

"मैं मन्दिर मे जाता हूँ, देखता हूँ बौद्ध स्थविर क्या कहते हैं।" डाक्टर सकाई ने उसी प्रकार दु:ख के साथ कहा। "इसकी शादी कर ही देनी होगी।"

२२

एलेन केनेडी ने दरवाजे पर की पीतल की घण्टी बजायी। जो घडी सामने थी उससे वह डर रहा था पर वह दृढसकल्प भी था। अगर डाक्टर सकाई ने उसे घर आने की अनुमति न दी तो भी वह हार न मानेगा। अगर जोशुई इतनी कम उम्र की न होती। डाक्टर सकाई जैसे आदमी

को यह समझाना मुश्किल था कि उनकी बीस वर्ष की लड़की इतनी सयानी हो चुकी है कि अपने सम्बन्ध में अपना निर्णय कर सके। फिर भी अभी एलेन को स्वयं ही जोशुई की इच्छा शक्ति उसकी दृढ़ता, उसकी शान्ति और शक्ति की थाह लेनी थी। उसके प्यारे प्यारे मुखड़े की शान्ति के पीछे पोरुश दृढ़ता छिपी हुई थी और एलेन को इसी का भरोसा था। अपने ही जीवन में वह स्वयं कई बार अपने मार्ग में आई हुई बाधाओं को बड़ी आसानी से दूर हटा सका था, केवल अपने क्रोध के ही सहारे, कुछ ऐसा ही क्रोध जैसा इस समय आ रहा था। कर्नल और डाक्टर सकाई मे से कोई, या दोनों मिल कर भी उसके निश्चय को बदल नहीं सकते थे।

इसी भावना के साथ वह दरवाजे पर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था। एक क्षण बाद दरवाजा खुला और नौकरानी यूमी उसके सामने आकर खड़ी हुई। वह जापानी भाषा में दो एक शब्द बोली जिसका मतलब एलेन ने घर आने का निमन्त्रण समझा। वह घर के अन्दर प्रविष्ट हुआ और देखा कि यूमी को कोई तकलीफ नहीं हुई। स्पष्ट था कि उसने यूमी का मतलब ठीक समझा। यूमी ने झुककर उसे रास्ता दिखाया और अपने पीछे आने का सकेत किया एलेन को आश्चर्य हुआ पर वह चुप चाप चला गया। घर शान्त था। उसे न बोलने की, न किसी के पदचापों की ध्वनि सुनायी दी। तो क्या कोई जाल था? एक असम्भावित सी कल्पना थी पर फिर भी यह कल्पना उसके दिमाग में आयी।

कोई जाल न था। उसे एक बड़े से खूबसूरत कमरे में ले जाया गया। उस कमरे से डाक्टर सकाई की सुन्दर फुलवाड़ी और उसमें एक छोटी सी कृतिम पहाड़ी से गिरने वाले झरने का दृश्य दिखायी देता था। कमरे के भीतर डाक्टर और श्रीमती सकाई बैठे थे श्रीमती सकाई डाक्टर के बॉयी ओर थी एलेन के प्रवेश करने पर वे दोनों खड़े हो गये। दोनों जापानी लिबास मे थे और सफेद मोजे पहने थे श्रीमती सकाई की पीली रेशमी घाँघर पर फूल मँढे हुए थे। डाक्टर सकाई की पोशाक काली थी और वे एक छोटा कोट पहने थ। बेशक दोनों की पोशाक बिल्कुल रस्मी थी लेकिन क्यों?

"कृपया बैठिये," डाक्टर सकाई अंग्रेजी में बोले," आपको पश्चिमी ढङ्ग की कुर्सी शायद ज्यादा पसन्द आये ?"

"जापानी तरीकों से मै बिल्कुल अभ्यस्त हो गया हूँ," एलेन ने उत्तर दिया।

अभिवादन का उत्तर देकर वह बडी क्षमता के साथ अपने पैरों को मोडकर फर्श पर बिछी चटाइयों पर बैठ गया। जोशुई कहाँ थी ? वह प्रतीक्षा करता रहा। अगर उसे कहीं बाहर भेज दिया गया है तो वह उसका पता लगायेगा। एक यह शिष्टाचार निस्सन्देह जान बूझ कर उसे यह समझाने के लिए किया गया है कि वह इन लोगों को स्वीकार नहीं है।

एलेन को आश्चर्य हुआ, डाक्टर सकाई ने सहज शान्त भाव से बोलना शुरू किया क्रोध छू तक न गया था। "मैं अमरीका में बरसों रहा हूँ, श्री केनेडी और मैं जानता हूँ कि अमरीकी लोगों को स्पष्ट वादिता प्रिय है। तो हमें भी बात साफ साफ करनी चाहिए।"

"बडी खुशी से," एलेन ने धीरे से उत्तर दिया।

"अपनी बेटी से कुछ बात चीत करने के बाद मुझे इस बात का विश्वास हो गया है कि इस अनचाही परिस्थिति के लिए वह भी निस्सन्देह थोड़ा बहुत जिम्मेदार है। हमारे परिवार के लिए यह क्षण एक बड़ी विषम परिस्थिति का हो गया है क्योंकि मेरे एक सब से नजदीकी और प्रिय मित्र के बेटे के साथ उसकी सगाई पहले ही हो चुकी है। अपनी इस मैत्री को बनाये रखने के लिए मैं बहुत चिन्तित रहा हूँ। इस समय तो तुम्हारे आकस्मित तार से विवश होकर मैं केवल अपनी बेटी के ही सम्बन्ध में कुछ सोच सका हूँ। आपके क्या इरादे हैं श्री केनेडी ?"

डाक्टर सकाई ने यह प्रश्न कुछ व्यग्रता के साथ पूछा। एलेन ने उसका उत्तर सहज शान्त ढंग से दिया। "अमरीका जाने के पहले मैं उससे शादी करना चाहता हूँ, डाक्टर साहब और इसका अर्थ है शादी आज या कल होनी चाहिए।"

"लेकिन यह कैसे हो सकता है ? डाक्टर सकाई ने पूछा," आपको इसके लिए तो आवश्यक अनुमति तो इतनी शीघ्र मिल ही नहीं सकती।"



"यह मुझे मालूम है डाक्टर साहब, लेकिन एक वैधानिक विवाह के विभिन्न देशों में अनेक ढङ्ग होते हैं, मुझे याद है कि मेरे एक मित्र ने फारमोसा में एक जापानी लड़की से विवाह करना चाहा था। उसने जापानी ढग से उससे विवाह कर लिया और उसके साल भर बाद जाकर कहीं उसकी शादी फ्रास मे वैधानिक हो पायी। हाँ, फिर भी उसके इस विवाह को सभी ने मान्य माना था। कुछ वैसा ही ढग मैंने भी सोचा था।"

एलेन की सरलता, उसकी सौजन्यता, तत्परता और उसकी सुन्दर अंग्रेजी भाषा ने डाक्टर सकाई को कुछ दुविधा में डाल दिया। ऐसा अमरीकी जापान में उन्हें अभी तक दिखायी न दिया था। उनके सामने एक ऐसा आदमी बैठा था जो सडकों पर घूमने वाले उन सिपाहियों के गिरोहों से बिल्कुल भिन्न था जिनसे वे दूर रहते थे और जिनका अभिवादन भी कभी उन्हे स्वीकार न था।

"लेकिन फिर भी है तो यह अनियमित ही," उन्होंने सन्देह पूर्वक कहा।

"आज कल सभी बातें अनियमित हैं," एलेन ने कहा, "देशों के बीच के रिवाज तो बिल्कुल ही बिगड गये हैं।"

वह झुका अपनी बात पर बल देने के लिए। "महोदय, मैं आपकी बेटी को प्यार करता हूँ और उसके साथ शादी करना चाहता हूँ। मैं उसे अपने घर ले जाना चाहता हूँ—अपने माता पिता के यहाँ। मैं चाहता हूँ कि वह जैसी है उसी रूप में वे उसे देखें, स्वीकार करें। इस समय उसे अपने साथ ले जाने की अनुमति मुझे नहीं है और इसलिए मैं विवश हूँ कि जब तक उसके जाने का प्रबन्ध न कर दू तब तक उसे यहीं रहने दू। मैंने निश्चय कर लिया है, यद्यपि किसी से कहा नहीं है, कि अब म जापान वापस नहीं आऊँगा। मैं अपनी नियुक्ति म परिवर्तन करा लूँगा और टोक्यो के बजाय वाशिङ्गटन में ही कोई स्थान पाने की कोशिश करूगा। मे चाहता हूँ कि आपकी बेटी के साथ अपना जीवन बिताने की पूरी आजादी मुझे मिल सके। और मेरा ख्याल है कि यहा जापान की अपेक्षा वहाँ अपने देश मे हमें इसके लिए अधिक सुभीता रहेगा। मुझे आशा है आप और

श्रीमती सकाई कभी कभी हमे दर्शन देंगे और हम भी कभी कभी आप लोगों के दर्शन करने आ सकेंगे। पर उसे छोड़ कर अमरीका जाने के पहले जोशुई के साथ मेरी शादी हो जानी चाहिए। शादी हो जाने से उसका अमरीका जाकर मेरे साथ रह सकना आसान हो जायगा।"

डाक्टर सकाई ने क्या कहा होता इसका पता नहीं चल सकता क्योंकि एलेन की बात समाप्त होते होते जोशुई कमरे म आ दाखिल हुई। इतनी तेजी से उसने पर्दा हटाया था कि वह जमीन पर गिर पडा।

"माता जी, पिता जी, एलेन ने जो कुछ कहा है मैं वही करूँगी।"

एक चाँदी सी सफेद घाघर पहने वह माँ बाप क सामने खडी थी, बाँहे उसकी फैली हुई थीं और वह एक सुन्दर पक्षी की तरह मालूम पडती थी जिसके दोना पख फैले हुए हों। उसका चेहरा ऊपर उठा हुआ था, कपोलों पर लाली थी, काली आँखों में चमक थी। एलेन ने ऐसा सौन्दर्य कभी नहीं देखा था। वह खडा हो गया और आनन्द विभोर हो उसकी ओर देखता रहा।

अब वह उसकी ओर घूमी, अपने हाथ उसकी ओर फैलाए हुए और उसने आगे बढकर उन हाथों को अपने हाथों म ले लिया। यह एक क्षण में हो गया। फिर सङ्कोच का एक क्षण आया और तब जोशुई की आँखों में छलकते हुए आत्म समर्पण को देखकर उसने उसे अपनी बाहों में समेट लिया। दोनों के पीछे उसके माता पिता अचल शान्त बैठे थ। श्रीमती सकाई ने आँखे घुमा लीं। पर डाक्टर सकाई स्थिर दृष्टि उनकी ओर देखते रहे।

जोशुई अपने प्रियतम की बाँह में झूम कर बोली, "माता जी, पिता जी, हम लोग शादी के लिए तैयार हैं।"

माता, पिता उठ खडे हुए। डाक्टर सकाई बोले, "श्री केनेडी, यह सब मैं पहले ही से जानता था। हम लोग बौद्ध हैं। मैंने बौद्ध मन्दिर में सब आवश्यक प्रबन्ध कर लिया है। आप जानते हैं, यह सब अनियमित है। इसका कोई उपयुक्त पूर्व उदाहरण भी नहीं है। लेकिन बौद्ध स्थविर आज कल के विदेशी शासन के दिनों की विचित्रताओं से परिचित

हैं। उन्होंने हमारे इस संस्कार को सम्पन्न करना स्वीकार कर लिया है। आपके देश में होने वाले संस्कार के सम्बन्ध में हमें आपकी ईमानारी और प्रतिष्ठा पर विश्वास करना होगा।"

डाक्टर ने अपना सर झुका लिया और एलेन के उत्तर की प्रतीक्षा कीये बिना ही दरवाजे की ओर चल दिये। श्रीमती सकाई भी उनके पीछे चल दीं। एलेन की बगल से जाते हुए उन्होंने उसकी ओर देखा भी नहीं।

जोशुई उनकी ओर देखती खड़ी रही। तब वह एलेन की ओर घूमी और एलेन ने देखा कि उसकी आँखों में आँसू हैं। "आप उनकी बात का ख्याल न करें," उसने अनुनय करते हुए कहा, "उनके लिए यह स्थिति बडी कठोर है, आप उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। उनके कोई दूसरी सन्तान नहीं हैं, मेरा पति ही उनका बेटा होता।"

"क्या मैं वह बेटा नहीं हो सकता?" उसने पूछा।

जोशुई ने सर हिला दिया। "वे आपको स्वीकार नहीं कर सकते—अभी नहीं," उसने सरल भाव से कहा।

जोशुई ने अपना सर एलेन की छाती पर रख दिया और उसे वहाँ उसकी दिल की धड़कन सुनाई पड़ने लगी। उसे लगा कि इस दिल पर निश्चय ही विश्वास किया जा सकता है।

"शायद धीरे धीरे वे समझ सकेंगे," उसने कहा। जोशुई के काले बालों वाले सर को अपने दोनो हाथों से उसने अपनी छाती पर चिपका लिया।

एक अजात शिशु की प्राणशक्ति का उद्गम कौन जान सकता है? कुसमों की कोमल बयार में उसका स्पन्दन है, उनके मचलते मकरन्द में वह मचलती है। देवदारु द्रुतों वासन्ती छाया में चमकते हुए स्त्रोतों में उसकी आँख मिचौनी है, कुसुमाधुरों के प्रथम चुम्बन में उसकी चमक है। विधुर हृदयों की विकल वेदना उसे आकार देती है, समर्पण भरा चुम्बन उसे पूर्णता देता है। अजात शिशु का अवतार दैवेच्छा का अनुगामी होता है।

सदियों की घनी छाया के नीचे उस विशाल मन्दिर में वैवाहिक संस्कार के लिए यह टोली इकट्ठी थी। मूमी और माली गवाह थे। दोनों डाक्टर और श्रीमती सकाई के पीछे खड़े थ—आश्चर्य भरे बिल्कुल अनजान। स्थविर प्रेमियों के सामने बैठा था। उसके अगल बगल दोनों और दो छोटे पुरोहित बैठे थे। उसकी आत्मा सन्तुष्ट न थी क्योंकि वह अपने हृदय से इस विवाह को उचित नहीं समझता था। लेकिन डाक्टर सकाई ने उस पर जोर डाला था, उसे याद दिलाया था कि आजकल का वक्त ही असाधारण है। "अगर अपने धर्म को हम जीवित रखना है तो उसे समयानुकूल बनाना आवश्यक है," उन्होंने स्थविर से कहा था। स्थविर शंकाकुल रहा। वे एक वृद्ध सज्जन थे, विद्वान और विरक्त। ईसाइयत की नकल करने वालों का उन्होंने कभी अनुमोदन नहीं किया। इन नक्लचियों ने ईसाइयों के उपासना मन्त्रों की नकल पर बौद्ध मन्त्रों की रचना की थी। युवक बौद्ध समिति का सगठन भी उन्हें पसन्द नहीं आया था। देवोपासना के ये ढङ्ग नहीं हैं।

"आप नहीं जानते मैं कितनी मुसीबत में हूँ," डाक्टर सकाई ने आवेश के साथ कहा था; "मेरे सामने केवल—केवल एक विकल्प है, या तो मै अपनी बेटी को खो दू या कोई ऐसा रास्ता निकालूँ कि इसे शादी का रूप मिल जाय।"

"आपने उसे जरूरत से ज्यादा आजादी दे रक्खी है," स्थविर ने कहा था।

"मेरी सारी पिछली भूल वर्तमान को बदल नहीं सकतीं," डाक्टर सकाई ने उत्तर दिया था।

मन्दिर के कोष को अच्छी खासी भेंट, डाक्टर सकाई की अनुरक्ति का वचन, और उनकी बढती हुई अधीरता—सबने मिलकर स्थविर को यह समझा दिया कि कम से कम इस मामले में उन्हें अपने आपको बदलना ही पड़ेगा। और इसीलिए वे इस सस्कार को सम्पन्न करने के लिए तैयार हो गये थे जिसके लिए उनके सामने लोग इकट्ठे थे। मन्दिर के भीतर बड़े प्रतिष्ठा भरे वातावरण में वे आये, आते ही घण्टे पर एक गहरी चोट की

स्थविर ने फिर अपना सर उठाया और भरपूर निगाह से दोनों को देखा, उनकी निगाह एलेन पर आकर रुक गयी।

"इसलिए," उन्होंने आदेश पूर्ण स्वर में कहा, "इन प्रतिज्ञाओं से अपने आपको बाँधने के पहले अच्छी तरह समझ लो, याद कर लो कि एक पति का यह कर्तव्य होता है कि अपनी पत्नी की रक्षा करे, उसे सहारा दे, मन से और कर्म से उसके प्रति सच्चा रहे, बीमारी और दुःख में उसे आराम दे और बच्चों की शिक्षा में उसे सहायता दे।"

और तब जोशुई से वे बोले, "पत्नी का यह कर्तव्य होता है कि वह पति को प्यार करे, उसकी सहायता करे, अपने व्यवहार में विनम्र और शान्त रहे, और हर बात में पतिभक्त बनी रहे।"

दोनों से बारी-बारी बोलते हुए वे कहते गये, "क्या तुम ईमानदारी के साथ यह कहते हो कि तुममें से किसी को भी ऐसी कोई बाधा नहीं मालूम जो नियमानुकूल तुम दोनों का विवाह होने में विघ्न डाल सके ?"

जोशुई ने स्थविर की ओर देखा और बुद बुदा दिया।

"मुझे ऐसी कोई बाधा नहीं मालूम," एलेन ने अंग्रेजी में कहा।

"मैं शपथपूर्वक कहती हूँ कि मुझे ऐसी कोई बाधा नहीं मालूम," जोशुई ने दृढता के साथ जापानी भाषा में कहा। क्योंकि सब बाधायें वह पार कर चुकी थी !

स्थविर फिर एलेन की ओर घूमा। "एलेन केनेडी, क्या तुम जोशुई सकाई को अपनी वैधानिक पत्नी के रूप में स्वीकार करोगे ?"

जोशुई ने फिर उसकी ओर देखा।

"हाँ, मैं स्वीकार करता हूँ," एलेन ने अंग्रेजी में कहा। कहते समय उसकी आवाज काप रही थी यद्यपि वह उसे दृढ रखने का प्रयत्न कर रहा था।

"और तुम," स्थविर ने जोशुई से कहा, "तुम जोशुई सकाई, क्या तुम इस व्यक्ति एलेन केनेडी को अपना वैधानिक पति स्वीकार करोगी ?"

"हाँ, मैं स्वीकार करती हूँ," जोशुई ने जापानी में कहा।

मन्दिर में आने से पहले एलेन को जैसा सुझाया गया था, उसने अपनी अँगुली से अँगूठी उतारकर स्थविर को दे दी और स्थविर ने उसे जोशुई को पहना दिया। उन्होंने उन दोनों के हाथ मिला दिये और इन मिले हुए हाथों पर पवित्र माला रख दी।

"मैंने यह देखा," स्थविर ने गम्भीरता पूर्वक कहा, "कि तुम दोनों बौद्ध परम्परा के अनुसार विवाह करने के लिए तैयार हुए हो, इसलिए मैं तुम्हें पति-पत्नी घोषित करता हूँ तुम दोनों अनन्त प्रेम और करुणा से ओतप्रोत रहो।"

स्थविर एक क्षण खड़े रहे और तब वेदी की ओर बढ़े। एलेन ने संकेतों का पालन करते हुए भस्मकुण्ड में समिधाहुतियाँ छोड़ीं। देव मूर्तियाँ ऊपर से झाँक रहीं थीं। जोशुई ने झुककर पवित्र और सुगन्धि पूर्ण भस्मकुण्ड का स्पर्श किया।

सोने के पानी से चमकती हुई बुद्ध की महान् प्रतिमा अन्य प्रतिमाओं के बीच भव्य प्रतीत हो रही थी। उसी प्रतिमा के नीचे खड़े होकर स्थविर बोले, "भगवान बुद्ध ने कहा था, माता-पिता को सहारा दो, पत्नी और बच्चों का पालन करो, शान्तिपूर्ण आजीविका, अपनाओ—यही जीवन का परमानन्द है।"

ये शब्द उन्होंने एलेन से कहे। संस्कार पूरा हो गया। स्थविर बुद्ध की प्रतिमा की ओर घूमे। चार अन्य पुजारी भी उनके साथ घूमें। इस प्रकार देव प्रतिमाओं के सम्मुख एक मानव अवगुण्ठन सा बन गया। अब बुद्ध प्रतिमा से स्थविर इतने मन्द स्वरों में बोले कि उनके शब्द सुने न जा सकते थे। वे आज के इस संस्कार का औचित्य सिद्ध करना चाहते थे, क्षमा याचना कर रहे थे और आशीर्वाद की प्रार्थना कर रहे थे, यदि आशीर्वाद सम्भव हो; और यदि नहीं तो कम से कम यह वरदान यह युवती—जोशुई, अपने देश, अपने लोगों के बीच सकुशल लौट आये।

बुद्ध प्रतिमा, शुद्ध ठोस स्वर्णप्रतिमा जैसी सदा की भांति अचल खड़ी थी, दोनों हाथ अनन्त सार्वभौम आशीर्वाद की मुद्रा में थे, आँखे निश्चल निश्चेष्ट थीं।

एलेन ने सोचा—प्रस्तुत अयान्तविकता उसका सिर भुका नहीं था। वह स्थविर और पुजारियों की ओर देखता और उनके ऊपर की बुद्ध प्रतिमा की ओर। बुद्ध की मूर्त प्रतिमा उन्द ईसाई गिर्जाघर की अदृश्य प्रतिमा से अधिक वास्तविक न बना सकी थी, पर यह वास्तविकता कम भी न हुई। क्योंकि मन्दिर की वायु पवित्र था, देवताओं की उपस्थिति के कारण नहीं, बल्कि उनकी प्रार्थनाओं के कारण, उनके दु खों के कारण जो यहाँ प्रार्थना करने, याचना करने आते थ, वह खोजने आते थ जो मिल नहीं सकता था। यहाँ मानवता का वातावरण था, यह वातावरण अगम्य अनन्त तक जिसकी गति थी और जो उस उत्तर का खोजी था जो आज तक मिल नहीं सका। यहीं वह जोसुई के साथ खड़ा था और आखिरकार धीरे धीरे उसका भी सिर भुक गया। बहुत दिन पहले उसने प्रार्थना और विश्वास करना छोड़ दिया था। फिर भी जब कभी वह घर होता तो माता पिता के साथ गिर्जाघर जाता, बचपन में याद किये हुए प्रार्थना मन्त्रों को पढ़ता और अपना सर भुका लेता। आज उसकी व्यक्तिगत आवश्यकता से प्रेरित प्रार्थना हृदय से अपने आप निकली। उस प्रार्थना के वेग में वह काँप उठा और उस शब्दहीन प्रार्थना में ही वह अज्ञात शिशु, वह विश्व विभूति अपने जीवन और जन्म के निकट आ गया।

जिस कमरे में जोसुई ने अपने बचपन के दिन बिताये थे उसी कमरे में एलेन उसकी बगल म पति रूप में लेटा था। माता पिता हट गये थे। संस्कार समाप्त होने के बाद मन्दिर से सब लोग घर वापस आये थे और डाक्टर सकाई ने एक छोटे से स्वागत भाषण में यह स्पष्ट कर दिया था कि अब एलेन उस घर के लिए अजान और अमान्य नहीं है तथा अब उसके लिए उस घर में कुछ भी अस्वीकार न था, इच्छानुसार वह आ जा सकता था।

एलेन उन्हें धन्यवाद दे, इसके पहले वे चल दिये थे। श्रीमती सकाई दिखाई नहीं दीं। यूमी ने दोनों का भोजन जोसुई के कमरे में ही ला दिया था। भोजन समाप्त होने के बाद व्यापक निस्तब्धता में ही बिना हँसी मुस्कान की एक रेखा के उसने फर्श की एक चटाई पर रेशमी गद्दे बिछा

दिये थे। तब दोनों को झुककर उसने अभिवादन किया; पर्दे ठीक से खींच दिये और बरामदे की रोशनी बुझाकर चल दी। इस प्रकार आखिरकार वे दोनों अकेले थे और अब उनके बीच कोई न था, कुछ न था।

उस रात वे दोनों बच्चे की बात न सोच रहे थे। प्रेमी कभी नहीं सोचते। उन्हें केवल अपने प्यार की अनुभूति होती है, वह प्यार जिसका प्रारम्भ इतना विराट, इतना अस्पष्ट और इतना व्यापक होता है कि सारी दुनियाँ को अपने भीतर समेट लेता है। प्यार ही उनकी अनुभूति होती है और प्यार ही उनकी प्रतीत और तब जो अमूर्त बाहर व्याप्त है—छाया हुआ है वह मूर्त बनता है, उन्हीं का रूप धारण करता है, पुरुष और नारी का रूप, उन्हीं की आकृति जो सिमट कर शक्ति और सहिति का सचय करती है रक्त के उबाल मे शरीर की एकान्त वासना म। बाह्य वातावरण म प्रतीक्षा करता हुआ निराकार शिशु बिना उनके जाने ही आकार में आ गया। माँ युवती थी तन मन से पवित्र पर प्रत्येक युवती का इतना सरल समाधान नहीं हो सकता जितना देव माताओं को हो सकता है। प्रथम परिणाम ही प्राय पर्याप्त नहीं होता था शायद दुर्बलता पिता में होती है। सभी पिता देवता नहीं होते। ये दोनों शिशु की आत्मा का स्वप्न भी नही देख रहे थे—उस जीवकीट का स्वप्न जो प्रतिक्षण स्थिरता की ओर—स्थायी आकार की प्राप्ति की ओर बढ रहा था।

दम्पति को इस प्रतीक्षा करते हुए शिशु का—इस विश्व विभूति का ज्ञान न था। उन्हें केवल एक दूसरे का मान था, काँपते हुए हाथों का काँपते हुए शरीरों का मान, जब तक कि प्रेम का रहस्य मूर्त न हो गया।

जहाँ तक वे देख सकते थे मकान में वे अकेले ही थे। मकान बहुत बडा था और इसमें सदेह नहा कि पर्दों से ढके हुए कमरों में कहीं दोनों बुजुर्ग भी रह रहे थे। लेकिन वे जहाँ कहीं भी जाते एलेन को मौन नौकरानी के अलावा और कोई न दिखायी देता।

"तुम्हारे माता पिता का कुछ अद्भुत रवैया है," उसने दूसरे दिन जोशुई से कहा, "लेकिन में नहीं चाहता कि व हमारे लिए कष्ट सहें। हम लाग किसी सराय म जा सकते हैं।"

"नहीं, नहीं," वह बोली, "एक अजनबी जगह चलें ! नहीं—चूँकि हमारा अपना यहाँ कोई मकान नहीं है, मेरे माता पिता की इच्छा है कि हम यहीं रहें। हम लोगों को भविष्य में इसके लिए किसी न किसी प्रकार कृतज्ञता दिखानी होगी।"

दो में से किसी ने भी बच्चों की बात नहीं की। बच्चे तो होने ही नहीं चाहिएँ। कुछ ही घन्टों में उसे चले जाना था और उसे अकेली रह जाना था।

"बहुत समय तक नहीं," उसने कहा, "शायद कुछ हफ्तों की ही बात है।"

लेकिन जब प्यार के लिए केवल एक आध घन्टा—एक दिन ही हो तब सप्ताह वर्षों में बदल जाते हैं। दूसरी अन्तिम रात्रि को वह रोती रही। कुछ अद्‌भुत आशङ्काएँ उसके मन में भरी थीं। ये दुःशङ्काएँ कि वह अब कभी उसे न देख पायेगी—कि शायद वह समुद्र में खो जायगा या कि उसे ले जाने वाला जहाज किसी पहाड़ से टकरा जायगा, या कि उसके परिवार में से कोई उससे उसको छीन लेगा। उनका पारस्परिक जीवन उनकी साथ-साथ की जिन्दगी केवल इतनी ही थी—कुछ ऐसा उसे महसूस हो रहा था।

वह उसे अपनी बाँहों में लिए रहा। उसके सीने से चिपकी वह रोती रही। उसके वादों पर उसे विश्वास होता ही न था। भय उसे खाये जा रहा था। उसे अपनी इस आशंका पर विश्वास जैसा हो रहा था कि कल का अनिवार्य वियोग अनन्त हो जायगा। वह जानती थी कि उन दोनों को अलग हो जाना पड़ेगा—ऐसे कि वे फिर कभी न मिल सकेंगे।

"लेकिन जोसुई," आखिरकार उसने परेशान होकर कहा, "तुम यह कैसे समझती हो कि उन सैकड़ों हजारों लोगों में जो हवाई जहाज से समन्दर पार किया करते हैं, एक मैं ही समुद्र में डूब जाने के लिए या पर्वत से टकरा जाने के लिए चुना गया हूँ और कैसे तुम मेरे परिवार वालों पर सन्देह कर सकती हो जब तुम उन्हें जानती तक नहीं ? या मुझ पर तुम कैसे सन्देह करती हो जब तुम मुझे इतना अच्छी तरह जानती हो ?"

आखिरकार उसे कठोर भी बनाना पड़ा। जोशुई क्या तुम समझती हो कि मेरे लिए यह आसान है। यदि मैं तुम्हें प्यार न करता होता तो क्या इस समय यहाँ होता ?

इन भयों और इन प्रश्नों का केवल एक उत्तर था। वे बार बार एक दूसरे को आलिङ्गन कर परिरम्भणकार प्यार करते। अजान शिशु भीतर प्रतीक्षा करता रहा।

दूसरे दिन हृदय विदारक विदायी का समय आया। उसने स्टेशन पर आने की अनुमति उसे नहीं दी, न जोशुई को ही अपने ऊपर इतना विश्वास रहा कि वह वहाँ जाये। जोशुई के माता पिता कुछ क्षणों के लिए उपस्थित हुए। उन्होंने अभिवादन किया, डाक्टर साहब ने एलेन से हाथ मिलाया और तब श्रीमती सकाई के साथ फिर चले गये। वे दोनों अकेले रह गये। जब वह उससे अलग हुआ जैसे उसके भीतर का माँस किसी ने कचोट लिया हो। उसके हाथों से अपने को अलग करते हुए उसे कच्चे घाव की सी पीड़ा हो रही थी।

"मैं प्रति दिन तुम्हें पत्र लिखूगा" उसने वादा किया।

"और मैं भी" उसने सिसकते हुए विवर्ण और आसुओं से गीले मुख से कहा।

"हम एक दूसरे को हर बात बताते रहेंगे" उसने वादा किया बीतते हुए दिन और रात मैं तुम्हे अमरीका बुला लेने के प्रबन्ध मे बिताऊँगा। अब एक बार मुस्करा दो—विदा के इस अन्तिम क्षण।"

वह भाग चला घूमकर उसने देखा अर्घ विक्षिप्त सी जोशुई दरवाजे पर खडी थी तेजी से वापस लौट आया और फिर उसे एक बार आलिङ्गन कर लिया।

"मुझे पीछे मुडकर नहीं देखना चाहिए" उसने लम्बी साँस भरते हुए कहा।

बरबस वह कदम बढाता गया और स्टेशन पर गाड़ी चलते चलते वह डब्बे में दाखिल हो गया।

द्वितीय खण्ड

९

श्रीमती केनेडी अपने बेटे के स्वागत के लिए तैयार थी। कर्नल की पत्नी ने, जो उनसे कभी मिली नहीं थीं, उन्हें भली भाति सब लिख दिया था।

"अच्छा हो, मैं उसकी माँ को लिख दूँ," कर्नल की पत्नी ने कर्नल से कहा था, "अगर आप लिखेंगे तो वे सोचेंगी कि मेरा उससे सबन्ध है और आप उसे अलग करना चाहते हैं।"

इसलिए उन्होंने केनेडी की माँ को लिखा था इस अन्दाज से जैसे वह स्वय उसकी माँ जैसी हों और जैसे एक माँ दूसरी माँ को ऐसी स्थिति में लिखना चाहेगी। उसने लिखा था कि केनेडी एक बहुत होनहार नौजवान अफ्सर है, उसके पति का दाहिना हाथ है। उसको किसी न किसी प्रकार बचाना ही चाहिए। इस समय जब नये सरकारी आदेशों के अनुसार अनेक प्रकार की नयी नीतियों का परीक्षण हो रहा था, केनेडी जैसे अफसर को छुट्टी देना मुश्किल था। लेकिन केनेडी के हित में उसके पति इतना त्याग करने को तैयार हैं।

आपका बेटा सामान्य सिपाहियों से बहुत ऊँचे दर्जे का है। (उसने श्रीमती केनेडी को लिखा) उसके साथ साधारण तरीकों से काम न चलेगा। सामान्य उत्सव, मेल मिलाप या और मामूली चीजें काम न देंगी। आपका बेटा दक्षिणी राज्यों की मनोवृत्ति का भद्र युवक है और वह एक जापानी छोकरी के सम्बन्ध में भी बड़ी भावुकता के साथ सोचता है। बेशक उसका विश्वास है कि यह लकड़ी भी एक ऊँचे स्तर की लड़की है जो शादी से कम किसी बात के लिए भी तैयार नहीं है। लेकिन मुझे शक है कि उसने शादी के अलावा उसके सामने और किसी तरह का प्रस्ताव रक्खा भी है— या नहीं। और जापानी तो सब के सब अमरीका जाने के लिए पागल

से बैठे हैं। उनकी निगाह में अमरीका धरती पर स्वर्ग है और मेरा ख्याल है कि तुलनात्मक दृष्टि से वह है भी।

श्रीमती कनेडी एक ऐसी महिला थीं जो बात पचाना जानती थी। उन्होंने पत्र का उत्तर उपयुक्त आभार के साथ लिख भेजा पर साथ ही अपने बेटे की सुरुचि और उसके विवेक पर अपना पूरा विश्वास भी प्रकट किया। यह ऐसा पत्र था जो सब कुछ स्वीकार करने भी कुछ न स्वीकार करता था। और कर्नल की पत्नी ने जिनके मन म कोई बात न पचपाती थी और जो शायद महिला कहे जाने योग्य भी न थी इस पत्र को टोक्यो में आश्चर्य के साथ पढा। भोजन करते समय उन्होंने वह पत्र कर्नल की तरफ बढा दिया। "जरा इसे देखिए" उन्होंने आदेश दिया "और बताइए कि ये देवी जी एक जापानी वधू चाहती हैं या नहीं?"

कर्नल ने पत्र सावधानी से पढा। "मेरी तो खाक समझ में नहीं आता। छोड़ो भी इस जजाल को। कनेडी तो कह रहा था कि वह शायद वापस नहीं आयेगा। मैं उसके स्थान पर दूसरी नियुक्ति करने जा रहा हूँ।"

श्रीमती केनेडी ने कर्नल की पत्नी का पत्र अपने पति को दिखाया और चुराकर वह पत्र सैन्धवी को भी दिखाया क्यों कि श्री केनेडी ने उन्हें मना किया था कि वह पत्र किसी और को न दिखाये। "यह शहर तो चलनी जैसा है" उन्होंने कहा, "परमात्मा के लिए हमें अपने घरेलू मामले घर के भीतर ही सीमित रखनें चाहिए। और फिर हमने लड़के की बात तो सुनी ही नहीं।"

सैन्धवी ने कुछ कहा नहीं। उसने पत्र बड़ी सावधानी से पढा और फिर श्रीमती केनेडी को वापस दे दिया। "कर्नल की बीबियाँ क्या कुछ • • • " वह रुकी।

"क्या?" श्रीमती केनेडी ने पूछा।

"गधा हाँकने वाली नहीं होती?" सैन्धवी ने आखिरकार ठीक शब्द पा लिया।

"शायद" श्रीमती केनेडी सहमत हुई। "फिर दूसरी और एलेन एक पुरुष है। बचपन में वह कितना प्यारा प्यारा लगता था। मैं तो अक्सर



सोचती थी कि वह औरों से भिन्न होगा। लेकिन नहीं वह ठीक अपने पिता की तरह है और वह अपने परिचित समाज से अलग पड़ गया है। अच्छा हो सैन्धवी यदि तुम मेरी कुछ मदद करो।"

सैन्धवी ने अपनी नीली आँखें फैला दीं। "बेशक," श्रीमती केनेडी, "मैं जरूर मदद करूँगी। एलेन के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ।"

श्रीमती केनेडी ने तेजी से उसका चुम्बन ले लिया। इसके लिए उन्हें पंजों पर खड़ा होना पड़ा था। जब सैन्धवी चली गयी तब वे अपने विशाल सुन्दर भवन में घूम-घूमकर देखने लगीं कि सब कुछ ठीक है या नहीं। समय मिला होता तो एलेन के कमरों को, उसके सोने के कमरे को और उसकी बैठक के कमरे को, जो दूसरी मंजिल पर थे उन्होंने नये सिरे से सजाया होता। लेकिन समय नहीं था। वे केवल इतना ही कर सकीं थीं कि बिस्तर, उसकी चादरें, धुली स्वच्छ बिछवा दीं, नये कम्बल रखा दिये और छोटे छोटे सुन्दर फूलों के गुलदस्ते सजाकर रख दिये। अन्तिम क्षण उन्होंने एक पीला गुलाब छोटे से चादी के बर्तन में सजाकर रख दिया। अब वातावरण उनका मन चाहा था, घरेलू वातावरण, परम्पराओं से बोझिल और मधुर जिसमें वात्सल्य, इकलौती सन्तान और उत्तराधिकारी से सब तरह की आशा लगाये था। वे बहुत पहले से जानती थीं कि एलेन को नाराज करना, उसे कुछ इंकार करना उसे खो देना होगा। उसका क्रोध न जगने पाना चाहिए। उन्होंने जापानी लड़की की चर्चा, अपने पति से भी दुबारा नहीं की। उन्होंने निश्चय किया कि उस लड़की को भूल जायगी। वास्तव में वैसी कोई लड़की है ही नहीं।

आखिरकार जब एलेन आ गया तब वे अपने बड़े कमरे में रजत स्वच्छ परिधान पहन उसके स्वागत के लिए बाँहे फैलाये आगे बढ़ीं। तुरन्त ही एलेन उन बाहों के भीतर आ गया। और अपनी लम्बी बाँहों में उन्हें समेट लिया तथा उसका चेहरा उनके कपोल से मिल गया। उसे झुकना पड़ रहा था—कितना लम्बा हो गया था उनका बेटा।

"मानती हूँ तुम बेशक बढ़ गये हो," कुछ हँसते हुए बेटे को अपने से कुछ अलग करते हुए उन्होंने कहा।

"माँ, आप सर्वदा के समान कितनी ममता मयी हैं !" उन दोनों में परस्पर कभी गम्भीरता रही ही नहीं। माँ हर बात का मजाक बनाया करती थीं, उनका स्पर्श तितली के पंखों सा कोमल हास भरा स्पर्श होता था।

"अरे, तुम्हारा चेहरा," अपना गाल मलते हुए उन्होंने कहा, "तुमने जब से जापान छोड़ा, बाल बनाये ही नहीं।"

यह सही था कि उनके कपोल का वह हिस्सा लाल पड़ गया था जहाँ उसके चेहरे की रगड़ लगी थी। "पाँच मिनट का मौका दीजिए," उसने कहा और छलांग भरता हुआ जीने पर चढ़ गया। उसके पिता जीने से नीचे आ रहे थे। दोनों ने एक दूसरे का प्रगाढ़ आलिङ्गन किया। पिता के प्यार की सीमा को उसकी आयु और उसका विकास कभी पार न कर सका था।

"माँ मुझे बाल बना के लिए ऊपर भेज रहीं थीं," एलेन ने कहा, "इससे मुझे एकदम से घरेलूपन महसूस होने लगा है।"

"तो मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा," पिता ने धीरे से कहा।

उनका यही तरीका था। जब कभी वह घर आता, चाहे जितने दिन बाहर रहा हो, वे सब वैसे ही हो जाते थे। ऐसा लगता मानों वह कभी बाहर गया ही नहीं। वह अपने कमरों में दाखिल हुआ और वह सुहावना दृश्य खड़ा देखता रहा। यह उसका अपना बैठक का कमरा था, उधर वह उसका स्नान का कमरा जिसमें पश्चिम की ओर खिड़की लगी थी और उसके पार मनोहर स्नानागार। घर के भीतर अपने इस छोटे से घर में वह जोसुई के साथ आराम से रह सकता था। शायद उसके पिता ने यहाँ रहने का निश्चय करके बड़ी बुद्धिमानी दिखायी थी। उसने अपने पिता को कभी दुखी नहीं देखा था। दुख दैन्य भरे संसार में स्वर्ग जितना सत्य बनाया जा सकता था, यह स्थान था और उसे कोई कारण न दिखायी देता था कि जोसुई के साथ वह उस स्थान में क्यों न रह सके।

उस रात उसने जोसुई को पत्र लिखा, "प्रिये, मैं अपने कमरे में बैठा हूँ—उस कमरे में जो मेरा और तुम्हारा होगा। मैं इसका शब्द चित्र तुम्हारे सामने उपस्थित कर दूँ ताकि जब मैं तुम्हें यहाँ लाऊँ तो सब

तुम्हें जाना पहचाना प्रतीत हो। हमारे यहाँ वधू को वरद्वारा देहली पार करायी जाती है। मैं नहीं जानता तुम्हें यह अन्ध विश्वास मालूम है या नहीं!'

सो उसने कमरों का, मकान का पूरा वर्णन लिखा, उसके माता पिता कैसे हैं, उसकी मेज के पास वाली खिड़की से बाहर पहाड़ियों और घाटियों के दृश्य चांदनी रातो में कैसे दिखायी देते हैं, उसकी मेज पर छोटे-छोटे फूलों के गुलदस्ते रक्खे हैं—वैसे फूल नहा, जापान क से बड़-बड़े। उसमें लिखा कि उसने अपने माता पिता के साथ अकेले भोजन किया था, बाहर के लोगों म केवल सैंधवी था—सैंधवी जो उसकी लड़कपन की दोस्त है, जो उसकी ऐसी बहन है जैसी कोई लड़की बिना उसके परिवार में जन्म लिए हो सकती है। वह भी अब इकलौती सन्तान है क्योंकि उसके दो भाई युद्ध में मारे जा चुके हैं—एक प्रशान्त में और एक जर्मनी में। "वह तुम्हारी बड़ी सुहृद मित्र होगी," उसने जोसुई को लिखा, "वह उसकी सबसे बड़ी खूबी है कि वह बहुत ही दयालु है। वह तुमसे केवल दो तीन साल बड़ी होगी।"

एलेन को यह देखकर ताज्जुब हुआ था कि सैंधवी बढकर कितनी सुन्दर हो गयी थी। सौन्दर्य उसके विकास के साथ खिला था। उसे याद था कि बचपन में वह भद्दी पीली पीली मालूम होती थी, बाल उसके सीधे थ, उसके चेहरे का भाव बोदा और दब्बू था। उसकी विनम्रता एक ऐसी लड़की की विनम्रता थी जो अपने दोस्तों के बीच अनुचित रूप से लम्बी मालूम होती थी। लेकिन अब उसमें न वह दब्बूपन था, न बोदापन और उसका वह भद्दा बोदापन एक मधुर शालीनता म बदल गया था। उसके बाल छोटी-छोटी भवरें बनाये चमक रहे थे। उसकी त्वचा निखर उठी थी, उसका मुखड़ा कोमल था जिसमें लालिमा अधिक नहीं आ पायी थी। वह छरहरे बदन की थी, गरिमामयी थी। जैसी थी वैसे अपने आप में अपना जीवन बिताना सीख लिया था और उसका मस्तक ऊँचा था।

यह भी खुशी की बात थी कि उसे देखकर सैंधवी प्रसन्न मालूम होती थी, सचमुच प्रसन्न और अपनी प्रसन्नता जाहिर करने में निस्सङ्कोच।

उसने चाहा कि जोशुई के सम्बन्ध में सैन्धवी को एकदम सब कुछ बतला दे। लेकिन अभी उसने अपने माँ बाप को भी कुछ नहीं बतलाया था और सैन्धवी को उनसे पहले बताना उसे अनुचित जँचा। इसके अलावा सैन्धवी ने उससे एकान्त में मिलने की कोशिश नहीं की और उसके लिए ऐसा प्रबन्ध करना उचित नहीं मालूम पड़ता था।

जोशुई को उसने लम्बा पत्र समाप्त किया और फिर कुछ देर तक आँखें बन्द किये बैठा रहा, उसे स्मरण करता हुआ, कल्पना लोक में उसकी झाँकी देखता हुआ। यह अच्छा ही हुआ कि उसे जापान में छोड़ आने के पहले उसने उसे अपनी बना लिया था। अब वह उसकी थी और यहाँ उसके पास आ जायेगी और अब कोई उसे उससे अलग न कर सकेगा। उसने सोचा कैसे वह इस विशाल भवन में आँख मिचौनी सी खेलती फिरेगी। अपनी छोटी सी जापानी घाँघर पहने हुए जिनमें वह, उसकी प्रियतमा, एक चित्र जैसी मालूम देती थी। वह नहीं चाहता था कि उसे एकदम अमरीकी बना दे। वह, वह जैसी थी, उसे वैसी ही, वही बनाये रक्खेगा—पूर्व की एक अनुपम निधि—वह जो उसके जीवन के उस अङ्क की साझीदार होगी जिसमें इस घर का अन्य कोई व्यक्ति उसका साझीदार न हो सकेगा।

दरवाजा खोलकर वह छज्जे पर आया और सामने चाँदनी से धुली हुई रात का दृश्य देखने लगा। जीवन के कितने ही वर्ष ऐसे थे जिनके सम्बन्ध में वह बात नहीं कर सकता था, युद्ध के वर्ष जब वह इतना भोला नौजवान था और निर्दयता के साथ उसे सच्चे जीवन से अलग कर दिया गया था। उसके मस्तिष्क पर अनेक दृश्य खिंच गये थे। ऐसे अनुभव उसने पाये जिन्होंने उसका ढाँचा ही बदल दिया और अब वह उनसे छुटकारा नहीं पा सकता था। सीलन भरे जंगलों के असख्य रोग-कर कीटाणु, भयानक विषधर और अन्य विषैले जीव जीवन के लिए निरन्तर भय, न केवल शत्रु से बल्कि रोगों से भी वे गन्दे कीचड़ भरे स्थान जहा सूरज के भी झाकने की हिम्मत नहीं पड़ती थी—वे सभी दृश्य उसकी नजरों के सामने घूम रहे थे। किन्तु इन सबसे भयानक यादगार थी

भयावनी रात की जब उसका छुरा मजबूत चमडी को पार कर भीतर के कोमल नर मास में धँस गया था। यह दृश्य वह कभी भूल नहीं सकता था, यद्यपि मृत्यु उससे दूर ही रही थी।

अचानक वह लौट पडा और स्नानागार म जाकर ठण्डे और गरम दोनों पानी के नल खोल दिये, झरझरकर दोनों नलों का पानी स्नान कुण्ड में भरने लगा। उसने तय किया कि वह स्नान करेगा और तब सो जायगा।

"आपका क्या ख्याल है ? वह कैसा दिखता है ?" श्रीमती केनेडी ने अपने पति से पूछा।

"बिलकुल ठीक, एकदम प्रसन्न," उन्होंने उत्तर दिया।

वे लोग सोने जा रहे थे, वह अपने कमरे म और वह अपने में। बीच के दरवाजे में खडी होकर श्रीमती ने वह वार्ता शुरू की थी।

"मैं उससे एक शब्द भी नहीं कहूँगी," श्रीमती केनेडी ने कहा, "अच्छा हो वह यही समझे कि मुझे कुछ भी नहीं मालूम।"

"बहुत ठीक, "श्री कनेडी ने कहा, "ज्यादा बतचक्कर मुझे भी पसन्द नहीं है।"

व दरवाजे के पास आ गये, "जाकर सो रहो, आज का दिन तुम्हारे लिए अत्यन्त उत्तेजनापूर्ण रहा है," उन्होंने पत्नी को चूम लिया।

वे रुकी रहीं, "वह कितना सुन्दर है।" कुछ सोचती सी वे बोलीं, "आप जानते हैं वह जब छोटा था, मैं नहीं सोचती थी वह इतना सुन्दर है। मुझे तो खुशी है कि वह बिल्कुल आप जैसा मालूम होता है।"

"कहती जाओ," पति ने चुटकी लेते हुए कहा, "वह मुझ जैसा तो नहीं दिखायी देता, मैं तो अपनी मा से मिलता जुलता हूँ और उसका चेहरा तो मेरे पिता जी के चेहरे जैसा है।" एक बार फिर उन्होंने पत्नी का चुम्बन लिया और दोनों अपने अपने बिस्तरों की ओर चल दिये। बीच का दरवाजा खुला रहा। रात में जाने कब श्रीमती कनेडी चुपचाप उठकर नित्य बन्द कर दिया करतीं थीं, उन्हें कभी इसका पता न चल पाता था। प्रात दरवाजा उन्हें नित्य बन्द मिलता था। उन्होंने कभी नहीं पूछा

आखिर इसका मतलब क्या है, जहाँ तक हो सके वे बातों के चक्कर से दूर रहना पसन्द करते थे।

२

"वे लोग जानते हैं," सैन्धवी ने कहा।

दूसरे दिन सुबह माँ के लिए सामान खरीदते हुए सैन्धवी अकस्मात् एलेन से मिल गयी। उसकी माँ की आदत थी कि दिन के लिए जरूरी सामान खरीदना वे जरूर भूल जाती थीं। बचपन से ही सैन्धवी को यह सामान खरीदने के लिए शहर जाना पडता था। शहर कोई दूर नहीं था। दोनों ओर घनी छाया वाले वृक्षों से ढकी सडकपर पन्द्रह मिनट का [illegible] तय करते ही दूकानें मिल जातीं थीं। अपनी कार हो जाने के बाद [illegible] सैन्धवी पैदल ही जाती थी, लोगों से बातचीत करने का मौका मिलता [illegible]। इसी प्रकार आज एलेन से मुलाकात हो गयी और दोनों बातचीत [illegible] हुए चले। रास्ते में जो भी मिलता, उसी से बात होना। यह [illegible] लम्बी नहीं हो सकी थी जितना लम्बा एलेन था।

इसी समय एलेन ने सैन्धवी से जोशुई की बात [illegible] न किसी से उसे बताना ही था। यह कैसे हो सकता [illegible] जोशुई की बात सोचे, नित्य रात को उसे पत्र लिखे [illegible] उसकी चर्चा न करे? देर सबेर उसे अपने [illegible] लेकिन उनसे ठीक वक्त पर ठीक तरीके से [illegible]। [illegible] मन विश्वास था कि उसकी माँ आसानी से [illegible] करेंगी। वह पत्नी चाहे जो हो। यह [illegible] किसी अन्य लडकी की अपेक्षा जोशुई [illegible] यह थी कि माँ को पता चल [illegible]

है। लेकिन यह सोचने का भी कोई कारण नहा था कि एलेन की पत्नी होने के कारण उसका स्वागत अधिक होगा।

एक बात जो एलेन खुद अपने मन म भी स्वीकार करने के लिए तैयार न था, यह थी कि वह सैन्धवी को जोशुई की बात स्वय सैन्धवी के हित के लिए ही बताना चाहता था। एलेन को ऐसे लोगों से नफरत थी जो यह सोचा करते हैं कि औरतें उनके प्रेम में व्याकुल हैं। लेकिन फिर भी उसका भावुक हृदय कह रहा था कि उसने अगर जोशुई को कभी न देखा होता तो सैन्धवी के साथ घर बसाना आसान होता। सैन्धवी का उसके उन्मुक्त मधुर व्यवहार कुछ ऐसा था कि उसका अर्थ कुछ भी नहीं और सब कुछ हो सकता था। ऐलेन ने उसकी गहराई की थाह लेने की कभी कोशिश नहीं की। सम्भव था हर किसी के साथ सैन्धवी का ऐसा ही व्यवहार हो।

वे लोग रुक गये। "वे जानते हैं?" एलेन ने अविश्वास क साथ पूछा।

"कर्नल की पत्नी ने आपकी माँ को पत्र लिखा था," सैन्धवी ने अपने शान्त मधुर स्वर में बताया। अपने दक्षिणी उच्चारण को दबाने की उसने बडी कोशिश की थी पर वह तो उसके साथ जन्म जात था।

"लेकिन कर्नल तो खुद भी नहीं जानता," एलेन ने कहा।

"यहाँ मत खडे रहो, एलेन," सैन्धवी ने कहा, "देखो लोग घूरने लग हैं।"

वह तेजी से आगे बढा और सैन्धवी ने उससे कदम मिलाने की कोशिश की। वह हँसी "लेकिन दौडो भी नहीं। हाँ, तो, कर्नल क्या नहीं जानता?"

उसके कदम धीमे पड़ गये। "मैंने जोशुई से शादी कर ली है। तुम्हारे अलावा और कोई इस बात को नहीं जानता। मै तुम्हे इसलिए बता रहा हूँ कि मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है। मैं सीधे क्योटो शहर गया और वहाँ जाकर जोशुई से शादी कर ली ताकि हम दोनों अलग न किये जा सकें। मैं जानता हू मुझे छुट्टी क्यों दी गयी। इस छुट्टी को देदे को

मंशा थी कि मैं जोशुई को भूल जाऊँ। कर्नल और उनकी पत्नी का ख्याल था कि अगर मैं घर आ जाऊँ तो इस सब के बीच—"अपनी लम्बी निगाह से उसने उस घनी छाया वाली सड़क, उन दूकानों और सफेद मकानों की ओर इशारा किया— "तो मैं उसे भूल जाऊँगा—अच्छा तो उस शैतान औरत ने मेरी माँ को लिखा।"

उसका चेहरा तमतमा उठा और सैन्धवी ने कनखियों से उसकी ओर इस गुस्से के साथ देखा कि उसे खुद अपने गुस्से पर शर्म आ गयी। क्या अधिकार था उसे कि वह विदेश जाकर अपने लिए एक विदेशी पत्नी खोज लाये। तो उस जैसी अमरीका के गाँव और कस्बों में पलने वाली अमरीकी लड़कियों का क्या होगा ? विदेशी औरतों को अपने यहाँ के मर्दों से शादी करनी चाहिए। एलेन उसका था। अगर उसे बलात बाहर न भेज दिया गया होता—और सैनिक भर्ती जबर्दस्ती नहीं थी, तो थी क्या !—तो उनकी शादी बहुत पहले हो गयी होती। यह एक अवश्यम्भावी बात थी और वह एक न एक दिन केनेडी भवन में आकर रही होती—उस भवन में जिसमें वह प्रायः अपने जन्म से ही रहती आयी है। अगर एलेन इतना सुन्दर न होता, अगर उसका सर उसके सर से ऊँचा न होता—अपने से छोटे पुरुष के साथ तो वह शादी कर ही नहीं सकती थी—और प्रायः सभी पुरुष उससे छोटे ही थे—तो उसने वह संकल्प न किया होता जो उसने इस समय अचानक प्रेरणावश कर डाला, मानों वह एक सभ्य देश की बालिका ही न हो। उसने संकल्प किया कि वह एलेन की माँ का साथ देगी न कि उसका। वह अपनी शक्ति भर हर सम्भव प्रयत्न से उस जापानी लड़की का अमरीका आना रोकेगी········।

वह एक धीमे शान्त स्वर में तेजी के साथ बोल रहा था, "जितनी जल्दी सम्भव हो सकेगा मैं जोशुई को यहाँ बुला रहा हूँ। सौभाग्य से वह अमरीकी नागरिक है, वह यहीं उत्पन्न हुई थी। वास्तव में सैन्धवी, वह पन्द्रह वर्ष की हो जाने के बाद ही यहाँ से जापान गयी। वह यहाँ स्कूल भी जाती थी। अंग्रेजी तो उसकी बहुत ही मँजी है—यानी करीब करीब वह मुझे एलेन केनेडी कहती है, बशर्ते कि कुछ सोचकर रुक न जाय।"



"मेरा ख्याल था कि एक जापानी लड़की से शादी करना जरा मुश्किल काम है," सैन्धवी ने कहा। दूधिया रंग की हैट के नीचे वह निरन्तर मुस्कुरा रही थी, निगाह उसकी सड़क पर थी और जब तब वह परिचितों से अभिवादन करती जाती थी। हर चन्द मिनटों बाद उन दोनों का कोई न कोई परिचित उन्हें रोक लेता था और इस बार एलेन कोई उत्तर भी न दे पाया था कि वे रोक लिए गये।

"एलेन केनेडी ही है न ?" सुन्दर लड़कियों के एक गिरोह ने उन्हें घेर लिया। वे लोग अपने घर जा रही थीं। "मेरा ख्याल है आज तो तुम क्लब न आ सकोगी, सैन्धवी !"

"मेरा ख्याल है कि इसके लिए हम तुम्हें दोष भी नहीं दे सकतीं।"

उनके मीठे तरल स्वर शारदी बयार में छा गये। उनकी शारदी पोशाक, चमकीले छोटे छोटे जैकेट हवा में तिरते हुए दुपट्टे, छोटी छोटी हैटें, चमकीले बाल और चमकीली आँखें तथा सुन्दर छोटे छोटे हवा में तिरते हाथ—सब ने एलेन और सैन्धवी के चारों ओर एक ऐसी मधुर ऊष्मा उत्पन्न कर दी जो अपने आप में भोली लेकिन फिर भी नारी सुलभ चतुराई से सभरी हुई थी। युवतियों की आँखें एलेन को परख रहीं थीं। उनके लाल ओठ एक दूसरे से अलग हो चुके थे। हरेक युवती के पाउडर लगे सुन्दर चेहरे पर खोजती हुई निगाहें थीं—वे निगाहें जो हर उस युवती की आँखों में रहती हैं जो अपने उपयुक्त पुरुष मिलते ही अपने समाज से नाता तोड़ने के लिए हर क्षण तैयार रहती हैं। हर युवती अपने आप में सीमित थी लेकिन सैन्धवी अकेली सौभाग्य शालिनी थी जिसके साथ एलेन जा रहा था और सैन्धवी के असाधारण विनम्र हृदय में प्रतिशोध की भावना घर कर गयी थी। वह उन सब युवतियों की ओर देख कर मुस्कराकर मधुर स्वर में बोली, "एलेन मुझे कुछ अद्भुत समाचार सुना रहे थे। इन्होंने घर आने से ठीक पहले एक सुन्दर जापानी लड़की से शादी कर ली है।"

एक दयनीय दृश्य था। हर चेहरे पर की निगाह तुरन्त बदल गयी और तुरन्त ही इस परिवर्तन को रोकने की चेष्टा भी दिखायी दी। संयम का त्वरित आभास आनन्द की कृत्रिम हिलकोर और वह झूठा सा साधुवाद—

"ओ, एलेन, कितने आश्चर्य की बात है।"—"हमें भी उनके सम्बन्ध में कुछ बताओ,"—"उनका चित्र आपके पास है?"

एलेन ने रोष भरी दृष्टि से सैन्धवी की ओर देखा। "उफ, मेरा यह मंशा नहीं था कि इसकी घोषणा इस प्रकार करूं," वह कह पाया।

जोशुई का एक छोटा सा चित्र सचमुच उसके पास था जो जोशुई ने ही उसे दिया था। इस चित्र में वह अपनी स्कूली पोशाक में थी। चित्र अच्छा नहीं था। जोशुई इस चित्र में गम्भीर थी, उसकी पोशाक अच्छी नहीं थी, बाल सीधे सादे थे लेकिन उन सबने वह चित्र उससे छीन लिया और फिर एक दूसरे के पास बढ़ाती गयीं। चित्र को देखकर ,उन्हें सन्तोष हुआ। विजय मद से भरी रहम खाती हुई बोलीं, "एलेन सचमुच वह बहुत सुन्दर है।"

चित्र उन्होंने मुस्कानों और इशारों के साथ सैन्धवी को दे दिया और सैन्धवी चित्र में जोशुई के चेहरे का अध्ययन करती हुई आगे बढ़ी वे आँखे अद्भुत आँखे थीं।

"यह चित्र तो बहुत भद्दा है," एलेन ने कहा, "वह वास्तव में सुन्दर है और अपनी जापानी पोशाक में तो वह और भी सुन्दर मालूम होती है।"

"लेकिन यहाँ तो वह शायद अपने जापानी कपड़े नहीं पहन पायेगी, क्या ख्याल है?" सैन्धवी ने चुटकी ली। "इससे तो वह यहाँ कुछ अद्भुत सी मालूम होगी, क्यों?"

"हाँ मेरा भी ऐसा ख्याल है," एलेन ने कहा। उसने वह चित्र सैन्धवी से लेकर अपनी जेब में रख लिया।

कुछ मिनटों तक दोनों चलते गये। "आपने मुझे यह नहीं बताया कि आप लोगों की शादी कैसे हुई।" सैन्धवी ने कहा।

"हम लोगों का विवाह एक बौद्ध मन्दिर में हुआ था," वह अचानक कह गया। "बौद्ध धर्म उनका धर्म है।"

"कितनी विचित्र बात है," उसने कहा "मुझे बताओ तो क्या वह अपने ही धर्म की तरह है।"

"नहीं, हाँ, मेरा खयाल है सभी धर्मों में तत्व एक ही होते हैं। एक स्थविर था वहाँ, अन्य पुरोहित थे और देवता थे।"

"देवता!"

"मूर्तियाँ—जैसी कैथोलिकों की होती है। बेशक, वह लोग दर असल मूर्तियों की पूजा नहीं करते, मूर्तियाँ तो केवल किसी सन्त या भगवान पर मन स्थिर करने में सहायक होती हैं।"

"और क्या आपने वे सब प्रतिज्ञाएँ कीं जो की जाती हैं!"

"हाँ, मैंने सब प्रतिज्ञाएँ की हैं," उसने दृढता के साथ कहा।

एलेन को आश्चर्य हो रहा था कि सैन्धवी इस प्रकार उससे प्रश्न पर प्रश्न क्यों कर रही है और वास्तव में वह उसकी मित्र है या नहीं। "आखिर तुमने इन सब औरतों को क्यों बता दिया!" उसने पूछा। "अब बात सारे शहर में फैल जायगी।"

"इसीलिए तो मैंने बता दिया," उसने अपनी शान्ति का स्वर कुछ बदलते हुए कहा, "जितना ही जल्दी हर शख्स इस बात को जान ले उतना ही अच्छा, नमस्कार एलेन, मुझे यहाँ रुकना है। यह एक हैट की दुकान है और मेरा खयाल है आपको इसमें चलना पसन्द न होगा।"

तो सैन्धवी उसकी मित्र नहीं थी।

३

जोशुई को पहला पत्र मिला। वह फिर कालेज जाने लगी थी और अभी तक किसी को कुछ पता न था। उसके पिता का कहना था कि अमरीका से जब तक उसकी शादी के कानूनी कागजात न आ जाय तब तक वे उस शादी की घोषणा नहीं कर सकते थे। जब पत्र आया जोशुई घर के बाहर थी। डाकिए से माँ ने पत्र लिया, उसे पहचाना और जोशुई के पिता को

दे दिया। डाक्टर सकाई ने उसे अपनी मेज की ऊपरी दराज में रख दिया। दो दिन तक वह पत्र उन्होंने जाशुई को नहीं दिया। अस्पताल आते जाते, मरीजों की चिकित्सा करते हुए समय, उस पत्र के सम्बन्ध में उधेड़ बुन करता रहा, पर उन्होंने उसे छुआ नहीं। वे आजकल नित्य अपने मित्र श्री मत्सुई के यहाँ जाया करते थे क्योंकि उनके पेट में इन दिनों कुछ गड़बड़ी थी, पित्त की थैली में सूजन आ गयी थी। प्रति वर्ष शरद में उन्हें शराब के साथ गगँटों का गोश्त खाने का शौक था, अन्यथा यों तो वे बड़े परहेजी जीव थे। लेकिन यह भोजन उन्हें बहुत प्रिय था और इससे उन्हें कभी तकलीफ भी होती थी, कभी तकलीफ नहीं भी होती थी। लेकिन पर शरद ऋतु में इसे खाते जरूर थे। इस वर्ष उनका स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं रहा और श्री मत्सुई काफी बीमार पड़ गये। डाक्टर सकाई का कई दिन चिन्तित रहना पड़ा और कुबेर बराबर उनके पास रहा। आखिरकार वे सँभल गये और यद्यपि कुबेर घर से बाहर नहीं जा सका फिर भी वह पढ़ने के कमरे में अपना काम कर सकता था।

श्री मत्सुई वास्तव में इस बात के लिए बहुत अनुगृहीत थे कि [illegible] जीवन डाक्टर साहब ने बचा लिया। हर वर्ष वे डाक्टर से वादा [illegible] कि दुबारा फिर कभी गँगटे न खाएँगे, इसलिए अब [illegible] थी कि कैसे डाक्टर को फिर यह वचन दें। आखिरकार श्री [illegible] यत काफी सँभल गयी और उन्होंने डाक्टर सकाई से [illegible] किसी दिन अस्पताल का काम समाप्त होने के बाद [illegible] और दोनों दोस्त आपस में कुछ बात करें। [illegible] किया। वे बहुत थके थे फिर भी उन्हें ऐसा [illegible] आग्रह व्यवहार का भाव और मत्सुई परिवार [illegible] विशाल हृदयता का सही सही बदला [illegible] कभी उन्होंने इसकी चर्चा करना [illegible] अपना दाहिना हाथ हिलाते हुए [illegible] ऐसी बातों पर जोर नहीं दिया [illegible] मैत्रीभाव की तनिक सी भी [illegible]

पायी। सम्भव है बात सचमुच बहुत महत्वपूर्ण न रही हो लेकिन डाक्टर सकाई का आत्म सम्मान इस चोट को भुला नहीं सकता था।

आज दोपहरी के बाद अपने दोस्त की चारपाई के बगल में बैठे हुए डाक्टर सकाई के मन में आया कि वे अपने मित्र के सामने अपना दिल खोल दें। घर शान्त था, दरवाजे बन्द थे और शरद के बढ़ते हुए शीत के कारण एक तिपाई पर कमरे के बीचों बीच कोयले की जलती हुई अंगीठी रक्खी थी। एक खिड़की थोड़ी खुली हुई थी जिससे वायु के झोंके कमरे को पार करते हुए उसकी भीतर की हवा को शुद्ध कर रहे थे।

श्री मत्सुई अपनी चटाई पर लेटे हुए थे। उसका सिर और उनके कन्धे एक भूरे रेशमी कोट से ढके हुए थे। वे प्रायः पूर्ण स्वस्थ दिखायी दे रहे थे। शरीर का पीलापन गायब हो चुका था और उनका चेहरा जो कुछ समय पूर्व वेदना से विकृत रहा करता था अब शान्त और सुन्दर था।

"मेरी जिन्दगी आप की बदौलत बची," वे बोले।

"मैंने तो केवल अपना कर्तव्य किया है," डाक्टर सकाई ने उत्तर दिया।

"नहीं, कर्तव्य से कुछ अधिक," श्री मत्सुई ने जोर देते हुए कहा। "आपने सब कुछ अदा कर दिया।"

डाक्टर सकाई ने सब समझा और उनके हृदय में मैत्री की उष्मा जग उठी। कुछ झुक कर वे धीमे स्वर में बोले, "मैं आपसे एक सलाह चाहता हूँ। मेरी बेटी के नाम एक पत्र आया है; वह मेरी दराज में रक्खा हुआ है। यदि मैं यह पत्र उसे न दूँ तो क्या यह अपराध होगा? मैं उसी के कल्याण के लिए अब भी उससे इस अमरीकी से मुक्त करने की आशा करता हूँ—उसी के कल्याण के लिए। मुझे पक्का विश्वास है कि मेरी ही भाँति वह भी अमरीका में सुखी नहीं रह सकेगी।"

श्री मत्सुई ने एक चित्र के नाते इस पर विचार किया। वे अब इस औरत को अपने घर लेने के लिए तैयार नहीं थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि वह पूर्ण रूपेण एक विवाहित महिला थी और उनके बेटे के लिए केवल कुमारी ही उपयुक्त हो सकती थी।

"मेरा ख्याल है यह पत्र आपको उसे दे ही देना चाहिए," उन्होंने कहा, "कुछ भी हो वह आपकी बेटी है। मैं आपकी भावना से सहमत हूँ। लेकिन एक परिवार में रिश्तों को ठीक ठीक निभाया जाना चाहिए।"

डाक्टर सकाई कुछ झुक गये।

श्री मत्सुई ने एकदम बात का विषय बदल दिया।

शाम को जब जोशुई माता पिता को प्रणाम करने आयी तो डाक्टर सकाई ने अपने मेज की दराज खोली। "यह तुम्हारे लिए आया है," वे बोले, "जब तुम बाहर गयीं थीं।"

उन्होंने यह नहीं बताया कि पत्र किस दिन आया और वह पूछने के लिए रुकी नहीं। बहुत अधिक झुक कर उसने माता पिता को प्रणाम किया और फिर तेजी से कमरे की ओर चल दी। यह पत्र! पहले तो वह उसे खोल ही न सकी। उसे अपने कपोलों से लगाया, अपनी छाती से चिपकाया और फिर उसे चूम लिया। तब उसने गौर से उस पत्र को देखा। उसका नाम कितना स्पष्ट लिखा था—श्रीमती एलेन कनेडी और उसके नीचे जोशुई सकाई ताकि पत्र खो न जाय, और तब सड़क, क्योटो शहर और जापान और सुन्दर टिकट। पत्र हवाई डाक से आया था। कितना खर्च लगा होगा। लेकिन यह खर्च इसलिए था कि पत्र उसे जल्दी से जल्दी मिले। तो उसे भी पत्र बड़ी सावधानी से पढ़ना होगा। लेकिन बिना नहाए धोये वह इस पत्र को कैसे पढ़ सकती थी। इसलिए जब तक वह अपने आपको नहा धोकर सोने के लिए तैयार करे तब तक दराज में रक्खा रहा। स्नान करके उसने नीली रेशम के कपड़े पहने, बाल ठीक किये लेकिन चेहरे पर क्रीम नहीं लगाया—डर था पत्र में धब्बे न पड़ जाये। कैंची लेकर बड़ी सावधानी से उसने लिफाफे को काटा।

बड़ी सावधानी से एक एक शब्द उसने पढ़ा। हर शब्द कितन महत्वपूर्ण, कितना कीमती था। वह पढ़ती जाती थी और कोशिश करती जाती थी कि शब्दों के पीछे उसे सब दिखायी दे जो लिखने वाले के दिल में था। उसे अपने अमरीकी जीवन के चित्र दिखायी पड़ने लगे। लेकिन वर्जीनियाँ में तो सब कुछ उससे अच्छा था, जो उसे याद था।

अपनी कल्पना के सहारे उन पहाड़ियों, वाटिकाओं और उस महल को भी देखने का प्रयत्न किया जो एलेन का था—जहाँ उसके कमरे थे; जिन कमरों में वह उसके साथ रहेगी। उसने सब कुछ पत्र में लिखा था। अपनी सुनहली चादर से ढके बिस्तर तक का वर्णन उसने किया था। कमरे का पर्दा जो हल्का पीला और लाल रंग का था—सब कुछ तो उसने लिखा था। उसने लिखा था कि कमरा बिल्कुल सादा है। लेकिन वह सादा हो ही कैसे सकता था ? उसके बैठक के कमरे में अलाव था। पूरे दो कमरे केवल उसी के लिए थे—और कितने बड़े कमरे ! जैसे वहाँ की वाटिकाएँ। बड़ी बड़ी खिड़कियाँ, दीवालों की अलमारियों में सजी हुई किताबें, आराम दे कुर्सियाँ—इतनी चौड़ी कि उनमें दोनों आराम से बैठ सकें। उसने कमरों का वर्णन बार बार पढ़ा क्योंकि वही तो उसका घर था उसे सबसे परिचित होना था ताकि वहाँ प्रवेश करने पर उसे सब जाना पहिचाना जान पड़े। एलेन ने लिखा था उसके माता पिता सकुशल हैं। उसने उन्हें अभी कुछ बताया नहीं था लेकिन इससे उसके लिए कुछ डरने की बात न थी क्योंकि अपने बेटे पर वे लोग सर्वदा से अधिक कृपालु थे वे लोग उसका स्वागत करेंगे—पहले अपने बेटे के लिए फिर स्वयं उस पर रीझ कर। उसे अपने साथ तमाम सुन्दर सुन्दर जापानी घाघर ले जानी होंगी। उन्हें पहन कर वह सड़क पर नहीं निकलेगी, उन्हें तो वह केवल घर में पहनेगी।

आखिरकार उसने लैम्प गुल कर दिया। अपने गद्दों में सिमट कर लेट रही, पत्र छाती पर चिपका रहा और काफी अरसे तक वह चुपचाप सिसकती रही क्योंकि वह उससे कितनी दूर थी, कितनी अकेली और फिर भी आज कितनी सुखी थी !

४

उसे अपने माता से अब तुरन्त सब कुछ बता देना था। माता पिता का ख्याल करते ही उसके दिमाग में केवल माँ का चित्र आता था। उसके पिता तो इतने सरल प्रकृति के थे कि कोई भी सही बात उन्हें आसानी से समझाई, स्वीकार कराई जा सकती थी। सैन्धवी से अलग होने के बाद वह इधर उधर घूमता रहा। सवाल तो यह था कि वह सहायता की आशा करके पहले अपने पिता को यह सन्देश सुनाये या माँ के पास जाकर सीधे सब कह दे और यह निश्चित समझ ले कि जो कुछ उसने किया है उसका अनुमोदन किया ही जायगा। मन ही मन अपने माता और अपने पिता के बीच का सम्बन्ध तोला। उसे इस सम्बन्ध की वास्तविकता का ज्ञान अन्तः प्रेरणा से ही था। जो सवाल आज उसके सामने था, वही छोटे छोटे मामलों में अब तक के अपने सारे जीवन में हल करना पड़ा था। जब वह बचा था और कुछ डरपोक था जो चीज वह चाहता उसकी अभिलाषा उसमें इतनी उत्कट होती थी कि वह जो कुछ माँगता उसके लिए इन्कार उसे असह्य हो जाता था। इसीलिए कभी कभी वह पहले अपने पिता के पास जाता और तब दोनों उसकी माँ के सामने हाजिर होते। सयाना होने पर अनुभव और प्रेरणा ने उसे बताया कि पिता जी वास्तव में उसकी सहायता कर नहीं सकते। अगर कोई प्रार्थना उसने पिता को बीच में डालकर की तो माँ का बिगड़ उठना निश्चित था। उदाहरण के लिए विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए उसने नई कार की आवश्यकता अनुभव की तो सीधे माँ के पास जाना ही लाभ दायक समझा गया। उसके पिता तो कार खरीदने के सम्बन्ध में कुछ हिचक रहे थे। उनकी इस हिचकिचाहट ने ही माँ को कार खरीदने के

तैयार कर दिया।

"मेरा ख्याल है एलेन को कार मिलनी ही चाहिए," माँ ने कहा था। "उसे आजादी की जिन्दगी बिताने का मौका देना चाहिए।"

उसने एक गहरी साँस खींची। आज फिर वही आवश्यकता उसके सामने थी। वह सीधे अपनी माँ के पास जायगा—तुरन्त, क्योंकि जरा देर में ही अभी टेलीफून की घण्टी बजनी शुरू हो जायगी और माँ उससे रुष्ट हो जायगी। यह देखकर कि उसने उससे बात छिपाई।

वह तेजी से कदम बढाता हुआ घर में दाखिल हुआ। "माँ, कहाँ हो ?" उसकी माँ को इस प्रकार पुकारा जाना बहुत प्रिय था।

"यहाँ," दूर से माँ की आवाज सुनायी दी, मैं "यहाँ पौधे सँभाल रही हूँ।"

एलेन वहाँ पहुँचा देखा माँ फूलों के कुछ पौधे सजा रही थीं।

"कितने सुन्दर फूल हैं।" वह बोला "लगभग उतने बडे फूल जितने जापान में थे।"

माँ ने जापान से कोई रुचि न दिखायी।

"मैं सोच रही थी कि हमें एक नाच रंग का कोई आयोजन करना चाहिए," वे बोलीं "सभी लोग तुम्हें देखने के लिए उत्सुक हैं। मिनट मिनट पर टेलीफून की घण्टी बज रही है।"

एलेन स्थिति को भाँप गया, तुरन्त बोला, "अच्छा हो माँ कि टेलीफून से पहले ही मैं आपको कुछ बता दूँ। सैन्धवी कह रही थी कि आपको पहले ही से मालूम है। पर मेरा ख्याल है कि आपको सब कुछ नहीं मालूम। सैन्धवी कह रही थी कि कर्नल की पत्नी ने आपको पत्र लिखना बहुत जरूरी समझा।"

माँ अपने काम में लगीं रहीं।"तुम्हारा मतलब उस जापानी लडकी से है ?"

"हाँ"

"ओह, मैं उसे कोई महत्व नहीं देती," अत्यन्त चलतू ढंग से माँ बोली, "मैं जानती हूँ यह सब क्या कैसे हुआ। तुम यहाँ घर से दूर, बहुत

दूर थे और वहाँ; मैं जानती हूँ, सुन्दर अमरीकी लड़कियाँ थीं ही नहीं। लेकिन अब तो तुम घर आ गये हो—"

"रुको माँ,"

माँ ने सर उठाया और देखा कि उसका चेहरा सफेद पड़ गया था, उसका मुख विकृत और सूखा था। "क्यों क्या बात है एलेन।"

"आप लोग सब जोशुई के सम्बन्ध में गलत धारणा बनाये हैं—हाँ जोशुई उसका नाम है। वह मेरी पत्नी है।"

"एलेन फेनेडी!" इन्हीं शब्दों में ही बचपन से ही उसकी माँ उस पर खीमती रही है। जब कभी उसने कोई शैतानी की, माँ के दूध पीते काट लिया, अपने खिलौने फेंक दिये, पहली बार सूट पहन कर उसे कीचड़ लगा कर बरबाद किया, स्कूल में शैतानी की या माँ के बटुए से पैसे निकाल लिए, पहली बार सिगरेट पी या किसी नाच रंग से शराब पीकर लौटा।

"माँ, हमारी शादी हो गयी है," उसने कहा, "मैं उसे शीघ्र ही घर ले आना चाहता हूँ।"

माँ ने अपना काम बन्द कर दिया "अपने पढने के कमरे में आओ," उन्होंने कहा, "इस सम्बन्ध में मैं तुमसे बात करना चाहती हूँ।"

"लेकिन माँ इस सम्बन्ध में कुछ बात करने को है ही नहीं, शादी तो हो चुकी।" लेकिन फिर भी वह माँ के पीछे पीछे चला। दोनों आमने सामने अलाव के दोनों ओर बैठे। अलाव में आग नहीं जल रही थी।

"हाँ, मुझे बताओ तो" माँ ने जोर दिया। वह सामने बैठी थी। उसके हाथ एक दूसरे से बँधे हुए थे। बड़ी सावधानी से उन्होंने अपना स्वर हल्का बना रक्खा था, चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट थी; लेकिन आँखे उसने देखा, उनकी आँखों मे भीतर वेदना छिपी थी।

सो उसने माँ को सब बताया। उसे स्वयं अपने ऊपर क्रोध आ रहा था, अपनी माँ पर क्रोध आ रहा था कि उसे एक पुरुष को—अपने पुराने अपराधों से अब तक पीछा छुड़ाना मुश्किल हो रहा था—वे अपराध जिनके लिए यहीं इसी कमरे मे जाने कितनी बार झिडकियाँ पड़ी थीं) हमेशा उसे क्षमा माँगनी पड़ी थी, हमेशा उसे कहना पड़ा था, कि वह अपने किये

पर पछता रहा है और फिर कभी वैसा न करेगा और यह कि वह माँ को प्यार करता है। यही पद्धति थी, यही तरीका था जो अब तक बदला नहीं था—माँ का क्रोध उनकी वेदना, फिर उनकी क्षमा और तब एलेन का यह स्वीकार करना कि भविष्य में वह भला लड़का बनेगा क्योंकि वह माँ को प्यार करता है।

मन ही मन एलेन अपने को दृढ कर रहा था कि अब वह उस तरीके को नहीं अपनाएगा वह केवल माँ को सीधे से सब कुछ बता देगा। अगर व उसे अपने घर म नही रखना चाहतीं, तो साफ साफ कह सकती थीं। दुनियाँ बड़ी लम्बी चौडी थी और वह बहुत कुछ घूम कर देख सुन चुका था।

लेकिन माँ ने खुद ही वह तरीका नहीं अपनाया। सब कुछ कह चुकने के बाद—सब कुछ जोशुइ के साथ बितायी हुई दो रातों को छोडकर—एलेन को यह स्वीकार करना पडा कि माँ बड़ी उदारता से पेश आ रही थीं। वे चुपचाप सुनती रहा, क्रुद्ध नहीं हुईं यद्यपि उसे स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि उनके भीतर का तार तार हिल चुका है। और एलेन अनचाहे भी बहुत विनम्र हो गया जब उसने देखा माँ स्वय अपने आप अपने से ही झगड रही हैं। अच्छा हाता अगर माँ उस पर नाराज हो पडता, तब उसे स्वयं अपने क्रोध का बल मिल गया होता।

"आप जोशुई का बहुत जल्दी प्यार करने लगेंगी," उसन कहा, और स्वय अपने स्वरों की विनम्रता पर उसे घृणा हुइ। "वास्तव म वह एक जापानी लडकी जैसी है ही नहीं। माँ, वह बहुत सुन्दर अंग्रेजी बोलती है, उसे हमारे आचार विचार मालूम हैं।"

"क्या वह शुद्ध जापानी रक्त की है?" माँ ने पूछा।

"हाँ, लेकिन उसका जन्म यहाँ केलिफ़ोर्नियाँ म हुआ था। मैंने आपको यह बताया या नहीं?"

वह बता चुका था, लेकिन फिर बताना चाहता था।

"ता वह बिल्कुल जापानी मालूम पडती है?" माँ ने पूछा।

"वे लोग काले नहीं हैं, माँ। मेरा मतलब है वे लाग ऐसे नहीं हैं

जैसे यहाँ के काले लोग।"

"लेकिन ये श्वेताङ्ग नहीं—इसमें तो कोई सदेह नहीं," माँ ने कुछ तेजी के साथ कहा। वह इसका उत्तर न दे सका। एक क्षण तक शान्ति रही। तब माँ बोली। उनके स्वर म तीखे पन का आभास था। "कुछ आश्चर्य सा लगता है, अभी बहुत समय नहीं बीता जापानियों से हमारा युद्ध चल रहा था, वे हमारे शत्रु थे—बहुत दिन नहीं बीते और आज तुम मुझसे कहते हो कि मैं एक जापानी लडकी का अपने घर में स्वागत करूँ।"

"माँ, इस सम्बन्ध में म आपकी भावना समझ सकता हूँ। मेरे अन्दर भी यही भावना थी। जोशुई को देखने—जानने के पहले मैं भी यही सोचा करता था और मुझे आश्चर्य होता था कि में जोशुई को और जापानियों के साथ एक रूप क्यों नहीं समझ पाया। इसका उत्तर यह है कि मैं जोशुई को अन्य किसी भी व्यक्ति से सम्बन्धित नहीं कर पाता जिसे मैं जानता पहचानता हूँ। वह अपने आप में पूर्ण अलग एक इकाई है—एक रमणी जिसे मैं प्यार करता हूँ और जिसे मैंने अपनी पत्नी बनाया है। यह तो एक घटना की बात है कि उसके पूर्वज पश्चिम के किसी द्वीप के बजाय पूर्व के एक द्वीप से आकर यहाँ अमरीका में बस गये। उदाहरण के लिए उसका जन्म इग्लैण्ड में हो सकता था।

"हमारे पूर्वज इगलैण्ड से आये थे।" उसको माँ ने कहा।

"मुट्ठी भर द्वीप," एलेन ने दुहराया। फिर कोई बात उसके दिमाग में आयी और वह एक सूखी मुस्कान मुस्काया, "माँ, उसके पिता ठीक वैसा ही सोचते थे जैसा आप सोचती हैं। व मुझे अपना दामाद बनाने के लिए तैयार न थ क्यों कि मैं श्वेताङ्ग हूँ।"

माँ को इस बात में कोई दिलचस्पी नहा थी। वे डाक्टर सकाई की कोई कल्पना नहीं कर सकती थीं और एलेन गम्भीरता पूर्वक फर्श पर बिछी लाल दरी को देखता रहा।

"श्रीमती सकाई तो बहुत ही भली हैं," वह कहता गया, "वह वास्तव म एक जापानी हैं—चित्र क सहारे चुनी हुई पत्नियों म से—"

माँ ने अपना सर अचानक ऊँचा किया। "चित्र के सहारे चुनी हुई पत्नी !"

वह पछता रहा था कि क्यों उसने ये शब्द कह दिये। "अरे! यह तो बहुत पुरानी बात है। विदेशियों के सम्बन्ध में हमारे कानून उस समय एशिया वालों के प्रवेश पर रोक लगाये थे और यहाँ रहने वाले एशियाइयों को जापान की महिलाओं के चित्र देखकर अपनी पत्नी चुनना पड़ता था। उनकी शादी भी इसी प्रकार दूर रहते ही हो जाया करती थी।"

"जापान में भी वह किसी भले परिवार की नहीं रही होगी," माँ ने उदासीनता के साथ कहा। उन्हें अब भी इस कथा में कोई रुचि नहीं थी।

एलेन झुका, अपनी कुहनियों को घुटनों पर रखा और माँ के चेहरे पर प्रकाश की एक किरण खोजता हुआ मुस्कराने की कोशिश करने लगा।

"अच्छा तो, माँ!"

माँ की आँखें फिर ऊपर उठीं और उसकी आँखों से मिल गयीं। "अगर जैसा तुम कहते हो, सब कुछ हो चुका है—"

"हाँ माँ सब कुछ हो चुका है," उसने दृढ़ता से कहा।

"तो केवल एक बात है—"

"क्या माँ?"

माँ ने बात पूरी नहीं की। "नहीं कुछ नहीं,। एक बेकार का खयाल था।"

"लेकिन माँ—"

अब माँ बड़ी तेजी से चिल्ला उठीं। "नहीं, एलेन, कुछ देर तक मुझे अकेली छोड़ दो। मुझे तुम्हारे पिता को यह सब सुनाना है। उनके दिल पर एक करारी चोट लगेगी। हम लोगों ने तो सोचा था कि तुम्हारी शादी यहाँ किसी से होगी—आशा थी सैन्धवी से—और हम लोग सपना देखते थे कि छोटे छोटे बच्चे—हमारे पौत्र पौत्री इस घर में खेलते कूदते फिरेंगे। कितना बड़ा मकान है यह। इतने बड़े मकान में कभी भी बच्चों की किलकारियाँ न सुनायी दीं।"

"बच्चे हो सकते हैं माँ," वह माँ को सान्त्वना देने के लिए बोला और तब उसने देखा कि वह बड़ी भयंकर भूल कर गया क्यों कि अब माँ अपने आप को संभाल न सकीं।

"नहीं, एलेन, नहीं," माँ चिल्लायीं और उठ खड़ी हुईं।

"माँ!" वह चिल्लाया और उछल कर माँ को पकड़ने की कोशिश की। वह उसकी बाहों में सिसकियाँ भरती गिर गयीं और एलेन का कोई प्रयास उन सिसकियों को बन्द न कर सका। उसने माँ को कभी रोते हुए न देखा था। माँ ने अपने आँसुओं का प्रयोग उस पर कभी न किया था और एलेन समझ रहा था कि ये आँसू माँ केवल अपनी रक्षा के लिए नहीं बहा रही। माँ का हाथ अपने हाथ मे लिए वह बार बार बुद बुदाता रहा, "माँ रोओ नहीं, तुम देखोगी—"

लेकिन वे अपने आप को उससे छुड़ाकर कमरे से बाहर निकल गयीं।

सवेरे की ठण्डी हवा में आराम से घूम कर श्री केनेडी घर लौटे तो उन्हें घर के वातावरण में कुछ अशान्ति महसूस हुई। सवेरे का टहलना श्री केनेडी के स्वभाव का अंग था। यह आदत उन्होंने अपने पिता की मृत्यु के बाद डाली थी। उनके पिता उनके लिए बहुत काफी सम्पत्ति छोड गये थे जो उन्होंने कपास की दलाली में और घोड़ों के रोजगार में पैदा की थी। प्रति दिन सुबह नाश्ता करके श्री केनेडी अपने कुछ दोस्तों से मिलने जाते लेकिन नित्य मिलने वाले दोस्त बदलते रहते थे। वे बात कहते कम सुनते अधिक थे और इसीलिए उन्हें देश का सबसे अधिक अनुभवी और बहुश्रुत व्यक्ति माना जाता था। हर साल कई बार वे देश के विभिन भागों का दौरा करते थे केवल यह जानने के लिए कि लोगों के दिल और दिमाग में क्या है। वे अपने सामान्य ज्ञान के बल पर कांग्रेस या सिनेट के सदस्य बनने के योग्य भी थे लेकिन अपने ज्ञान का उपयोग या उसका दान करने की उनकी कोई इच्छा न थी। अगर किसी दूसरे परिवार में पले होते तो शायद वे दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक होते या यदि उन्हे शब्द कला मे रुचि होती तो कवि बन गये होते। पर जैसे वे थे, एक अग ध

ज्ञान और अनुभव के धनी एक सरल प्रकृति के मनुष्य थे और अपनी नितान्त अन्त. सृष्टि में अपने उस ज्ञान और अनुभव का आनन्द लेते थे।

कुछ इतनी तीक्ष्ण अनुभूति थी उनमें कि सामने वाले बडे दरवाजे से घर में कदम रखते ही उन्हें मालूम हो गया कि घर में कुछ गडबड़ है। चुपचाप धीरे धीरे वे भीतर गये, अपना कोट और हैट उतार कर टाँग दिये और अपनी छडी एक लम्बे नीले चीनी के फूलदान से टिका दी जो कमरे के कोने में रक्खा था। लगभग उसी क्षण उन्हें ऊपर के कमरे में अपने बेटे के चलने की आहट सुनाई दी और दूसरे ही क्षण वह नीचे आ—भी गया।

"अच्छा हुआ आप आ गये," एलेन ने कहा। वह जीने की आखिरी सीढ़ियाँ उतर रहा था। "मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि आपको कहाँ खोजूँ। मुझे दु ख है कि शायद मैंने माँ को बहुत विचलित कर दिया है। उन्होंने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर रक्खा है।"

दरवाजे का बन्द होना एक चेतावनी थी। दोनों ने एक दूसरे को देखा। "समझ में नहीं आता मैं आपसे कैसे बताऊँ," एलेन ने कहा।

"मेरा खयाल है मैं कुछ अनुमान लगा सकता हूँ," श्री केनेडी ने उत्तर दिया।

दोनों सुनसान बैठक में जाकर बैठे। "मैं जानता था कि देर सबेर यह होना ही है," श्री कनेडी कहते गये। "काफी अरसे से हम लोगों को मालूम है कि जापान में तुम्हारा कुछ व्यक्तिगत स्वार्थ कुछ व्यक्तिगत रुचि है। कर्नल——।"

अधीरता से अभिभूत एलेन फूट पडा। "पिता जी, माँ विचलित इस बात से हुई हैं कि मेरी शादी जोशुई सकाई से हो चुकी है।" वह एक बड़ी मखमली कुर्सी के हत्थे पर बैठ गया और इस प्रकार अनजाने ही उसने अपने बचपन के एक नियम का उल्लंघन कर डाला।

श्री केनेडी के पीले चेहरे पर कुछ सुर्खी दौड़ गयी। उनका चेहरा सुन्दर स्निग्ध था, हल्की सी दाढी थी जिसको वे भली भाँति बनाये रखते थ

केवल निचले होठ के नीचे लटकती हुई हल्की सी रसरसी दाढी रखते थे। उनकी पीली भूरी आँखों पर पलकें भारी भारी आधी बन्द रहती था। जब तक कोई परेशानी न हो वे उन पलकों को उठाते नहीं थ। इस समय उन्होंने पलकें उठायीं।

"बेटे," उन्होंने शिकायत भरे स्वर में कहा, "तुम्हें हम से बता देना था।"

"मुझे आशा नहीं थी कि शादी तुरन्त हो जायगा," एलेन ने कहा, "अचानक ऐसा लगा कि यही एक सही रास्ता है, अब भी मरा खयाल है कि यही एक सही रास्ता था। वह एक सम्भ्रान्त परिवार की लड़की है और फिर कम से कम मैं तो ऐसा नहा था कि इसके अलावा और कुछ कर सकता। मरे विचार में तो यही आता है। हो सकता है कि मैंने जिन्दगी का दूसरा पहलू कुछ इस प्रकार देखा हो कि मरा मन अचानक एकदम उलट गया हो।"

श्री केनेडी ने उसका कोई उत्तर नहा दिया। उनका सम्बन्ध उनके बेटे के साथ नितान्त घनिष्ट और व्यवहारिक था। भावना के लिए उसमें कोई स्थान नहीं था।

"लड़की कैसी है?" उन्होंने पूछा। उनके लम्बे पीले हाथ कुर्सी के बाजुओं पर फैले हुये थे और वे असहाय मालूम हो रहे थे। लगता था जैसे उनसे कभी कोई काम न लिया गया हो, और वास्तव में उनसे काम कभी लिया भी न गया था।

"जोशुई, माँ को पसन्द आएगी बशर्ते कि वह अपने मन में इतना कबूल कर सकें कि वह उन्हें पसन्द आ सकती है।" एलेन ने तार्किक प्रणाली से कहा, "सच्चाई यह है पिता जी कि मैं भाग्यशाली हू पहली ही नजर म हम एक दूसरे को प्यार करने लगे। सम्भव था कि वह केवल एक खूबसूरत लड़की ही निकलती। वास्तव में वह इससे भी कहीं अधिक है।"

"कितने अरसे से तुम्हारा उससे परिचय है?" पिता ने पूछा।

"बहुत लम्बे अरसे से नहीं लेकिन फिर भी इतना काफी परिचय है कि

में यह समझ सका हूँ कि उसमें अभी और बहुत कुछ जानने को बाकी है।"

वह उठकर कमरे मे टहलने लगा दृष्टि पिता पर नहीं थी और टहलते वह बात करता रहा। "मैं आपको यह नहीं बता पाऊँगा कि यह सब क्यों और कैसे हुआ। इस वर्ष मैंने अकथ परिश्रम किया विशेषकर सेनापतियों के परिवर्तन के बाद। फिर एक दिन कुछ लोगों ने निश्चय किया कि थोड़े दिन की छुट्टी लेकर वे क्योटो और नारा देखने जायेंग। मैंने भी मनमें सोचा कि महीनों से मैंने कोई छुट्टी नहीं ली, क्यों न मैं भी चला जाऊँ। सो मैं भी चला गया। मैंने उसे संयोगवश एक कालेज के फाटक मे प्रवेश करते देखा। लगता है एक विशिष्ट मानसिक स्थिति मे हम दोनों ने एक दूसरे को देखा। परमात्मा साक्षी है मै उसका दुबारा ख्याल किये बिना ही आगे बढ जाने वाला था। पर मैं बढ न सका। दूसरे दिन उसी समय मे फिर वहाँ गया। इस प्रकार हमारी मुलाकत हुई। विश्वास कीजिए बात ऐसी नहीं है कि वह ‍‍केवल बहुत खूबसूरत है। शायद कुछ ऐसा है कि उसमें कोई ऐसा असाधारण तत्व है जिसने मुझे अभिभूत कर दिया। वह वैसी नहीं है जैसी अनेक और औरतें मैंने देखी हैं। सम्भव है ऐसा इसलिए हो कि वह एक पूर्वी देश की लड़की है—मैं नहीं जानता। मैं वहाँ तीन वर्ष रह चुका हूँ और हो सकता है मेरे खून मे ही उसका असर आ गया हो। मैंने लोगों को इस असर की चर्चा करते सुना है। मैंने लोगों को यह भी कहते सुना है कि यह असर आ जाने पर लोग अमरीकी लड़कियों से शादी नहीं कर सकते।"

श्री केनेडी असमर्थ बने बैठे रहे। उसका लम्बा पीला मुख कुछ खुला हुआ था। पर वे असमर्थ थे नहीं। वे सुन रहे थे और सुनते जाते थे। वे भली भाँति जानते थे कि उनकी पत्नी घर की शासिका—इस सब का क्या अर्थ निकालेगी। अपने बेटे की बात वे समझ रहे थ। दक्खिनी राज्यों क लोग हमेशा से ही यह समझते रहे हैं और उनके घर की मालकिनों ने इस आजादी से आगे बढने की अनुमति उन्हे नहीं दी। सागर की लहरों का नियन्त्रण भी इतना अधिक नहीं था जितना कि अमरीका क दक्खिनी राज्यों की श्वेताग पत्नियों का था।

"तुम्हारी माँ उसे कभी नहीं पसन्द करेगी।" वह शान्त स्थिर स्वर में बोले, "और बातों की परवाह शायद वे न करें, मेरा ख्याल है और हमारे यहाँ की औरतें ऐसी बातों की अभ्यस्त होती हैं। लेकिन एक नौजवान औरत को—जो श्वेताग नहीं है—ध्यान देने की बात है—ऐसी औरत को यहाँ अपने घर म पुत्र वधू के रूप म स्वीकार करना साधारण बात नहीं है। मैं नहीं समझता हूँ तुम्हारी माँ उसे प्यार कर सकेंगी। अच्छा, तो मै ऊपर चलूँ।"

हाथों का सहारा लेकर वे उठ खडे हुए, भारी कदम रखते हुए जीने के पास गये और हर सीढी पर मजबूती से कदम जमाते हुए ऊपर चले गये। पत्नी के शयनागार के दरवाजे पर पहुँच कर उन्होंने धीमे से उसका हैण्डिल घुमाया।

"दरवाजा खोलो," उन्होंने कहा।

वे प्रतीक्षा करते रहे। कुछ क्षण बाद उन्हें पत्नी के चलने की आवाज सुनायी दी। तब दरवाजा खुला। वे अन्दर गये और पत्नी को शान्त-परिचित ढङ्ग से अपनी बाँहों में भर लिया। उनके कन्धों पर उन्होंने अपना सर रख दिया और वे उसके बाल सहलाने लगे।

"उसने आप को बताया?" पत्नी ने उनके कोट म मुँह छिपाये हुए पूछा।

"हाँ मधु,"

"हम लोग क्या करेंगे?"

"मैं तो हमेशा यही कहता हूँ, मधु, करने के लिए सबसे अच्छा काम है कुछ न करना। घटनाओं को अपनी गति, अपना रूप बदलने दो।"

"लेकिन वह उसे यहाँ ले आयेगा।"

"हमें उसे आने देन होगा।"

"मैं नहीं आने दूगी।"

"खैर, अगर तुम नहीं आने दोगी तो यह भी एक बात हुई। मेरा ख्याल है ऐसी हालत में वह घर छोड़ देगा और वे लोग कहीं और अपना बसेरा बनायेंगे।"

मधु ने उन्हें अपने से अलग कर दिया। वे चुपचाप खड़े रहे और

वह अपनी कर्णपालियों को मलती हुई कमरे में टहलती रहीं।

"बड़ा सख्त सर दर्द हो रहा है।"

"मुझे आशङ्का थी कि तुम्हे सर दर्द होगा।" वे सावधानी के साथ एक कुर्सी पर बैठ गये। कुर्सी छोटी थी और उसमें उन्हे तकलीफ हो रही थी। पर वे जानते थे कि उस कमरे मे उन्हें वही एक कुर्सी बैठने को मिल सकती थी।

"मधु अपनी कर्णपालियो को मलती रही और श्री केनेडी बैठे प्रतीक्षा करते रहे प्यार भरी दृष्टि से उनकी ओर देखते हुए। वे जानते थे कि अपने चिडचिडे पन अपनी अधिकार भावना और दूसरों पर हावी होने की अपनी प्रवृत्ति के बावजूद भी उनकी मधु एक अच्छी महिला, एक अच्छी पत्नी थी और जातीय शक्ति उनमें भरी हुई थी। यदि हर कोई स्वयंउनकी तरह का हो जाता तो न कोई व्यवस्था रह जाती और सम्भव है कि कोई भद्रता भी न रह जाती। घर नष्ट हो जाता और शहर का हर ऐरा गैरा उससे फायदा उठाता। वे चाहते थे कि मधु का प्रेम उनके लिए कुछ अधिक प्रवल होता लेकिन तब एक अच्छी पत्नी और घर की मालकिन दोनों एक साथ कैसे निभ पाती। यदि वे स्वयं और कुछ अधिक तेज होते तो उन प्रलोभनों में फँस जाते जिनमें और लोग फँस जाते। लेकिन उनके लिए यह बड़ी आपदा होती। उन्हें शान्ति प्रिय थी और उन्हें अपने घर में अपने ढङ्ग की शान्ति मिल जाती थी।

"मधु," वे नम्रता से बोले, "तुम कितनी महान हो कि इस बात को इस ढङ्ग से लेना तुम्हारे लिए शोभा नहीं देता। मैं जानता हूँ तुम्हें क्या महसूस हो रहा है। कुछ वैसी ही भावना मेरे भी दिल में है। मेरा मन चाहता था कि सैन्धवी हमारे पौत्रों की माँ बनती। लेकिन हमारा बेटा कुछ और चाहता है और वह जो चाहता है, कर बैठा है। अब हम उसे बदल नहीं सकते। हमें उसे स्वीकार करना होगा। तो आओ, कुछ ऐसा सोचें कि इसे कैसे सफल बनाया जा सकता है।"

वे रूमाल को ऐंठ कर उसमें गाँठे लगाती और गाँठों को खोल रही थीं। उद्वेग से उनका चेहरा तमतमाया हुआ था और घुँघराले बालों

के बीच बड़ा सुन्दर लग रहा था। बाल कुछ कुछ सफेद हो चलें थे। "यह सफल हो ही कैसे सकता है;" उन्होंने पूछा "शादी केवल दो आदमियों का इकट्ठा होना तो नहीं है; शादी का अर्थ है एक परिवार बनाना। और बच्चे तो इनके होने ही नहीं चाहिए—नहीं, कतई नहीं। नहीं, कतई नहीं।"

श्री केनेडी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे मधु का तात्पर्य समझते थे। अर्ध जापानी बच्चों का घर मे इधर-उधर दौड़ने वाला दृश्य निस्सन्देह निराशा जनक था। "हो सकता है उनके बच्चे न हों," कुछ धीमे स्वर मे वे बोले।

"आप जानते हैं, बच्चे होंगे," वे तेजी से बोलीं, "क्या आपको उन देशों की पैदाइश का अनुपात नहीं मालूम! पूर्वी देशों की सब औरतें बहुत बच्चे पैदा करती हैं। नहीं, यह सब रोकना होगा।"

श्री केनेडी औरतों के साथ इतना अधिक सकोचशील थे कि वे पूछ न सके कि इसका तात्पर्य क्या था। सो वे कुछ न बोले; चुपचाप गम्भीर और परिश्रान्त बने बैठे रहे। उनके चेहरे का रङ्ग उनके सफेदी पकड़ते हुए बालों के रङ्ग से मिल रहा था।

"एलेन का दिमाग सही रास्ते पर लाना होगा," मधु ने कहा, "उसे देखना होगा—समझना होगा—कि इस सबसे कुछ काम चल नहीं सकता।"

"लेकिन अगर उसकी शादी हो गयी है?" उन्होंने सुझाते हुए पूछा।

"तलाक हो सकती है।"

उन्होंने देखा कि मधु के चेहरे पर एक रोशनी आ गयी, आशा की एक किरण, एक विचार चेहरे पर दौड़ गया। रूमाल उनके हाथ से गिर गया।

"हो सकता है कि उनकी शादी वास्तव मे हुई ही न हो।"

"लेकिन, मधु, वह कहता है शादी हो चुकी।"

"लेकिन हो सकता है कि शादी न हुई हो। और फिर बौद्ध धर्म है क्या? वास्तव में वह कोई धर्म है ही नहीं। और फिर इसमें तो कोई शक

नहीं कि एक मन्दिर को गिरजाघर नहीं कहा जा सकता। वह तो मूर्तियों से भरा होता है। लगता है इन जापानियों ने उसे फाँस लिया है, उससे नाजायज फायदा उठाया है।"

श्री केनेडी को अब अपनी पत्नी पर तरस आ रहा था। "पर इस सबका अर्थ एलेन के लिए कुछ नहीं है। वह यह विश्वास करना चाहता है कि उसकी शादी उससे हो चुकी है।"

"कभी नहीं—लेकिन रुकिए, देखते चलिए। जब वह देखेगा कि यह सब चल नहीं सकता—ओह, आप समझ नहीं सकते, आप कल्पना नहीं कर सकते कि जापानी आँखों वाली एक औरत यहाँ इस घर में आ इस शहर में घूमती फिरेगी। कौन उसे अपने यहाँ दावतों में बुलाएगा। हमारे समूचे जीवन का खात्मा हो जायेगा।"

बात भली हो या बुरी, मधु सब कुछ कर सकती थी। "मधु, मैं तो अब भी सोचता हूँ कि तुम्हारी जैसी एक महान् महिला एक जापानी लड़की को भी इस नगर में अपने साथ निवाह सकती है। तुम परिस्थिति की देन को सुन्दरतम बनाकर स्वीकार कर लो और लोग और भी अधिक तुम्हारी इज्जत करेंगे।"

उसने अपना सर हिलाया, अपने काँपते हुए होंठ काटे और अपने हाथों से अपना मुँह छिपा लिया। "मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं तो यही समझूँगी कि ऐसा कुछ हुआ ही नहीं—और कोशिश करूँगी कि एलेन भी ऐसा ही समझने लगे।"

श्री केनेडी उठ खड़े हुए। "अच्छी बात है। मैंने अपनी सलाह दे दी, उसकी कीमत चाहे जो हो। बहुत थोड़ी बात और कहूँगा। अपने बेटे को तुम जानती हो, मधु, सावधानी से कदम बढ़ाना।"

वे धीरे धीरे निकल गये। उन्हें महसूस हो रहा था कि जिन्दगी की सबसे सख्त जरूरत है ढालकर पीने के लिए शराब।

वे छज्जे पर बैठे हुए शराब सुरकते जाते थे और उन समस्याओं पर गौर करते जा रहे थे जो हर उस भले आदमी को परेशान करती हैं जो अपनी इच्छाओं, अपनी मर्यादा, जनमत और ऐसी ही तमाम बातों को

अपने व्यक्तिगत जीवन में महत्व दे बैठता है। अगर वह जापानी छोकरी इस घर में आ जाती तो भी वे आसानी से वैसे ही अपनी जिन्दगी बिताते चले जाते जैसे अभी तक बिता रहे थे। उसमें किसी तरह का व्यतिक्रम लाने की ताकत उसमें नही थी। अगर वे अपनी पत्नी और अपने बेटे को सुखी न भी बना पाते तो कम से कम वे स्वयं तो सुखी रह ही सकते थे और उनके सुख की परिभाषा थी सुस्वादु भोजन, अच्छी खुली भूख, देश में सबसे अधिक आराम दे बिस्तर और सारी रात गहरी नींद सो सकने की ताकत का यथा सम्भव दार्शनिक व्याख्या। वे जानते थे कि मनुष्य को बल देने वाली कुछ प्रेरणायें वे खो बैठे हैं लेकिन अब वे उन प्रेरणाओं को पाना भी नहीं चाहते थे।

बहर हाल उन्हें इस बात की खुशी थी कि यह दुस्समाचार उनकी पत्नी के सामने आ चुका था और वे उसका मुकाबला कर रही थीं यद्यपि वे नहीं जानते थे कि इस मुकाबले का नतीजा क्या होगा। यदि वे अपनी पत्नी को ठीक ठीक पहचान पाये थे तो निश्चित था कि मधु अब इस विषय की चर्चा ही नहीं उठायेगी। मधु की योजना का जाल तुरन्त बिछ जायगा, वह उसे पूरा करने के लिए आगे कदम बढायेगी और देर सवेर उन्हें भी उस सबका पता चल ही जायगा यद्यपि शायद पता तभी चल पायेगा जब वे उसमें कुछ भी दखल न दे पाएँगे। वे जानते थे कि मधु जैसी सभ्य महिला अपने घर में मनमुटाव का वातावरण नहीं पैदा करेगी, और शाम का भोजन करते समय वह फिर पहले जैसी सरल प्रसन्न दिखायी देगी। एलेन में भी अपनी माँ का अंश बहुत काफी था और सम्भवतः वह भी नित्य की भाँति ही व्यवहार करेगा। समय स्वय ही दिल के घावों को भर रहा था। हो सकता है, उन्होंने सोचा, कि कुछ समय तक एक तथ्य को स्वीकार करने के बाद जीवन भर के लिए उसे स्वीकार कर लेने में उन्हे कोई कठिनाई न हो। सम्भव है जापानी आँखों की भी वे आदी हो जॉय।

एलेन जब घर से बाहर निकला तो पिता को अर्ध सुप्त पाया, उनका खाली गिलास फर्श पर रक्खा हुआ था। पैरों की आहट सुनकर श्री केनेडी



उठ पड़े। उन्होंने देखा कि उनका बेटा एक हाथ में सूटकेस लिए हुए, सर पर हैट रक्खे और हाथ में अपना कोट लिए हुए बाहर आ रहा है।

"मैं कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ," एलेन ने अपने पिता को बताया। श्री केनेडी ने अपनी उनींदी आँखें फैला दीं। "कहाँ जा रहे हो?"

"वाशिङ्गटन"

"उस नर्क में तुम किस लिए जाना चाहते हो?"

"मैं कोई काम खोज सकता हूँ, और मैं यह भी देख सकता हूँ कि जोशुई को यहाँ बुलाने के लिए क्या क्या करना होगा।"

"क्या तुमने अपनी माँ से बताया है?"

"नहीं, मुझे विदा दीजिए। मैं थोड़े ही दिन के लिए जा रहा हूँ। अगर मुझे नौकरी मिल गयी तो मैं अपना सामान लेने के लिए वापस आऊँगा।"

"अच्छी बात है, बेटे।"

उनकी पलकें फिर झँप गयीं। लेकिन एलेन रुका। "माँ कैसी हैं?"

"वे ठीक हो जायेंगी," पिता ने उनींदे स्वर में उत्तर दिया। ह्विस्की पीने से वे हमेशा उनींदे हो जाते थे।

उन्होंने देखा कि उनका बेटा उस कार में जा बैठा जिसे इतने वर्षों से वे उसके लिए बड़ी सावधानी से सुरक्षित रख रहे थे और फिर वे गहरी नींद में सो गये।

५

श्रीमती केनेडी के अनिवार्य जैसी चीज पर कोई विश्वास नहीं था और जिस बात पर विश्वास नहीं था उसे कभी स्वीकार नहीं करती थीं। उनके

अनेक मित्रों में कोई भी ऐसा नहीं था जो उनका विश्वास भाजन हो यद्यपि उनका हर मित्र अपने आप यही सोचता था कि मधु के हर विचार और कार्य का ज्ञान उसे है। इसमें तो सन्देह नहीं कि अपने पतिदेव को उसने कभी भी उन बातों के अतिरिक्त कभी कुछ नहीं बताया जिनको उसने उन्हें बताने लायक समझा और श्री केनेडी को इस बात की खुशी थी कि मधु उन्हें सब तरह की बातें नहीं बतातीं। अपनी मनमानी करने वाली पत्नी के दिल व दिमाग का समूचा कच्चा चिट्ठा जानना उनके लिए एक भयकर बात जान पड़ती थी। उनकी पत्नी को मन ही मन सन्देह था कि पतिदेव को इस बात में प्रसन्नता थी कि उन्हें कम से कम बातें मालूम हों और यह कि उनकी सहानुभूति उस निरपराध जापानी बालिका के साथ ही होगी जो उनके घर आने की आशा लगाये थी। वे यह भी जानती थीं कि पतिदेव अपनी इस सहानुभूति को छिपाएँगे क्योंकि वे क्रियात्मक रूप से कुछ कर नहीं सकते थे लेकिन छिपे छिपे एलेन का पक्ष लेंगे। प्रेम के बजाय विद्रोह के द्वारा पुरुषों को अधिक मोड़ा जा सकता था। श्रीमती केनेडी कभी कभी सोचती थीं कि शायद विद्रोह अधिक ताकतवर होता है। तो वे भी विद्रोह कर सकती थीं।

जब तक एलेन बाहर रहा, घर में जीवन सदा की भाँति चलता रहा। श्री केनेडी टेलीफोन पर अपनी पत्नी के वाक्य सुनने के अभ्यासी बन गये थे—"नहीं मित्र, हम लोग इसको कोई महत्व नहीं देते। आप जानते ही हैं, हम माताओं को अपने बेटों से कैसी कैसी घटनाओं की उम्मीदें करनी पड़ती हैं। आप जानते हैं इसका कोई चारा नहीं है युद्ध के दुखदायी परिणामों का यह एक भाग है। लेकिन उसकी सचमुच कोई शादी थोड़े ही हुई है। मेरा ख्याल है किसी एक बौद्ध मन्दिर में कोई सगाई जैसा उसका संस्कार हुआ होगा और मुझे शक है कि उसकी भी दरअसल कोई वकत यहाँ हो पायेगी। जो कुछ हो, इस वक्त तो हम इसकी चर्चा ही नहीं करते।"

सुहावने दिन एक के बाद एक आने लगे। वाटिका में गुलाब फिर से खिलने लगे—उतने बड़े और सुन्दर गुलाब नहीं जितने वसन्त के होते हैं लेकिन अधिक खुशबूदार। एलेन जब तब पोस्ट कार्ड लिखता रहा। हर

बार यही सूचना कि जल्दी ही वह अपने बक्से लेने के लिए आएगा। लेकिन वह आया नहीं। ऐसी रुकावटें आती रहीं, जिनकी उसे आशंका नहीं थी। वाशिङ्गटन एक ऐसी भूल भुलैया था जहाँ वह खो गया था। अभी तक उसे केवल एक वादा मिला था जिसका अर्थ हो सकता था, कुछ भी न हो।

श्रीमती केनेडी इन पोस्ट कार्डों को भोजन करते समय नितान्त निरपेक्ष भाव से पढ़कर पति को सुनातीं। वे कर्नल की पत्नी को हवाई डाक से टोक्यो पत्र भेज चुकी थीं, चेतावनी के लिए अपना धन्यवाद प्रकट किया था और अधिक सहायता की प्रार्थना की थी।

"क्या यह सम्भव है," उन्होंने प्रार्थना की थी, "कि एलेन को योरप भेजा जा सके? समस्या का यह सबसे सुन्दर हल होगा। यदि उसे तुरन्त योरप भेजा जा सके, उस जापानी लड़की को यहाँ लाने से पहले ही, तो हम सबको राहत मिले।"

इसलिए वाशिंगटन में एक आफिस से दूसरे आफिस दौड़ते हुए एलेन को एक आश्चर्यजनक और परेशान करने वाले विलम्ब का सामना करना पड़ा। जापान न लौटना तो बिल्कुल आसान था इसका प्रबन्ध तो तुरन्त ही हो गया दूसरा प्रस्ताव यह आया, जिसकी कोई आशा न थी, कि वह योरप जाये और वहाँ जाकर ठीक वही काम करे जो जापान में कर रहा था। सभी लोग यह बात मानते थे कि विदेशों की राजनैतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करने की उसकी क्षमता असाधारण थी और जर्मनी के चारों ओर कुछ ऐसे राष्ट्र थे जिनकी परिस्थितियों का विश्लेषण आवश्यक था। जिस स्वस्थ और तीव्र बुद्धि अफसर ने उसके सामने यह प्रस्ताव रखा वह कुछ अशिक्षित सा जान पड़ता था। उसने कहा, "आप बहुत साफ लिख सकते हैं। यह एक ऐसी योग्यता है जो अधिकाश कालेज के स्नातकों में नहीं पायी जाती। जब मैं आपके कागजात पढ़ता हूँ तो उनका तात्पर्य साफ समझ में आ जाता है।"

"धन्यवाद," एलेन बोला। उसने मन ही मन तय कर लिया कि वह योरप कभी नहीं जायगा, कम से कम तब तक नहीं जायगा जब तक जोशुइ न

आजाय और उसके साथ जाने के लिए तैयार न हो जाय। योरप एक बिल्कुल अलग दूसरी दुनियाँ थी और वह पहले ही बहुत कुछ देख सुन चुका था।

वह घर वापस चला आया, कुछ कुछ समझौता करने क इरादे से। यह तय हो चुका था कि उसें सोचने समझने के लिए मौका दिया जायगा और इसके लिए वह जितने दिन चाहे छुट्टी पर रह सकता था। अगर वह योरप न जाना चाहे तो इस समय वाशिङ्गटन में उसके लिए कोई भी काम मिल सकना मुश्किल था। इस समाचार को उसने सन्देह और शका के साथ सुना, गुना। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई उसने विरुद्ध षड़यत्र कर रहा हो, लेकिन उसे इस बात का विश्वास न हुआ कि उसका कर्नल ही यह सब कर रहा है क्योंकि वह तो उसे जापान बुलाने के लिए उत्सुक था। दूसरा कोई ऐसा समझ में नहीं आता था जिसकी पहुँच वाशिङ्गटन तक हो। जो भी हो, वर्जीनियाँ के लहलहाते खेतों के बीच घर जाते हुए उसने मन ही मन तय किया कि वह जोशुई को तुरन्त बुला भेजेगा। इतना तो वह कर सकता था क्योंकि वाशिङ्गटन में रहकर उसने इसका प्रबन्ध कर लिया था। कोई बाधा सम्भव थी ही नहीं क्योंकि जोशुई यहीं पैदा हुई थी। बचपन के चंचल जीवन में मजबूर होकर गिर्जाघर म पादरी की जो आवाज सुनी, जो शब्द उसने कानों में बस गये थे आज फिर वे शब्द उसे याद आने लगे "बहुत बड़ा मूल्य देकर मैंने अपनी आजादी प्राप्त की है।"

एलेन अधिकारी के इन शब्दों के उत्तर में गर्व से अपना सर उठाते हुए सन्त पाल ने कहा था, "लेकिन मैं तो स्वाधीन ही उत्पन्न हुआ था।"

जोशुई भी जन्म से ही स्वाधीन थी जैसे वह स्वयं स्वाधीन था। जोशुई कानून की निगाह में एक अमरीकी नागरिक थी और इस अपरिवर्तनीय तथ्य को वह मजबूती से पकड़े हुए था।

एक रात जब वह घर पहुँचा तब उसके माता पिता अपने कमरे में शतरंज खेल रहे थे। दोनों ही शतरंज के खिलाड़ी थे लेकिन माँ का पलड़ा कुछ भारी था क्योंकि उन्हें सदैव जीतने की चिन्ता रहती थी और पिता को जीतने हारने की चिन्ता न थी।

उसके आते ही उनकी निगाहें उठ गयीं और उन निगाहों में प्रसन्नता

दिखायी दी, लेकिन उसे लगा कि उसकी माँ कुछ गम्भीर बनी रही। माँ ने अपनी ओर से अपनी गम्भीरता को पुत्र के स्वागत में बाधक न बनने देने की कोशिश की। बडे भावावेश में वे उठीं, उसका चुम्बन किया और दोनों हाथों से उसे बाहों में लपेट लिया। "ओह, मुझे बड़ी खुशी है कि तुम वापस आ गये। मैं आशा करती हूँ तुम्हें अभी कोई काम नहीं मिला। अभी मिलना ही नहीं चाहिए, तुम्हारे बिना घर कितना सूना सूना लगता है।"

"हाँ, काम नहीं मिल सका। या यों कहूँ जो काम वे मुझे दे रहे थे उसे मैंने स्वीकार नहीं किया। योरप भेज रहे थे, समझीं आप। मैं क्या योरप जाऊँ और जो कुछ एशिया में सीखा है वह सब वहाँ जाकर बरबाद कर दूं? कौन जीत रहा है? मैं दावे से कह सकता हूँ आप।"

"बैठ जाओ" पिता बोले, "सलाह दो क्या करूँ। रानी (वजीर) ने हमेशा की तरह मुझे घेर रक्खा है।"

"अरे छोड़िए भी," उसकी माँ ने जरा जोर से कहा, "एलेन भूखा है। क्यों बेटे, तुमने खाना खाया है?"

"बिल्कुल नहीं।" अचानक एलेन प्रसन्न हो उठा। ऐसा लगा कि ये लोग—ये माता पिता, उसके साथ निर्दय नहीं होंगे। उसकी माँ अपने सकेतात्मक ढङ्ग से उसे बता भी रही थी कि वे लोग उसके प्रति कठोर नहीं है। शब्दों में वे अपना पश्चाताप तो वे कभी प्रकट कर ही नहा सकती थीं। उनका यही ढङ्ग था। एलेन आरामसे बैठ गया और अचानक उसे महसूस होने लगा कि वह बहुत थक गया है। दुनियाँ में सब कुछ जटिल दिखायी देता था, सब कुछ गुथा हुआ, एक साथ हजार दिशाओं की ओर खिंचता सा। लेकिन यहाँ कम से कम इस घर में जीवन सर्वदा की भाँति अपनी गति से चल रहा था। उसकी वह छोटी सी जोशुई इस घर में धीरे से चुपचाप प्रवेश कर सकती थी और यहाँ के जीवन में कोई बड़ा डाँवाडोल होने की आशंका न थी। अपने जीवन भर उसके माता पिता घर की शान्ति बनाये रखने में समर्थ थे। और उनके चले जाने के बाद वह स्वयं उनका स्थान ग्रहण कर लेगा। अपनी इच्छा शक्ति

से अपने सकल्प के बल पर वह इस घर को, जैसा वह हमेशा है वैसा ही अनन्त काल तक बनाये रक्खेगा। एवमस्तु—

६

जोशुई न सर्वदा की भाँति पत्र पहले तेजी के साथ पढ़ा, प्रत्येक शब्द पर गौर करते हुए। यह सब से जरूरी था। फिर को धीरे धीरे बड़ी सावधानी के साथ पढा ताकि हर एक निर्देश औ और समाचार भली भाँति समझ सके। फिर उसने पत्र को दि बार पढा ताकि उसे एलेन का सामीप्य अनुभव हो सके उससे सवाद हो सके, दोनों का हृदय स्पर्श हो सके। पत्रों के माध्यम उसे समझ पा रही थी। कितना आश्चर्य था कि शारीरिक सा सिक एकता में बाधक बन जाता था। जब वह उसकी बाहों मे थी, जब उसे केवल अपनी ओर आते देखती थी, तभी उसक जैसे रुक जाता था, विचार शक्ति भग सी जाती थी। लेकिन उनके बीच समुद्र था तब मन के माध्यम से ही वे एक दूसरे हो जाते थे। और इस प्रकार विचार स्वच्छन्दता से बहते पारस्परिक आमोद बढ रहा था।

बिछोह के इन सप्ताहों म वह उसे, जैसा वह था, समझने व वह उतना सबल उतना दृढ नहीं था जितना पहले वह उसे सम वह भी अपने माता पिता पर निर्भर दिखायी देता था। इससे उसे ही हुआ क्योंकि उसने कल्पना कर रक्खी थी कि अमरीका क यु युवतियाँ अपने परिवारों से बिल्कुल स्वतन्त्र होते हैं और वे म राह अपनाने के लिए स्वतन्त्र हैं। आज्ञापालन की न माग ही न पूर्ति ही। लेकिन अब उसने देखा कि यद्यपि यह सब ऐसा

युवकों से आशा की जाती थी, माँग की जाती थी और एलेन के परिवार मे ऐसी माँग करने वाली उसकी माँ थी, पिता नहीं । उसने इस पर काफी सोचा । उसे एलेन के पिता को नहीं, उसकी माँ को प्रसन्न करना होगा । यह बात उसकी समझ मे आ सकती थी क्योंकि यहाँ जापान में भी वर की माँ पुत्र बधू को सुखी या दुखी बना सकती थी । एलेन ने उसे अपने घर और अपने माता पिता की छोटी छोटी तस्वीरें भेजी थीं । वह इन बुजुर्गों की उन दोनों तस्वीरों का अकसर बड़ी देर तक अध्ययन करती । वह अपने कालेज से वस्तुओं को बड़ा दिखाने वाला अपना आला ले आयी थी और उसके सहारे उसने दोनों बुजुर्गों के चेहरों का अध्ययन किया, उनकी भाव भंगियों को परखा । वह एक प्राचीन जाति की बालिका थी और एक विशिष्ट मानवीय ज्ञान उसे अपनी जातीय विरासत में मिला था । उसके सहारे एक आश्चर्य जनक रूप में उसने एलेन के माता पिता को भली भाँति समझ लिया । एक समय वह सैन्धवी नाम की एक लड़की के सम्बन्ध में सोचकर परेशान रहती थी । सैन्धवी को उनकी शादी का पता सब से पहले चला था और एलेन को आशा थी कि सैन्धवी उनकी मित्र, उनकी सहायिका होगी । लेकिन उसने सैन्धवी का कोई चित्र नहीं भेजा और अब वह उसका कोई उल्लेख भी नहीं करता था ।

उसके सभी पत्रों में जोशुई के बुलाने की ही चर्चा अधिक रहती थी और आखिरकार आज इस पत्र में उसने उसे अमरीका आने का निश्चित आदेश दे दिया था । सब से बड़ी बात तो यह थी कि इस पत्र में उसका हवाई जहाज का टिकट भी रक्खा था । यह एक अमूल्य निधि थी । उसने उस टिकट के हर पहलू को गौर से देखा, उसके हर शब्द को पढ़ा । कितना सीदा साधा टिकट था फिर भी कितना अमूल्य, उसके स्वर्ग का प्रवेश पत्र । एलेन के आदेश स्पष्ट थे । कोई कठिनाई नहीं थी । उसका पासपोर्ट उसके पास था, अपने देश से अनुमति पत्र उसे लेना था । टोक्यो में उसे हवाई जहाज मिल जायगा और सैनफ्रांसिस्को में एलेन मार लिए प्रतीक्षा करता मिलेगा ।

पत्र उसने कई बार पढ़ा और तब वह अपनी माँ के पास गयी, यह सोचती हुई कि माँ के साथ ही वह आज रात पिता जी के घर आने पर उन्हें यह समाचार सुनावेगी। उसने माँ को मछलियों को दाना चुगाते हुए पाया। जाड़े के मारे मछलियाँ सुस्त दिखायी देती थीं।

सवेरे की कुहरे से छनती हुई धूप बिछी थी। उसी धूप में माँ का दुबला शरीर नीली जापानी घाँघर में जोशुई को ऐसा लगा जैसे अचानक कोई तस्वीर उसके सामने आ गयी हो। अब उसकी यह छोटी सी माँ उससे दूर हो जायगी। एलेन के पास पहुँचने की अपनी उत्कण्ठा म उसने यह बात कभी सोची ही न थी। उसकी माँ कितनी शान्त कितनी सीधी, कितनी बच बच कर रहने वाली, कितनी छिपी छिपी सी थीं। फिर भी आज जब जोशुई ने उनसे दूर, बहुत दूर रहने की कल्पना की तो उसके हृदय में एक हिचकिचाहट सी पैदा हुई जो एक प्रकार की वेदना ही थी। वह माँ की बगल म घास पर झुक कर बैठ गयी और एक क्षण तक पत्र न निकाल सकी।

मछलियाँ पानी में इधर-उधर तैर रही थीं। मकड़ी के जाल जैसी उनकी पूँछें और उनके पंख पानी म फैले थे। खाने की उन्हें जैसे परवाह न थी।

"वे सोना चाहती हैं," जोशुई ने कहा।

"वे जानती हैं कि जाड़ा आ रहा है," माँ ने उत्तर दिया।

अपने काम में व्यस्त माँ ने पहले एक क्षण तक जोशुई की ओर देखा ही नहीं। और तब अचानक उसे ऐसा लगा कि जोशुई किसी काम से उसके पास आयी है। और वह जैसे चौंक कर बोली, "कोई काम है ?"

"हाँ" जोशुई ने उत्तर दिया। उसने चिट्ठी निकाल ली। "उन्होंने मुझे बुलाया है, मेरा टिकट भी भेजा है।" उसने टिकट निकाल कर दिया और माँ ने उलट पलट कर उसे देखा। वह उसे पढ़ नहीं पाती था।

वह पत्र, टिकट और लिफाफा उन्होंने जोशुई को वापस दे दिया।

'पिता जी क्या कहेंगे ?' जोशुई ने पूछा। "उन्हें कभी इस बात का विश्वास ही नहीं हुआ कि एलेन मुझे बुला भेजेगा।"

"अब उन्हें विश्वास हो जायगा।" माँ उठ खड़ी हुई और मछलियों के दाने का बर्तन अच्छी तरह कस कर बन्द कर दिया।

दोनों पानी की ओर दृष्टि गड़ाये खड़ी रहीं। भोजन का स्वाद पाते ही मछलियाँ अचानक चचल हो उठीं। उन्हें जैसे भूल गया था और अचानक फिर याद पड गया कि अपना भोजन उन्हें पसन्द है। सोने से पहले अभी भोजन कर लेने का समय था।

"अब बहुत समय बाद तुम्हें देख पाऊँगी," उसकी माँ बोलीं, "या शायद तुम्हें कभी भी न देख पाऊँ। तुम्हारे पिता अमरीका कभी नहीं जायेंगे, वे मुझसे कह चुके हैं।"

"मैं आपको देखने आऊँगी," जोशुई ने वादा किया। अपनी माँ के हाथ में उसने अपना हाथ वैसे ही डाल दिया जैसे वह बचपन में किया करती थी।

"अगर कोई बच्चा हो——" माँ ने शुरू किया और फिर चुप हो गयीं।

यह बच्चा! वह क्या होगा? उसका पैदा होना तो अनिवार्य था। पर क्या ये लोग चाहते थे कि वह पैदा हो। हर औरत अपने आप से यह सवाल पूछती है जहाँ प्रेम है वहाँ क्या बच्चा होना जरूरी है। श्रीमती सकाई भी जानती थीं कि प्यार की एक वह कोटि भी है जिसका अनुभव स्वय उन्हे कभी नहीं हुआ लेकिन जिसका जादू उन्हे जोशुई में दिखाई दिया। जोशुई के माध्यम से ही उन्हें उस प्रेम की शक्ति का अनुभव हुआ था—एक परिवर्तन कारी शक्ति जिसने उनकी बेटी को एक रमणी मे बदल दिया था ऐसी रमणी जो अपने माता पिता को छोड़ने को तैयार है। उन्हे स्वय इस शक्ति का कभी भी अनुभव नहीं हुआ था किन्तु जब उनके माता पिता ने उन्हे एक अनजान आदमी से शादी करने के लिए अमरीका भेजा था तो वे बिना कोई सवाल उठाये चली गयीं थीं। उनका यही भाग्य था। जोशुई उनकी अपेक्षा अधिक भाग्यशालिनी है क्योंकि वह एक ऐसे पुरुष के पास जा रही है जिसे वह जानती है। लेकिन क्या एक जापानी रमणी एक अमरीकी पुरुष को सचमुच समझ सकती है? उत्तर

भविष्य देगा। क्योंकि आखिरकार डाक्टर सकाई एक जापानी पुरुष थे, दूसरे जापानी पुरुषों से भिन्न नहीं, हाँ उनसे उच्च कोटि के अवश्य थे। इस प्रकार उन्हें मालूम था कि उनके बच्चे जापानी होंगे काले बालों वाले, काली आँखों वाले और सुनहरी पीली चमड़ी वाले। लेकिन जोशुई कैसे जान सकती थी कि उसका बच्चा कैसा क्या होगा। हो सकता है उसकी आँखें अपने पिता की तरह भूरे रङ्ग की हों। तब क्या किया जायगा? इस सम्भावना से वह कुछ चौंक पड़ी और जोशुई ने इसे देखा।

"क्या बात है माँ?"

"मुझे एक ख्याल हो आया," श्रीमती सकाई ने स्तम्भित होकर उत्तर दिया, "जोशुई मेरे दिमाग में एक ख्याल आया है।"

"क्या माँ?"

"अमरीकी औरतें कभी नहीं जान पातीं कि उनके बच्चों की आँखें और उनके बाल किस रङ्ग के होंगे। क्या यह एक परेशानी की बात नहीं है?"

"माँ, इस सबसे मुझे क्या मतलब?" जोशुई ने पूछा।

"मेरा ख्याल है, मतलब है," श्रीमती सकाई ने व्यग्रता से कहा, "मुझे इस सबसे मतलब होता अगर जब मैंने तुम्हें पहले पहल देखा था यदि उस समय तुम्हारी आँखें काली न होतीं। अगर तुम्हारे बच्चे की आँखें काली न होंगी तो मैं कैसे समझूँगी कि वह मेरा नाती है?"

"ओ माँ—!" जोशुई हँसने की कोशिश की लेकिन एक क्षण के लिए वह भी दुखी हो गयी। अगर बच्चे की आँखें नीली हुईं तो क्या स्वयं उसे अजीब अजीब नहीं मालूम होगा? और फिर यदि बच्चा बिल्कुल उसके ही जैसा हुआ तो क्या एलेन को अजीब नहीं लगेगा? जैसा माँ ने कहा था बेशक यह एक परेशानी की बात थी।

"हो सकता है मेरे कोई बच्चा ही न हो।" उसने कहा।

माँ ने अपना सिर हिलाया। "ऐसा तुम नहीं कह सकतीं।" एक व्यावहारिक स्वर में वे बोलीं। "अगर बच्चे के गर्भाधान का समय है तो कोई उसे जीवन में आने से रोक नहीं सकता। अपने निश्चित समय

पर आत्मा द्वार पर आकर प्रतीक्षा करती है। जब जीवन की अवधि होती है, हम जीते हैं, वैसे ही जैसे मरने का समय आने पर हम मर जाते हैं। इस चक्र की गति को न तेज किया जा सकता है, न रोका जा सकता है। कुछ की जीवन अवधि लम्बी होती है, कुछ की छोटी। सब भाग्य का खेल है।"

इस प्रकार जोशुई को अपनी माँ की शान्ति, भाग्य की सहज स्वीकृति और उनकी सरल पर असीम शक्ति का रहस्य मालूम हो गया। जोशुई इसका कोई उत्तर न दे सकी और माँ की महत्ता से दबकर सर झुका कर चली गयी।

अपनी माँ के हृदय में पहली बार इस प्रकार प्रवेश करके जोशुई को बच्चे की अनिवार्यता महसूस हुई।

पिता ने जब उसके प्रस्थान में कोई रुकावट न डाली तब जोशुई को आश्चर्य हुआ या कम से कम उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसे आश्चर्य होना चाहिए। फिर भी भावी के धारणा में यह सब समा गया। पिता जी ने उसके अनुमति पत्र का प्रबन्ध कर दिया, उसके लिए वे उसके, साथ टोक्यो के दफ़्तर तक गये। उन्होंने उसे बताया कि उनकी कुछ सम्पत्ति सैनफ्रांसिस्को के एक सेविंग्स बैंक में जमा है जो उन्होंने अपने बेटे येन्शान के लिए वहाँ रख छोड़ी है। अब वे उसे उसके नाम कर देंगे।

सब कुछ इतनी आसानी से तय होता चला जा रहा था कि उसे लगा जैसे स्वयं देवगण उसका रास्ता साफ करते चल रहे हों। उसके जन्म का प्रमाण पत्र जिससे यह सिद्ध होता था कि वह लॉसएंजिल्स में पैदा हुई थी, उसका पास पोर्ट, जो पहले माता पिता के साथ सम्मिलित बना था और जिसे केवल अलग करने की जरूरत थी और उसका नया फोटो—सब नियमानुकूल थे। केवल एक दिक्कत थी जिसे उसने खुद पैदा किया था, अपने पासपोर्ट पर वह अपने नये नाम—श्रीमती एलेन केनेडी का प्रयोग करना चाहती थी।

पिता ने इसे मना कर दिया। "नहीं, मैं इसकी अनुमति नहीं दे

सकता। तुम्हें मेरा और मेरा नाम—जोशुई सकाई लिखना होगा। हो सकता है तुम्हें फिर इस नाम की जरूरत पड़े।

वह पिता से नाराज हो गयी। "आप ऐसा कैसे कह सकते हैं पिता जी। आपको मुझपर विश्वास नहीं होता। आप मुझ पर शक करते हैं।"

"मैं जीवन पर अविश्वास करता हूँ," उन्होंने कहा।

वह हार मान गयी। जिन्दगी को ही इसे सिद्ध करना था कि वह सही थी। वे खुद देख लेंगे कि सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा वह जानती थी होगा। बुजुर्गों को विश्वास नहा होता। जब सब कुछ निश्चित हो गया तो वे लोग घर वापस आये और जोशुई यह देख कर काफी प्रभावित हुई कि उसके पिता उसके प्रति कितना सदय होने का प्रयत्न करते थे। उसके जाने की चर्चा उन्होंने नहीं चलाई। लेकिन रेल की खिड़की से उन्होंने उसे कुछ दृश्य दिखाये—एक आदमी जिसकी गर्दन पर गिलटी निकल रही थी, एक बच्चा जिसकी आँख में खराबी थी। खिड़की खोलकर उन्होंने उस आदमी को बुलाया। वह एक कुली था। "ओ भाई, सुनो तो, तुम्हारी गर्दन की यह गिलटी निकाली जा सकती है। तुम टोक्यो के किसी अस्पताल क्यों नहीं चले जाते या मेरे पास क्योटो शहर चले आओ!"

आदमी अपढ और अनजान था, चिल्ला कर बोला, "इस गिलटी में ही तो मेरी जिन्दगी है। क्या मैं अपनी जिन्दगी कटवा डालूँ!"

डाक्टर सकाई ने लम्बी साँस भरते हुए खिड़की बन्द कर दी। चिकित्सक का काम बडा कठिन है। उसे पहले लोगों को बताना होता है कि वे रोग मुक्त किये जा सकते हैं। और तब उन्हें अपनी बात पर विश्वास करने के लिए मजबूर करना पडता है। रोग को दूर करने का काम तो सबसे बाद को आता है और आसान होता है।

कुछ देर तक डाक्टर सकाई जोशुई के साथ मानव-मन की जड़ता—हठ धर्मा—पर बात चीत करते रहे, विशेष कर अपढ अनजान लोगों की जड़ता पर, और इस कोटि में वे अधिकांश मानव जाति को लेते थे। और

जोशुई को लगा कि वे नौजवानों और औरतों को खासतौर से इस कोटि में रखते थे।

लेकिन उसकी प्रसन्नता किसी बात से कम नहीं हो पायी। अब चूँकि दिन निश्चित हो चुका था, प्रस्थान की घड़ी तक मालूम हो चुकी थी इसलिए समय आसानी से बीतता चला जा रहा था। बहुत जल्दी सवेरा आ गया और दिन की घड़ियाँ उल्लास में तिरते हुए बीत गयीं, वह इतनी प्रसन्न थी कि दिन का बीतना उसे मालूम ही न हुआ; इतनी कठोर वह हो गयी। फुलवाड़ी में लगी हुई लाल-लाल झरबेरी पर उसकी निगाह भी न गयी—वह झरबेरी जो हर साल उसके पिता को बहुत आनन्द देती थी। दो-दो बार वह मैना को खाना खिलाना भूल गयी। लेकिन उसके माता पिता ने उसे कुछ कहा नहीं; उनके लिए तो वह पहले ही खो चुकी थी।

उसे अपने माता के इस दुःख का भान था। पर वह जानती थी कि इस दुःख में वह शरीक नहीं हो सकती। क्योंकि प्रेम और उत्कण्ठा से उसका मन भरा हुआ था और उसका हृदय पहले ही समुद्र पार कर चुका था, वहाँ सागर के दूसरे छोर पर बड़ी बेकली से प्रतीक्षा कर रहा था।

इसलिए जब उसकी विदायी का क्षण आया, जब उसने उस घर से, उस फुलवाड़ी से, यूमी से और सबसे आखिर में अपनी माँ से नमस्कार किया, और जब वह पिता के साथ हवाई अड्डे के लिए रवाना हुई, जब उसे मालूम था कि वह एलेन से कुछ ही घण्टों के लिए अलग है, तब भी वह अपने आनन्द में विभोर और स्तब्ध रही। असम्भव था उसके लिए कि वह केवल अपने माता-पिता के सम्बन्ध में सोचे या जो कुछ छूटा जा रहा था उसके सम्बन्ध में सोचे।

अपने प्रस्थान के पहले उसे डाक से भेजा हुआ कुबेर मत्सुई का एक छोटा सा पत्र मिला। पत्र मैत्री और दयापूर्ण था। उसने सुख की कामना की थी और लिखा था कि वह उसके लिए वहाँ अमरीका में एक छोटा सा उपहार भेजेगा। सम्भव था कि अगले वर्ष, यदि उसका व्यापार वैसे ही बढ़ता गया—जैसी उसे और उसके पिता को आशा थी, तो वह अमरीका भी आये। और यदि जोशुई को पसन्द हो तो वह उसके यहाँ आकर उसके

नये सम्बन्धियों से परिचय भी कर सकेगा। उसकी मैत्री का वह हमेशा आदर करेगा और नोशुई के लिए उसकी मैत्री सर्वदा सुलभ रहेगी चाहे उसे उसकी आवश्यकता हो या न हो। उसने उस पत्र को पढा। यह जानते हुए भी कि उस पत्र के भेजने मे कुवेर की भद्रता थी। लेकिन उस भद्रता का अनुभव करने में वह असमर्थ हो रही थी। उसने उस पत्र को जलती हुई धूपदानी में जला दिया क्योंकि न तो वह उसे अपने पास रखना चाहती थी और न उसे छोड़ ही जाना चाहती थी।

जब हवाई जहाज उड रहा था। तब एक क्षण के लिए वह जो कुछ कर रही थी उसकी अनुभूति उसे हुई। जहाज की छोटी सी खिड़की से उसने देखा उसके पिता लम्बे सीधे धरती पर नीचे खड़े थे। उनका ढीला कोट हवा मे उड रहा था। उनके दोनों हाथ बेत की मूठ पर थे, मजबूती से दोनों पैर धरती पर जमे थे और उनका सर उसकी ओर उठा हुआ था। इसका तो उसे विश्वास न हो पाया कि वे उसे देख पाये या नहीं, पर उस एक क्षण मे उसने अवश्य उन्हें स्पष्ट रूप में देखा। दिन सुहावना था, तीन दिन की वर्षा और आंधी के बाद सूर्य की किरणें आज चमक रही थीं और उनकी भेदक दीप्ति से उनका सुन्दर चेहरा प्रकाशित हो रहा था। और उनकी सकल्प पूर्ण शान्ति के नीचे एक शालीनता भरा दुःख, एक गौरव मय वेदना और एक कठोर पश्चात्ताप छिपा हुआ था। अनुभूति की वेदना से उसका हृदय भर आया।

वह क्षण बीत गया। जहाज के बड़े-बड़े चमकीले पख उसे आकाश मे उड़ा ले गये और धरती छोटी हो चली। थोड़ी ही देर में वह सागर के ऊपर आसमान में थी और उसके विचार, उसके सपने उससे भी आगे उड़ रहे थे।

तृतीय खण्ड

९

सैन्फ्रांसिस्को हवाई अड्डे पर एलेन ने जोशुई को हवाई जहाज से उतरते देखा—देखा कि उतर कर एक क्षण चारों ओर खोजती हुई उसकी दृष्टि हिचकिचा रही थी। हवाई अड्डे की भीड़ को चीरता हुआ वह आगे बढ़ा। वह लज्जित था कि वह जरा देर करके पहुँचा था—कि आज भी वह सुबह देर तक सोता रहा।

"जोशुई!" उसने पुकारा।

जोशुई ने उसे देखा और चेहरे पर मुस्कराहट आते ही वह एकदम बदल गया। पहले पहल एक क्षण के लिए जोशुई के चेहरे पर गम्भीर चिन्ता की रेखा देखकर उसे एक हल्की पर तेज निराशा हुई थी, लगा कि वह शायद उतनी मनोहर नहीं थी जितनी उसके दिमाग में वह बनी हुई थी या सम्भव था कि उसकी भूरी पोशाक के कारण ऐसा लग रहा हो। लेकिन चेहरे पर मुस्कान आते ही जोशुई फिर उसके दिमाग की जोशुई बन गयी कितनी कीमती वह मुस्कान थी। अपनी उसी मुस्कान और उसकी ओर बढ़ने की अपनी अर्ध लजालू शालीनता में ही जोशुई की मनोहरता छिपी थी आगे बढ़ कर उसने उसे, उन अजनबी लोगों की भीड़ में, अपनी बाहों में ले लिया। लेकिन तुरन्त ही उसे प्रश्न भरी भेदक निगाहों का बोध हुआ। बोध हुआ कि लोग आश्चर्य के साथ एक लम्बे नौजवान अमरीकी को एक जापानी लड़की को आलिङ्गन करते हुए घूर रहे हैं। किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा, सब अपने अपने काम में लगे रहे। किसी को इतनी फुरसत ही नहीं थी कि जिज्ञासा के एक आध सेकेण्ड से ज्यादा अपना समय बर्बाद करें। अजनबी लोगों की आँखें बचाता हुआ, अपनी बाँह में समेटे वह उसे ले चला। लेकिन जोशुई को भी लोगों की आश्चर्य और कुतूहल भरी दृष्टि

का बोध हुआ और धीमे से वह अलग हो गयी। हाँ उसका हाथ एलेन के हाथ में रहा।

"हम लोग सीधे होटल जायँगे" एलेन ने कहा, "मैंने वहाँ कमरे ले लिए हैं। कुछ दिन हम लोग यहाँ ठहरेंगे। कोई जल्दी नहीं है। मैं समय चाहता हूँ—समय—तुम्हारे साथ रहने के लिए समय। घर पहुँचने मे हम लोग बहुत समय लगा देंगे।"

उसने सोचा कि तब तक अपना मार्ग वे निश्चित कर लेंगे। वह जोशुई को बताएगा कि घर पर उसकी स्थिति वास्तव म क्या थी अर्थात् जो कुछ उसे मालूम था वह सब बताएगा। पर वास्तव म उसे मालूम बहुत कम था। हा, मन ही मन वह अनुभव बहुत कम कर रहा था। माँ के रवैये से तो वह केवल इतना ही समझ पाया था कि उन्होंने किसी बात पर भी गौर न करने का निश्चय कर लिया था। लेकिन यह कैसे सम्भव था कि द्वार पर खडी जोशुई की भी वे उपेक्षा कर दें। फिर वह खुद जोशुई क साथ होगा।

इन विचारों को उसने अपने दिमाग से भगा दिया। इन दिनों कुछ हफ्तों के लिए तो वह बिल्कुल अकेला था ही। उसे लग रहा था कि सैन्धवी ने यदि न्यूयार्क में मौसम बिताने का निश्चय न किया होता तो अच्छा होता। उससे बड़ी मदद मिलती। होगा—उसे मदद की कोई जरूरत ही नहीं।

"तुम बिल्कुल मौन हो प्रिये ?"

"मेरे देखने के लिए बहुत कुछ है यहाँ।"

यहाँ उसकी अपनी कार थी और दोनो उसमे बैठे।

"यह कार आपकी है ?"

"यह हमारी है, प्रिये। जो कुछ मेरा है—तुम्हारा है।"

वह मुस्कुराई और एलेन ने उसके हाथ की तरफ अपना हाथ बढाया।

"मोटर सावधानी के साथ चलाइए," उसने एक क्षण की हिचकिचा हट के बाद कहा।

वह हँसा । "यह अमरीका है जोशुई क्या तुम इसे भूल गयीं ?"

लेकिन वह धीरे ही चलाता रहा क्योंकि इस प्रकार उसे जोशुई के छोटे से हाथ से खेलने का मौका मिलता था । उस हाथ मे उसकी अँगूठी भी थी, वही अँगूठी जिसे उसने मन्दिर में पहनायी थी । उस रात जब वे उस मकान के सुन्दर कमरे म थे जिससे वे अब बहुत दूर थे, उसने वह अँगूठी जोशुई की अँगुली से निकाल ली थी और स्वयं पहन ली थी और ऐसा करने उसने यह पवित्र सूत्र दुहराया था, "इस अँगूठी के द्वारा मैं तुम्हारा पाणि ग्रहण करता हूँ ।"

जोशुई यह सब ठीक ठीक समझ न सकी थी । अब वह उसे सब कुछ समझाएगा ।

होटल आ गया । जोशुई अब भी बहुत शान्त थी । वह सोचता था शायद जोशुई आश्चर्य चकित हो । सामान उसने नौकर को थमा दिया और लिफ्ट के द्वारा वे लोग सातवीं मंजिल पर अपने कमरों में पहुँचे जिनकी खिड़कियों से समुद्र दिखायी देता था । नौकर को पैसे दे कर उसने चलता किया और किवाड बन्द कर लिए । अपनी छोटी सी हैट जो उसकी दृष्टि में बहुत अच्छी नहीं थी उतार कर उसने रख दी और तब उसने जोशुई का कोट उतरवाया । फिर उसे उसने अपनी बाँहों में भर लिया । ओह ! ओह ! उसकी त्वचा की सुगन्धि, उसकी ग्रीवा का वंकिम मोड़, और उसके छोटे छोटे उरोजों का उसके वक्षस्थल पर भार—यह सब कितना मादक था । अब वह अधिक न रुक सका । और रुके भी तो क्यों ? उसने उसकी आँखें देखी, कितनी काली, कितनी चमकीली और उसके भोले मुख की कोमलता ! वह सब समझ गयी । उसकी भावना उसने भाँप ली । मनुष्य में जितना नारीत्व है जोशुई जैसे उस सबका सार थी— पूर्व की रमणी जो हृदय की गति को सहज प्ररणा से समझ लेती है ।

"क्या तुम मुझे अब भी प्यार करती हो ।" इतना प्रश्न करने की प्रतीक्षा वह कर सका और उत्तर में उसने सुना, "हाँ; बेशक मैं तुम्हें प्यार करती हूँ" ये शब्द फुसफुसा कर नहीं, स्पष्ट और मधुर स्वरों में कहे गये, "तुम्हारे प्यार के लिये ही मैं इतनी दूर आयी हूँ ।"

२

शिशु का भौतिक जीवन कब प्रारम्भ हुआ ? दिन के चमकीले प्रकाश के किस क्षण में या रात की घनी छाया के पर्दे में किस समय वह शिशु अनन्त की गोद से मर्त्य लोक की लीला में कब शामिल हो गया—उन्हे कुछ पता न था। सागर पार उस सुन्दर कमरे मे जहाँ पहले वे पति पत्नी रूप मे मिले, या पश्चिम की ओर खुलने वाले इस कमरे मे या पहाड़ी पर की उस छोटी सी कुटिया मे जहाँ उन्होने थोड़े से दिन बिताये, जहाँ की तुषार मण्डित चोटियों को छोड़ने का मन नहीं होता था या असीम मैदान की एक छोटे से शहर के छोटे से होटल के ऊपरी कमरे मे—कब कहाँ उस शिशु की लीला प्रारम्भ हुई—उन्हें कुछ पता न था। फिर भी ये जो मनोहर मास बीते, ये जो प्यार के स्थानों और प्यार की घड़ियों की एक शृंखला बनी। इसी की एक कड़ी में कहीं न कहीं यह विश्व शिशु अवतरित हो आया। लेकिन उन्हे पता न था। वे शिशु की नहीं अपनी बात सोचने मे मग्न थे।

"हम लोग घर किस दिन पहुँचेंगे इसकी ठीक ठीक सूचना माँ और पिता जी को दे देनी चाहिए," जोशुई ने कहा। दोनों इस दिन के सम्बन्ध में बराबर मन ही मन सोचते रहे थे। दोनों को यह स्वीकार करने में सकोच होता था कि एक न एक दिन बहुत जल्दी ही उनकी यह मनोहर यात्रा समाप्त हो जायगी, ये लुभावने दिन, ये मनोहर रातें खत्म हो जायंगी। देवता प्रसन्न थे, और शारदीय ऊष्मा उस रहस्यमय वातावरण की सृष्टि कर रही थी। जिसमें वे चर विचर रहे थे। वे जानते थे कि इसकी समाप्ति होगी, यह जीवन नहीं था, यह केवल प्रेम था और कहीं न कहीं दोनों का समन्वय होना ही था। जोशुई ने, जो अधिक व्यावहारिक थी, एक दिन

इस ओर संकेत किया। एलेन की एक एक भाव भङ्गी का भान और ज्ञान उसे रहता था और इसीलिए वह जानती थी कि एलेन इस भविष्य से डर रहा है। भविष्य के गर्भ में कुछ है, यह वह जानती थी, क्या है यह नहीं जान पायी थी। फिर भी इस अदृश्य के लिए उसने अपने आप को, जितना जैसा हो सका तैयार कर लिया था। यदि वह नितान्त सावधान रही, कर्तव्य परायण रही, बहुत अधिक सेवा विनत और यदि उसने बड़े बूढ़ों का ध्यान सर्वदा सब से पहले रक्खा तो शायद वे लोग एक साथ सुखी रह सकेंगे—ऐसा उसने सोचा था। वह जानती थी कि परिस्थिति की कुञ्जी उसके हाथ में है। रात जब एलेन सो जाता तब वह इस पुरुष के सम्बन्ध में अपने बढ़ते हुए ज्ञान को तोलती, परखती और यद्यपि उसका प्रेम उसके लिए निरन्तर बढ़ रहा था, यद्यपि वह अपना एकान्त समर्पण उस पुरुष के लिए कर चुकी थी फिर भी एक धूमिल धारणा उसके मन में जमने लगी थी कि पुरुष की इच्छा से अधिक नारी अपना समर्पण कर ही नहीं सकती। आखिर समर्पण की शक्ति के साथ ग्रहण की शक्ति का भी तो मेल होना चाहिए। क्या वह उसके सर्वस्व समर्पण को चाहता था? जोशुई इस सम्बन्ध में आश्वस्त और विश्वस्त न हो सकी।

"यदि हम कहीं एक दो दिन के लिए रुक नहीं जाते," उसने कहा, "तो परसों तक हमें घर पहुँच ही जाना पड़ेगा।"

"आप घर नहीं जाना चाहते," उसने पूछा।

"हाँ, हाँ, जाना तो जरूर चाहता हूँ आखिरकार हमें स्थिर रूप से बसना है, अपनी आजीविका के लिये क्या करना होगा—यह भी सोचना होगा। सम्भव है मैं फौज की नौकरी छोड़ दूं। मैं छोड़ भी सकता हूँ क्योंकि सैनिक सेवा की मेरी अवधि कई वर्ष पहले पूरी हो चुकी है। सम्भव है मैं भी अपने पिता का ही अनुसरण करूं—एक ग्रामीण रईस का जीवन बिताऊं।"

एलेन के हर शब्द को वह बड़ी सावधानी से सुनती, समझती लेकिन शब्दों के पीछे, शब्दों के भीतर कौन से सन्दर्भ छिपे रहते, कौन सी भावनाएँ छिपी रहतीं, इसका पता उसे न लगता। हर अंग्रेजी शब्द उसके लिए एक

कोष की परिभाषा रखता था और कोष की परिभाषा के बाहर वह उसका कोई अर्थ न समझ पाती थी।

"हमें उनको अपने पहुँचने का ठीक समय बता देना चाहिए," अपनी कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर जोशुई ने कहा।

"परसों शाम को लगभग छः बजे," उसने बताया।

"तो कृपा करके कल अपने माता पिता को टेलीफोन कर दीजिए," उसने कुछ अनुनय और मनुहार के साथ कहा।

एलेन को अपने ऊपर शासन करने की जोशुई की चेष्टाएँ उतनी ही मनोहर लगती थीं जैसी ऐसी ही बच्चों की चेष्टाएँ लगती हैं। उसका आदर उसकी पूजा करते हुए भी जोशुई उसकी पथ प्रदर्शिका बनने का प्रयत्न कर रही थी और उसकी यह कामना बड़ी कमनीय थी। जोशुई की दृष्टि में यह बहुत आवश्यक था कि एलेन हमेशा अपने सुन्दर आचरण में रहे, कम से कम दूसरों के प्रति। और जब वह उसके साथ शैतानी करता; जब सवेरे सोकर जल्दी न उठता, जब अपने पाजामे फर्श पर छोड़ देता, जब उसके बालों को उलझाता और उसकी पोशाक को बिगाड़ देता, जब उकसा उकसाकर यह उसे बहस करने के लिए विवश करता और जब वह सचमुच बड़ी गम्भीरता से ईमानदारी के साथ बहस करने लगती तब उसकी आँखों से उसकी शरारत झलकने लगती। और जोशुई हमेशा उस शैतानी पर मुस्कुरा देती। अपनी शरारतों पर उसे मुस्कुराता हुआ देखकर वह कह उठती "नटखट कहीं के।" और खुद अपनी हँसी छिपाने के लिए अपना दाहिना हाथ अपने मुह पर लगा लेती। एलेन का दावा था कि जोशुई ने उसे बहुत बिगाड़ डाला है। जहाँ कहीं भी वे ठहरे, जोशुई ने घर के सँभालने में कभी भी उससे मदद की आशा नहीं की। उसकी सेवा वह अपनी प्राकृतिक प्रेरणा के रूप में करती रही, जब वह स्नान करता तो तौलिया लेकर खड़ी रहती, जब दाढ़ी बना चुकता तो सामान धोकर रख देती।

शुरू शुरू में तो एलेन इस प्रकार की सेवा के विरुद्ध चिल्ला उठता, "देखो जी, तुम मेरी पत्नी हो, दासी नहीं!" लेकिन जोशुई अपनी कर्तव्य

भावना में डटी रही और एलेन ने देखा कि वह धीरे धीरे इस मामले में हार मानता जा रहा है क्योंकि जोशुई का यही ढग था अपना प्रेम प्रदर्शित करने का। और उसे स्वीकार करना पडा कि यह बहुत सुखद ढग था—स्वय अपनी सेवा से मुक्ति पाना बहुत ही सुखकर था। इससे जिन्दगी के नित प्रति के छोटे मोटे ब्योरा से उसे राहत मिल गयी और एक फुरसत सी जिन्दगी में महसूस होने लगी। जोशुई ने अपने आपको दिल से एक जापानी महिला सिद्ध कर दिया। एक अमरीकी लडकी ने कभी भी उसकी सेवा इस प्रकार न की होती। अब उसकी समझ में आने लगा कि लोग ऐसा क्यों कहते थे कि पूर्व की किसी महिला का परिचय पा लेने के बाद किसी अमरीकी महिला को प्यार कर सकना असम्भव है।

"तो अब आज आप अपने माता पिता को फोन कर दीजिए", जोशुई ने दूसरे दिन प्रात बडी मधुर वाणी में कहा।

"हाँ किसी समय कर देंगे" उसने लापरवाही से कहा। दूसरा अनुपम दिन शुरू हो गया था, आसमान से गुलाल सी बरस रही थी। वह नहा चाहता था कि इस दिन के अन्त की बात सोचे।

लेकिन बहुत जल्दी उसने अनुभव किया कि जोशुई परेशान है। उसकी बगल में बैठी वह अपनी चिन्ता को अपने ही भीतर दबाये दे रही थी, एलेन ने यह अनुभव किया। "तुम बेफिक्र, हो जाओ," उसने कहा, "मैं सूचना दे दूगा।"

"हाँ" वह बोली, "कितना अच्छा होगा कि अभी सूचना दे दी जाय। क्यों है न?"

अचानक वह हँसा, "अच्छी बात है इस बार सार्वजनिक टेलीफोन मिलते ही हम रुक कर टेलीफोन कर देंगे। फोन का ख्याल रखना।"

जोशुई ने ही पहले सार्वजनिक फोन देखा और दस मिनट के भीतर ही। कुछ थोड़े से घरों की बस्ती थी, मुश्किल से उसे गाँव कहा जा सकता था। दाहिने हाथ से इशारा करते हुए वह बोली, "वह, वह, वहाँ फोन है।"

तो इस प्रकार उसे विवश किया गया। उसने कार रोकी। "तुम यहीं

उसका भोजन, उसका सुख सब कुछ परिपूर्ण बनाये रखने के लिए एकान्त सन्नद्ध रहेगी। वह कभी भी उसे यह समझाने में समर्थ न हो सकेगा कि फिजूल खर्ची भी कभी उचित हो सकती है या कि पुराने नौकरों की चालाकी चोरी नहीं थी वह सब कुछ उसी की भलाई के लिए करेगी। लेकिन उसे स्पष्ट दिखायी दे रहा था कि जोशुई का यह प्यार अत्यन्त भावना मय और कोमल होते हुए भी बहुत कठोर हो सकता था।

३

रिचमाड के एक छोटे से होटल मे रुकने का निश्चय एलेन ने किया। होटल एक शान्त गली में था और उसने यह स्वीकार किया कि इस होटल को उसने इसलिए चुना था ताकि जोशुई के साथ आने जाने मे वह लोगों की नजरों से बच सके। उसे अपने आपको लोगों की जिज्ञासा भरी नजरों, उनके मौन प्रश्नों का अभ्यासी बनाना था। जापान में भी उसके सम्बन्ध में यही आश्चर्य भरी जिज्ञासा; यही प्रश्न सूचक दृष्टि रही होगी पर उसने वहाँ उस पर ध्यान ही नहीं दिया था। याद नहीं जोशुई ने उससे इसकी चर्चा की थी या नहीं। अब वह जोशुई से यह प्रश्न नहीं पूछेगा। सम्भव है उसने इस पर ध्यान न दिया हो और अब पूछने से उसके दिमाग में एक ऐसी ताजी चोट लग जाय जिसे बचाया जा सकता है।

होटल आराम दे था। जोशुई को पुराने ढङ्ग की शान्ति पसन्द आयी। वे लोग एक छोटे से कमरे में डट गये जिसकी खिड़कियाँ एक छोटे से बगीचे की ओर खुलती थीं। बगीचे में कुछ पेड अब भी फूल रहे थे। सब कुछ ठीक हो जाने पर एलेन ने अपने पिता को टेलीफ़ोन किया। श्री केनेडी उसकी प्रतिक्षा कर ही रहे थे। वे एक दिन पहले ही आ गये थे

'ओह, अच्छे और दयालु हैं तुम्हारे पिता जी," उसने कहा। अचानक उसकी आँखों में आँसू छलक आये। "वे बहुत बुड्ढे तो नहीं हैं ! कितना कष्ट कर रहे हैं वे ! और माता जी ?"

उसने बात बनायी। "वे घर में रुक कर घर को ठीक-ठाक करना चाहती हैं।"

इसके बाद जोशुई बहुत प्रसन्न रही। वह मोटर चलाता रहा और जोशुई उसे चाकलेट खिलाती रही। खुद उसने बहुत कम खाया। जो शेष बचा वह उसने बड़ी सफाई से पहले पतले चिकने कागज में लपेटा और फिर अखबार में लपेट कर दूसरे समय के लिए रख लिया। उसकी मितव्ययिता का एलेन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। भोजन के सम्बन्ध में, अपने और उसके कपड़ों के सम्बन्ध में, लिखने वाले कागज, एक-एक पैसे के टिकट और हर वह छोटी चीज जो बर्बाद की जा सकती थी—सबके सम्बन्ध में वह बहुत सावधान रहती थी। वह ऐसे लोगों के बीच में रह चुकी थी *जिन्हें मितव्ययिता की शिक्षा दी गयी थी*, जिन्हें हर चीज का अच्छे से अच्छा उपयोग सिखाया गया था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि जोशुई उसके घर की फिजूल खर्ची कैसे बर्दाश्त कर सकेगी। चार नौकर, मक्खियों भरी भोजन सामग्री का नित्य घर आना, तमाम भोजन सामग्री का नित्य फेंका जाना, रुपये पैसों, कपड़ों और उन तमाम चीजों की बर्बादी जिनका आसानी से सदुपयोग किया जा सकता था ? यह सोचकर वह कुछ परेशान हो रहा था। जोशुई की प्रकृति में कुछ हठधर्मी थी। उसके कोमल *समपर्ण के पीछे*, उसके ऐसे सिद्धान्त छिपे थे जिनका समपर्ण वह नहीं कर सकती थी। उसके स्पष्ट और दृढ़ मस्तिष्क में औचित्य की भावना स्पष्ट और पूर्ण बन चुकी थी। यद्यपि एलेन की प्रीत में वह बह रही थी फिर भी यह भावना अचल थी। अपने व्यवहार में, बातचीत में, अपने दृष्टिकोण में जो कुछ उसे उचित प्रतीत होता था उसके लिए वह बड़ा उत्साह दिखाती थी। एलेन से वह ऐसे उत्साह की आशा नहीं रखती थी किन्तु अपने प्रति वह बड़ी कठोर थी। वह भविष्य को स्पष्ट देख रहा था। जब जोशुई उसकी रक्षा के लिए, उसकी सम्पत्ति सुरक्षित रखने के लिए,

उसका भोजन, उसका सुख सब कुछ परिपूर्ण बनाये रखने के लिए एकान्त सन्नद्ध रहेगी। वह कभी भी उसे यह समझाने में समर्थ न हो सकेगा कि फिजूल खर्ची भी कभी उचित हो सकती है या कि पुराने नौकरों की चालाकी चोरी नहीं थी वह सब कुछ उसी की भलाई के लिए करेगी। लेकिन उसे स्पष्ट दिखायी दे रहा था कि जोशुई का यह प्यार अत्यन्त भावना मय और कोमल होते हुए भी बहुत कठोर हो सकता था।

३

रिचमाड के एक छोटे से होटल मे रुकने का निश्चय एलेन ने किया। होटल एक शान्त गली में था और उसने यह स्वीकार किया कि इस होटल को उसने इसलिए चुना था ताकि जोशुई के साथ आने जाने में वह लोगों की नजरों से बच सके। उसे अपने आपको लोगों की जिज्ञासा भरी नजरों, उनके मौन प्रश्नों का अभ्यासी बनाना था। जापान में भी उसके सम्बन्ध में यही आश्चर्य भरी जिज्ञासा, यही प्रश्न सूचक दृष्टि रही होगी पर उसने वहाँ उस पर ध्यान ही नहीं दिया था। याद नहीं जोशुई ने उससे इसकी चर्चा की थी या नहीं। अब वह जोशुई से यह प्रश्न नहीं पूछेगा। सम्भव है उसने इस पर ध्यान न दिया हो और अब पूछने से उसके दिमाग में एक ऐसी ताजी चोट लग जाय जिसे बचाया जा सकता है।

होटल आराम दे था। जोशुई को पुराने ढङ्ग की शान्ति पसन्द आयी। वे लोग एक छोटे से कमरे में डट गये जिसकी खिड़कियाँ एक छोटे से बगीचे की ओर खुलती थीं। बगीचे में कुछ पेड़ अब भी फूल रहे थे। सब कुछ ठीक हो जाने पर एलेन ने अपने पिता को टेलीफोन किया। श्री केनेडी उसकी प्रतिक्षा कर ही रहे थे। वे एक दिन पहले ही आ गये थे

श्रौर श्रपने कुछ पुराने मित्रों से मिलने में उन्होंने समय का सदुपयोग किया था। श्री केनेडी मित्रों के घर जाकर यथा सम्भव कभी मुलाकात नहीं करते थे। उनके दफ्तरों में जाकर वे उनसे मुलाकात करते थे। उनके पास पर्याप्त श्रवकाश था श्रौर हर कोई उनसे मिलकर प्रसन्न होता था क्योंकि वे श्रपने साथ ज्ञान का भण्डार लेकर चलते थे। एक समाचार पत्र से श्रधिक उनका श्रादर होता था।

"मैं श्रभी श्रा जाऊँगा बेटे," उन्होंने एलेन को उसी के स्वरों में उत्तर दिया।

टेलीफोन उन्होंने रख दिया। क्लब के श्रपने बड़े कमरे में दूसरे छोर पर गये श्रौर श्रपना ढीला लम्बा कोट जो भूरे रङ्ग की ट्वीड का बना था, पहना, श्रपनी फ़िल्टहैट लगायी श्रौर चौड़ी घुमावदार सीढ़ियों से नीचे उतरे। क्लब की इमारत में लिफ्ट नहीं थी श्रौर श्रगर होती भी तो वे उसका उपयोग न करते।

बाहर हवा में एक प्रकार की सूखी तरी थी। उन्होंने एक टैक्सी को रोका। "मैंसफील्ड ले चलो," उन्होंने श्रार्डर दिया श्रौर तब जब तक गाड़ी शहर की गलियों में इधर उधर घूमती रही, वे नितान्त निरपेक्ष बने बैठे रहे। पत्नी के साथ हुई श्रपनी बातचीत को एलेन से छिपाने का उनका कोई इरादा नहीं था। जितनी जल्दी एलेन को पता चल जाय कि किस परिस्थिति का उसे मुकाबिला करना है, उतना ही श्रच्छा है। परिणाम का पता किसी को चलने पाये इसके पहले समय का बीत जाना जरूरी था। होटल पहुँच कर वे गाड़ी से उतरे, किराया दिया श्रौर तब दरवाजे पर टहलते हुए नौकर को इशारे से बुलाया।

"मैं यहाँ रुकूँगा नहीं, मैं केवल एक सज्जन से मिलने भर श्राया हूँ।"

उन्हें स्वयं श्रपने ऊपर श्राश्चर्य हो रहा था। उन्होंने यह क्यों न कहा, "मैं श्रपने बेटे से मिलने श्राया हूँ।" क्या उनके भीतर भी उसे स्वीकार करने की कोई श्रनिच्छा थी? श्रगर थी तो वे उसे निकाल बाहर करेंगे। उन्हें द्वेष से घृणा थी। उन्हें श्रपने मन में श्रपने मस्तिष्क में पूरा

विश्वास था कि निश्चित रूप से एक दिन आयगा जब दुनियाँ के सब इन्सान एक रङ्ग के होंगे और जितनी जल्दी वह दिन आये उतना ही अच्छा। सभी लोग गेहुँए या भूरे रङ्ग के हो जायँ तो क्या फर्क हो जायगा? इसी प्रकार मानव समाज से आपदाओं और विभिषिकाओं का एक स्रोत समाप्त हो जाय। एक बार वे न्यूयार्क गये थ और वहाँ एक सार्वजनिक भोज में उन्हें राष्ट्र की एक महिला कर्णधार से मिलने का अवसर मिला था।

"लेकिन श्री केनेडी, इस रङ्ग भेद की समस्या को हम कैसे सुलझायेंगे?" उस महिला ने उनसे पूछा था।

अपरिचित लोगों के बीच अपने दक्षिणी प्रदेश से दूर परिचितों की सीमा से बाहर उन्होंने अपने सामने आये मुर्गे के तले हुए गोस्त पर चाकू चलाया। "रङ्गों को उड़ा दीजिए, गायब कर दीजिए," उन्होंने अपने आनन्दी ढग से प्रसन्नता पूर्वक कहा था। उस महिला ने दुबारा उनसे बात न की थी।

वह धीरे धीरे होटल के आफिस की ओर बढे। "श्री एलेन केनेडी से कहिये कि उनके पिता ऊपर आ रहे हैं," उन्होंने क्लर्क को आदेश दिया।

"जी हुजूर," क्लर्क ने उनकी ओर घूरते हुए कहा।

तो लोग इस प्रकार आँखे फाड़ कर देखते हैं! देखने दो वे उनकी परवाह नहीं करेंगे।

"लिफ्ट उस तरफ है महोदय," क्लर्क ने पुकारा।

"मैं जीने से चढ जाऊँगा," श्री केनेडी ने उत्तर दिया। केवल एक ही मंजिल ऊपर उन्हें जाना था। व्यायाम से उन्हें घृणा थी और जीने पर चढ कर वे अपनी आत्मा को सन्तुष्ट कर लेते थे। सीढियाँ चौडी और सुगम थी और ऊपर के बरामदे में भली भाति चटाई बिछायी हुई थी। चलने से पैरों की कोई आहट नहीं होती थी। दरवाजे पर जाकर उन्होंने जोर से खटखटाया—बारह नम्बर का कमरा एलेन ने बताया था। भीतर से उन्हें एक लड़की की हल्की सी आवाज सुनायी दी और एलेन का

उत्तर, "मेरे पिता जी हैं।"

तुरन्त दरवाजा खुल गया। कमरा बिल्कुल खाली था, केवल एलेन मुस्कराता हुआ सामने खड़ा था। "जोसुई अपने बाल ठीक करने भीतर गयी है। वह आपके सामने अपने सर्व सुन्दर रूप में आने के लिए उत्सुक है। आइए, अन्दर आइए।"

"मैं जानता हूँ सभी औरतें अपने बालों के बारे में बड़ा ख्याल रखती हैं," श्री केनेडी ने कहा।

वे अन्दर आ गये और एलेन को अपना कोट, अपनी हैट और अपनी छड़ी उतार कर दे दी। सबसे आराम दे कुर्सी पर वे बैठ गये और कमरे में चारों ओर अपनी निगाह दौड़ायी। उन्हें विलम्ब करने का अवकाश नहीं था किन्तु फिर भी सिगार जलाने में जितना समय लगा, उतना विलम्ब उन्होंने किया।

"उसके आने के पहले मुझे तुम्हें बता देना है बेटे कि तुम्हारी मा का दिमाग कुछ ठीक नहीं है। तुम्हारी पत्नी के सम्मुख मैं ये बातें नहीं करना चाहता। लेकिन हमें—मुझे और तुम्हें—इन बातों पर फिर से सोचना होगा।"

एलेन जहाँ का तहाँ खड़ा रह गया। पिता के चेहरे पर छायी हुई अवसाद पूर्ण गम्भीरता ने उसे अचल बना दिया।

"तो आपका मतलब है कि वे हमारा घर आना पसन्द नहीं करतीं?" उसने पूछा।

श्री केनेडी की परेशानी उनके चेहरे पर झलक रही थी। उन्होंने अपना सर घुमा लिया और जोर से सिगार का एक कश खींचा। "हाँ बेटे, मेरा खयाल है वे नहीं चाहतीं। कम से कम अभी तक वे तुम्हारी पत्नी को घर आने देने के लिए तैयार नहीं हैं। बेशक तुम्हें देखकर वे हमेशा प्रसन्न होंगी। दर असल उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं तुम्हें खास तौर से जोर देकर समझा दूँ कि तुम्हारा हमेशा उस घर में स्वागत है। उन्होंने कहा है कि तुम्हारा कमरा जैसा है, ठीक वैसा ही हमेशा तैयार रहेगा तुम्हारे लिए जब कभी तुम्हें उसकी जरूरत हो।"

"एक क्षण रुक जाइए—"

एलेन तेजी से कमरे के बाहर अपने सोने के कमरे में चला गया और बीच के दरवाजे बन्द करता गया। एक लम्बी गहरी शान्ति छा गयी और देर तक छायी रही। श्री केनेडी सिगार के कश खींचते रहे। सिगार लम्बी, पतली थी और जब कभी वे उसे हाथ में ले लेते तो उसके किनारे से धुएँ की एक लम्बी पतली लहरदार रेखा ऊपर को निकल चलती। उन्हें आशा थी कि एलेन उस लड़की से यह सब नहीं बता रहा होगा। यदि औरतों को सब बातें न मालूम हों तो समस्या का हल निकालना आसान होगा। लेकिन अधिकांश पतियों की भांति शायद एलेन भी सोचता था कि उसे हर बात पत्नी से बतानी ही चाहिए। पुरुषों को सीखने में समय लगता है और एक पिता अपने बेटे को हर कोई बात पढ़ा भी नहीं सकता।

उनका ध्यान अपनी पत्नी पर चला गया और जो दुखद सन्ध्या वे बिता चुके थे वह उनके दिमाग में घुस गयी। उन्होंने उसे सब बात बता दी थी कि वे एलेन और उसकी दुल्हन से मिलने रिचमाड जा रहे हैं। इसके लिए आभार मानने के बजाय पत्नी ने उन पर बड़ा कटु दोषारोपण किया था। उन बातों के लिए भी उन्हें जिम्मेदार ठहराया था जो उनके वश में नहीं थीं।

"हमें परिस्थिति को अधिक से अधिक सम्भव सुन्दर रूप देना है और उससे लाभ उठाना है," उन्होंने तर्क किया था, "यदि हम उसे नहीं स्वीकार करते तो किसका नुकसान होगा? केवल मेरा, तुम्हारा, बस और किसी का नहीं। नयी सन्तति तो कहीं भी जाकर अपना घर बसा लेंगे। इस घर में सुनसान दिन और रातें काटने के लिए केवल हम लोग रह जायँगे—तुम और मैं। हम अपने इकलौते बेटे को छोड़ नहीं सकते मधु।"

"मैं अपने बेटे को छोड़ने को नहीं कहती," पत्नी ने उत्तर दिया था, "मैं तो केवल यह कहती हूँ और हमेशा से कहती आ रही हूँ कि उस लड़की को वह यहां नहीं ला सकता।"

"उनकी शादी हो चुकी है मधु," उन्होंने उसे याद दिलाया था।

उनकी मधु के सुन्दर चेहरे पर कुछ ऐसी रेखाएँ आ गयीं जिसे बहुत पहले ही वे घृणा की हँसी मान चुके थे। पहली बार यह हँसी उन्होंने अपनी सुहाग रात को देखी थी। उस हँसी का कारण वे भूल चुके थे। उन्हें केवल इतना याद था कि उस हँसी को देखकर उन्हें एक गहरा धक्का लगा था—धक्का यह देख कर कि उनकी पत्नी का वह मुख, जो चुम्बन के लिए था, कुछ इस रूप से विकृत बना लिया गया था जिससे उनके प्यार का तिरस्कार भी स्पष्ट झलकता था। लेकिन उन दिनों वे यह न जान पाये थे कि प्रेम प्रेमिका तक को नहीं बदल सकता। तब से जितने वर्ष बीते, बीतते गये और श्री केनेडी ने अपनी पत्नी को प्यार करना बन्द नहीं किया लेकिन वह जितनी जो थी सबकी सब उनके प्रेम का पात्र न बन सकी। ऐसे दिन थे, ऐसी घड़ियाँ थीं और निश्चय ही ऐसे अनेक क्षण थे जिनमें उनका प्यार स्थगित सा हो जाता था और पत्नी का स्मरण भी इन्हे सह्य न होता था।

"उनकी शादी नहीं हुई," उसने तीखे और रूखे स्वर में कहा था। अपनी ओर से वह मीठे स्वरों में बोल रही थी प्रयत्न भर वह जितने मीठे स्वरों में बोल सकती थी। पर यह तीखापन यह रुखाई भी शर्बत में नीम की कडुआई की तरह घुली हुई थी और श्री केनेडी इसी से डरते थे।

"मधु तुम यह बात फिर क्यों कहती हो? तुम जानती हो, मैंने तुम्हें बताया है एक मन्दिर ठीक वही चीज है जो एक गिर्जाघर—"

"मैं मन्दिर की परवाह नहीं करती" उसने कहा।

पत्नी के चेहरे पर छिटकी विजय गर्व की स्फूर्ति उन्हें कतई पसन्द नहीं आयी। पहले भी उन्होंने यह स्फूर्ति देखी थी, दो या तीन बार—एक बार जब उनकी और स्वयं एलेन की मर्जी के खिलाफ उसे एक सैनिक शिक्षालय में भर्ती कराने में वह सफल हुई थी। श्री केनेडी ने उन्हें अपनी मनमानी करने दी थी क्योंकि वे जानते थे कि लड़के को उस स्कूल से हटाना या हटाने पर जोर देने का मतलब होगा लोगों को हँसने का एक मौका देना।

"बात यह नहीं है कि तुम्हें किस बातकी परवाह है—" उन्होंने कहना शुरू किया।

पत्नी ने उनका तर्क एक चाबुक की चोट की तरह बीच में ही काट दिया, "आप ठीक कहते हैं, इससे कोई मतलब नहीं कि मैं क्या सोचती हूँ या आप क्या सोचते हैं। असली बात तो कानून है और इस राज्य का कानून श्वेताङ्गों और अश्वेताङ्गों के बीच विवाह की मनाही करता है।"

पति के सामने पत्नी ने अपना दाँव खोल दिया और बरबस उनकी दृष्टि पत्नी की ओर उठ गयी थी, "तुम जानती हो कि वह कानून नीग्रो लोगों के विरुद्ध बना था," वे जोर से बोले।

"कानून, कानून है और कानून यही" पत्नी ने दुहराया।

वे उठकर खड़े हो गये थे और उसे छोड़ कर चल दिये थे। लेकिन सोने से पहले उन्होंने अपने वकील को बुलाया था। पत्नी ठीक कह रही थी। राज्य का कानून वास्तव में एलेन के विवाह की मनाही कर रहा था क्योंकि लड़की का रक्त एशियाई था और अब बरबस यह बात उन्हें अपने बेटे से किसी न किसी तरह से कहनी थी।

दरवाजा खुला और एलेन जोशुई के साथ बाहर आया। श्री केनेडी इसी क्षण से डर रहे थे और अब वह क्षण उनके सामने था। धीरे से वे खड़े हो गये और उस लड़की को देखने लगे जिसे उनका बेटा अपने हाथ से सहारा दिये हुए था। एक लज्जालु मनोहर लड़की जिसकी मक्खन सी सफेद चमड़ी पर अरुणाभा बिखर रही थी और जिसकी बड़ी बड़ी आँखें भय से विनत हो रहीं थीं। कितना सुन्दर चेहरा, कितनी भोली विनत बच्ची, मुसीबत झेली हुई, प्रसन्न करने के लिए आकुल और सहृदयता की भीख माँगती हुई! उनका सारा दया भाव आकुल और कम्पित उसकी ओर बह चला।

"यही जोशुई है," एलेन ने बताया।

श्री केनेडी ने बोझिल पैरों से कमरे को पार किया और अपना कोमल विशाल हाथ उसकी ओर बढाया। अपने समस्त शिष्टाचार के साथ वे बोले, "तुम्हें देख कर मैं प्रसन्न हुआ बेटी। तुम बहुत लम्बा सफर करके आयी हो। मैं, तुम्हारा स्वागत् करता हूँ। उसका छोटा सा दृढ हाथ उन्होंने कोमलता से अपने हाथ में ले लिया" तुम थक गयी होगी और

हो गहना है तुम्हें घर की याद आ रही हो।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है," जोशुई ने अन्यन्त धीमे स्वर
कहा। श्री केनेडी के आकार को देखकर वह सहम गयी थी।
व्यक्ति थे वे। पर तुरन्त ही उसने देखा कि वे कितने दयालु
मुस्कराये और उनके सामने होंठ खुले, उसकी आँखों और भौं
तब उसने मुँह उठाकर उनकी ओर देखा।

श्री केनेडी ने बड़ी कोमल दृष्टि से उसकी ओर देखा और उ
हुआ कि वह देखने में इतनी अरवेन नहीं जान पड़ती थी। उ
दक्षिणी राज्यों की सबसे बड़े संभ्रात से सभ्रान्त घरानों तक में ऐ
लड़कियाँ देखी थी जिनका रंग जोशुई से बहुत अधिक काला था।
वह निश्चय ही अपनी पत्नी से यह बात कहेंगे।

"तुम बहुत छोटी हो बच्ची, क्यों न !" उन्होंने प्यार से क
अपने बेटे की ओर घूम कर बोले, "क्या ये सब लोग ऐसे ही छो

"जोशुई इतनी छोटी नहीं है पिताजी !" उसने कहा। उ
हल्का हो चला था। जोशुई के कोमल और मोहक सौन्दर्य का
तुरन्त प्रभाव पड़ा था और उसे उस पर गर्व था। उससे
समझ सकेंगे कि एक युवक कैसे उसके प्रेम पाश में बँध
उसके पक्ष में होंगे।

दोनों लम्बे पुरुषों के बीच अचानक जोशुई मुस्कराई।
नहीं रही थी। यह महान और सहृदय पुरुष जो उसके
मदद करेंगे और सब कुछ सुन्दर ही सुन्दर होगा। वे
रहे थे, उनसे कभी डरेगी नहीं। उनके घर में रहते हुए
रहेगी। क्या आश्चर्य था जो एलेन इतना आश्चर्यमय
ऐसे पिता का पुत्र था वह। वह भी
बनेगी।

वह एलेन से अलग हट
कहा। "एलेन घर में हमारे
का आर्डर दीजिए और कुछ

"मैं कुछ भी खाना नहीं चाहता," श्री केनेडी उसी कोमल स्वर मे बोले। तो यह जोशुई इतनी मोहक, इतनी चतुर, इतनी कुशल है। "मैंने अभी अभी नाश्ता किया है और एलेन इस बात का गवाह है कि में नाश्ता डटकर करता हूँ। लेकिन दोपहर को मै बहुत कम खाता हू। रात को हां मैं भोजन करता हूँ।"

वे बैठ गये और जोशुई उनके चारों ओर छा गयी। "थोड़ी सी ह्विस्की सोडा पीजिए?" उसने अनुनय की, "या कोकर मिश्रित हल्की शराब पीजिए?" उसने कोकर पीना धीरे धीरे सीख लिया था क्योंकि शराब उसे पसन्द नहीं थी।

"अच्छी बात ह्विस्की सोडा पी लेंगे," श्री केनेडी ने उसे प्रसन्न करने के लिए कहा।

सो एलेन को ह्विस्की सोडा मगाँना पडा और जब तक नौकर ट्रे लाये तब तक जोशुई बेचैन सी रही और जब वह ले आया तब उसने एलेन को कुछ छूने नही दिया, सब काम उसे खुद ही करना था। श्री केनेडी के बगल में छोटी सी मेज रख कर सारी चीज ठीक कायदे से उस पर उसने सजा दी और जब श्री केनेडी ने अपने हाथ में ग्लास ले लिया तब उसे सन्तोष हुआ। वह सेविका जैसी खड़ी रही और जब श्री केनडी ने एक घूँट पी लिया तब कहीं उसकी उत्सुकता शान्त हुई।

"कैसा स्वाद है?"

"बहुत बढ़िया," उन्होने खुले दिल से कहा। वह जोशुई को प्रसन्न करने के लिए कुछ भी कहने को तैयार थे। "अब तुम बैठ जाओ बेटी और आराम करो। मैं तुम्हारी बात सुनना चाहता हूँ। में जानना चाहता हूँ कि मेरा बेटा तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करता है। तुम्हारे साथ उसका व्यवहार अच्छा होना चाहिए।"

"बैठ जाओ जोशुई," एलेन ने आदेश देते हुए कहा।

वह तुरन्त बिना जवाब दिए हुए बैठ गयी। उसका मनोहर छोटा सा शरीर अब भी सेवासलग्न था और वह बैठे हुए दोनों पुरुषों को बारी बारी देख रही थी।

हो सकता है तुम्हें घर की याद आ रही हो।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है," जोशुई ने अत्यन्त धीमे पर स्पष्ट स्वर म कहा। श्री केनेडी क आकार को देखकर वह सहम गयी थी। कितने बडे व्यक्ति थे वे। पर तुरन्त ही उसने देखा कि वे कितने दयालु भी थे। वह मुस्कराई और उसके काँपते होठ खुले, उसकी आँखें और भी बड़ी हो गया जब उसने मुँह उठाकर उनकी ओर देखा।

श्री केनेडी ने बड़ी कोमल दृष्टि से उसकी आर देखा और उन्हें सन्तोष हुआ कि वह देखने म इतनी अश्वेत नहीं जान पडती थी। उन्होंने तो दक्खिनी राज्यों की सबसे बड़े सभ्रात से सभ्रान्त घरानों तक में ऐसी अनेक लड़कियाँ देखी थीं जिनका रग जोशुइ से बहुत अधिक काला था। वे लौट कर निश्चय ही अपनी पत्नी से यह बात कहेंगे।

"तुम बहुत छोटी हो बच्ची, क्यों न ?" उन्होंने प्यार से कहा और अपने बेटे की ओर घूम कर बोले, "क्या ये सब लोग ऐसे ही छोटे हैं ?"

"जोशुई इतनी छोटी नहीं है पिताजी !" उसने कहा। उसका हृदय हल्का हो चला था। जोशुइ के कोमल और मोहक सौन्दर्य का पिताजी पर तुरन्त प्रभाव पड़ा था और उसे उस पर गर्व था। उससे पिताजी अब समझ सकेंगे कि एक युवक कैसे उसके प्रेम पाश म बँध सकता था व उसके पत्न में होंगे।

दोनों लम्बे पुरुषों के बीच अचानक जोशुई मुस्कराई। अब वह डर नहीं रही थी। यह महान और सहृदय पुरुष जो उसके श्वसुर थे उनकी मदद करेंगे और सब कुछ सुन्दर ही सुन्दर होगा। वे उसे अच्छे लग रहे थे, उनसे कभी डरेगी नहीं। उनके घर में रहते हुए वह बडी सुखी रहेगी। क्या आश्चर्य था जो एलेन इतना आश्चर्यमय था। आखिर ऐसे पिता का पुत्र था वह। वह भी ऐसे श्वसुर की उपयुक्त पुत्र वधू बनेगी।

वह एलेन से अलग हट आयी। "पिताजी कृपया बैठ जाइए," उसने कहा। "एलेन घर में हमारे पास चाय नहीं है, कृपया नीचे चाय लाने का आर्डर दीजिए और कुछ सुन्दर नाश्ते के लिए भी।"

"मै कुछ भी खाना नहीं चाहता," श्री केनेडी उसी कोमल स्वर में बोले। तो यह जोशुई इतनी मोहक, इतनी चतुर, इतनी कुशल है। "मैने अभी अभी नाश्ता किया है और एलेन इस बात का गवाह है कि मैं नाश्ता डटकर करता हूँ। लेकिन दोपहर को मैं बहुत कम खाता हूँ। रात को ही मैं भोजन करता हूँ।"

वे बैठ गये और जोशुई उनके चारों ओर छा गयी। "थोड़ी सी हिस्की सोडा पीजिए?" उसने अनुनय की, "या कोकर मिश्रित हल्की शराब पीजिए?" उसने कोकर पीना धीरे धीरे सीख लिया था क्योंकि शराब उसे पसन्द नहीं थी।

"अच्छी बात हिस्की सोडा पी लेंगे," श्री केनेडी ने उसे प्रसन्न करने के लिए कहा।

सो एलेन को हिस्की सोडा मगॉना पड़ा और जब तक नौकर ट्रे लाये तब तक जोशुई बेचैन सी रही और जब वह ले आया तब उसने एलेन को कुछ छूने नहीं दिया, सब काम उसे खुद ही करना था। श्री केनेडी के बगल में छोटी सी मेज रख कर सारी चीज ठीक कायदे से उस पर उसने सजा दी और जब श्री केनेडी ने अपने हाथ में ग्लास ले लिया तब उसे सन्तोष हुआ। वह सेविका जैसी खड़ी रही और जब श्री केनेडी ने एक घूँट पी लिया तब कहीं उसकी उत्सुकता शान्त हुई।

"कैसा स्वाद है?"

"बहुत बढ़िया," उन्होंने खुले दिल से कहा। वह जोशुई को प्रसन्न करने के लिए कुछ भी कहने को तैयार थे। "अब तुम बैठ जाओ बेटी और आराम करो। मैं तुम्हारी बात सुनना चाहता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरा बेटा तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करता है। तुम्हारे साथ उसका व्यवहार अच्छा होना चाहिए।"

"बैठ जाओ जोशुई," एलेन ने आदेश देते हुए कहा।

वह तुरन्त बिना जवाब दिए हुए बैठ गयी। उसका मनोहर छोटा सा शरीर अब भी सेवासलग्न था और वह बैठे हुए दोनों पुरुषों को बारी बारी देख रही थी।

"क्या यह हर वक्त इसी प्रकार अपनी सेवा से तुम्हारी आदतें खराब किया करती है," श्री केनेडी ने अपने बेटे से पूछा।

"नारी के कर्तव्य की यह जापानी भावना है," एलेन ने मुस्कराते हुए कहा।

"अद्भुत लोग हैं ये," उसके पिता ने कहा दु:ख भरी कठोर और कष्ट-दायी बातों को भूल जाने की उनकी पुरानी आदत थी और इस समय वे अपने दुखद कर्तव्य को भूल गये थे। लेकिन जोशुई के सामने वे उस बात को छेड़ भी तो नहीं सकते थे। उसे सुन कर जोशुई का दिल बैठ जाएगा। और वे किसी भी हालत में वैसा नहीं चाहते थे। उन्हें एलेन के साथ मिल कर सोचना होगा कि क्या किया जाय। उन्हें अपने बेटे की मदद करनी थी ताकि वह ठीक कदम उठा सके। पर ठीक कदम था क्या?

वे गम्भीर हो गये और जोशुई ने उनके इस भाव को देखा फिर एलेन की ओर देखा और उसका दिल फिर भयभीत हो उठा। उसकी इच्छा थी कि यदि एलेन जापानी भाषा बोल सकता तो अच्छा होता क्योंकि तब वह उससे पूछ सकती थी कि उससे क्या गलती हो गयी। एलेन ने उसकी ओर नहीं देखा और तब जोशुई के लिए यह शान्ति अचानक असह्य हो उठी। साथ ही एलेन के पिता की वेदना भरी दृष्टि—वे न उसकी ओर देख रहे थे न एलेन की ओर, बल्कि कभी अपने हाथ के गिलास को देखते, कभी पैरों के नीचे बिछाई चटाई की ओर कभी खिड़की की ओर। वह चुपचाप उठ कर एलेन के पास गयी और उसके कन्धे पर हाथ रक्खा "क्या मैंने कोई गलती की?" उसने धीमे स्वर में पूछा।

"नहीं, बिल्कुल नहीं," एलेन ने अपने स्वाभाविक स्वर में कहा। "लेकिन मेरा ख्याल है पिताजी मुझसे एकान्त में बात करना चाहते हैं। जोशुई क्या हर्ज है यदि तुम दूसरे कमरे में चली जाओ।"

वह तुरन्त समझ गयी कि कोई बहुत बड़ी गल्ती हो गयी है। लेकिन एक बच्चे की तरह उसने आज्ञा पालन किया। चुपचाप सोने वाले कमरे की ओर गयी, धीरे से दरवाजा खोला और अन्दर जाकर और भी अधिक धीरे से उसे बन्द कर लिया।

श्री केनेडी समझ गये कि अब वह घड़ी आ गयी और बचने का कोई रास्ता न था। उन्होंने अपना गिलास रख दिया। "बेटे, मैं बहुत बुरा सवाद लाया हूँ।"

एलेन बोला नहीं, प्रतिक्षा करता रहा।

"क्या सीधे सीधे वह सवाद कह देना अच्छा होगा?" श्री केनेडी ने पूछा।

"बेशक पिताजी।"

"तुम यही कहोगे मैं जानता था।"

वे अपनी कुर्सी पर आगे की ओर झुक गये। अपनी कुहनियों को घुटनों पर रख लिया। दोनों हाथ एक दूसरे से गुथ गये और उनकी उँगलियाँ मुड़ गयीं। "बेटे, तुम्हारी माँ ठीक कहती हैं, ऐसा मेरा अनुमान है। तुम्हारी शादी कानून के मुताबिक नहीं है।"

"आपका मतलब क्या है?" एलेन ने पूछा।

"हमारे इस राज्य में कानून ही नहीं है," उसके पिता ने बड़े बोझिल स्वर में कहा, "इस राज्य का एक पुराना कानून है जो अन्तर्जातीय विवाह पर रोक लगाता है। तुम्हारी माँ को इस कानून का पता किसी प्रकार चल गया है। मेरा ख्याल है जिन औरतों के साथ उनका उठना बैठना है उन्हीं से उसका पता लगा है। हो सकता है उन्हें पहले से ही इसका पता रहा हो। पर मुझे इस पर विश्वास नहीं है।"

"वह पुराना कानून काली जातियों के लिए बना था," एलेन ने रूखे स्वर में कहा।

"ठीक कहते हो," पिता ने कहा। उनके बदन से बड़ी तेजी से पसीना निकल रहा था। पसीने की बड़ी बड़ी बूँदें मत्थे से ढुलक कर कानों के पास से उनके गालों पर आ गयीं थीं। "लेकिन ऐसा लगता है—माफ करना मुझे बेटा—कि उस कानून के दायरे में वे सब आ जाते हैं जो श्वेताङ्ग नहीं हैं।"

"ये किसने बताया?"

"मैंने वकील से पूछा था और उसका कहना है कि कानून का यही

मतलब है।"

श्री केनेडी उठ खड़े हुए और खिड़की के पास जाकर बाहर की ओर ताकने लगे ताकि एलेन कुछ मिनट तक इस चोट को एकान्त में सह सके।

"हमें इस राज्य में नहीं रहना है" एलेन ने कहा।

"बेशक नहीं" श्री केनेडी घूमे। उन्हें यह देखकर कुछ सन्तोष हुआ कि उनका बेटा इस दिशा में सोच रहा है "करना यह है कि तुम दूसरे राज्य में चले जाओ और वहाँ जाकर कानूनी ढंग से विवाह सम्पन्न कर लो। तब तुम्हारा रास्ता साफ होगा। सोच लो कि तुम वास्तव में करना क्या चाहते हो?"

"यह बात आपने क्यों कही, पिताजी?" एलेन ने पूछा। वह अपने पिता पर अचानक क्रुद्ध हो उठा था। उसके निश्चय के सम्बन्ध में जो सन्देह पिता के वाक्य में छिपा था, उससे वह तिलमिला उठा था।

श्री केनेडी ने शान्त भाव से उत्तर दिया, "अपने दिल दिमाग की बात तुम जानते हो बेटे। मैं तो कह भर रहा था।"

"हम लोग बेशक दूसरे राज्य म चले जायेंगे," एलेन उसी क्रुद्ध स्वर मे कहता गया, "हम लोग न्यूयार्क जायँगे। वहाँ मै कोई काम खोज लूँगा। आप जाकर माँ से कह सकते हैं कि अब मैं कभी घर नहीं आऊँगा।"

"मैं उनसे ऐसी कोई बात कहने नहा जा रहा।" श्री केनेडी ने कुछ डपटते हुए से कहा। वे फिर बैठ गये, अपना गिलास उठा लिया और आधा खाली करके उसे फिर रख दिया। "मेरा ख्याल है तुम्हारे लिए ऐसा सोचना भी ठीक न होगा। मुझे तो आशा है तुम अक्सर घर आते रहोगे। तुम अपनी मा के इकलौते बेटे हो।"

"मेरे साथ वे अपने बेटे सा व्यवहार नहीं करतीं।" एलेन ने उत्तर दिया।

"अब तुम बच्चों की सी बात करते हो" पिता ने कहा, "वे तुम्हारा बहुत प्यार करती हैं, मेरा तो यही ख्याल है। वह अपने आपको तुमसे बिल्कुल अलग तो कर ही नहीं सकतीं, यही तो कठिनाई है। प्रथम पीढ़ा

का बोध उन्हें अब तक होता है। उन्हें तुमसे केवल तुम्हारी ही आशा नहीं है बल्कि जीवन में जो भी कुछ है उस सब की आशा वह तुम्ही से रखती हैं। जब उन्हें मालूम हुआ था कि उन्हें अब दूसरा बच्चा नहीं हो सकता तो मुझे लगा कि वह रो रोकर अपने प्राण दे देगी। लगता था कि इस चोट से वह बच नहीं सकेगी। मुझे लगता है कि इसके लिए उन्होंने परमात्मा को भी कभी क्षमा नहीं किया। रात को वह प्रार्थना नहीं करती, बरसों से नहीं किया यद्यपि हर रविवार को वह गिर्जाघर जाती हैं। उनका घाव अब भी ताजा है। वे मुझे भी इसके लिए अपना कोप भाजन समझती हैं, मैं नहीं जानता क्यों? परमात्मा जानता है इसमें मेरा कोई दोष नहीं।"

"वह हर बार, हर काम अपने ही ढंग से करना चाहती हैं," एलेन ने गुस्से के साथ कहा।

श्री केनेडी इस बात को ताड गये। "वे एक दयनीय, दयामयी, अद्भुत नारी हैं जिनमें बच्चों का सा छिछलापन है।" वह कुछ दयापूर्ण भाव में बोले। आज पहली बार वे अपने बेटे को एक वयस्क पुरुष की भाँति सम्बोधित कर रहे थे। "वह कुछ इतनी समर्थ, व्यावहारिक शासन करने वाली और कठोर मिजाज की है कि कभी कभी मैं उन्हें बर्दाशत नहीं कर पाता और तब मुझे उनका दूसरा पहलू स्मरण हो आता—वह पहलू जो चोट खाये हुए बच्चे का सा है। मैं जानता हूँ कि बेटे, तुम से वह सब समझने की आशा नहीं की जा सकती है। पर मैं समझता हूँ कि उनका हर काम, उनकी हर बात अपने ढंग की है और मैंने उनसे मनोरंजन पाया है। मैं ऐसी नारी को प्यार कर ही नहीं सकता था जो मनोरंजक न हो।"

अपने बेटे की ओर उन्होंने एक लज्जा भरी, अनुनय भरी दृष्टि से देखा, एक मौन प्रार्थना जो दृष्टि निक्षेप में ही मूर्तिमान हो। एलेन का दिल हिल गया और उसे अपनी परिस्थिति की परेशानी महसूस होने लगी। अपनी माँ के पत्नी रूप को वह नहीं देख सका था। यह एक ऐसी नग्नता थी जिस पर तुरन्त परदा डालना जरूरी था। बात टालने

के लिए वह तेज़ी से उठकर खड़ा हो गया।

"मैं समझ रहा हूँ कि आप लोगों ने हमारे लिए जो कुछ किया जा सकता था किया," उसने कहा, "अब जो कुछ करना है यह मेरा कर्तव्य है। भोजन आप हमारे साथ करेंगे? मेरा ख्याल है आज दोपहर तक हम लोग अपनी मंज़िल तक चल निकलेंगे और अपने कपड़े और अपनी किताबें मैं मँगा लूंगा।"

"मैं आज रुकूंगा नहीं," श्री केनेडी ने कहा। उन्हें बड़ी थकावट महसूस हो रही थी और वे समझ नहीं पा रहे थे कि उस मनोहर बच्ची को वे दुबारा देखें या नहीं। "जब तुम लोग ठीक से घर बसा लोगे तो मैं फिर आकर तुम लोगों को देखूंगा।"

"मैं आपको सूचना दे दूँगा," एलेन ने कहा। उन्होंने मज़बूती से हाथ मिलाया। एलेन के दिल में आया कि वह अपना सर पिता के बोझिल झुकते हुए कन्धों पर रख दे। लेकिन उसने अपने आप को रोका और अपना सर ताने खड़ा रहा। संकल्प भरे दृढ़ स्वर में वह बोला, "मुझे इस बात की खुशी है कि आपने सारी बात स्पष्ट रूप से मुझे बतायी। इससे सारा मामला साफ़ हो गया है और मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ हूँ।"

श्री केनेडी ने गला साफ़ किया और सोचते रहे कि कहने लायक कोई बात सूझ जाय।

"अच्छी बात है बेटे मैं विदा होता हूँ। जब कभी जरूरत पड़े मेरे पास चले आना। मैं वही हूँ जो अब तक था और वही रहूँगा।"

"मैं जानता हूँ," एलेन ने कहा। यह परिचित वाक्य विषाद भरी स्मृतियों से बोझिल था। उसके पिता ने प्रत्येक बिदायी के समय ये ही शब्द कहे थे लेकिन कभी भी किसी मामले में वे कुछ न कर पाये थे।

पिता का दूर जाता हुआ आकार धूमिल हो चला और एलेन ने दरवाज़ा बन्द करने के क्षण तक होठों पर मुस्कराहट बनाये रक्खी। फिर अकेले बैठकर उसने अपना सर अपनी हथेलियों में रख लिया।

दूसरे कमरे में जोशुई प्रतीक्षा कर रही थी। आत्मसम्मान उस पर रोक लगाये हुआ था और वह पिता पुत्र के संवाद को न सुन सकती थी

और न झाँक कर वह उन्हें देख सकती थी। फिर भी वह समझ गयी कि कुछ ऐसी बात हुई है, कुछ ऐसा कहा सुना गया है, जो उसके लिए खतरनाक था। होटल के अपने सोने वाले कमरे में वह बीचों बीच पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ी थी। वह बहुत थक गयी थी इसलिए नहीं कि लम्बी यात्रा करनी पड़ी थी बल्कि इसलिए भी कि आज बरसों बाद उसे कुर्सियों पर बैठना पड़ा था और फर्श से ऊपर उठे हुए बिस्तरों पर लेटना पड़ा था। पैरों की माँस पेशियों और पीठ की पसलियाँ दर्द कर रही थीं। सबसे ज्यादा थकान तो उसे इसलिए महसूस हो रही थी कि परेशान न होने और कम से कम परेशान दिखायी न देने का उसका संकल्प उसे दबाये दे रहा था। उसका और एलेन का परिचय सचमुच कितना संक्षिप्त, कितना बाह्य था। जब प्रेम पर ही विवेक का बोझ लद जाता है तो सचमुच प्रेम बड़ा ही बोझिल हो जाता है। अपनी प्रेम की दृढ़ता पर उसे भरोसा था पर क्या एलेन का प्रेम भी दृढ़ था? उसने ऐसा ही सोचा था और अब भी वह ऐसा ही सोचती थी।

बाहर के दरवाजे के बन्द होने की आवाज उसने सुनी लेकिन जब एलेन ने उसे नहीं पुकारा तो उसने खुद ही बीच का दरवाजा धीमे से खोला और झाक कर देखा। हाथों में सर दाबे वह बैठा था। कौन सा भयानक दुःख उस पर आ पड़ा?

"एलेन!"

उसकी आवाज सुनते ही वह उछल पड़ा जैसे उसे स्मरण ही न [illegible] हो कि जशुई यहाँ है। हाथ उसके चेहरे पर से नीचे गिरे।

"एलेन क्या बात है?" उसने पूछा। वह तेजी से [illegible] बगल में घुटनों के बल बैठ गयी, "क्या बात है!"

जोशुई को कुछ भी बताने में उसे शरम लग रही थी [illegible] समझाये कि यह कानून सचमुच जरूरी था जिसमें [illegible] के साथ श्वेताङ्गों के विवाह का निषेध किया गया था?—[illegible] कि जो जाल दूसरों के लिए बिछाया गया था उस [illegible] है!—कैसे समझाये कि मच्छरों को रोकने के [illegible]

तितिलयों को भी अन्दर आने से रोक लिया है ?

"मेरी माँ की तबियत अच्छी नही है," उसने भद्दे ढग से कहा, "पितजी का कहना है कि जब तक उनकी तबियत ठीक न हो हमें वहा नही जाना चाहिए। तब तक के लिए हमें अपने रहने का प्रबन्ध करना होगा।"

जोशुई कि निगाह मे होने वाला परिवर्तन उसने भापा और तेजी से बोला, "तुम जानती हो कि अमरीका में लोग माँ बाप के साथ नहीं रहते। मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि यहाँ ऐसा नही होना। बहुत से नौजवान तो इससे नफरत करते हैं और मेरा ख्याल है बुजुर्ग लोग भी इसे अरसे तक पसन्द नही कर सकेंगे। हो सकता है बड़े दिन तक हम लोग थोड़े समय के लिए घर जाँय। तब तक·········।"

वह खड़ा हो गया और जेब में अपने हाथ डालकर कमरे में टहलने लगा और टहलते हुए बात करता रहा। जोशुई वैसे ही बैठी रही और ध्यान पूर्वक उसे देखती रही। उसके चेहरे पर शान्ति थी, काली बड़ी आँखें भावहीन थीं और एलेन के साथ वे घूमती जाती थीं।

"न्यूयार्क हम लोगों के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है। एक बहुत बड़ा शहर है वह जहाँ सब तरह के लोग रहते हैं और हिल मिलकर रहते हैं। मेरा गाव एक छोटा-सा मौजा है जिसमें सभी लोग पीढ़ियों से वही रह रहे हैं—कोई एक दर्जन परिवार होंगे, उनके नौकर और उनके आश्रित लोग—ऐसा ही समझो। मेरा ख्याल है कि उन लोगों ने शायद कभी किसी जापानी को देखा भी न होगा।"

"तो इस सब का कारण मैं हूँ," जोशुई बोली।

एलेन ने बातों ही बातों में सँभाल खो दी थी। वह उसके सामने खड़ा हो गया, मुस्कराने की कोशिश करता हुआ। और ऊपर उठे हुए जोशुई के चेहरे पर उसने अपनी निगाह गड़ायी।

"याद करो तुम्हारे पिता के भाव मेरे सम्बन्ध मे कैसे थे ? एँ ?"

"लेकिन यहा अमरीका मे ?"

"हा, अमरीका में भी। अमरीका मे तो खास तौर से। क्या तुम भूल गयी हो। तुम तो यहाँ लॉसएञ्जिल्स मे काफी दिन रही थीं। क्या तुम्हें

याद नहीं है ?" उसके स्वरों में कटुता भरी थी।

जोशुई को याद था। उसका सर झुक गया और उसकी सीधी लम्बी-लम्बी पलकों पर आँसू छलक आये। "मैंने सोचा था कि वह सब बदल गया होगा," उसने दबे स्वर में कहा।

"शायद बदल रहा है," उसने स्वीकारात्मक स्वर में कहा, "मैं उसी परिवर्तन का एक अङ्ग हूँ, एक अङ्ग तुम हो।"

उसने यह बात सुनते ही अपना सर ऊपर उठाया और एलेन की आखों से उसकी भयत्रस्त आखें मिली।

"इससे मुझे बहुत सूनापन महसूस होता है।" उसने धीमे स्वर में कहा।

"दो भटकते हुए तारे," वह बोला, "अलग अपनी दुनिया बसाने की कोशिश में हैं। यह दुनिया बसायी जा सकती है जोशुई।"

उसने जोशुई का हाथ अपने हाथों में लेकर उसे ऊपर उठा लिया। "देखिये श्रीमती केनेडी, अब घुटनों के बल झुकने की जरूरत नहीं है," उसने कहा, "मैं अब तुम्हे जोशुई नहीं कहूँगा। यह नाम, और इस नाम के दिन अब बीत गये। अब हमारा तुम्हारा जीवन प्रारम्भ होता है। मैं तुम्हे श्रीमती ज्योति केनेडी कहा करूँगा। यह बढ़िया नाम है—सुनने में अमरीकी मालूम पड़ता है, है न ?"

उसमें क्रोध के कारण वीरता का और विद्रोह भावना के कारण साहस का सचार हो गया था भाड़ में जाय बुजुर्ग और उनका पुराना जमाना—उसने सोचा। वह फौज की नौकरी छोड़ देगा, न्यूयार्क जायगा और वहा कोई नौकरी खोज लेगा। वह एक सुयोग्य पति बनेगा। और पिता ? पिता बनने के विचार से ही वह सहम उठा। लेकिन अगर ऐसा होता ही है तो अच्छा है। एक अनजाने स्थान में जहा कोई पड़ोसी नहीं, हजारों के बीच एक अनजाना व्यक्ति, एक छोटा-सा घर, उस बड़े शहर में जहा कोई किसी से न कुछ पूछता है न किसी को कुछ बताता है।

"उठो ज्योति," उसने कहा। दृढ़ता से उसने उसे अपनी बाँहों में समेट लिया—एक आलिङ्गन जिसमें वासना नहीं क्रोध भरा था। "बाँधो सब सामान, हम लोग यहाँ से चल देंगे।"

४

ऊपरी तौर से तो परिवर्तन आसान था। बिना किसी दिक्कत के उसे एक साप्ताहिक समाचार पत्र में नौकरी मिल गयी। उसके सम्बन्ध और परिचय उच्च कोटि के लोगों से थे और उसके पास प्रभावशाली व्यक्तित्व और अनुभव था। सैनिक सेवा से उसे सम्मान अवकाश मिला था और उसका वेतन उस छोटे से सुन्दर मकान के किराये के लिए काफी था जो उसने अपने लिये चुना था। जोसुई को कुछ मित्र भी मिल गये, एक चीनी लड़की जिसकी शादी कोलम्बिया के एक विद्यार्थी के साथ हो गयी थी और एक जापानी दम्पति जो शिक्षा-शास्त्र और बाल-मनोविज्ञान का अध्ययन करने के लिए रुके थे।

लेकिन परिवर्तन उन दोनों के बीच भी हो चला। जोसुई और एलेन दोनों एक दूसरे से अलग कुछ अपनी धीमी जिन्दगी भी बिताने लगे। इस दुख के साथ साथ एक संकल्प भरा प्रेम भी था जो उन्हें वासना की ऐसी जंजीर में बाँधे था जो पहले से कहीं ज्यादा मजबूत थी। फिर वे ऐसे बच्चे तो थे नहीं जिन्होंने अपनी जिन्दगी गरीबों की तरह झोपड़ियों में रह कर बितायी हो और जिन्हें यह छोटा सा मकान स्वर्ग दिखायी दे। उनका बचपन छोटे छोटे मकानों में भी नहीं बीता था जिनमें छोटे छोटे कमरे हों, छोटे छोटे बरामदे हों। वे समृद्धि और वैभव में पले बच्चे थे। जोसुई अपने छोटे से रसोई घर को साफ सुथरा बनाती और उसे क्योटो शहर के अपने उन्मुक्त वातावरण—अपने विशाल भवन की याद आ जाती। एलेन, एक वर्ग गज जगह में अपने कपड़े सँभाल कर रखता और अपने पैतृक मकान के बड़े बड़े कमरे याद आ जाते—वह मकान जिसका वह उत्तराधिकारी था और जिसे उससे कोई छीन नहीं सकता था। दोनों उन फुल-

वाडियों और सरोवरों के सपने देखते जो उनसे बहुत दूर थे। सोते सोते जोशुई फुलवारी के उस झरने की कलकल सुनती जो उससे हजारों मील दूर था। वह भी उस झरने, उस सरोवर की उस विशाल भवन की ओर उस मनोहर उन्मुक्त सौन्दर्य की उत्तराधिकारिणी थी। दो म कोई एक क्षण के लिए भी अपने प्रेम से विरत होने क लिए तैयार नहीं था। लेकिन दोनों ही उन सब चीजों का सपना देखते जिनका अभाव था और जिनका अभाव शायद कभी मिटने वाला न था।

दोनों के दिलों में शहरी जिन्दगी के लिये एक गुप्त पर गहरी घृणा जग गयी थी। जिन्दगी छोटी सी जिन्दगी है और इस थोड़े से समय को भी, गुफाओं जैसे घरों म बिताकर कौन उसे जिन्दगी कहना कबूल करेगा। जोशुई अपने एकान्त जीवन में जिस रहस्य को इतनी सावधानी से छिपाये थी वह अब भी एक निर्जीव, निश्चय, भावनाहीन भ्रूणमात्र था। एलेन को स्वप्न में भी उसके अस्तित्व का आभास न हो सका क्योंकि वह अपने ही गुप्त स्वप्नों मे व्यस्त रहता था। वह अपने घर को फिर से पा लेने की अपनी आशाओं और अपने सकल्पों को छोड़ नहीं सकता था।

अपने घर, अपने बचपन और अपने माता पिता के कुंठित प्रेम पर उसे अधिकाधिक प्रेम आने लगा। निरन्तर उसके दिमाग में यह ख्याल बना रहता कि उसके माता पिता उस मकान में रह रहे हैं जो उसे इतना प्यारा है और उसे अपने पिता पर अपनी माँ से भी अधिक क्रोध आ रहा था। पुरुष को अपनी इच्छा पर जोर देना चाहिये उसकी पूर्ति की माँग करनी चाहिए और नारी को विवश करना चाहिए कि उसे स्वीकार करे। ऐसा न कर सकने का अर्थ था पुरुष की कमजोरी। यह तो वह नहीं कह सकता था कि वह स्वयं अपने पिता से बिल्कुल भिन्न पुरुष था। यद्यपि वह ऐसी वेश्याओं को घृणा की दृष्टि से देखता था जिन पर किसी दूसरे पुरुष का अधिकार हो फिर भी एक विजित देश की दास वृत्ति ने उसे बहुत बदल दिया था। सभी लोग ऐसे वातावरण म बदल जाते हैं। ऐसे भी लोग होते हैं जो विजित देश की महिलाओं को आत्म समर्पण करने के लिये मजबूर करते हैं और विवश होकर मजबूर करते हैं। युद्ध का यह अन्तिम दौर

होना है। व्यक्तिगत विजय की यह पूर्णता होती है। एलेन कभी भी अपने आप को ऐसे लोगों में शुमार करने के लिये तैयार न था। लेकिन फिर भी वह था वही। वह उद्दण्ड था, जो उसके पिता नहीं थे, वह स्वार्थ पर टिकने वाला, हठ करने वाला व्यक्ति था जो उसके पिता नहीं थे। वह एक ऐसी पौध का युवक था जो अपने शारीरिक बल से दूसरों पर हावी होने की कोशिश करती है, जो शारीरिक बल से ही दूसरों को जीतता है और अपने पिता से इसी अर्थ में वह भिन्न था क्योंकि उनमें किसी पर हावी होने, *किसी पर आधिपत्य जमाने की इच्छा थी ही नहीं।*

दिन प्रतिदिन इन्हीं विचारों को सोचता हुआ एलेन अनजाने ही अधिकाधिक हठीला, अधिकाधिक शासन प्रिय और बलप्रयोग करने वाला बनता जा रहा था। जोशुई के प्रति भी उसका व्यवहार ऐसा ही हो चला था। वह बेचारी आश्चर्य करती थी, समझ न पाती थी कि वह जो कुछ भी करती थी, सब गलत क्यों हो जाता था। वह अपनी ओर से हर काम ठीक ढंग से करने का प्रयत्न करती थी, वह पूर्णतावादी थी। कहीं जरा भी कमी या कमजोरी उसे बर्दाश्त न थी। यहाँ तक कि रहने के छोटे से कमरे के एक कोने में रक्खे फूलों के गुलदस्ते को सजाने में वह घण्टों का समय लगा देती थी। हर चीज की इतनी देख भाल, इतनी सावधानी से करते हुए भी, एलेन के घर आने के पहले अपने हर काम को पूरा कर लेती थी। उसने कोई नौकरानी नहीं रक्खी थी और न रखना चाहती थी क्योंकि वह जानती थी कि अमरीका में बहुत कम औरतें नौकरानी रखती हैं। और फिर वह अपना सारा समय बेकार बैठ कर कैसे बिताती? उसने योजना बनायी थी कि जाड़ा शुरू होने पर जब बाहर पार्कों में जाना मुश्किल हो जायगा, तब वह किसी स्कूल में जाया करेगी। शहर में तमाम स्कूल थे। इन स्कूलों से उसने सूचना पत्र मँगाये थे और जिस दिन एलेन अपने काम से देर में लौटता, वह उन सूचना पत्रों को गौर से पढ़ती। हर हफ्ते ऐसी रातें आती थीं, जब वह देर से घर आता था और हर हफ्ते आखिरी रात पागलपन की रात होती थी क्योंकि उस दिन अखबार प्रकाशित होता था। एलेन उस रात कभी कभी पिछले पहर लौट कर आता था।

अगर वह स्कूल जाना शुरू कर दे तो यह समय अध्ययन में कट सकता था। अभी तो वह पड़ोस के पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर पढ़ती थी। कभी पुस्तकें अच्छी मिलतीं कभी बुरी। कोई उसका पथ प्रदर्शक न था, वह खुद बुजुर्ग लाइब्रेरियन से ऐसी पुस्तकों की प्रार्थना करती थी जिनसे अमरीकी जीवन का परिचय मिले। इन पुस्तकों को पढ़ने से उसके दिल में एक रहस्य की भावना और परेशानी बढ़ती जाती थी। इन अमरीकी औरतों और उनकी तमाम समस्याओं के बीच उसका स्थान कहा था? उसका जीवन तो उस छोटी सी कोठरी में सीमित था जिसमें वह रह रही थी।

फिर भी मन पूछता—क्या यह हमेशा ऐसे ही रहेगा। ऐसी भी घड़ियाँ आतीं जब वह घर उसे एक छोटा सा सन्दूक मालूम देता और उसका मन, मस्तिष्क बेचैन हो उठता। क्या यही सब उसके भाग्य में था?

"एलेन," उसने एक दिन कहा "क्या यहाँ तुम्हारे कोई मित्र नहीं हैं?"

उसने उसके लिए एक सादा पर सुस्वादु भोजन तैयार किया था जो उसे निहायत प्रिय था।

"मित्र?" उसने प्रश्न दुहराया।

"हाँ, जिनके साथ हम बात कर सकें" वह कहती गयी, "मैं आज ही जैसा सुन्दर भोजन तैयार कर सकती हूँ। हम एक या दो मित्र साथ बैठकर खाना खा सकते हैं, बात कर सकते हैं।"

"अभी तो आफिस के बाहर मेरे पास वक्त ही नहीं रहा" उसने उत्तर दिया, "हो सकता है बाद में समय निकल आये।"

उसने उस दम्पति को दावत दी जिससे उसकी मुलाकात पार्क में हुई थी-वे दो जापानी अमरीकी जो यहाँ सीटल में पैदा हुए थे, यहीं पले पुसे थे और अब केलिफोर्नियाँ में पढ रहे थे। वे लोग हँसमुख थे पर कुछ संकुचित रहे। उन्हें ऐसा लगता था कि जोशुई का पति अब भी वही नौजवान अमरीकी फौजी अफसर था। उनके लिए यह भूल सकना बहुत कठिन था कि वे खुद भी एक अमरीकी बन्दी शिविर में बन्द रह चुके थे। फिर भी शाम का वक्त आनन्द में बीता।

कोशिश करने बात चीत का दौर चलता रहा लेकिन बात खुले दिल से हुई। जोशुई की पाक कला की बडी प्रशंसा हुई। लेकिन वे लोग जल्दी ही घर चले गये। जोशुई ने दुबारा उन्हे निमत्रण नहीं दिया "शायद तुम सोच रह हो, ये लोग तुम्हारे जैसे नहीं हैं क्यों ?" उनके जाने पर उसने एलेन से पूछा।

"इसकी परवाह न करो," उसने दया भाव से कहा, "ये लोग सचमुच बडे अच्छे हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे कुछ मित्र हो जॉय।"

फिर अचानक एक दिन उसकी यह परेशानी, यह चचलता विलीन हो गयी। एक दिन जब वह बाजार से लौट कर आयी तो उसे बडी थकान महसूस हुई और वह अपने बिस्तर पर लेट गयी। इधर कुछ ऐसे सङ्केत मिलने लगे थे जिनसे वह भयभीत हो चली थी। हल्क हल्क ऐसे परिवर्तन उसे अपने आप में दिखायी देने लग थे जिन्ह वह काल्पनिक समझती थी अपनी शारीरिक स्वस्थता पर उसने कभी विशेष ध्यान नहीं दिया था। एक बार जापान म एक डाक्टर ने उससे कहा था कि अमरीका छोडने, और बचपन की जानी पहचानी सब चीजों से अलग होने, सब सम्बन्धों का उस समय अन्त होने की चोट जब कि वह बालिका से युवती बनने जा रही थी, उसके लिए बडी हानिकारक सिद्ध हुई है। गम्भीर स्नेह बन्धनों का टूटना न केवल मित्रों से बल्कि परिचित दृश्यों से भी दूर पड जाना और उस जापानी जीवन की भूमिका म अपने आप को अभ्यस्त बनाना जो उसका होकर भी उसका नहीं था—इन सबने उसके मन पर, उसके मस्तिष्क पर एक आघात किया था और इसका प्रभाव उसके शरीर पर भी पडा था। कुछ सप्ताह पहले से उसे शङ्का हो रही थी शायद वह गर्भवती है। उसने इस स्थित से बचने की भी कोशिश की थी अपनी मानसिक उपेक्षा और उदासीनता क बल पर। क्योंकि क्या यह भी कोई घर था जिसमें बच्चे का जीवन प्रारम्भ हो ? यह सन्दूक जैसा घर ही नहा था जो उसे इस प्रकार उदासीन बना रहा था, जिसमें बच्चे के खेलने क लिए एक फुलवाड़ी तक न थी बल्कि सामने का सार्वजनिक पार्क भी उसकी उस उदासीनता को बढाता था क्योंकि उसने उस पार्क में श्वेताङ्ग अमरीकी महिलाओं को अपने

बच्चों की रखवाली करते देखा था—रखवाली जङ्गली जानवरों से नहीं बल्कि काली जाति के बच्चों से। वह अपने बच्चे को ऐसे पार्क में नहीं ले जा सकती थी! बच्चा!

"नहीं, नहीं," वह बुदबुदायी।

आज अचानक जब वह लेटी थी उसे लगा कि उसके पेट में कोई चल रहा है। जिन सङ्केतों को अभी तक वह स्वीकार करने के लिए तैयार न होती थी वे सब के सब तुरन्त अपनी सत्यता और महत्ता मे सजीव हो उठे। उसने अनुभव किया कि उसके शरीर के भीतर एक दूसरे जीवन का प्रारम्भ हो चुका है। अब बात हाथ से जा चुकी थी।

वह भय त्रस्त अटल लेटी रही और तब तकिये मे अपना सर छिपाकर रोने लगी।

यह बडे सौभाग्य की बात है कि गर्भ स्थित बालक को, माँ कब रोती है, इस बात पर पता नहीं चलता। चाहे अनचाहे वह प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन प्रारम्भ कर देता है और माँ की वेदना उसे छू तक नही जाती। वह सबसे अलग एकान्त अपना जीवन प्रारम्भ करता है मानो विवेक के मार्ग पर चलता हो। दुनिया मे अपनी नयी दुनियाँ की तैयारी करता है, स्वार्थपूर्ण अपना विकास करता है और अजन्मा की गहरी नींद सोता है जिसकी शान्ति और विस्मृति की समता केवल मृत्यु की, अन्तिम गहरी नींद से की जा सकती है। प्रति दिन उसकी नींद कम होती जाती है और उसकी जागृति बढती जाती है, वह अपने हाथ पैर फैलाने शुरू करता है, जन्म की महान् घटना के लिए अपने को तैयार करता है—वह घटना जो पहले पहल उसे अनन्त से पृथक् करती है। उसके लिए समय—कालचक्र की गति प्रारम्भ हो जाती है।

विश्व शिशु सलोने के साथ भी यही हुआ। उसे पता नहीं चल पाया कि उसकी माँ अक्सर रोती थी। वह स्वयं अपने जीवन की गति मे व्यस्त था, बिना सोचे समझे फिर भी विकासशील उसे कौन जन्म देने जा रहा है, इसका न तो ज्ञान था और न इसकी चिन्ता ही। उसके उस लघु लघु शरीर मे कितना महान् समन्वय हो रहा था, वह नहीं जानता था। वह

सोता, अपनी नाल से अपना भोजन प्राप्त करता। जब तब इधर उधर हिलता, उसकी बेचैनी बढ़ रही थी। और वह यह नहीं जानता था कि उसका अस्तित्व उसके और उसकी माँ के बीच एक रहस्य बना हुआ था।

जोशुई एलेन को यह सब राज बताने के लिए तैयार नहीं थी। वह यह भाँप गयी थी कि यह अमरीकी, जिसके साथ उसने शादी की थी और जिसे वह अब भी बहुत अधिक प्यार करती थी, खुश नहीं था। वह बहुत मेहनत कर रहा था, उसके प्रति वह दयालु था और जोशुई को विश्वास था कि वह उसे प्यार करता है क्योंकि उनके बीच अत्यन्त कोमल घड़ियाँ भी आती थीं—कोमल घड़ियाँ जब वह उसकी बाँहों में अपने आप को समर्पण कर देती थी और प्रेमालिंगन में उनके सभी विचार एवं भाव सो जाते थे। और फिर भी अब हर समय उसे इस रहस्यमय तीसरे जीव के अस्तित्व का भी भान रहता था। क्या यह गुप्त जीव भी उनके इस पारस्परिक समर्पण का अनुभव करता था? क्या उसे इस अनुभव से आश्चर्य होता था? क्या वह अपने उस गुप्त संसार में इन बाह्य तूफानों के हस्तक्षेप का अनुभव करता था?

"क्या बात है?" एलेन ने पूछा, "तुम क्या सोच रही हो? तुम तो जैसे यहाँ से दूर मँडरा रही हो। वापस मेरे पास आ जाओ।"

"यहीं तो हूँ," उसने अपना हाथ फैलाते हुए कहा, देखो, मैं यहीं तुम्हारे पास हूँ।"

नहीं, वह एलेन को यह कुछ नहीं बतलाएगी क्योंकि वह एलेन का सम्पूर्ण जीवन नहीं बन सकी थी। काफी अरसे से वह महसूस कर रही थी कि एलेन अपने रहस्य रखता था जो उसे ज्ञात नहीं थे। वह अलग रहता था, उसके मन में विचार थे, भावनायें थीं जिनमें जोशुई साझीदार नहीं थी। और ये विचार केवल उसके घर या परिवार के सम्बन्ध में नहीं थे जिससे उसने उसे अलग कर दिया था और न ये विचार बचपन की यादगार थे जिनसे बेशक, अब वह साझीदार नहीं हो सकती थी। उसकी बहुत कुछ दुनियाँ ऐसी थी जिसे जोशुई समझ नहीं पाती थी। उसे राजनीति में रस मिलता था और जोशुई इस रस को नहीं समझ पाती थी। वह ऐसी पुस्तकें पढ़ता

था वह जिन्हे नहीं पट पाती थी। कभी कभी अपने छोटे से रेडियो से समाचार सुनकर वह नाराज पड़ जाता था, दैनिक पत्रों पर वह कभी कभी झल्ला उठता था। उसके लिए इन सब चीजों का कोई महत्व नहा था। लेकिन जब एलेन के लिए इन सब चीजों का इतना महत्व था तो क्या उसके लिए न होना चाहिए? जब वह इन चीजो को समझने की कोशिश करता, एलेन से तरह तरह के सवाल करती तो वह उसे एक बेचैनी के साथ जवाब देता—ऐसी बेचैनी जिसे कोशिश करके भी वह छिपा न पाता। और फिर वह पूछने और सीखने जाय तो किसके पास? उसके दिल पर जितनी गहरी चोट उसकी इस झुंझलाहट से लगती थी उतनी और किसी चीज से नहीं। और एलेन की यह झुंझलाहट दिन ब दिन बढ़ती ही जाती थी।

"मुझे पढ़ा सकना तुम्हारे लिए बहुत बोझिल है," एक दिन मन की बात उसने शब्दों में कह दी।

"नहीं, ऐसी बात नहीं है," एलेन ने तर्क किया, "मैं जब घर आता हूँ, बहुत थका रहता हूँ।"

लेकिन बात वही थी। जो जोशुई ने कही थी अगर अपनी योजना के अनुसार वह किसी स्कूल जा पाती तो अमरीका के सम्बन्ध में उसने ज्ञान प्राप्त कर लिया होता। लेकिन अब तो स्कूल जाने का कोई सवाल ही नहीं था—अब जब बच्चे का जन्म नजदीक आ रहा था, स्कूल जाने से कोई लाभ न था। उसने एक बार डाक्टर से सलाह भी ली पर उसने कहा कि बच्चे का जन्म रोका नहीं जा सकता। अब बहुत समय बीत चुका था। और फिर वह ऐसा काम करता ही न था। आखिरकार जोशुई इससे प्रसन्न ही हुई। बच्चे के प्रति यह अन्याय होता कि जन्म के पहले ही उसे समाप्त कर दिया जाय। यदि वह शिशु था तो उसमें इसका क्या दोष? यही उसका भाग्य था।

शरद बीत गयी और जाड़ा शुरू हो गया। रहस्य की चिन्ता ने उसे और भी दुबला कर दिया। कई बार तो बात एलेन के सामने खुलते खुलते रह गयी। जब शब्द उसकी जबान पर आ टिकते तो मुँह न खुलता, इसलिए नहीं कि वह एलेन से डरती थी बल्कि इसलिए कि अभी उसे अपना

जीवन अभी नितान्त अस्थिर दिखायी देता था, यहाँ तक कि रहने का मकान भी महीने महीने पर किराये पर मिल रहा था। इस प्रकार एक एक महीने का मकान लेकर कैसे रहा जा सकता था?

"अगले दिनों में किसी दिन हम लोग घर जायेंगे," उसने कहा, "घर जाने का समय आयेगा ही। अपने जीवन भर यदि माँ हमें घर नहीं जाने देतीं तो एक न एक दिन तो वे मरेंगी ही। लेकिन मेरा ख्याल है वे हमारा जाना नहीं रोकेंगी।"

'एलेन," वह भयत्रस्त चिल्लाई, "अपने माँ बाप के लिए ऐसा मत कहो। तुम इसके दण्ड भागी होगे।"

एलेन आज अद्‌भुत ढंग से कठोर बन गया था, "मृत्यु स्वाभाविक है। अच्छा ही हो यदि बुड्ढे लोग मर जायँ। जब तक वे मरते नहीं तब तक कोई उन्नति नहीं हो सकती।"

"एलेन, वे तुम्हारी माँ हैं!" जोशुई ने अपनी कोमल हथेली उसके होठों पर रख दी।

"वे एक संकीर्ण महिला हैं," उसने उसका हाथ हटाते हुये कहा। "उस छोटे से कस्बे में ही उनका जन्म और लालन पालन हुआ है। वह समझ ही नहीं सकतीं और समझना चाहती ही नहीं कि दुनियाँ की हर चीज में परिवर्तन होता है।"

"तुम्हें तो वह कस्बा प्यारा है," जोशुई ने कहा।

"मैं जानता हूँ कि मुझे वह प्यारा है," उसने उत्तर दिया, "और मेरे लिये यह मुश्किल है कि जो मुझे उस कस्बे में नहीं रहने देता उसे मैं माफ कर दूँ।"

"मैं उनकी मृत्यु की कामना नहीं कर सकती," जोशुई ने दृढता से कहा, "मैं किसी के लिये भी मृत्यु की कामना नहीं कर सकती।"

उसने और भी आश्चर्यजनक ढंग से कहा, "इसका कारण यह है कि तुमने कभी किसी की हत्या नहीं की, समझीं? इधर देखो—मुझे लोगों को मारने की शिक्षा दी गयी है। मारना कोई मुश्किल काम नहीं है। कभी कभी तो जब मैं बैठा बैठा अपने प्रबन्धक सम्पादक का भाषण सुनता हूँ

दो क्षण में सोचने लगता हूँ कि अगर वह मेरा शत्रु होता तो कैसे मैंने उसके प्राण ले लिये होते। उसके भारी भरकम ढाँचे में छेदा करने लायक चुकन में आसानी से भौंक देता। उसके विरुद्ध अपनी रक्षा मैं बड़ी आसानी से कर सकता हूँ। उसके मोटे शरीर में किर्च बड़ी आसानी से घुस जायगी।"

वह एलेन की ओर देखती हुई मन्त्रमुग्ध मूर्तिवत खड़ी रही। वह एक तश्तरी धो रही थी। वह शीशे की तश्तरी उसके हाथ में थी जो अचानक उसके हाथ से गिर गयी।

वह हँसा! "घबड़ाओ नहीं, मैं ऐसा कभी करूँगा नहीं। यह तो मेरी शिक्षा का एक अङ्ग था। मैंने तुम्हें यह समझाने के लिये इतना सब कहा कि मेरे लिये मौत का अगर कोई खास महत्व या मतलब नहीं है तो क्यों नहीं है।"

जेशुई ने उत्तर नहीं दिया। वह फिर झुक कर अपनी तश्तरियाँ साफ करने लगी।

उसने सोचा एलेन बेशक अपनी माँ को प्यार करता है। अगर वह उन्हें प्यार न करता होता तो उन पर इतना अधिक क्रुद्ध भी नहीं हो सकता था। उसने मन ही मन सोचा, "मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये। मैं उसे उस सबसे अलग रख रही हूँ जिसे वह सबसे अधिक प्यार करता है।"

तो वह कैसे जा सकती थी? सैन्फ्रानसिस्को के बैंक में थोड़ी सी रकम तो जमा थी लेकिन वह जाये कहाँ? अगर वह अपने पिता को लिखे तो शायद वे और भी अधिक पैसे भेज देंगे। लेकिन उन्होंने पहले ही कह रक्खा था कि वह लौटकर उनके पास न आये। और फिर उसके पिता के घर में कैसी होगी उसकी जिन्दगी! और यह बच्चा, उसे छोड़कर कौन उसे चाहेगा? यह असम्भव ही था कि उसके पिता और यह बच्चा दोनों एक साथ घर मे रह सकें। दोनों के बीच में हमेशा उसे एक कड़ी बनना पड़ेगा। बच्चा उसकी आँखों के सामने मूर्तिमान था और यह ठीक एलेन जैसा था क्योंकि उसने सुन रक्खा था कि श्वेताङ्गों का रक्त अन्य सभी रक्तों पर हावी हो जाता है, वह कभी छिपाया नहीं जा सकता। तो

ऐसा बच्चा, ऐसे देश में प्रसन्नतापूर्वक रह सकता है जिसमें सभी लोगों की आँखें काली हों, बाल काले हों और चमड़ी भुनहली? क्या वह वहाँ बहुत दुखी नहीं रहेगा? उसे तो यही अपने जैसे लोगों के बीच रखना होगा। तो वह जा कैसे सकती थी?

धीरे धीरे अपने जापानी दोस्तों के साथ रहना भी उसके लिए मुश्किल हो गया और वह उन लोगों से भी अलग हो गयी। उस जापानी औरत को वह नहीं बता सकती थी कि वह रातों दिन क्या सोचा करती है। उसे बहाने बताने पड़ते थे कि उसकी तबियत ठीक नहीं है और उसे विश्राम की जरूरत है। वह जापानी दम्पति अपने स्कूल में व्यस्त थे और इसलिए धीरे-धीरे जोशुई सब से अलग हो गयी।

तब एक दिन एलेन ने उसे टेलीफोन पर बताया कि वह अपने साथ अपने बचपन की दोस्त सैन्थवी को घर ला रहा है। सैन्थवी उसके आफिस उससे मिलने आयी थी और उसने जोशुई के देखने की इच्छा प्रकट की थी। इसीलिए वह उसे अपने साथ ला रहा था। और उसने जोशुई से कहा कि वह कुछ अच्छा खाना पका दे। टेलीफोन पर उसकी आवाज आज बड़ी प्रसन्न मालूम पड़ती थी और जोशुई को यह आवाज सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई क्योंकि महीनों से उसने उसके प्रसन्न स्वर नहीं सुने थे।

उसने अपने छोटे से घर को साफ किया सुन्दर छोटे-छोटे फूलों का गुच्छा खरीदा और फिर तीन बड़े बड़े नीले फूल खरीदे—ऐसे जैसे उसके पिता की फुलवाड़ी में प्रति वर्ष सैकड़ों की तादाद मे खिलते थे। और फिर इन फूलों को और सारे सामान को सजाने में उसने दो घण्टे बिताये। कोशिश उसकी यह थी कि जिन कमरों में स्थान था, बहुत काफी स्थान दिखाई दे। आखिरकार खिड़की का सहारा लेना पड़ा उसे, आसमान के दृश्य के लिए और दरवाजे से दिखाई देने वाले ऊँची ऊँची छतें और चिमनियाँ उसकी पृष्ठभूमि बनीं।

खाना उसे बड़ी सावधानी से बनाना था। चावल उसने कितनी ही बार धोया जिससे पका हुआ चावल सुन्दर छितराया हुआ दिखायी दे। मूलियों को ऐसा काटा कि वे फूल जैसी सुन्दर मालूम पड़ने लगीं। सुन्दर सलाद

तैयार की, मछलियाँ और बढ़िया गोश्त तैयार किया, तश्तरियों को धोकर चमकाया, रसोई घर को साफ किया और जब बच्चे ने भीतर से विरोध करना शुरू किया तो चुपचाप लेट गयी।

उसने उसका नाम करण कर लिया था। जन्म से पहले भी बच्चे का नाम रख लेना कभी कभी जरूरी होता है। नाम की समस्या पर उसने बहुत कुछ सोचा विचारा था। ऐसे विश्व—शिशु का क्या नाम होना चाहिए? उसे नाम चाहिए जो उसका अपना हो, न पिता जैसा हो, न माता का सा। एक अमरीकी नाम था जोसेफ लेकिन वह उसे पसन्द नहीं था। अपने दिवंगत भाई—केन्शन—का नाम उसके दिमाग में आया, लेकिन क्या इस बच्चे को इस बात का अधिकार था कि उसके भाई का नाम अपना ले। बिना अनुमति पाये उसे ऐसा करना ठीक न लगा और अनुमति देने वाला कोई था नहीं। बच्चे के छोटे से चेहरे की कल्पना उसने की, वह चेहरा जो उसके किसी भी परिचित व्यक्ति के चेहरे जैसा न था लेकिन फिर भी सबके चेहरों से मिलता जुलता था—सचमुच एक विश्व शिशु। एलेन वह उसे पुकार नहीं सकती थी क्योंकि एलेन की माँ को वह अस्तित्व ही बर्दाश्त नहीं है। एलेन—एल्लेन। तो बच्चे का नाम उसके पिता के नाम का एक अंश मात्र क्यों न रह जाय?—तो बच्चे का नाम सलोने रहेगा। जिस क्षण यह नाम उसने मन ही मन उच्चारण किया उसी क्षण वह नाम बच्चे का हो गया। उसकी आँखों के सामने एक छोटा सा मनोहर चेहरा नाच गया जिसकी बड़ी बड़ी आँखें—उन आँखों का रंग वह न समझ पायी, लेकिन वह बड़ा सुन्दर चेहरा था, ऐसा चेहरा जो उसके सलोने नाम को सार्थक करता था। तो 'सलोने' बच्चे का नाम हो गया और वह उसे इसी नाम से पुकारने लगी। जब वह अपने कमरों को साफ करती, तरकारियाँ काटती या और कोई काम करती और बच्चा अपनी परेशानी जाहिर करता तो वह उसे मीठी फटकार सुनाती।

"मैं बैठ सकती हूँ, सलोने, यह सही है कि मैं आराम कर सकती हूँ, लेकिन काम के वक्त मैंने किसी को आराम करते नहीं देखा। इसलिए तुम्हें शान्त रहना होगा।" लेकिन वह शान्त न रहता और तब उसे चुप

चाप लेट जाना पडता।

यह औरत यह सैन्धवी, क्या यह वह सब कुछ भाँप लेगी जो एलेन नहीं समझ पाया था? यह उसकी दोस्त होगी या दुश्मन?

सैन्धवी को देखते ही जोशुई ने समझ लिया कि वह उसकी दोस्त है। एक लम्बी सुन्दर सी लड़की, कितनी मनोहर, कितनी सुशील, कमरे में एलेन के साथ आयी और जोशुई ने विनत प्रशंसा भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। बेशक यह वही लडकी थी जिसके साथ एलेन को शादी करना चाहिए था। यह बिल्कुल प्रत्यक्ष था और एक क्षण में ही जोशुई ने समझ लिया कि एलेन की मा ठीक थी। काश! उसे पहले से पता चल गया होता कि सैन्धवी जैसी लडकी एलेन की प्रतीक्षा में है तो उसने एलेन से शादी करना अस्वीकार कर दिया होता क्योंकि वह एलेन को सचमुच बहुत प्यार करती थी।

उसकी जबान न खुल सकी पर उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया और सैन्धवी ने उसे अपने दोनों हाथों में ले लिया।

"आपसे मिलने की जाने मेरी कितनी इच्छा थी," सैन्धवी ने मैत्रीपूर्ण स्वरों में कहा, "एलेन से मेरा आगे से ही परिचय है। हम दोनों भाई बहिन की तरह हैं। मेरा ख्याल है एलेन ने आपसे सब कुछ बताया होगा।"

"हाँ बताया है।"

उसे सकोच हो रहा था। वह उस सुन्दर चेहरे पर से अपनी आँखें हटा नहीं पा रही थी—ऐसी नीली आँखें उसने कब देखी थीं। इतनी कोमल और सफेद चमडी उसने कहाँ देखी थी। कितना सुन्दर प्यारा मुख था!

"हैट उतारो सैन्धवी," एलेन ने कहा सैन्धवी के साथ उसका व्यवहार बिल्कुल गैर तकल्लुफाना था। लेकिन उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न था। "इसे अपना ही घर समझो सैन्धवी। घर गरीबों का है पर अपना है। जोशुई तुम्हारी मेहमानवाजी कहाँ चली गयी?"

"मैं तो स्तब्ध हो गयी हूँ," जोशुई ने असहाय स्वरों में कहा।

"किस बात पर स्तब्ध हो गयी हो ?" एलेन ने पूछा ।

"इतना सौन्दर्य," जोशुई फिर वैसे ही बोली, "मुझे तो इतनी आशा न थी । तुमने मुझे कभी बताया भी नहीं ।"

दोनों उसकी ओर देखकर हँसने लगे । उनकी दृष्टियों में पारस्परिक आनन्द छलक रहा था "कितनी चंचल, एलेन तुमने मुझसे नहीं बताया कि यह इतनी चतुर है । अब मैं समझ गयी तुम क्यों पागल हो गये हो । तुम क्या, मेरा तो वश चले तो इन्हें मैं अपने जैकेट में फूल की तरह लगा लूँ ।"

अब जोशुई भी हँस पड़ी । और सैन्धवी के लिए उसके हृदय में प्रेम उमड़ आया । सचमुच वह सैन्धवी को देखकर बहुत खुश थी । कितनी बड़ी, कितनी दयालु और कितनी सुन्दर लड़की ।

"कृपा करके बैठ जाइये," जोशुई ने अपने आपको सँभालते हुये कहा । "मैं चाय ले आऊँ । एलेन का कहना है कि आज सब कुछ जापानी ही रहे । सो आप मुझे माफ करिएगा ।"

नमस्कार करके वह कमरे से बाहर चली गयी । रसोई घर में पहुँच कर उसने दरवाजा बन्द कर लिया और तब साँस लेने के लिए एक स्टूल पर बैठ गयी । "सलोने," उसने अजात शिशु को डाटना शुरू किया, "उछल कूद मत करो । दुपट्टा सब कुछ छिपा नहीं पाता । यहाँ तुम आमंत्रित नहीं हो । अपनी माँ की मदद करो ।"

उसके दिल की धड़कन के शान्त होने के साथ बच्चा भी जैसे शान्त हो गया । तब उसने चाय तैयार की ।

बन्द दरवाजे के उस पार दूसरे कमरे में भी शान्ति ही थी । जोशुई को उनकी आवाज सुनायी दे रही थी, पर शब्द नहीं सुनायी दे रहे थे । शायद वे लोग एलेन के घर के सम्बन्ध में, उसकी माता के सम्बन्ध में बात चीत कर रहे होंगे—ऐसी बात चीत जिसको उसके सामने करने में शायद उनको संकोच हो । यह स्वाभाविक भी था इसलिये यद्यपि उसे कुछ एकाकीपन महसूस हो रहा था फिर भी उन्हें अवसर देने के लिये वह चाय बनाने के बहाने रुकी रही ।

"एलेन, जोशुई तो पूजने योग्य है।" सैन्धवी ने कहा, "अगर तुम्हारी माँ केवल एक बार उसे देख भर पायें, तो मेरा विश्वास है इसका बहुत प्रभाव पड़ेगा।"

"मैंने सोचा था कि हो सकता है कि बड़े दिनों में मौके ,पर——" एलेन रुक गया।

"मैंने भी यही सोचा था," सैन्धवी ने सहानुभूति के साथ कहा। संवेदना की धनी थी वह। उसकी यह संवेदना उसकी आखों में झलकती थी उसकी मुस्कराहट में, कुर्सी पर बैठे एलेन की ओर झुकने के उसके ढग में उसकी सहानुभूति व्यक्त होती थी। उसे स्वय अपना ध्यान नहीं था। एलेन ने यह सब देखा, तटस्थ दृष्टि से, लेकिन फिर भी कुछ कुछ अवसाद भरे मन से और सोचने लगा कि अगर उसने जोशुई को कभी न देखा होता तो क्या वह सैन्धवी को प्यार कर सकता था या सैन्धवी उसे प्यार कर सकती थी। अगर उसकी माँ को यह विश्वास हो सके कि वे दोनों एक दूसरे को कभी भी प्यार नहीं कर सकते थे तो शायद उनका विरोध कुछ हल्का हो जाय।

"मुझे लगता है कि मैं तुमसे हर कोई बात कह सकता हूँ।" उसने सैन्धवी से कहा।

"बेशक एलेन," उसने उत्तर दिया।

"तुम्हें मालूम है कि मेरी माँ तुम्हारे और मेरे सम्बन्ध में क्या सोचा करती थीं।"

"हाँ बिल्कुल," सैन्धवी ने तुरन्त उत्तर दिया। उसके चेहरे पर कोई लज्जा की लाली नहीं आयी उसकी चमकीली आँखें पहले ही की तरह शान्त बनी रहीं।

"अगर मैं जोशुई से कभी न मिला होता ?" उसने पूछा।

"ओह, इस दृष्टि से मैंने तुम्हारे बारे में कभी सोचा ही नहीं," उसने सबल स्वरों में कहा, "तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो एलेन, और यह तुम्हें मालूम है। तुम्हारे बिना न तो मैं तब अपने जीवन की कल्पना कर सकती थी और न अब। लेकिन मैं यह नहीं समझ सकती कि इस तरह की

पारस्परिक भावना का परिणाम विवाह होता है। सच बताओ तुम क्या सोचते हो?"

"हाँ, मेरा ख्याल है नहीं होता है" एलेन ने कुछ अनमने स्वर में कहा।

"लेकिन तुम इसकी बात ही क्यों चलाते हो?" उसने पूछा।

"अगर तुम मेरी माँ को समझा सको," उसने संकेत किया, "तो क्या इससे हमें मदद न मिल सकेगी।"

सैन्धवी गम्भीर हो गयी, "मैं तुम्हारा आशय समझ रही हूँ।" नाटक में अपना पार्ट खेलने का उसने फैसला किया, "क्यों नहीं? मैं भरसक कोशिश करूँगी। मैं तुम्हारी माँ को उनके विरोध के बावजूद रास्ते पर ले आऊँगी। मैं तुम्हें बताऊँगी कि उनकी पुत्र वधू कितनी प्यारी है—यह जोशुई—मैंने नाम का ठीक उच्चारण किया? देखा जायगा, देखें क्या होता है?"

"सैन्धवी, अगर तुम यह कर सकती—"

"मैं करूँगी," उसने खुले दिल से कहा, "ये आँखें एलेन, कितनी बड़ी कितनी काली काली हैं कितनी सीधी पलकें हैं। क्या वहाँ जापान में सब ऐसे ही होते हैं?"

"जोशुई जापान में मेरी देखी हुई सभी लड़कियों से ज्यादा खूबसूरत है," उसने पति के योग्य सयम के साथ कहा।

"अमरीका में मेरी देखी हुई लड़कियों में भी सब से ज्यादा खूबसूरत," सैन्धवी ने उदारता के साथ कहा, "उसे प्यार करने के लिए मैं तुम्हें दोषी करार नहीं दे सकती। मैं सोलहों आने तुम्हारे पक्ष में हूँ। तुम्हारे विरोधियों के विरुद्ध मैं जिहाद बोलती हूँ।"

"तुम्हारी ताकत बहुत बड़ी है, सैन्धवी," एलेन उत्तेजित हो रहा था। सैन्धवी उसके कृत्यों को उचित बता रही थी और ऐसा लगता था शायद सचमुच वह कर दिखायेगी जो एलेन और उसके पिता नहीं कर सके थे।

"अगर तुम्हारी माँ नहीं झुकतीं," सैन्धवी ने कहा, "तो मैं जोशुई को अपने यहाँ आमन्त्रित करूँगी, उसके स्वागत में एक भोज दूँगी ..."

सब लोगों को उस भोज में निमन्त्रित करूँगी। तब हम देखेंगे क्या होता है।"

"ओह, मेरी समझ में नहीं आता," एलेन कुछ आशङ्कित सा बोला।

"कायरता मत दिखाओ एलेन। हम लोग माँ को मजबूर कर देंगे, बड़े दिन के मौके पर तुम्हें वहाँ आना होगा।"

सैन्धवी ने एलेन का मन सकल्प, आशा और शक्ति से भर दिया। हो सकता है, सम्भव है सच हो जाय।

इसी क्षण जोशुई चाय लेकर आ गयी और सैन्धवी ने उस चाय महोत्सव के सम्बन्ध में पूछना शुरू किया जिसकी बात उसने पढ और सुन रखी थी, लेकिन समझ नहीं पायी थी। और उसे समझाने में जोशुई का सारा सकोच दूर हो गया। अभी तक किसी ने उससे जापान के सम्बन्ध में कुछ न पूछा था। उसे अपने देश, अपने घर, अपने पिता, अपनी माता, अपने फूल पौधे—सब की बात करने में बड़ा मजा आता था। सैन्धवी की जिज्ञासा भी बड़ी मनोहर थी—एक सच्ची हार्दिक उत्सुकता। एलेन दोनों को आश्चर्य से देख रहा था। जोशुई ने जब कहा कि और किसी ने उससे जापान के सम्बन्ध में नहीं पूछा तो उसका तात्पर्य एलेन समझ गया। अमरीकी लोग जिज्ञासु नहीं हैं, यह सच है। वे बताना ज्यादा चाहते हैं, पूछना कम। उन्हें जैसे पूछने का होश ही नहीं आता। एलेन चुपचाप जोशुई के मीठे पर सकोच भरे शब्द सुन रहा था। सैन्धवी के साथ जैसे वह उसे भूल गयी थी। वह केवल सैन्धवी से बात कर रही थी, अपनी बात में रस ले रही थी। अगर इस समय वह अकेली होती? चुपचाप बैठा एलेन उसे देख रहा था। उसका दिल बहुत पिघल गया था, उसके लिए उसे मन ही मन पछतावा हो रहा था कि अक्सर उसका व्यवहार जोशुई के साथ कठोर हो जाता था। क्योंकि जोशुई एलेन के हृदय के उन सदेहों को समझ पाती थी जो उसके दिल में अपने इस कार्य के प्रति थे। ऐसा लग रहा था कि सैन्धवी उन दोनों की सहायता कर सकेगी, लगता था परिणाम शुभ हो सकता है—शुभ होना ही चाहिए।

५

सैन्धवी की उपस्थिति ने जीवन में जो सौरभ भर दिया वह उसके चले जाने के बाद भी टिका रहा। उसकी विशाल सहायता ने एलेन के हृदय को भी कोमल बना दिया और कई हफ्तों बाद आज फिर वह पहले की सी विनत भावना के साथ जोशुई से पेश आया।

'तुम्हारा व्यवहार बड़ा मधुर रहा। भोजन तो तुमने बड़ा ही स्वादिष्ट बनाया। सैन्धवी कह रही थी कि फूल बड़े सुन्दर हैं और मैंने उसे बताया कि तुम्हारी भाँति और कोई उन्हें सजा ही नहीं सकता। सैन्धवी कह रही थी कि तुम बहुत ही सुन्दर हो, बहुत ही प्यारी।"

वह फिर से जोशुई के सच्चे स्वरूप को देखने लगा था। सन्देहों ने उसकी दृष्टि को धूमिल कर दिया था। आज वह उसे सैन्धवी की दृष्टि से देख रहा था। जोशुई सुन्दर थी। उसका सौन्दर्य जादू का सा था—उसका छोटा सा शरीर, छोटे छोटे हाथ, उन छोटे से होने वाले सुन्दर काम सभी कामों में संलग्न हो जाने की उसकी कला सब कुछ एक बार फिर मनोहर बन गया। वह सैन्धवी का भरोसा कर सकता था। अब केवल वक्त की बात थी। सैन्धवी की बात पर माँ जरूर विश्वास कर लेगी।

एक बार फिर उनका जीवन सुखी हो चला। एलेन इतना दयालु बन गया कि जोशुई सलाने के सम्बन्ध में लगभग बता बैठी। उसने सब कुछ बता ही दिया होता यदि उसने यह न देखा होता कि अब भी एलेन का सुख अपने परिवार, अपने घर, अपने शहर और उस दुनियाँ से बँधा है जिसमें वह बचपन में पला था। और जोशुई अपने सुख के सम्बन्ध में तब तक आश्वस्त नहीं हो सकती थी जब तक एलेन अलग एक दुनियाँ न बसा ले—ऐसी दुनियाँ जो उसकी और जोशुई दोनों की हो। जब वह

ऐसा कर ले, जब जोशुई की विश्राम हो जाय, कि अपने भूत से हटकर वह वर्तमान में जम गया है, जब सन्दूक जैसे इस घर को छोड़कर उनका अपना मकान हो जाय जिसमें अपनी एक फुलवाड़ी हो,—तब वह उसे बताएगी। लेकिन क्या यह सब समय रहते हो पाएगा?

"आजकल मैं बहुत खाना खाती हूँ," उसने हँसने की कोशिश करते हुए कहा, "जाने कितनी मोटी होती जाती हूँ। यहाँ अमरीका की आबहवा बहुत अच्छी साबित हो रही है।"

वह अपने बहाने बनाती रही और उन्हीं बहानों के पीछे अपने आप को छिपाती रही। उसकी प्रतीक्षा चल रही थी लेकिन आखिर कब तक? सैन्धवी ने एलेन को एक पत्र लिखा। पत्र मेज पर रक्खा हुआ था। पर जोशुई ने उसे खोलने की हिम्मत नहीं की। इन दोनों—एलेन और सैन्धवी—के बीच कुछ था, बचपन की स्मृतियाँ थीं और उसे कोई अधिकार नहीं था कि दोनों के बीच पड़े। सैन्धवी पर उसे दिल से इत्मीनान था, पर पुरानी स्मृतियाँ तो थीं हीं। जब एलेन घर आया तो उसने पत्र उठाकर उसे दिया। "आज तुम्हारे लिए यह पत्र आया है।"

उसने तुरन्त पत्र खोला और वहीं खड़े खड़े पढ़ने लगा। जोशुई उसकी आँखों के भाव पढ़ती रही। पत्र महत्वपूर्ण था—एलेन के चेहरे पर उसका महत्व साफ झलक रहा था। अचानक उसने पत्र को तोड़ मरोड़ डाला रद्दी की टोकरी में फेंक दिया और सोने के कमरे की ओर चल दिया।

"पत्र मेरे पढ़ने लायक नहीं है?" उसने जाते हुए एलेन से पूछा।

"चाहो तो पढ़ लो," बिना सर घुमाये उसने उत्तर दिया। आखिर किसी न किसी दिन उसे मालूम ही होना है, उकताते हुए एलेन ने सोचा।

जोशुई ने पत्र उठाया, मेज पर सँभाल कर ठीक किया। कितना सुन्दर कागज था, कितना कोमल जैसे हाथ का बना कागज हो, यद्यपि उसे विश्वास था कि अमेरिका में कोई चीज हाथ से नहीं बनती।

सैन्धवी ने अपने बड़े बड़े सुन्दर अक्षरों में मखमली काली रोशनाई से पत्र लिखा था'—

"प्रिय एलेन, जैसा मैंने तुमसे कहा था मैं तुम्हारी माँ से मिलने गयी।

मैंने अपनी प्यारी जोशुई के बारे मे उन्हे सब कुछ बताया, अपनी सारी भावनायें व्यक्त कीं। मैंने उन्हें बीच मे एक शब्द भी नही बोलने दिया—तुम उन्हे अच्छी तरह जानते हो, उनकी आवाज चाँदी की तेज धार जैसी बहती है और कोई भी हो उनकी जबान के सामने टिक नहीं पाता। लेकिन मैंने उन्हें सुनने के लिए मजबूर किया। मैं कहती गयी, वे सुनती रहीं। मुझे लगा कि मैं अपने लक्ष्य की ओर काफी बढ़ गयी, उनके दिमाग पर काफी असर कर लिया और अपने दिमाग मे बड़े दिन के भोजकी योजना बनाती रही। उन्होंने बिना एक भी शब्द बीच में बोले हुए मेरी सारी बातें सुनीं। इसी से मुझे समझ लेना चाहिए था कि उन्होंने अपना आखिरी दाँव सँभाल रक्खा है। तुम जानते हो कि उनका चेहरा कितना साफ चमकदार बन जाता है, कितना दृढ निश्चय भरा, जब वास्तव में ठीक रास्ते पर होती हैं। और यही तो अफसोस की बात है।

एलेन तुमने मुझे कानून के सम्बन्ध में क्यों नहीं बताया था ऐसा कोई कानून है और वही उनका आखिरी दाँव है। उन्होंने कहा, "प्यारी सैन्ववी, अगर मैं वह सब करने के लिए तैयार भी हो जाऊँ जो तुम मुझसे करने के लिए कहती हो तो भी बाधा देने के लिए कानून तो है।"

जब तक मैंने तुम्हारे पिता से बात नहीं कर ली, मुझे उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन क्या यह ताज्जुब की बात नहीं है कि तुम एक देश में पैदा होते हो, पलते हो और तुम्हें वहाँ के कानून का पता ही नहीं रहता? लेकिन सचमुच ऐसा कानून है एलेन। इस राज्य में जोशुई के साथ तुम्हारी शादी हो ही नहीं सकती। तुम्हारे पिता जी कह रहे थे कि इस कानून को बदलना असम्भव होगा। ऐसे परिवर्तन के लिए लोगों को तैयार करना होगा। कानून जन भावना द्वारा बनते हैं और कानून बदलने के लिए जन भावना बदलनी होती है। लेकिन जब से हमारा कन्चा शुरू हुआ—२०० वर्ष पहले—तब से आज तक उसमें कोई परिवर्तन हुआ ही नहीं।

जोशुई का ध्यान मुझे बराबर बना रहता है। तुम तो एक पुरुष हो, और अपने देश मे हो। मुझे तो ऐसा लगता है एलेन, कि ज्यादा अच्छा

हो कि तुम और कहीं अपना घर बसाओ। यह दुनियाँ भी कितनी गन्दी है।

तुम्हारी सर्वदा सी
सैन्धवी

जोशुई ने पत्रका शब्द शब्द सावधानी के साथ पढ़ा और उसके मन मस्तिष्क में उनका अर्थ, उनका आशय भर गया और विष की तरह उसके बदन से छन निकला। अमरीका के द्वार फिर उसके लिए बन्द हो गये थे। एलेन से उसकी शादी हुई ही नहीं थी। कानून ऐसी शादी पर रोक लगाये था। एलेन से उसकी शादी कभी हो ही नहीं सकती। सलोने। सलोने !!

पत्र को उसने छोटी मेज की ड्रार में रख दिया। वह रसोई घर चली गयी। जाकर भोजन तैयार करना शुरू किया। एलेन ने उसे बताया क्यों नहीं ? लेकिन वह समझ कैसे पाती कि उसे बताना एलेन की सामर्थ्य के बाहर था। तो उसके दिल में भी रहस्य था भयावना रहस्य। अब सब कुछ जोशुई की समझ मे आ गया, क्यों वह इतना दुखी रहता था, क्यों इतना अनमना बेचैन। वह बहुत बेचैन रहता था और जोशुई को आश्चर्य होता था कि क्या सब अमरीकी ऐसे ही रहते हैं। शाम को वह उसके साथ भी शान्तिपूर्वक नहीं बैठ पाता था। उसकी बेचैनी निरन्तर बढ़ती जाती थी और आखिरकार उसका उद्वेग फूट पड़ता था जो बड़ा निर्दय होता था तब वह थका हुआ, खोया हुआ सो जाता था और यही चक्र फिर शुरू हो जाता था। अनेक बार उसे आश्चर्य होता था कि एलेन के प्यार में शान्ति क्यों नहीं थी। अब वह समझ गयी। आँसुओं से उसकी आँखें जल रही थीं और आँसू फर्श पर टपक रहे थे। उसका प्यार अब मौन होकर वेदना में बदल गया था। आखिर अब वे करेंगे क्या ?

जब वह सोने के कमरे से अपने कपड़े बदल कर बाहर आया—एक पुरानी कमीज और स्लीपर पहने हुए—तो जोशुई बाँहे फैलाये हुए उसकी ओर बढ़ी।

"ओह प्रिय एलेन," वह सिसकियाँ देने लगी, "मुझे बहुत दुःख है। मेरी गलती है मैंने क्यों तुमसे शादी की। तुम्हें मैंने दुखी बनाया है जब

कि मैं तुम्हें सुखी देखना चाहती हूँ। मैं कैसे तुम्हें सुखी बनाऊँ !"

उसने उसे अपनी बाँहों में कस लिया और बहादुरी से बोला, "हम लोग और कहीं चलकर रहेंगे प्रिये !" हफ्तों बीत गये थे जब से उसने उसे इतने मीठे स्वरों में नहीं पुकारा था, "हम लोग अपने लिए कोई दूसरा घर बनवायेंगे ? वर्जीनियाँ के पुराने घर को हम लोग भूल जायेंगे।"

'लेकिन पूर्वजों ने वह मकान तुम्हारे ही लिए बनवाया था," उसने रोते हुए कहा। "पूर्वज देव तुल्य थे क्या उन्हे भुलाया जा सकता है ?"

उसने जोशुई की पीठ सहलायी, थपकियों से उसे सान्त्वना देता हुआ बोला, "मैं समझता हूँ उन्होंने वह मकान अपने ही लिए बनवाया था और हम अपने लिए अपना मकान बनवा सकते हैं। मै पैसा पैदा करूगा, धनवान हो जाऊंगा। उस मकान से भी विशाल भवन बनवाऊँगा।"

जोशुई को अपने कपोल के नीचे उसका हृदय धड़कता हुआ सुनायी दिया। वह क्रुद्ध था, चोट खाया हुआ था। वह अपना रास्ता बनाना चाहता था, अपनी राह चलना चाहता था। वह चुपचाप खड़ी रही, महसूस करती रही कि एलेन के क्रुद्ध हृदय की धड़कन जोशुई के लिए नहीं, केवल एलेन के ही लिए है। और वह शान्त हो गयी, उसके आँसू सूख गये। कुछ भी हो उसे अपना रहस्य छिपाये रखना है। क्रोध की नींव पर शान्ति और सुरक्षा का महल नहीं बनाया जा सकता। उसे रुककर सोचना होगा, विचार करना होगा कि वह क्या करे। बच्चे की उत्पत्ति कानून के विरुद्ध होगी। वह स्वय तो नितान्त निर्मल, निर्दोष था लेकिन प्यार ने उसे एक अपराधी बना दिया था। निर्दोष तो वे सब ने सब थे पर दण्ड उसे अकेले भोगना था। वे तो एक दूसरे से अलग हो सकते थे, वे एक दूसरे को भूल भी सकते थे। लेकिन सलाने को सर रखने के लिए किसकी गोद मिल सकेगी ? इसके सम्बन्ध में वह कौन-सा उपाय सोचे ?

"अच्छा चलो," उसने कहा। एलेन के धड़कते हुए क्रुद्ध हृदय से अलग हो गयी, आँखें दुपट्टे से पोछ डालीं। "मैंने सुन्दर भोजन बनाया है चलो पहले हम लोग खाना खाएँगे तब स्वस्थ होकर बात करेंगे ! चलो।"

एलेन की अँगुलियों मे अपनी अँगुलियाँ फँसाकर वह उसे ले चली।



दोनों बैठ गये और जोशुई ने मेज पर गरम खाना परोस दिया। भोजन बनाने में उसे बडा आनन्द आता था और परोसी हुई हर तश्तरी में उसके स्वाद और रुचि की झलक रहती थी। रंगों का मिलान, फलों और तरकारियों की सजावट देखते ही आँखों को मोह लेने वाली। एलेन ने आज यह सब देखा और महसूस किया यद्यपि प्राय. वह यह कुछ नहीं महसूस कर पाता था। उसने जोशुई को अपनी बाँहों में समेट लिया और बोला, "जोशुई, इससे हम लोगों पर कोई भी असर पड़ने का नहीं। यह बात मैं शपथपूर्वक कह सकता हूँ।"

जोशुई ने सदा की भांति अपना, मीठा विरोध किया। अपनी सुन्दर छोटी-सी हथेली को एलेन के मुँह पर रखती हुई बोली, "शपथ खाने की जरूरत नहीं है। हम रह रहें हैं, यही काफी है।"

एलेन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जोशुई में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह विश्वास नहीं कर पाता था कि सैन्धवी के पत्र का पूरा-पूरा महत्व जोशुई की समझ मे आ गया है। उसे उसकी समझ पर कभी विश्वास ही नहीं हो पाता था। अमरीकी जीवन के सम्बन्ध में उसके ज्ञान को उसने नापा तोला नहीं था। ऐसा लगता था कि वह सब कुछ जानती है सब कुछ स्वीकार कर रही है और तब अचानक किसी नाज़ुक बात में ऐसा लगता कि वह उसे समझ ही नहीं पा रही है और या समझ पा रही है तो उसे बिल्कुल महत्वहीन समझ रही है। जीवन और जीवन की गति में उसका जो सबल विश्वास था उस पर लगता था, कानून का भी कोई प्रभाव नहीं पडा और तब अचानक उसके मन में निश्चिन्तता भर सी गयी। वह प्रसन्न था कि जोशुई को सब कुछ मालूम हो गया। अब वह प्रतीक्षा कर सकता था, जोशुई जैसा चाहे, वह रह सकता था, अपना काम कर सकता था। और लगा जैसे जीवन की इस सरल गति में समस्या का हल भी मिल जायेगा। उसने भर पेट भोजन, किया और भोजन के बाद उसकी आँखों पर नींद झुकने लगी।

"बहुत सुन्दर भोजन बनाया प्रिये," उसने धीमे से कहा, फिर कोच पर लेट गया और सो गया।

६

जोशुई ने एलेन से कभी नहीं पूछा कि वह क्या करेगा। वह उसे कभी बुरे दिन की याद न दिलाती, सैन्धवी के पत्र की चर्चा न करती। उसे लगता कि जोशुई निश्चित रूप से उसे प्रसन्न करने की कोशिश करती हुई जीवन बिता रही है, उसके मस्तिष्क में कोई चिन्ता नहीं है और उसके जीवन में शान्ति छा गयी और यह सब देख सोचकर, उसे बड़ी सान्त्वना मिली। जोशुई अपने जापानी ढङ्ग से यह सब समझ रही थी। उसके हृदय में एलेन के प्रति कृतज्ञता का भाव भर गया। और उसने उससे कुछ भी माँग न करने का निश्चय किया। बड़े दिन के आते-आते एलेन को अपने पिता का पत्र मिला जिसमें लिखा था कि अगर वह केवल एक दिन के लिए भी अकेले घर आ सके तो वे लोग बहुत खुश होंगे।

"मेरा अनुमान है कि बौद्ध होने के कारण तुम्हारी पत्नी को इस दिन से कुछ वैसा लगाव न होगा जैसा हम लोगों को है," उसके पिता ने जैसे माफी-सी माँगते हुए लिखा था, "अकेला होता तो मैं स्वयं तुम्हारे पास आता। लेकिन तुम्हारे यहाँ आने से तुम्हारी माँ भी बड़ी खुश होगी। उन्होंने मुझसे कहा नहीं है, यह मेरा अपना विचार है।"

एलेन पत्र जोशुई के पास ले गया और उसने उसे पढ़ा। उसके चेहरे पर किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं आया। "बेशक, यह तुम्हारा कर्तव्य है," उसने तुरन्त कहा, "तुम्हें जरूर जाना चाहिए। मैं यहाँ बिल्कुल प्रसन्न रहूँगी। हो सकता है मैं भी अपने मित्र जापानी दम्पत्ति कि यहाँ भोजन पाने का निमन्त्रण पा लूँ तो अपने पिता की आज्ञा मानो एलेन और मुझे भी उससे खुश होने दो।"

लेकिन अपने मित्र जापानी दम्पति के यहाँ वह नहीं गयी यद्यपि एलेन

को गये दिन पर दिन बीत रहे थे। कोई भी उससे मिलने नहीं आता था, वह बिल्कुल अकेली थी हाँ, सलोने के साथ। और इस प्रकार एकान्त में वह उससे बातें करती, उसे समझाती कि वह किंकर्तव्य हो रही है। घुटने टेक कर वह अपने सलोने से माफी माँगती जैसे सलोने पैदा हो चुका हो, बच्चा होकर आदमी बन गया हो और उसके सामने खड़ा हो।

"तुम समझते हो प्यारे सलोने, यह जो कुछ जैसा है, मेरी मर्जी से नहीं है।" इस प्रकार वह अपने एकान्त में अपने सलोने से बात करती, अनुभूति से बोझिल उसके शब्द सलोने के प्रसुप्त मस्तिष्क मे बैठते जाते। "दो बढ़िया मकान हैं," वह सलोने को बताती, "जिनमें से हर किसी में पैदा होने का तुम्हें हक है, मेरे पिता का मकान और तुम्हारे पिता के पिता का मकान। दो में से किसी में भी तुम्हारे लिए कोई जगह क्यों नहीं है, यह इस समय मैं तुम्हें नहीं समझा सकती। जापान में मेरे पिता, तुम्हारे नाना, मुझसे नाराज हैं और जब उन्हें इस बात का पता चलेगा कि यहाँ अमरीका में बौद्ध धर्म का कोई महत्व नहीं है, यहाँ तो कानून है जिसका महत्व है, तो निश्चय ही वे बहुत अधिक नाराज होंगे। उन्हें उत्तर देने लायक मेरे पास कुछ नहीं है क्योंकि वे ठीक हैं और मैं गलत हूँ। मैंने सोचा था चूँकि मैं यहाँ एक अमरीकी नागरिक के रूप में पैदा हुई थी, इसलिए मैं ठीक हूँ। लेकिन सलोने यहाँ एक कानून है जो मेरे और तुम्हारे खिलाफ है। मैं उस कानून को बदल नहीं सकती, तुम्हारे पिता उसे नहीं बदल सकते। इसीलिए मैं तुम्हारी बात उन्हें बता नहीं सकती। अब मुझसे मत पूछो क्यों, बस मुझे माफ कर दो।"

प्रायः हर दिन वह इसी प्रकार के शब्द एकान्त में अपने सलोने से कहती। कानून!—उसके रास्ते में वही तो चट्टान बनकर अड़ गया था, एक बाधा, ऐसी अटल जिसे प्रेम भी नहीं हटा पाता था। जाशुई अब समझ गयी थी कि एलेन केवल उसे ही नहीं प्यार करता, वह अपने पूर्वजों को भी प्यार करता है, अपने माता पिता को, अपने घर को, और जहाँ पैदा हुआ था, उस स्थान को भी प्यार करता है। कोई बुराई नहीं थी उसके इन प्यारों में और इसीलिए वह उसे कोई दोष नहीं देती थी।

लेकिन एलेन को वे उससे अलग कर रहे थे और उसका उनसे कोई अपना सम्बन्ध नहीं था। यह जरूरी था कि एलेन अपने जातीय ढाँचे के भीतर ही प्यार करे और जोशुई उसके लिए विदेशी थी। वह समझ चुकी थी कि एलेन में इतनी दृढता नहीं है कि वह अतीत से अपना नाता तोडकर अकेले उससे अपना नाता जोडे, उसके साथ एक ऐसी नयी दुनियाँ बसाये जिसको दो में से किसी ने भी पहले न देखा जाना हो। वह स्वय तो ऐसा कर सकती थी पर एलेन नहीं कर सकता था। उसे दोष भी नहीं देना था और जोशुई अपने सलोने को यही समझाती।

सारे समय वह अकेली भी नहीं रहती। वह अपना भोजन भी भली भाँति करती क्योंकि जानती थी कि उसके भीतर सलोने एक पुष्ट शिशु के रूप में बढ रहा है। लेकिन एलेन के लौट आने पर वह क्या करेगी? अपने आप को हमेशा के लिए उससे छिपाते रहना तो असम्भव था। इस प्रश्न का उत्तर वह सोच ही न पाती थी और दिन बीतते चले जाते थे।

३१ दिसम्बर को जब वर्ष समाप्त हो रहा था और नये वर्ष का प्रारम्भ होने वाला था, जोशुई को दरवाजे पर खटखटाने की आवाज सुनायी दी। एलेन घर से वापस नहीं आया था इसलिए कुछ सशंकित सी जोशुई बड़ी सावधानी से दरवाजा खोलने के लिए बढी यद्यपि यह भी बहुत सम्भव था कि शायद उसके मित्र जापानी दम्पति इस अवसर पर उसके लिए कोई उपहार लाये हों। बहुत सँभलकर उसने दरवाजा खोला। कुबेर खडा था! जोशुई ने उसे देखा वह लम्बा तगडा पुरुष, ठीक पश्चिमी पोशाक में, सर पर हैट हाथों में दस्ताने, एक हाथ मे बेत, उसके लम्बे कोमल चेहरे पर बिखरी हुई मुस्कान और एक हाथ म फूलों का बक्स।

"कुबेर!" वह चीख उठी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था और अचानक वह हर्ष विभोर हो उठी थी।

"मैंने तो आपको बतलाया था कि व्यापार के सिलसिले मे मैं न्ययूार्क जा रहा हूँ"। उसने कहा।

"ओह, आइए, अन्दर आइए," वह बोली। उसे इस बात की खुशी थी कि वह अपनी जापानी घाँघर पहने थी। उसने यह पोशाक एलेन



के जाने पर पहन ली थी। उसके मन में इसके पहनने की ऐसी भावना उठी थी जिसे वह स्वयं ही समझ सकी थी। अभी अभी उसने अपने बाल सँवारे थे क्योंकि दोपहर भर सोकर अभी उठी थी। लेकिन घर में इस समय खाने के लिए कुछ न था, थोड़ी-सी मिठाई तक न थी।

कुबेर कमरे में आ गया था। अपना कोट उतार रहा था, अपनी हैट, अपने दस्ताने, अपना बेत यथा स्थान रख रहा था।

अपनी सम्भावना भरी वाणी में उसने पूछा, "क्या आप अकेली हैं?"

"एलेन कुछ दिन के लिए अपने घर गये हैं" उसने सरल भाव से उत्तर दिया।

"और आप?"

"ओह, मैं बिल्कुल अच्छी हूँ," उसने बड़े रोब से उत्तर दिया। "बिल्कुल अच्छी हूँ।"

"लेकिन आप उनके साथ उनके घर नहीं जातीं?"

वह उसके सामने बिल्कुल शान्त महान् बना खड़ा था।

जोशुई ने अपना सिर हिलाया, "अभी नहीं।"

"ओह," उसने कहा। वह बैठ गया और जोशुई भी छोटे वाले कोच पर बैठ गयी। "अच्छा!" वह उसने गुना। जोशुई पर उसकी दयामयी दृष्टि जम-सी गयी, "कृपा करके मुझे सच-सच बताइए। हम लोग तो पुराने मित्र हैं।"

"पहले मैं फूलों को पानी में रखूंगी," वह बोली। उसने फूलों का बक्स ले लिया जो अब तक कुबेर के ही हाथ में था और देखा कि कुबेर उसके लिए चीन की कमलिनी लाया था जिसकी मनोहर सुगन्धि फैल रही थी। उसे क्योटो की याद आ गयी—इस मौसम में मिलनेवाले फूलों की उसे याद आ गयी।

"मैं तो डर रही थी कि शायद लाल गुलाब हों," वह बोली।

कुबेर ने अपना सर हिलाया, "क्या मैं ऐसी मूर्खता कर सकता हूँ?"

और तब कुबेर ने वह सब देखा समझा जो एलेन नहीं समझ सका

था। बच्चे का अस्तित्व वह भाँप गया।

"अच्छा," वह धीमे स्वर में बोला, "तो आप बिलकुल अकेली नहीं हैं। एक और भी कोई नन्हाँ आपके साथ है।"

उसने फूलों को सँवारते हुए उन्हीं पर अपना सर झुका दिया। "एलेन को पता नहा है।"

कुबेर का आश्चर्य चेहरे पर झलक आया। उसकी आँखें फैल गयीं और फैले हुए होठ कुछ सिकुड़ गये। "यह कैसे कि पति को पता नहीं है! क्या उन्हें सन्तान की इच्छा नहीं है?"

तब वह उस मेज की बगल में बैठ गयी जिस पर फूलों का गुलदस्ता रक्खा हुआ था और उनकी सुगन्धि अपने मन मस्तिष्क मे भरती हुई वह उस कानून के सम्बन्ध में सब कुछ बता गयी। थोड़े ही शब्दों मे उसने सब कुछ कह डाला। बात बिल्कुल सीधी, स्पष्ट और अटल थी। उसे ऐसा लग रहा था कि वह इस पुरुष से सब कुछ बड़ी आसानी से और बिना आँखों में आँसू लाए हुए सब कुछ कह सकती है। वह समझ रहा था और बिना किसी प्रकार की बाधा दिये चुपचाप सुन रहा था। उसके बड़े शान्त चेहरे पर जब तब हल्की-सी प्रतिक्रिया झलक जाती थी।

जब जोशुई की बात समाप्त हो गयी, कुबेर ने एक गहरी साँस ली और कुर्सी की ओर पीछे झुक कर बैठ गया। "फिर भी क्या यह उचित है कि आप अपने पति को यह सब न बतायें। हो सकता है कि बच्चे की बात उन्हें एक दम बदल दे।"

"अरे, नहीं," वह तेजी से बोली, "आप नहीं समझते। यहाँ सन्तान का इतना महत्व नहीं है। सन्तान यहाँ सब कुछ बदल नहीं सकती जैसा हम लोगों के बीच बदल देती है। यहाँ एक पीढी दूसरी पर आश्रित नहीं रहती।"

"लेकिन फिर भी—"

"नहीं," उसने कहा। वह बहुत तेज और दृढ हो रही थी। उसे लगा कि वह अपने मन का सङ्कल्प निश्चित कर चुकी है। वह एलेन को सलोने

के सम्बन्ध में कभी कुछ नहीं बतायेगी।

"तो आप क्या करेंगी?" कुबेर ने कोमलता के साथ पूछा। उसका दिल भर आया था। जो कुछ उसने यहाँ देखा उससे वह स्तम्भित हो गया था।

कुबेर ने जोशुई को अपने प्रसन्न गम्भीर ढंग से प्यार किया था और जब उसे मालूम हो गया कि वह उसकी नहीं रही तो उसे दुःख हुआ था पर वह दुःख क्रोध से मुक्त था और अधिक दिन टिक भी नहीं सका। और अब वह दुःख बिल्कुल शान्त हो गया था, बदल गया था उसके इस निश्चय में कि अब वह किसी दूसरे से शादी ही नहीं करेगा। लेकिन उसे यह भी आशा थी कि उसका यह आवेग जनित निश्चय भी अपने आप बदल जायगा और जब वह जोशुई को दो एक बार उसके घर में प्रसन्न देख लेगा तब उसका हृदय किसी उपयुक्त समझदार लड़की को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जायगा। निश्चय ही उसके माता पिता उसके योग्य वधू खोज निकालेंगे। वह उनकी आज्ञा मानेगा, उनके खिलाने के लिए पौत्र देगा और पीढ़ी का परिवार तैयार करेगा। इस पुरुष के सन्तान होनी ही चाहिए।

अब उसने जोशुई को आज जैसा जिस रूप में देखा, उससे उसकी सारी योजनायें चकनाचूर हो गयीं। वह इतना उद्विग्न हो गया जितना पहले कभी न हुआ था।

"मैं नहीं समझ पाती कि मुझे क्या करना चाहिए," जोशुई ने फूलों पर अपना सर झुकाये हुए कहा, "मैं केवल इतना जानती हूँ कि मुझे क्या नहीं करना।"

एक ठंढी साँस लेते हुए कुबेर ने कहा "ज्यादा अच्छा आपके लिए यह है कि आप अपने पिता के घर लौट जाइए। कम से कम बच्चे को जापान में जन्म लेने दीजिए। कहाँ ऐसे बच्चे हैं—अनाथालयों में—आप समझती हैं। अमरीकियों से ऐसे अनेक बच्चे वहाँ पैदा हुए हैं। यह भी उन्हीं में से एक हो जायेगा।"

"नहीं," उसने फिर कहा।

"यह भी नहीं !" कुबेर ने कहा।

दोनों शान्त बैठे रहे। दोनों पर उस अनिवार्य जन्म का भयानक बोझ छा रहा था। जोशुई देख रही थी कि कुबेर की आत्मा उसकी ओर अपनी बाँह फैला रही है और उसके हृदय में द्वन्द्व चल रहा है।

"और अपनी बात कहिए," कुछ देर बाद उसी शान्त धीमे स्वर में कुबेर ने पूछा, "क्या आप अब भी उस अमरीकी को प्यार करती हैं ?"

प्रश्न सुनते ही जोशुई ने तेजी से अपना सर ऊपर उठाया। प्रश्न कुबेर ने किया था पर स्वयं जोशुई ने अनेक बार यह प्रश्न अपने आप से किया था। बेशक वह एलेन को प्यार करती है। लेकिन अब वह निर्जीव प्रेम था। वह हमेशा उसे प्यार करेगी लेकिन नाउम्मीदी के साथ। दर असल उन्हें एक दूसरे से मिलना ही नहीं चाहिए था। वे एक दूसरे से दूर उत्पन्न हुए थे और उन्हें एक दूसरे से दूर धरती के दो विरोधी छोरों पर जीना और मरना चाहिए था। देवताओं ने ही उन्हें एक दूसरे से अलग पैदा किया था। किन्तु उन्होंने देवताओं की अवहेलना की और उनके नियमों को तोड़ा। उसके मन में कोई विद्रोह नहीं था, कोई निराशा नहीं थी। हाँ दुःख था, उसके जीवन की गहराई में समाया हुआ।

"मेरे लिए उसे प्यार करने का अब कोई अर्थ नहीं रहा," उसने सरल भाव से कहा।

दोनों फिर देर तक चुपचाप बैठे रहे, दोनों के मन में उधेड़ बुन चलती रही। आखिरकार संकोच करता हुआ बड़ी सावधानी से कुबेर बोला, "मैं कुछ कहना तो चाहता हूँ पर समझ नहीं पाता कि कैसे कहूँ। क्षमा करिएगा यदि मैं कह न सकूँ और मौन रहूँ।"

"कृपया कहिए," उसने उत्तर में कहा। उसने अपना सर अब भी नहीं घुमाया था।

कुबेर ने अपने होंठों को गीला किया, "यदि कभी आप अकेले जापान लौटना चाहें तो मेरे पास आने की कृपा करें।"

अचानक कमलिनी गुच्छ की मधुरता बहुत बढ़ गयी। उसने गुच्छ को एक ओर खिसकाया। वह तुरन्त समझ गयी अर्थात् यदि उसके साथ



बच्चा न हो तो कुवेर उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए तैयार था।

"मेरे पास बच्चा है," उसने कहा।

कुवेर ने अपनी दृष्टि उसकी दृष्टि से नहीं मिलायी। अपने घुटनों पर गुये हुए अपने पीले हाथों को वह देखता रहा। "मैं बहुत चाहता हूँ कि इस बच्चे को मैं ले सकूँ," उसने कहा 'सचमुच मैं चाहता हूँ कि यह हो सकता। यदि मैं अकेला होता, मेरे माता पिता, मेरे पूर्वज न होते तो बेशक मैं ऐसा कर सकता। कम से कम मेरा विश्वास है मैं ऐसा कर सकता।"

कुवेर ईमानदार था, हृदय से बेचैन था और चाहता था कि उदार बन सके, दयालु बन सके। जोशुई यह सब समझ रही थी, लेकिन इससे उसकी वेदना का बोझ कम नहीं हो रहा था। "मैं आपको धन्यवाद देती हूँ," उसने कहा, "सम्भव है कि कोई समय आये जब आपके इन शब्दों को मैं याद करूँ। अभी तो कुछ कह नहीं सकती।"

वह सकल्प पूर्वक उठी। एक शब्द भी अधिक उसके लिए असह्य था। उसकी सारी चेतना दुःख से भर गयी थी। एक शब्द भी अधिक कहा जाता तो वह फूट पड़ती।

"आपके लिए मुझे चाय बनानी चाहिए," उसने स्पष्ट स्वर मे कहा और रसोई घर की ओर मुड़ी, "कम से कम चाय तो मेरे पास है ही। कुछ इतनी सुस्त हो गयी हूँ कि मिठाइयाँ लेने भी बाहर नहीं जाती।"

कुवेर ने उसे चाय बनाने दी और खुले हुए दरवाजे से उसको देखता रहा। उसकी समझ मे न आया कि उसे जोशुई की मदद भी करनी चाहिए क्योंकि वह सेवा पाने का अभ्यासी था और जोशुई ने इससे भिन्न और कोई आशा भी उससे न की थी। चाय बनाकर वह ले आयी ताजी बढ़िया हरी चाय, जो वह अपने लिए खास तौर से रखती थी। हरी चाय, जापनी चाय, पोषक तत्वों से भरी थी और वह खूब पीती थी। कुवेर का प्याला भरने के बाद उसने खुद भी चाय पी।

"मेरे माता पिता के सम्बन्ध में बताइए," उसने कहा, "उन्होंने मुझे पत्र नहीं लिखा यद्यपि मैं दोबार उन्हें पत्र लिख चुकी हूँ।"

"मुझे मालूम है" उसने उत्तर दिया "मैं यहाँ आने के पहले आपके पिता जी से मिलने गया था। उनका हृदय अब भी रोष से भरा है। वह अब भी उचित नहीं समझ पाते कि आपको उनकी आज्ञा का उल्लघन करना चाहिए था।"

जोशुई ने अपना प्याला रख दिया। "कृपया उनसे कह दीजिएगा कि उन्हीं का कहना ठीक था।" उसने साहस के साथ कहा।

कुबेर को आश्चर्य हो रहा था, "जोशुई यह आप कह रही हैं जो इतनी गर्वीली थीं!"

"अब मुझमें कोई अभिमान नहीं रह गया," विनत वह बोली, "मैं अमरीका के कानून से टक्कर नहीं ले सकती। वह कानून लोगों के दिलों में जमा बैठा है। वह उनकी भावना बन गया है। ये लोग अपने कानून अपने दिलों से बनाते हैं और इनकी भावनायें ऐसी ही हैं। मै क्या कर सकती हूँ? मैं कहाँ जाऊँ कि यह बच्चा जन्म ले? अपने पैर टेकने के लिए उसे कहीं कोई जगह नहीं है।"

ओह जैसे ही उसने यह कहा उसका सारा गर्व गल गया और वह अपना काबू खो बैठी। जिस मुर्दा शान्ति में उसने अपने इतने दिन बिताये थे वह शान्ति उसके हृदय से दूर हो गयी और वह जोर से रो पड़ी। अपने हाथों मे अपना सर छिपाकर वह फूट फूटकर रोने लगी।

कुबेर की परेशानी का कोई छोर न था। उसने अपना प्याला रख दिया खड़ा हो गया और खड़ा खडा हाथ मलता रहा। उसका मन सोच ही नहीं सकता था कि वह जोशुई को छुए। "देखिए" उसने कहा, "देखिए यह आपके लिए बहुत खतरनाक बात है। जोशुई खुद आपके लिए यह बहुत बुरी बात है।"

वह खड़ा उसास भरता हुआ कुछ अस्फुट शब्द बोलता खडा प्रतीक्षा करता रहा और तब अचानक जोशुई शान्त हो गयी। लज्जा ने वेदना पर विजय पायी। अपनी बाहों से आँखें पोछ डालीं। कुबेर को राहत मिली। जोशुई बोली "आप यहाँ अमरीका मे रुक रहे हैं?"

"कई महीने" उसने उत्तर दिया। "और अब तो मै बेशक तब तक

रुकूँगा जब तक आप यह निश्चय न करलें कि आप को क्या करना है। कृपया मुझे सूचित करते रहिए कि आप क्या कर रही हैं। कम से कम इसकी तो मैं प्रार्थना करता हूँ। यह मेरा पता है। अगर मैं कहीं बाहर भी जाऊँगा तो नजदीक ही के किसी शहर में व्यापार के सिलसिले में चन्द दिनों के लिए और मैं उस शहर का पता घर पर छोड़ जाऊँगा ताकि आप मुझ तक पहुँच सकें।"

उसने वह कागज ले लिया और उसे कोने की मेज के नीचे एक खाली डिब्बे में रख दिया। "अगर मेरा पत्र आपको न मिले तो समझ लीजिएगा कि मुझे आपको पत्र देने की आवश्यकता नहीं पड़ी।"

"लेकिन आपको कम से कम सूचना तो मुझे देनी ही चाहिए" उसने जोर दिया। जोशुई ने वचन दिया क्योंकि कुबेर ऐसा वचन लिए बिना जाने के लिए तैयार नहीं दिखायी देता था। "अच्छी बात है। मेरा जो भी निश्चय होगा आपको लिखूँगी। पर हो सकता है निश्चय जल्दी न हो।"

"लेकिन आपका वचन मेरे पास है" उसने उत्तर दिया।

तब कुबेर चला गया सावधानी से अपनी हैट अपने दस्ताने और अपना बेंत लेकर। दरवाजे पर दोनों ने एक दूसरे को झुककर नमस्कार किया। वह खड़ी प्रतीक्षा करती रही जब तक कुबेर सवारी पर बैठ कर आँखों से ओझल नहीं हो गया और सवारी पर बैठने के समय भी दोनों ने फिर झुक कर एक दूसरे को नमस्कार किया। तब वह वापस अपने कमरे में चली गयी और दरवाजा बन्द कर लिया। अब उसे बिल्कुल साफ समझ में आ रहा था कि उसे क्या करना है—केवल अपने सलोने के लिए। सचमुच उसके लिए दुनियाँ में कोई स्थान न था।

७

जाशुई ने अपने लज्जा से लाल चेहरे का सभाँलते हुए कहा था, "एलेन जब तक तुम अपने माँ बाप के घर म रहो मैं तुम्हें पत्र नहा लिखूँगी।"

वह अपनी धुली हुई कमीज अपने सूट केस म रख रहा था। "क्यों नहीं लिखोगी?"

"मेरा ख्याल है पत्र लिखने से तुम्हारी माता की आज्ञा का उल्लघन होगा—उनकी इच्छा का उल्लघन हागा," उसने उत्तर दिया था। "इस तरह से मैं उनके उस घर म छिप कर प्रवेश करूँगी जिसमें प्रवेश करने से वे मुझे रोकती हैं।"

उसने विरोध किया, 'तुमतो बेवकूफी की बात करती हो। मरे जाने से तुम नाराज तो नहीं हो रही?"

'नहा, नहीं, एलेन सचमुच मै तुम्हारी माँ के प्रति विनत रहने के लिए ही पत्र नहीं लिखूँगी। मैं उनकी आज्ञा का पालन करना चाहती हूँ।"

इस प्रकार एलेन का जोशुई के पत्र की आशा न थी। पहले पहल तो उसने इस सम्बन्धां म कुछ सोचा भी नहीं था। जब स्वागत से भरे हुए अपने घर में वह प्रविष्ट हुआ तो पुराना बचपन का उत्साह उसमें फिर भर गया। एक सान्त्वना मिली, एक विश्वास जगा कि यहाँ सब कुछ ठीक है। बीते दिनों म जब वह अपने सैनिक शिक्षा केन्द्र से बडे दिन की छुट्टियों में घर आता था तो इसी प्रकार उसका मन खिल उठता था, उसके दिल और दिमाग का बाझ उतर जाता था। यहाँ इस घर में शान्ति थी, अनुमोदन था, वह सब का प्यारा था।

सब कुछ ठीक वैसा ही था जैसा पहले रहता था। जब उसकी माँ तेजी

से खुले हुए दरवाजे से उसकी ओर बढ़ी तो वह पुराने अभ्यस्त और उद्वेलित प्रेम के साथ उनकी ओर मुड़ा। माँ उसकी ओर बाँहे फैलाये हुए आगे बढ़ीं।

"मेरे प्यारे बच्चे!"

अपनी बाहों में उन्होंने एलेन को भर लिया और वही मोहक सुगन्धि फिर एलेन के अन्दर भरने लगी।

"अच्छा माँ, तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं आ रहा हूँ। मैंने तो सोचा था तुम्हारे लिए तो मेरा आना एक आश्चर्य होगा।"

माँ ने उसे अपने से अलग हटाया और हँसने लगीं। उसका सुन्दर चेहरा चाँदी के से बालों के गुच्छे के नीचे विजय भरे उल्लास में खिल उठा।

"तुम्हारे पिता जी मुझसे बहाना नहीं कर सकते, एक क्षण के लिए भी नहीं। मैं जानती थी कि तुम बड़े दिन में आओगे। चलो भीतर चलो। आज की रात का उत्सव अभी समाप्त नहीं हुआ, अभी अलाव जल रहा है। पिछले वर्षों में जब तुम घर से बाहर रहे, यहाँ यह उत्सव बड़ा फीका रहा। सैन्धवी भी यहीं है, चाय पीने आयी है।"

सैन्धवी का नाम माँ ने बड़े चलते ढंग से लिया। उसे सैन्धवी के आने का कारण सोचने के लिए मौका ही नहीं दिया। वह तो चाय पीने आयी है। "सैन्धवी एलेन आ गया। मैंने तुमसे कहा था कि वह आ रहा है मैं जानती थी।"

सैन्धवी अवसर के उपयुक्त कालासूट और लाल जर्सी पहने हुये थी। सदा की भांति एलेन से वह ऐसे ही मिली मानों अभी दस मिनट पहले वे साथ ही रहे हों।

"बैठो एलेन," सैन्धवी ने कहा, "मैं अभी चाय उँडेल रही थी। तुम्हारी माँ पर सुस्ती का दौर आया हुआ है।"

"सुस्त मैं इसलिए हूँ कि बहुत प्रसन्न हूँ," माँ प्रसन्न स्वर में बोलीं।

पढ़ने के कमरे का दरवाजा खुला स्लीपरों की आवाज सुनायी दी और

एलेन के पिता आ पहुँचे। "कौन कहता है चाय उड़ेली जाय, बेकार गरम पानी, हरी से कहो कि मेरे लिए आसव की बोतल खोले। एलेन, तुम्हें मेरे साथ पीना होगा चाय महिलाओं के लिए छोड़ दो।"

"अच्छी बात है पिता जी।" दोनों ने तेजी से हाथ मिलाया।

हरी इतनी जल्दी आसव ले आया जैसे वह पहले ही से तैयार रहा हो। आकर उसने अपने छोटे मालिक—एलेन को सलाम किया, "कहिए मालिक, अच्छे तो हैं? आपका घर आना कितना अच्छा लगता है—"

तो बजानिया राज्य के इस छोटे से कस्बे में जीवन का इतना पूर्ण विकास अब भी सुरक्षित था और एलेन ने सोचा कि वह अपनी पूरी ताकत से इस अपूर्ण दुनियाँ में इस पूर्णता को सुरक्षित रक्खेगा। पूर्णता एक अनमोल चीज है, एक अप्राप्य चीज, उसे खोया नहीं जा सकता। तूफानी समन्दर में वह एक द्वीप है। विध्वंस की बढ़िया में वह सुरक्षा है। अचानक एलेन को कमरे की सारी सुन्दरता का सुखद और तीव्र बोध होने लगा, पीले गुलाब और अन्य विविध रंगों के गुलाब, जिन्हें उसकी माँ ने उसी देश में लगाया, सींचा और खिलाया था जिसमें अणु बम भी बना था, पच्छिमी खिड़की पर टँगा हुआ हल्के नीले रंग का पर्दा, साटन से ढकी हुई कुर्सियाँ और सोफे, पालिश की हुई फर्श और उसपर बिछी हुई दरीया, एक के बाद दूसरा खुलता हुआ कमरा—सबके सब स्वच्छ चमकते हुए, बाहर से ऐसे लग रहे थे जैसे इन्हें ऐसा रखने में न किसी को कोई परिश्रम करना पड़ता है और न कोई खर्चा होता है। लेकिन एलेन जानता था कि उनके पीछे कितना परिश्रम और व्यय है। और उसे अपनी इस सारी विरासत को पाने का अधिकार भी था, बशर्ते वह खुद ही इस पर लात न मार दे। कितनी बेवकूफी होगी यह।

सैन्ववी गुलाब की लकड़ी से बनी हुई छोटी सी मेज के पास बैठी हुई थी। इस मेज पर चाँदी के चाय के बर्तन रक्खे हुये थे। यह सब एलेन का था और सैन्ववी भी हमेशा उतनी ही सुन्दर दिखायी देगी जैसी आज दिखायी दे रही है। और वह यहाँ की है। कानून यहाँ अपने साथ है। वह संरक्षक और निषेधात्मक कानून! आवश्यकता पड़ने पर यहाँ वह इस

कानून की शरण ले सकता था।

दिन अपनी चिरन्तन गति से बीतते चले गये। एलेन बड़े दिन के उत्सव में शरीक हुआ, छोटे बच्चे की तरह खेला, हँसा। घर की पुरानी बहुमूल्य चीजें—पूर्वजों की यादगारें उसके सामने एक एक करके के लायी गयीं उस हँसी खेल के दौरान में ऐसे कि उसे पता न चले। और अचानक उसने देखा कि उसके मोजे की नोक पर उसके बाबा की टाई में लगाया जाने वाला मोती गुथा है। वह घर की एक बहुमूल्य चीज था। इस लापरवाही पर उसकी आँखें शिकायत से भर गयीं।

माँ ने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा। "एक न एक दिन यह सब तुम्हें मिलना ही है तो अभी क्यों न मिल जाय! मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि सब कुछ किसी एक दिन, एक बारगी तुम पर लाद दिया जाय। मैंने तुम्हारे पिता से कह दिया है कि मुझे जो कुछ भी तुम्हें देना है वह सब अभी से तुम्हारे नाम कर दिया जाय। जल्दी ही हम लोग किसी दिन इस मसले पर बात करेंगे।"

लेकिन वह दिन बढ़ता ही चला गया। कल फिर कल और फिर कल—और आखिरकार मालूम यह हुआ कि देर इसलिए हो रही है कि उनका पारिवारिक वकील बड़े दिन की छुट्टी में कहीं बाहर गया हुआ है और नये वर्ष के प्रारम्भ के पहले वापस नहीं आयगा। और फिर नया दिन, एलेन को माँ ने कहा, उतना ही महत्व पूर्ण था जितना कि बड़ा दिन क्योंकि उस दिन नाच होने वाला था। सैन्धवी उस दिन नृत्य का आयोजन कर रही थी।

सो सैन्धवी के साथ नाचते हुये यह वार्तालाप हुआ।

"हम लोगों ने ऐसा सँभाल लिया है कि चर्चा ही नहीं चली," सैन्धवी ने कहा।

"मैंने तो कुछ ऐसा कर लिया है कि सोचता ही नहीं," उसने उत्तर दिया।

"अब भी तुम्हारी कोई योजना नहीं बनी!"

"कोई नहीं"

"और उधर तुम्हारी माँ अपना जाल बिछा रही हैं।"

"क्या जाल बिछा रही हैं ?"

"बेशक जाल बिछा रही हैं। जब एक औरत किसी पुरुष को प्यार करती है, भले ही वह उसका बेटा क्यों न हो—हाँ तुम्हारी माँ तुम्हें केवल इसलिये प्यार करती हैं कि तुम उसके बेटे हो और वह तुम्हें इतना प्यार करती हैं जितना कभी किसी को नहीं किया—तो वह अपना जाल बिछाती ही है।"

"क्या तुम भी जाल बिछाने वाली हो ?"

"मैं कभी जाल बिछाने की कोशिश नहीं करती।" उसने भद्दे ढंग से उत्तर दिया।

एलेन को सैन्धवी की नीली आँखों में एक अद्भुत शत्रुता सी दिखायी दी। वह निर्भय उसकी ओर देख रही थी, कभी निगाह बचाने या छिपाने की कोशिश नहीं करती थी लेकिन उसकी निगाह में कोमलता नहीं थी।

एलेन नाचता जा रहा था और मन ही मन सोचता जा रहा था कि उसे न्यूयार्क लौट जाना चाहिए था और इस विरासत के लिये उसे रुकना नहीं चाहिए था। लेकिन उसके दिल में एक चोर छिपा बैठा था—एक लालच कि अगर इस समय मेरे पास पैसा काफी हो जाता है तो जोशुई के साथ अपनी शादी के लिए मैं जोर दे सकूँगा और शायद अपने अतीत से अपनी जड़ें उखाड़कर अपना नया घर बसाने में, अपनी नयी दुनियाँ बनाने में इस सम्पत्ति से मदद मिलेगी। यहाँ पर रुके रहना इसीलिए उचित मालूम होता था। इस नृत्य में सैन्धवी के साथ उसका जो शारीरिक सान्निध्य हुआ उससे उसके मन में एक बेचैनी सी उत्पन्न हुई। सैन्धवी के असाधारण गाम्भीर्य ने, उसकी सावधान और सतर्क भावभंगी ने उसके मन को विचलित कर दिया था। नृत्य के बाद एलेन ने जोशुई को पत्र में यह सब लिखा और इस तरह अपना मन हल्का किया।

जोशुई ने उत्तर नहीं दिया, लेकिन उसे उत्तर की आशा भी नहीं थी। थोड़े ही दिनों में वह उससे जा मिलेगा। नये वर्ष का उत्सव भी समाप्त हो चला। मित्रों, रिश्तेदारों और परिचितों का आना, सबसे मेल

मुलाकात, सबके घर जाना—इसी में सब दिन बीत गये। और जहाँ कहीं भी वह गया, कहीं भी किसी ने जोशुई के सम्बन्ध में उससे एक भी प्रश्न नहीं किया। किसी ने घर से बाहर अलग रहने की भी चर्चा नहीं की। सब कहीं वही पुराना मधुर स्वागत, वही परिचित आनन्द से भरे हुए बोल—"क्यों एलेन, दूज के चाँद हो रहे हो!"—सब कहीं महिलाओं की स्वागत या चुहलबाजी से भरी हुई आवाजें, जिनका कोई अर्थ न निकल पाता, क्योंकि सब तरफ की आवाजें एक दूसरे से मिलकर दुर्बोध हो जातीं। लेकिन फिर भी अर्थ से बोझिल, क्योंकि सबमें सच्चे दिलों का स्वागत भरा था।

यह जीवन का एक ढग था जो उसका अपना था और उसे इस जीवन मरण से अलग नहीं किया जा सकता था—प्रेम के कारण भी नहीं। लेकिन आखिर बचत का रास्ता क्या था?

रात में वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ बहुत परेशानी महसूस कर रहा था। एक दिन और बीत चुका था। जोशुई का कोई पत्र नहीं आया था और उसने भी जोशुई को टेलीफोन तक नहीं किया था जो उसे करना चाहिए था सिवाय इतनी बात के जोशुई ने मना कर रक्खा था क्योंकि उसके अनुसार यह भी माँ की आज्ञा का उल्लङ्घन होता। बिस्तर वही था जिसमें बचपन में वह लेटा करता था। उसी पर लेटा हुआ वह सोच रहा था क्या करे। माँ से प्रार्थना करने या पिता को उकसाने से कोई लाभ न था। कानून उसके सामने था। वह कठोर कानून जो उन सबकी शक्ति के बाहर था और माँ का पक्ष कर रहा था। अपनी सारी अनिच्छा और अपना सारा विरोध निश्चित रूप से माँ के मत्थे मढ देगा। उनकी विस्फारित आँखें वह देख रहा था। उनके शब्द वह सुन रहा था, "बेटे एलेन, मैं क्या करूँ; इसमें मेरी क्या गलती है मैंने कानून नहीं बनाया है।" लेकिन कानून उन्हीं जैसे और लोगों ने बनाया था।

उसके सामने इस परेशानी से बचने का केवल एक रास्ता था—उसके सम्बन्ध में कोई सोच विचार न करना। और वह अपने सुन्दर गुदगुद बिस्तर पर अपने पूर्वजों के घर में आराम से सो गया।

जब परिवार के वकील साहब बाहर से लौट कर आये तो घर बुलाया गया। पढने वाले कमरे में बैठकर उन्होंने एलेन की माँ की बात सुनी। वकील साहब छोटे कद के बुड्ढे आदमी थे, छोटा सा उनका चेहरा था जिस पर उनकी आँखे चमकती थीं। व बोले, "एलेन, तुम्हारी माँ ने एक उदारता पूर्ण काम किया है। उन्होंने यह मकान तुम्हारे नाम लिख दिया है और अब यह तुम्हारा है।"

एलेन स्तम्भित हो गया। फिर भी लडखडाते हुए बोला, "पिता जी, मैं तो सोचता था मकान आपका है।"

उसके पिता एक बडी खिड़की के सामने कुर्सी पर बैठे थे। अपने रूखे स्वर में वे बोले, "यह मकान मैंने तुम्हारी माँ के नाम लिख दिया था जब मेरी शादी हुई थी। हम दोनों के बीच यह निश्चय था कि यह मकान हम दोनों के सबसे बडे लडके को मिलेगा जैसे मुझे अपने पिता से मिला था। मुझे ऐसा लगा कि मकान औरत के नाम होना चाहिए, जिन्दगी म यह उसके लिए एक सुरक्षा है।"

"मुझे उम्मीद है बेटे, मेरे लिए तुम एक कोना जरूर दे सकोगे," माँ ने कहा "मुझे इसका पूरा इत्मीनान है।"

"मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन नहीं कर सकता," पिता ने कहा।

"लेकिन मुझे मकान की जरूरत नही है," एलेन बोला।

"नहीं बेटे," माँ समझाते हुए बोली, "मैं चाहती हूँ कि मकान तुम्हारे नाम हो जाय।"

"मुझे यह सब पसन्द नहीं है," एलेन ने कहा। लेकिन दरअसल उसे यह सब बहुत पसन्द आ रहा था। उसने उस बड़े कमरे के चारों ओर निगाह दौड़ाई जो अब उसका था। अगर वह कानून न होता जो माँ की सारी अच्छाइयों और बुराइयों को अपनी ओट में ले लेता था तो शायद एलेन को शक होता कि शायद इस उदारता में भी माँ एक जाल बुन रहीं हैं।

"मैं यहाँ रह नहीं सकता," उसने अचानक कहा।

"सम्भव है एक दिन आवे जब तुम रह सको," माँ ने प्रसन्नता पूर्वक कहा।

सो इस प्रकार एलेन की अनिच्छा और पिता के विरोध के बावजूद भी यह सब हो गया जैसे जीवन भर और सब कुछ होता आया था क्योंकि उसकी माँ की यह इच्छा थी। और जब यह सब हो गया तब उसके भीतर स्वमित से उत्पन्न होने वाली एक विचित्र विद्रोह भावना जग पड़ी। अपने आनन्द को काबू में रखते हुए उसने सोचा कि आखिर किसी न किसी प्रकार किसी न किसी दिन यह सब होना ही है। केवल कुछ समय जल्दी यह सब उसका हो गया। अगर उसने अपना दूसरा मकान भी और कहीं बना लिया होता तो भी एक दिन यह मकान उसका होता और तब उसे चुनना पड़ता कि वह कहाँ रहना पसन्द करता है।

उसी दिन दोपहरी के बाद वह न्यूयार्क के लिए चल पड़ा। जब वह न्यूयार्क पहुँचा रात हो चली थी। रात ही में उसकी टैक्सी उसके छोटे से मकान के सामने रुकी। एक अनचीन्हा आदमी उसे ऊपर ले गया। एलेन ने उसे पहले कभी नहीं देखा था, शायद कोई नया आदमी नौकर रक्खा गया हो, उसने सोचा और वह उससे बोला नहीं। उसने अपने कमरे की घण्टी बजायी। उसे आशा थी कि जोशुई तुरत दरवाजा खोलेगी और अपने अपराध की स्वीकृति से उसका हृदय धड़कने लगा। जोशुई के सामने उसे बहुत कुछ अपनी सफाई देनी पड़ेगी।

लेकिन दरवाजा नहीं खुला। उसने फिर घण्टी बजायी क्योंकि सम्भव था कि जोशुई सो गयी हो। जोशुई की आदत थी कि वह बड़ी जल्दी सो जाया करती थी—वह भी कुर्सी पर सोफे पर या फर्श पर वह गुडली मार कर लेट जाती और सो जाती। लेकिन दरवाजा फिर भी नहीं खुला। आखिर कार उसे अपनी जेब से चाभियों के गुच्छे में से अपनी चाभी खोजनी पड़ी और खुद ही दरवाजा खोलकर वह भीतर गया। कमरे में अँधेरा था। कमरे की हवा सूखी और भारी थी। अलाव की गमी व्याप्त थी और कमरे में पूरा सन्नाटा था।

"जोशुई" उसने जोर से पुकारा।

कोई उत्तर नहीं मिला। उसने बत्ती जला ली थी। सोने वाले कमरे की ओर बढ़ा, जोशुई वहाँ नहीं थी। बिस्तर बड़ी सुन्दरता से बिछा हुआ था,

फर्श साफ था। उसने कपड़ों वाली कोठरी खोली। उसमें केवल उसी के कपड़े टँगे हुए थे। जोशुई चली गयी थी।

जोशुई चली गयी—यह विश्वास उस पर पहाड़ जैसा टूट पड़ा। वह चली गयी। अब वह उसे कैसे पा सकता था। उसके जापानी हृदय में निराशा से उत्पन्न होने वाली कितनी किस किस प्रकार की सम्भावनायें हो सकती थीं, यह वह जानता था। अपने माधुर्य म कर्तव्य की अपनी मधुर भावना में छिपी हुई वह—जोशुई—उससे दूर कहीं किसी अज्ञात अनन्त लोक को पहुँच गयी थी। उसने क्या देखा था, कितना क्या वह समझ पायी थी, यह उसे अब कभी न मालूम हो सकेगा। बिस्तर के छोर पर वह बैठ गया चेतना विहीन सा होकर उसका विषाद, उसका पछतावा और उसकी आत्म भर्त्सना उसको अभिभूत कर रही थी। अपना मुँह उसने अपने हाथों में छिपा लिया, मन ही मन अपने को कोसने लगा इसलिए नहीं कि जोशुई चली गयी थी बल्कि इसलिए कि इस सारे पछतावे, इस दु ख और लज्जा के बीच उसे लग रहा था कि जोशुई के चले जाने से वह प्रसन्न ही है।



चतुर्थ खण्ड

९

जोशुई चुपचाप सड़क से जा रही थी। आजकल सलोने के जन्म की प्रतीक्षा म वह काफी दूर तक नित्य टहलने जाती। न वह किसी से बोलती और न कोई उससे बोलता। जिस सड़क पर वह टहलने जाती वह उसकी परिचित सड़क थी। उसे ताज्जुब हो रहा था कि इस शहर लॉसएँजिल्स का कितना कुछ उसे याद रह गया था, कैसे सब बीती बातें एक एक करके उसके दिमाग मे आ गयीं थीं। स्थान परिचित था लेकिन फिर भी उसका घर नहीं था क्योंकि याद पडने वाली सारी चीजों में से सबसे ज्यादा स्पष्ट याद थी उस दिन की जिस दिन उन्हें अमरीका छोड़ना पडा था। पिता के उस रोष और क्रोध की जिसको हृदय में भर कर वे उसे, उसकी माँ को लेकर जापान चल दिये थे। वह उस मकान को भी देखने गयी जो उसे अब तक याद था। आजकल उसमें एक प्रसन्न नीग्रो परिवार रह रहा था। वह मकान के अन्दर नहीं गयी फिर भी खुले हुए दरवाजे से उसे आँगन में बच्चे खेलते हुए दिखायी दिये—उसे आँगन में जिसमे कभी वह अपने भाई केन्शान के साथ खेला करती थी। उसका पुराना झूला भी बरकरार था। उसके पिताजी ने रस्सियों की जगह पर जजीरें लगायीं थी और वे आज भी वैसी ही मजबूत थीं। छोटे छोटे नीग्रो बच्चे झूले को घेरे हुए आनन्द से चीख रहे थे।

आज वह अपने कर्तव्य की पूर्ति में दूसरा कदम उठा रही थी। सुबह जल्दी उठी थी, भली भाँति स्नान किया और एक गहरा नीला सूट पहना। उसके पिता सैन्फ्रान्सिस्को के बैंक में जो रकम छोड़ गये थे, वह इस अवसर के लिए काफी थी। छोटा सा कमरा उसने किराये पर ले लिया था एक बोर्डिङ्ग हाउस में जिसकी मालकिन एक मेक्सिको की महिला थीं जो

काम चलाऊ अंग्रेजी बोल लेतीं थीं। और अधिक पैसे की जरूरत पड़े तो लोगों की दानशीलता का भरोसा था। जो प्यार नहीं कर सका या उसकी आशा उसने उदारता से की। कानून जिस पर रोक लगाये था उसकी पूर्ति की भी आशा उसने उदारता से की। उसने बड़ी सावधानी के साथ एक अजनबी से शिशु पालन केन्द्र का पता पूछ लिया था और वह वहाँ पहुँची। यहाँ इस छोटी सी सड़क पर मकानों के किराए बड़े सस्ते थे। वह अन्दर गयी और बाहर के कमरे में बैठ कर प्रतीक्षा करती रही। दो और औरतें वहाँ थीं—औरतें नहीं लड़कियाँ कहनी चाहिए। एक की अवस्था लगभग १४ वर्ष होगी —एक आत्माहीन लड़की जिसकी आँखों से इसका विषाद झलक रहा था। वह गर्भवती थी, उसका शरीर फूल गया था, होठ पीले पड गये थे। उसके चेहरे पर कोई कान्ति नहीं रह गयी थी, कोई सौन्दर्य नहीं था, केवल सीधा सा नारीत्व था जिसे उसने किसी लडके के हाथ बेच दिया था बदले में शायद उसे कोई सिनेमा देखने को मिला हो या केवल आइसक्रीम और सोडा—कौन जानता था। कपडे उसके चीथडे थे।

दूसरी लडकी रो रही थी। वह बड़ी सुन्दर लड़की थी। उसके बाल चमकीले थे, होठों की लाली आसुओं से धुल गयी थी। वह दुबली पतली थी और रोते हुए खाँसती जाती थी। उसके पैर इतने पतले थे कि बेंत जैसे मालूम होते थे। हाथों में कुछ जेवर थे लेकिन शादी की अंगूठी नहीं थी।

जोशुई बैठ गयी और प्रतीक्षा करने लगी। एक लडकी अन्दर बुलायी गयी और थोडी देर बाद वहाँ से प्रसन्न सी लौटी। तब यह दूसरी लडकी अन्दर गयी और जोशुई को उसका रोना सुनायी देता रहा। काफी देर बाद वह बाहर आयी, चेहरे पर परदा डाल लिया और चली गयी। आफिस की लड़की ने तब संदिग्ध दृष्टि से जोशुई की ओर देखा।

"आपका नाम ?"

"कुमारी सकाई," जोशुई ने उत्तर दिया।

"अन्दर आइए,"

सो जोशुई अन्दर गयी। छोटा सा आफिस था और एक प्रौढ महिला एक गन्दी सी डेस्क के पीछे बैठी थीं।

"कुमारी सक्राई ?,"

"जी हाँ,"

"मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ ?"

"मैंने सुना है कि आप बच्चों की देखभाल करती हैं," जोशुई ने एक अनिश्चित स्वर म कहा। क्योंकि जो कुछ उसे कहना था आखिर कैसे उसे शुरू करे।

"तो आप को बच्चा होने वाला है ?" प्रौढ ने व्यवहारिक और कोमल स्वर मे कहा।

"जी हाँ, लेकिन तुरन्त नहीं, हाँ, मुझे उसकी तैयारी करनी है।"

"आपका परिवार नहीं है ?"

"नहीं,"

प्रौढा लिखती जा रही थी। उसकी लिखावट बड़ी सुन्दर और स्पष्ट थी।

"आप अपने बच्चे को अपने साथ रखना चाहती हैं ?"

"नहीं, मैं अकेली हूँ और मैं उसका भरण पोषण न कर पाऊँगी।"

जोशुई ने इन शब्दों के उच्चारण का पूरा अभ्यास किया था। इसीलिए वे लगभग स्वाभाविक ढग से उसके मुँह से निकले।

ओह! उसका वह खजाना, जिसे वह अपने अस्तित्व की अन्तर्गूढ चेतना में छिपाये थी, कितना शान्त हो गया था मानों उसे मालूम हो गया था कि उसकी माँ क्या कह रही थी।

"मेरा नाम कुमारी विन्दु है," प्रौढा ने कोमल स्वर मे कहा, "क्या आप अपने सम्बन्ध मे कुछ बता सकती हैं ?"

"मैं बिल्कुल अकेली हूँ," जोशुई ने दुहराया, "बताने लायक कुछ है ही नहीं।"

"क्या आप बतलाइएगा कि बच्चे का पिता कौन है। मैं केवल आपको मदद करने के लिए पूछ रही हूँ।"

"वे एक अमरीकी हैं—श्वेताङ्ग," जोशुई ने बताया, "मैं अर्ध अमरीकी जापानी हूँ।"

"मैं समझी," कुमारी बिन्दु ने रुकते हुए कहा। जोशुई को उन्होंने देर तक गौर से देखा—एक सुन्दर नौजवान लड़की, इतनी गम्भीर जैसे मूर्तिमान पत्थर हो। और यह सब कितने दुर्भाग्य की बात थी क्योंकि आखिर एक अर्ध श्वेताङ्ग और जापानी बच्चे को लेने के लिए कौन तैयार होगा। लेकिन अनेक अपवित्र देशों में युद्ध प्रारम्भ होने से यह सब तो नित्य की एक कहानी हो रहा था। अभी दो दिन पहले ही तो उन्होंने एक दो महीने के कोरियाई बच्चे को अपनी शरण में लिया था। कोरियाई बच्चे को भला कौन लेगा। उन्होंने उसे एक नीग्रो अनाथालय में रख दिया था। लेकिन तब से उनके मन को शान्ति नहीं मिल रही थी क्योंकि कोरियाई बच्चा आखिर नीग्रो बच्चा तो नहीं कहा जा सकता था।

"क्या यह सज्जन कुछ जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार न होंगे," कुमारी बिन्दु ने पूछा।

"मैं नहीं चाहती कि उन्हें पता भी चले।"

कुमारी बिन्दु ने विरोध किया, "मेरी बच्ची तुम समझती नहीं हो, तुम जो सोचती हो, वह गलत है। वास्तव में पुरुषों को पता चलना ही चाहिए। वे इतनी आसानी से छुटकारा पा जाते हैं! ऐसा होना नहीं चाहिए। तुम्हारी ओर से मैं उनसे बात कर सकती हूँ।"

"नहीं, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद," जोशुई ने निश्चय पूर्वक कहा।

कुमारी बिन्दु का धैर्य जाता रहा। जीवन भर उन्हें कोई प्रेमी न मिला था और उन लड़कियों की बात उनकी समझ में ही न आ सकती थी जो अपने प्रेमियों को उनकी करतूत का पता तक देने को तैयार न हों। उन्होंने अपनी पेंसिल मेज पर रख दी और अपनी पतली नाक पर चश्मे को सँभालती हुई बोलीं, "देखिए कुमारी—"

"सकाई" जोशुई ने सहायता दी।

"हाँ, ठीक है, विदेशी नाम याद रखना भी बड़ा कठिन है। मैं तुम्हें यह बताने जा रही थी कि तुम्हारे बच्चे को किसी भी परिवार में

रख पाना बड़ा मुश्किल है। यह तो लगभग असम्भव ही है कि कोई उसे गोद ले ले। यहाँ कोई भी मिश्रित रक्त के बच्चे को अपनाना नहीं चाहता। इसके पहले भी मैंने कोशिश की पर ऐसा हो ही नहीं सकता। दो में से किसी भी जाति के लोग ऐसे बच्चों को नहीं लेना चाहते।"

"मैं जानती हूँ," जोशुई ने बिल्कुल शान्त स्वरों में कहा।

"कुछ न कुछ तो परिवार होगा ही तुम्हारा," कुमारी बिन्दु ने जोर देकर कहा।

"कोई नहीं है," जोशुई ने धीमे से कहा।

"तुम्हारा मतलब है, वे लोग इसे लेना नहीं चाहेंगे?"

जोशुई ने उत्तर नहीं दिया क्योंकि उसने तय कर लिया था कि वह यहाँ रोयेगी नहीं और उसका यह सारा संकल्प उसके गले में रूँधा हुआ था।

कुमारी बिन्दु ने एक लम्बी सांस ली, "अच्छी बात है। हम लोग देखेंगे क्या किया जा सकता है। शायद बच्चा कुछ बहुत अजीब तो नहीं होगा क्योंकि उसमें श्वेत रक्त की मिलावट है। हो सकता है कोई किराये की माँ उसके लिए मिल जाय।"

"किराये की माँ?" जोशुई ने दुहराया।

"हाँ, कोई जो कुछ तनख्वाह लेकर उसे रखने के लिए तैयार हो जाय," कुमारी बिन्दु ने स्पष्ट किया, "क्या तुम इस किराये में कुछ सहायता कर सकोगी?"

"हाँ, मेरा ख्याल है मैं कर सकूँगी," जोशुई ने कहा।

उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा रहा था। वास्तव में उसने सोचा ही नहीं था कि सलोने का होगा क्या। उसने तो केवल यही कल्पना कर रक्खी थी कि वहाँ कोई अनाथालय होगा जिसमें रहने वाले बच्चे पेड़ों के नीचे घास पर खेलते होंगे। उसे याद था बहुत दिन पहले लॉसएंजिल्स के पास उसने ऐसा अनाथालय देखा था वहाँ के बच्चे खुश दिखायी देते थे। लेकिन उसने उन बच्चों को नजदीक से नहीं देखा था।

"अगर तुम कुछ माहवारी खर्च दे सकोगी तो मैं भी इस मामले में

तुम्हारी मदद कर सकूगी," कुमारी विन्दु ने कहा।

उन्होंने फिर अपनी पेंसिल उठा ली और लिखना शुरू कर दिया। "तुम प्रसूत कहाँ बैठने का विचार करती हो?" उन्होंने पूछा।

"यह तो मैं नहीं जानती," जोशुई ने कहा। अपने आँसुओं पर उसे विजय मिल चुकी थी और उसका गला साफ हो गया था। "जहाँ कहीं आप बता दें।"

"ज्यादा अच्छा है तुम किसी अस्पताल चली जाओ। मैं तुम्हें पता दे दूँगी। वहाँ, डाक्टर स्त्रीरत्न से मिल लेना। वे एक महिला डाक्टर हैं, शरणार्थी हैं लेकिन दयालु और अच्छे स्वभाव की हैं। हम लोग बच्चे को अस्पताल से ले लेंगे। मेरा ख्याल है तुम बच्चे को देखना तो न चाहोगी—"

"मैं बच्चे को जरूर देखना चाहती हूँ," जोशुई ने कहा।

कुमारी बिन्दु ने लिखना बन्द करके जोशुई की ओर देखा, "अगर तुमने यह निश्चय कर लिया है कि तुम बच्चे को अपने पास नहीं रक्खोगी तो मेरी सलाह है तुम बच्चे को देखो भी नहीं।"

"मैं उसे जरूर देखूँगी," जोशुई ने कहा।

कुमारी विन्दु कुछ परेशान सी हुईं। उन्होंने अपना लिखना समाप्त किया, "प्रसव की तारीख क्या होगी?"

"मेरे ख्याल से जून में" जोशुई ने कहा।

"तुम्हारा पता?"

जोशुई ने अपना पता दे दिया।

"डाक्टर स्त्रीरत्न से जब तब मिलती रहो," कुमारी विन्दु ने सलाह दी। "कायदे से अपनी जाँच करवाती रहो तो अच्छा है। और अगर किसी मामले में तुम्हारी राय बदले तो मुझे सूचित करना।"

जिस मुलाकात से वह इतना डर रही थी, वह समाप्त हो गयी। अब सलोने जन्म ले सकता था और किसी प्रकार उसकी देख भाल भी हो सकती थी। जोशुई डरी और नम्रता से सर झुकाया, "आपको बहुत-बहुत धन्यवाद कुमारी विन्दु।"

"इसकी जरूरत नहीं है," कुमारी बिन्दु ने नम्रता से कहा। उनके दिमाग में कोई दूसरा ख्याल चल रहा था।

बाहर कमरे में अब तीन और लडकियाँ प्रतिक्षा कर रहीं थी। तीनों युवती थीं; दुखी थी और एक दूसरे से अपने आप को छिपा रहीं थी। जोशुई तेजी से उनके सामने से निकल गयी और फैली हुई प्रात कालीन धूप में खो गयी। अब उसें केवल डाक्टर स्त्रीरज से मिलना शेष रह गया था। लेकिन वह आज उनसे नहीं मिलेगी, वह थक गयी थी और उसका दिल सशक हो उठा था क्योंकि सलोने बिल्कुल शान्त था। क्या उसे पहले ही से मालूम हो गया था कि उसे माँ से अलग रहना है?

एक छोटे से पार्क में जा कर जोशुई बैठ गयी और सुस्ताने लगी। वहाँ दो तीन माताएँ अपने बच्चों की रखवाली कर रहीं थी। वे सब श्वेताग थीं, उनके बच्चे श्वेताग थे। कितनी खुशी की बात थी। ये माताएँ और उनके बच्चे साथ रह सकते थे। एलेन का विचार उसने मस्तिष्क में नहीं आने दिया। जब उसकी मूर्ति उसकी आँखों मे आ जाती तो वह उसे धो डालती, मिटा देती। अब तक उसे मालूम हो चुका था कि जोशुई से उसकी मुलाकात नहीं होगी क्यों कि जोशुई ने उसके लिए कोई सन्देश नहीं छोड़ा था, अपनी कोई निशानी नहीं छोड़ी थी। उसका जो कुछ भी अपना था, अपने कपडे, अपने छोटे मोटे आभूषण—सब कुछ लेकर वह चुपचाप चली आयी थी। अब तक तो एलेन ने उस घर को भी छोड दिया होगा और अपने माता पिता के पास चला गया होगा। केवल कुबेर को मालूम था कि जोशुई कहाँ है लेकिन उसे भी जोशुई ने तब तक अपने पास आने को मना कर रक्खा था, जब तक सब कुछ समाप्त न हो जाय, जब तक उसे मालूम न हो जाय कि उसे क्या करना चाहिए।

"जब तक में अपने बेटे का मुँह न देख लूँ तब तक मैं अकेली रहना चाहती हूँ," उसने कुबेर को लिखा था। लेकिन उसने अपना पता उसे लिख दिया था और लिखा था कि वह उससे मिलने न आये।

अब भी वह अपनी सारी विवशता के विरुद्ध सोच रही था, किसी



प्रकार वह अपने बेटे को अपने साथ रख सके। लेकिन कैसे? क्या उसके लिए सम्भव था कि केवल अपने बच्चे को लेकर बिना घर बार के बिता सके? एलेन के दिल में क्या कैसी भावनाएँ थी वह समझ रही थी और उसे वह दोष नहीं दे रही थी। उसके मन की कामनाओं का वह समझती थी, वह कामना स्वाभाविक थी और अपने आप में अच्छी भी थी। उस कामना में केवल इतनी कमी थी कि सलोने के लिए उसमें कोई स्थान न था, ठीक वैसे ही जैसे उसके पिता के घर में उसके लिए स्थान न था। तो दोष किसी का न था, दोष था कानून का। कानून खड़ा बना हुआ था लेकिन वही कानून सलोने का जन्म न रोक पाता था, उस प्यार पर बन्धन न लग पाया था जिससे सलोने का जन्म सम्भव हुआ। कानून कभी प्रेम का विचार नहीं करता। वह अब भी एलेन का प्यार करती थी। हमेशा एलेन का वह प्यार करेगा जैसे जिन्दा बच रहने वाले मर जाने वालों को प्यार करते हैं—उनको जिनका स्थान कोई भी जिन्दा व्यक्ति नहीं ले सकता।

२

डाक्टर श्रीरत्न ने उस सुन्दर जापानी लड़की को बड़े गौर से देखा। वह पीला युवा चेहरा बिल्कुल भाव शून्य था जैसे नकली चेहरा हो जिसमें आँखों की जगह काले प्रतीक बने हों। कोमल चमड़ी जैसी पूर्व के लोगों की होती है, मनोहर अंग रचना थी। लेकिन सख्त की दृढ़ता इस कोमलता के बीच झलक रही थी। शायद इस लड़की की शक्ति उसकी दृढ़ शान्ति में छिपी थी जो जीवन की अपनी इस दुखद घटना के लिए तैयार होकर आयी थी। कुमारी विन्दु ने उन्हें सूचना दे रक्खी थी कि जाशुई सकाई आयेगी और वे इसकी प्रतीक्षा ही कर रही थीं। डाक्टर श्रीरत्न ने अभी

[illegible] नहीं [illegible] उसके [illegible]
युद्ध के दौरान [illegible] और [illegible]
एक को [illegible] था।

"तो आप मुझे बताना नहीं चाहतीं?" डाक्टर ने [illegible] प्रश्न किया।

"जी नहीं," जोशुई ने भाव शून्य [illegible] स्वर में कहा।

डाक्टर स्मीरल छोटे कद की मोटी महिला थीं और उनके [illegible] चेहरे का सौन्दर्य ईमानदारी का पूरा बोध था। [illegible] वह किसी से द्वेष नहीं करती थीं। [illegible] के आरम्भ में ही उन्होंने [illegible] जिन्दगी का रास्ता चुन लिया था। उन्हें इसकी आशा नहीं थी कि कोई पुरुष एक ऐसी लड़की से शादी करना पसन्द करेगा जो [illegible] की [illegible] हुई आदिम महिला की प्रतिमा मालूम हो। इसलिए उन्हें अपने मस्तिष्क का भरोसा था, उसकी वे कुशल थीं—और [illegible] मस्तिष्क [illegible]—और प्यार की भावना को दबा कर उन्होंने विज्ञान का अध्ययन किया लेकिन अपनी सहृदयता नहीं खोयी। उनके हृदय की [illegible]—[illegible] या भावना की एक झलक उनकी उस [illegible] और प्रशंसा भरी दृष्टि में झलक जाती थी जिससे वे किसी भी सुन्दर स्त्री पुरुष या [illegible] को देखती थीं। वही दृष्टि इस समय जोशुई पर पड़ रही थी।

हफ्तों बाद अब जोशुई फिर [illegible] और [illegible] से बाहर आ गयी थी। वह *निरन्तर भाव शून्य रहती थी—मानसिक और शारीरिक* [illegible] से, जैसे चेतना शून्य हो चली हो, जैसे उसमें [illegible] गयी हो। दरअसल उसके हाथ और पैर भी छूने से ठण्डे मालूम होते थे और डाक्टर स्मीरल ने मेज पर लेटी हुई जोशुई की परीक्षा करते समय इस बात को देखा।

"आप इतनी ठण्डी क्यों हैं?" उन्होंने पूछा, "आज तो काफी गर्मी है।"

"मैं अक्सर ऐसी ही ठण्डी रहती हूँ," जोशुई ने उत्तर दिया।

"जरा चदर ढीला कीजिए," डाक्टर स्मीरल ने आदेश दिया,

"इतने अकड़े हुए बदन की जाँच मैं नहीं कर सकती।"

लेकिन जोशुई बदन ढीला न कर सकी। पत्थर की मूर्ति की तरह वह लेटी रही। सचमुच देखने से वह पत्थर की मूर्ति ही मालूम देती थी। गम्भीर और अनन्त प्रतीक्षा जैसे उसके मन मस्तिष्क और शरीर को स्तब्ध जड़ बनाये थी। वह सोचती नहीं थी, अनुभूति शून्य सी थी, अपनी याद-दाश्त भी खो बैठी थी। हर हफ्ते उसे कुबेर का पत्र मिलता था—एक लम्बा दयापूर्ण पत्र जिसमें सुखद विवरणों की बाहुलता रहती थी, जिसमें उसकी सतत सज्जनता भरी रहती थी। कुबेर अपने किसी पत्र में उससे निर्णय करने की माँग नहीं करता था। लेकिन जोशुई जानती थी कि उसकी आशा क्या है और वह पत्र को चुपचाप रख लेती थी। अभी तो उसके सामने प्रसव की विकराल समस्या थी। जब तक सलोने से वह अलग न हो जाय तब तक वह कोई निश्चय न कर सकती थी कि वह कहाँ जायगी। और अपने जीवन का क्या करेगी। अपनी शक्ति भर वह विचार और भाव शून्य रह कर जीवन बिता रही थी और फिर भी कभी कभी रात में उसे नींद न आती। अपनी पतली छोटी सी चटाई पर लेटे हुए अचानक उसे ऐसा लगता जैसे किसी भरते हुए घाव से फूटकर फिर रक्त बहने लगा हो। और वह डर के मारे नींद लेने वाली कोई औषधि भी न ले सकती थी। क्योंकि सलोने को उसके जीवन का अवसर उसे देना ही था। तब उसका मन वेदना और विषाद से भर जाता, अपने अतीत को याद करके नहीं बल्कि, इसलिए कि वह अपने सलोने को कभी देख न पाएगी, कभी उसके साथ रह न पायेगी कभी उसकी बोली सुन न पायेगी, कभी उसकी मुस्कान देख न पायेगी, कभी उसका दिल न खिलेगा, अपने चचल बच्चे को वह कभी नहला न पायेगी, और वह क्या होने जा रहा है, यह जान न पायेगी।

क्योंकि बहुत समय तक अपना दिल और दिमाग टटोलने के बाद वह इस निश्चय पर पहुँची थी कि कुमारी बिन्दु का कहना ठीक था। उसे सलोने का मुख नहीं देखना चाहिए अन्यथा वह उसे छोड़ न सकेगी। उसे मालूम था, या यों कहें, उसे डर था कि उसका चेहरा देख लेने के बाद सचमुच ऐसा ही होगा। और तब एक ऐसे विषाद से भरकर उसका

मन रो उठा जा हर उस दुख से कहीं अधिक गम्भीर दुख था जो किसी स्त्री का झेलना पडता है, एक टूटा हुआ दिल, खुद अपनी ही करनी से टूटा हुआ और उसके साथ यह बोध कि वह अपने सलोने के साथ अन्याय कर रही है और इस बोध से उत्पन्न होने वाला और भी घना दुख जो विकल कर रहा था। इतना छोटा सा, इतना असहाय, इतना अबोध, इतना दुर्बल, वह उसका सलोने और उसे वह इस कुटिल ससार म अकेले अपना रास्ता तय करने के लिए छोडने को विवश थी क्योंकि वह जानती थी—और यही तो उसे और भी चुभ रहा था—कि अगर वह उसे अपने पास रक्खेगी, तो उसका और भी अहित होगा। जीवन के सफ़र मे वह चल चुका था, प्रकृति के नियमों के अनुकूल प्रेम अपना काम कर चुका था, अपनी भूत छाया से उसका आह्वान हो चुका था और प्रसन्न मन वह उस आह्वान को सुनकर चल दिया था। वह जानती थी कि उसका बच्चा हँसता हुआ बच्चा है; उसके भीतर बच्चे के स्पन्दन उसकी प्रसन्नता प्रकट कर रहे थ। ऊषा काल मे जब अरुण प्रकाश में पर्वत चोटियाँ मुस्कराती हैं तब एक मछली की भाति वह अपने शान्त सरोवर म तिरता था। उसकी आँसुओं से भीगी रात बीतते बीतते वह उसे जगा देता था जैसे यह विश्वास दिलाता हुआ कि उसकी हसी फूट पडने को है। उसकी वेदना का गम्भीरतम रूप यही तो था कि वह अपने सलोने की हँसी न देख सके।

"आपकी हालत अच्छी है," डाक्टर स्त्रोरन्स ने कहा, "सब कुछ सामान्य गति से चल रहा है, आप स्वस्थ हैं, शरीर, सब कुछ होते हुए, अपना काम ठीक ठीक कर रहा है।

"धन्यवाद," जोशुई ने कहा। वह मेज पर से उठी और कपडे पहनने लगी। विनय और लज्जा से प्रेरित उसने डाक्टर स्त्रोरन्स की ओर अपनी पीठ कर ली और वे उसके सुन्दर सुगठित शरीर, सुन्दर त्वचा और कोमल काले घने बाल देखती रहीं।

"कृपया हर महीने आप मुझसे मिलती रहिए," वे यकायक बोलीं। उनके स्वर तेज और सबल थे, "प्रसव के समय मैं आपके साथ रहूँगी।

मेरा ख्याल है कोई कठिनाई नहीं होगी।"

"धन्यवाद," जोशुई ने फिर कोमल स्वर में कहा। तेजी से उसने कपडे, पहने, बाल ठीक किये और चली गयी।

जोशुई के जाने के बाद डाक्टर ने कुमारी बिन्दु को टेलीफून किया, "मैंने उस जापानी युवती की परीक्षा की है," वे ऊँचे स्वर में बोलीं। उन्हें ऐसा लगता था कि टेलीफून पर हमेशा ऊँचे स्वर में ही बोलना चाहिए, "वह एक असाधारण लडकी है, बहुत सुन्दर और बहुत स्वस्थ। निश्चित रूप से उसके बच्चे को कोई गोद ले लेगा। स्पष्ट है कि लडकी कुलीन घर की है और ऐसी लडकी किसी मूर्ख पुरुष को नहीं पसन्द कर सकती। इसलिए निश्चित है कि बच्चा समझदार होगा, स्वस्थ और सुन्दर होगा। क्या आपकी सूची में बच्चों की कामना करने वाले ऐसे दम्पति नहीं हैं जो इस अमूल्य निधि को परख सकें?"

"आपको यह जानकर आश्चर्य होगा," कुमारी बिन्दु की रूखी, सानुनासिक और निराशा पूर्ण आवाज टेलीफोन पर सुनायी दी, "कि मेरी सूची में तीन सौ सत्रह ऐसे व्यक्तियों के नाम हैं जो बच्चों के लिए तड़प रहे हैं—उन बच्चों के लिए जिनका अभी जन्म तक नहीं हुआ—और सब के सब मुझे कोसते हैं कि मैं जल्दी से जल्दी उन्हें बच्चे नहीं देती। लेकिन मैं आपसे शर्त लगा सकती हूँ कि उनमें से एक भी ऐसा नहीं होगा जो इस बच्चे को लेने के लिए तैयार हो।"

डाक्टर स्त्रीरल चिल्ला उठी, "हुँह! इस प्रजातंत्र को देखकर तो मुझे हिटलर की याद आ जाती है मैं खुद ही अष्टमांश यहूदी हूँ लेकिन हिटलर के लिए मैं पूर्ण यहूदी थी और इसीलिए मैं जर्मनी से निकाल दी गई थी।"

कुमारी बिन्दु ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह समझदार थीं और बहुत पहले से उन्होंने इसान के सम्बन्ध में बुरी से बुरी बात पर विश्वास करने की शिक्षा पा ली थी। उन्हें ये महिला डाक्टर जो अपने विचारों को बिना तोडे मरोडे ज्यों का त्यों प्रकट कर देती थीं, बहुत पसन्द थीं। और उन्हें मालूम था कि डाक्टर स्त्रीरल भी उन्हें पसन्द

करती हैं। प्राय: दोनों को साथ काम करने का मौका मिलता था और जब कभी नीग्रो बच्चे या मेक्सिकन बच्चे पहले ही से रक्खा सब भरे अनाथालयों में लेने जाने थे तब डाक्टर स्त्रीरल से कहा सुनी हो जाती थी।

"कोई इन बच्चों को नहीं चाहता," कुमारी बिन्दु बार बार बड़ी शांति के साथ कहतीं, "श्वेताङ्गों में से कोई भी कभी इन बच्चों को लेने की बात सोच ही नहीं सकता और नीग्रो तथा मेक्सिकन लोगों के घरों में बच्चों की भरमार है, आप समझीं?"

"जी नहीं," डाक्टर स्त्रीरल जवाब देती "बच्चा, बच्चा है, बच्चा है कि नहीं?" हँसी के बजाय उनके चेहरे पर उदासी छा जाती। कुमारी बिन्दु समझती कि यह डाक्टर स्त्रीरल का जर्मन स्वभाव है।

इसे भाँप कर एक बार डाक्टर स्त्रीरल अचानक पूछ बैठीं, "आपको कभी बच्चा तो नहीं हुआ, कुमारी बिन्दु?"

कुमारी बिन्दु का चेहरा अचानक तमतमा उठा और फिर तुरन्त उस पर सफेदी दौड़ गयी, "मैंने समझ लिया है कि, अगर मैं बच्चा पैदा कर भी सकती, तो भी मुझे बच्चा नहीं पैदा करना है। मैं तो चाहती हूँ कि सौ वर्षों के लिए जन्म की परम्परा ही बन्द कर दी जाय।"

"तो शुरू कर दीजिए फिर" डाक्टर स्त्रीरल ने मजा लेते हुए छेड़ा।

"जी, कानून के जरिये यह बन्धन लगाकर कि वही बच्चा पैदा कर सके जो पहले से सिद्धकर सके कि बच्चे के लालन पालन का वह प्रबन्ध कर सकता है, कुमारी बिन्दु ने तपाक के साथ कहा।"

डाक्टर स्त्रीरल ने हँसते हुए कहा, "हो सकता है सौ वर्ष भी हो बीतें माता पिता नाम के जीव ही न रह जाँय।"

"यह भी तो हो सकता है कि कुछ चोरी से कुछ बच्चे पैदा हो ही जाँय," कुमारी बिन्दु ने घृणा पूर्वक कहा।

"हाँ" डाक्टर स्त्रीरल ने इस समय पेन पर तेज स्वर में पूछा, "आप कुछ बोल नहीं रहीं?"

"मैं सोच रही हूँ," कुमारी बिन्दु ने धीमे स्वर में कहा, "कोई सा"

समझ में नहीं आता। लगता है मुझे शहर के पश्चिमी छोर वाले अनाथालय जाना पड़ेगा।

"वहाँ उनके पास तीन फीट जगह भी नहीं है जिसमें बच्चे को रख..." डाक्टर ने जोर से कहा।

"तो फिर मैं क्या करूँ?"

"यह काम आप का है, कुमारी बिन्दु" डाक्टर स्त्रो रत्न ने उसी तेज आवाज में कहा, "मेरा तो काम इतना है कि प्रसव के समय बच्चे को जीवित और भली प्रकार स्वस्थ निकाल लूँ।"

उन्होंने फोन तेजी से रख दिया और मत्थे पर का पसीना पोंछा। उन्हें जब भी गुस्सा आता था उनके मत्थे पर पसीना आ जाता था और गुस्सा उन्हें अक्सर आता था। उन्हें गुस्सा करना नहीं चाहिए था क्योंकि वे इतनी मोटी थीं। अमरीका में सुन्दर मधुर खाद्यपदार्थों की बहुतायत थी और जर्मनी के बन्दी शिविरों में भूख से तड़प तड़प कर दिन बिताने के बाद अब डाक्टर स्त्रोरत्न उठकर भोजन भी करती थीं। उनकी आकृति से किसी को कोई रुचि नहीं थी और उन्हें इसकी चिन्ता भी नहीं थी। अमरीका में भी बहुत दिन रहने की उनकी इच्छा नहीं थी।

उन्होंने अपनी नर्स को इशारा किया "दूसरा मरीज; जल्दी।"

३

ये अन्तिम महीने तेजी से बीत गये। सारे दिन सूने सूने बीतते और रातें अँधेरी कोठरी में बीततीं। जैसे जैसे अपने बच्चे से अलग होने के दिन नजदीक आते जाते, बिन्दु का रोना कम पड़ता जाता। उसका शरीर तो प्रसव के लिए तैयार हो रहा था पर उसका मन और मस्तिष्क पुनर्वार जैसे लम्बी नींद सोना चाह रहा था। अन्त, माँ और शिशु के बीच में एक

दो माँ पहचाने

युद्ध है। बच्चा अपनी आजादी के लिए जैसे झगड़ता सा है और माँ अपने जीवन को समेट कर रखना चाहती है। वह अपनी रक्षा में तत्पर हो जाती है इसलिए कि वह फिर प्रसव कर सके या कम से कम जीवित तो रह ही सके। उसका काम तो खतम हो जाता है, अपनी पीढ़ी के प्रति शारीरिक कर्तव्य पूरा हो जाता है और वह तटस्थ हो जाती है, बेहोश सी वह अपने आप को उस युद्ध से खीच लेती है।

"अह हा।" डाक्टर स्त्रीरल ने साँस ली।

जिस बच्चे की वे इतने दिनों तक प्रतीक्षा कर रही थीं उसे उन्होंने बाहर निकाला। एक छोटा सा स्वस्थ, पूर्ण विकसित शिशु जिसका सारा अङ्ग—विन्यास पूरा हो चुका था। बच्चा नियत समय से कुछ दिन बाद पैदा हुआ था। वे उत्सुकता और लगभग बेकली के साथ वे इस बच्चे की प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्हें स्वयं अपने ऊपर आश्चर्य और कुतूहल हो रहा था कि क्या इतनी बेकली के साथ वे इस अनचाहे बच्चे की ओर आकर्षित हैं। निश्चय ही यह बच्चा असाधारण बच्चा होगा। वे इसे 'विश्व शिशु' कह कर पुकारने लगी थीं। यह बच्चा जो सारे ईर्षा, द्वेष, घृणा, विभेद, नियम विधान के बावजूद भी जन्म ले रहा था, जो एक नयी दुनियाँ का स्रष्टा था।

"आह," बच्चे की ओर देखते हुए वे धीमे से बोलीं। वे जानती थीं कि बच्चा अभी देख नहीं पायगा फिर भी लगा मानों यह देख रहा है। बड़ी बड़ी काली आँखें थीं उसकी और एक प्रसन्न छोटा सा चेहरा।

"छोटा सा बच्चा!" उन्होंने जोशुई से कहा।

जोशुई औषधि के प्रभाव में बेहोश पड़ी थी।

"बच्चे को बाहर मत ले जाना," डाक्टर स्त्रीरल ने नर्स को आदेश दिया। "मैं स्वयं उसकी देखभाल करूँगी।"

नर्स ने बच्चे को एक साफ पुरानी चादर में लपेटा और एक खाली बिस्तर पर रख दिया। डाक्टर स्त्रीरल बिस्तर के पास गयीं और झुक कर सलोने का मुँह देखा। नौजवान माँ ने डाक्टर से कभी कुछ कहा नहीं था। लेकिन आज सवेरे बेहोश किये जाने के पहले उसने बड़ी नम्रता से किन्तु

हाथ, मुट्ठी बाँधे हुए ठुड्डी से लग रहे थे। उसकी काली आँखें जो अभी से इतनी बड़ी और स्पष्ट थीं, उसे ऐसे देख रही थीं जैसे वह उनको परख रहा हो। लगता था जैसे बच्चा कह रहा है, "अच्छा, तो मनुष्य कहलाने वाले जीव तुम्हीं हो!"

गनीमत हुई कि यह दृष्टि नौजवान माँ पर नहीं पड़ी। डाक्टर ने नर्स को मरीज के बिस्तर के पास काम करते हुए गौर से देखा। जोशुई चुपचाप आराम से सो रही थी जैसे जगना ही न चाहती हो। उसका शरीर बिल्कुल ढीला था, वह बेहोश थी और इतनी पीली पड़ गयी थी कि डाक्टर ने दुबारा जाकर उसकी नब्ज देखी। नब्ज ठीक चल रही थी ऐसी जैसी स्वस्थ नौजवान की चाहिए। स्पष्ट था कि उसकी इच्छा जगने की नहीं है इसलिए दवा का असर और भी तेज हो गया था।

"बच्चे की माँ को यहाँ से ले जाओ," डाक्टर ने कहा, "वह बच्चे को देखना नहीं चाहती।"

दो नौकर जो बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे, डाक्टर की आज्ञा सुनते ही अन्दर आये और जोशुई के बिस्तर वाली गाड़ी बाहर निकाल ले गये। दूसरी नर्स बच्चे को लेने के लिए आयी। डाक्टर ने उसे रोक दिया।

"मैं इस बच्चे की बारीकी से परीक्षा करना चाहती हूँ," उन्होंने कहा, "मैं स्वयं उसे नहलाऊँगी।"

नर्स ने कोई जवाब नहीं दिया। अस्पताल के सभी काम करने वाले लोग अस्पताल की इस महिला डाक्टर की सख्ती से परिचित थे। जर्मन वह थी ही, उसे समझ पाना मुश्किल था। अपने आदेशों का वह अक्षरशः पालन चाहती थी और इसीलिए सभी कर्मचारी उसके विरुद्ध थे। लेकिन अपने काम में वह इतनी होशियार थी कि मजबूर होकर सबको उसकी प्रशंसा करनी पड़ती और उसकी आज्ञा माननी पड़ती थी। इसी मिश्रित भावना के साथ नौजवान अमरीकी नर्स कुछ घृणा और कुछ सहानुभूति के साथ गरम पानी, साबुन और स्वच्छ तौलिया ले आयी। बिना जरा सी भी जल्दबाजी दिखाये हुए, बाहर प्रतीक्षा करते हुए और मरीजों का ध्यान भुलाकर उस छोटे से बच्चे को डाक्टर श्रीरन ने बड़ी सावधानी से

नहलाया, उसके शरीर के प्रत्येक अङ्ग का बरीकी से अध्ययन किया।

"बड़ा ही अद्भुत बालक है" डाक्टर ने नर्स से कहा, "इस बालक में कुछ ऐसा है जो सामान्य व्यक्तित्व से भिन्न और बहुत ऊँचा है। तुम्हारी समझ में आती है बात जातीय वैभव की विपुलता है यहाँ जो जातियों के सम्मिश्रण में ही दिखायी देती है। यह वह चीज है जिसे हिटलर कभी समझ ही न पाया था। जब दो पुरानी जातियों का सम्मिलन होता है तो एक नयी सृष्टि होती है। है न ?"

नर्स ने डाक्टर की बात शायद ही सुनी हो। वह एक लाल बालों वाली युवती थी जिसका पीला सुन्दर चेहरा था और जिसका दिमाग अपने ही काम में लगा रहता था। अस्पताल के काम के बाद आधी रात तक उसके अपने निजी कार्यक्रम रहते थे—ऐसे कार्यक्रम जिनका हर ब्योरा मजेदार रहता था और जो उसके मौजूदा युवक दोस्त के साथ बीतते थे, ऐसा दोस्त जिसके साथ उसका शादी करना मुमकिन भी था और गैर मुमकिन भी। निश्चय ही वह कोई जापानी, यहूदी या जर्मन नहीं था, वह एक भला अमरीकी नागरिक था।

लेकिन फिर भी उसमें कठोरता नहीं थी। और जब डाक्टर स्त्रोरल ने बच्चे को उस नर्स की गोद में दिया तब उसने उसे ऐसी कोमलता के साथ लिया जिसकी शिक्षा उसे उसके पेशे के लिए कुशल सिद्ध करती थी। यह तो सभी लोग मानते थे कि बच्चे के प्रारम्भिक जीवन में उसके साथ कोमल सहिष्णु व्यवहार किया जाय तो बच्चा भला निकलता है। रोजाना हर एक बच्चा एक निश्चित नर्स की गोद में पन्द्रह मिनट तक खिलाया जाता था ताकि उन्हें माँ के प्यार की उष्णता का अनुभव हो सके।

"इस बच्चे को कोने वाले विस्तर में रक्खो" डाक्टर ने कहा, "मैं नित्य उसे देखने आऊँगी।"

"अच्छी बात है डाक्टर साहब" नर्स ने उत्तर दिया। वह बच्चे को कोने वाले बिस्तर पर ले गयी। उस बिस्तर पर लेटी हुई एक लड़की को वहाँ से उठाया और सलोने को वहाँ पर लिटा दिया। उसे बिस्तर की चादर बदलनी चाहिए थी लेकिन बच्चा अर्ध जापानी था आसानी से मर

नहीं सकता था और उसपर पहले से लेटी हुई आइरिश लड़की भी स्वस्थ थी। वक्त जल्दी से बीतता जा रहा था। उसे काम बहुत करना था। सो तेजी से उसने सलोने को जरूरी कपड़े पहिनाए और उसे बिस्तर पर लिटा कर सोने के लिए छोड़ दिया। ड्यूटी बदलने पर जो नयी नर्स आयेगी उसे समझाना होगा कि उसने बच्चों के बिस्तर इस तरह बदल दिये हैं और यह कि अगर डाक्टर के गुस्से से बचना है तो बड़ी सावधानी से इस बच्चे की देखभाल करनी होगी।—डाक्टर जब नाराज होती तो जर्मन भाषा में बड़े विकट लम्बे शब्द बोलती जिनका अर्थ कोई समझ न पाता।"

उस रात घर जाने से पहले डाक्टर स्टीरन ने बच्चे खाने का एक चक्कर लगाया और कोने वाले बिस्तर के पास पहुँची। सलोने वहीं लेटा हुआ था। वह अनुपम बच्चा अब शान्ति पूर्वक सो रहा था। वह पैर फैलाये लेटा हुआ था, और बच्चों की तरह सिकुड़ा हुआ नहीं था। उन्होंने उसकी छोटी सी हथेली अपने हाथ में ली। उन्होंने पढ रक्खा था कि एशियाई बच्चे पश्चिमी बच्चों की तरह अपनी मुट्ठी नहीं बाँध रहते। वे पतली पतली कोमल अगुलियाँ बिखरी हुई थीं जैसे फूल की पंखड़ियाँ हों। ऐसे बच्चे शायद अपनी नियति को स्वीकार करके निर्विरोध जीवन में प्रवेश करते हैं प्राचीन जातीय ज्ञान जैसे उनके रक्त मे मिला रहता है। बड़ा मनोरंजक विचार था यह जो उसके दिमाग में आया था। इस शरीर के परे भी बहुत कुछ है जिसकी कल्पना जिसका ज्ञान मनुष्य को आज नहीं और किसी युग में हो पायेगा—उस दिन जब वह मृत्यु के बजाय जीवन के सम्बन्ध में अधिक सोचे विचारेगा। और तब सलोने की ओर देखते हुए उसने सोचा कि यह बच्चा अकेला है। इस लम्बी चौड़ी दुनियाँ में कोई ऐसा नहीं है जिसे यह परवाह हो कि यह बच्चा जीवित है या मर गया है। कोई उसकी प्रतीक्षा करने वाला न था, कोई इस सवाद को पूछने वाला न था कि बच्चा पैदा हुआ या नहीं। अस्पताल की छोटी सी अवधि समाप्त होने पर बच्चा कहाँ जायगा?

। वह एकाएक सलोने को छोड़कर चल दी और अपना चक्करदार रास्ता तय करती हुई अपने घर पहुँची। शहर के बाहर आधुनिक ढंग का

एक छोटा सा भद्दा बँगला था जो उनका घर था। जब वे घर से बाहर जाती तो मकान मे ताला बन्द कर जाती था। वही ताला उन्होंने खोला। नित्य सवेरे वे जल्दी उठती थीं ताकि अस्पताल जाने से पहले मकान की कुछ सफाई कर सकें। जैसा सुबह वह छोड गयी थी वैसा ही मकान उन्हे मिला, दूसरों की दृष्टि मे बिल्कुल अस्तव्यस्त पर उनकी दृष्टि में बिल्कुल ठक—मेज पर किताबा, परचों, अखबारो वगैरह का ढेर लगा हुआ। फर्श पर चाकू, काँटा, चम्मच, तश्तरी, प्याला—सबका ढेर लगा हुआ। दो कमरे थे मकान मे, एक रसोई थी, नहाने को कोठरी थी जिसमे डाक्टर को झुक कर और कतराकर घुसना पडता था। अपने आप बुदबुदाते हुए उन्होने सवाल किया कि आखिर इस घर में एक बच्चे को लाकर वे क्या करगी, कहाँ से पैसे लायेगी कि ऐसा कोई धाय रक्खें जो यह समझ सके कि यह बच्चा एक अमूल्य निधि है—एक स्वर्गीय निधि जिसे फेंका नहीं जा सकता। अपनी मेज के पास वे बैठ गयी; बड़ी सावधानी से अपने नकली दातों की दोनो प्लेटे निकाल लीं और तब आराम के साथ वे शोरवे मे भिगाई हुई अपनी रोटी मसूडो से कुचल कुचल कर खाने लगीं। बन्दी शिविर मे उन्हे दातो से हाथ धोना पड़ा था, कुछ तोड डाले गये थे और कुछ गिर गये थे। दाँत वे उन लोगों का ख्याल करके लगाती थीं जिनसे नित्य उनका काम पड़ता था और जब वे अकेले होती थीं तो उन्हे निकाल देती थीं। कभी कभी जब उन्हें कोई बड़ा मुश्किल और खतरनाक आपरेशन करना होता था तो वे अपनी नर्सों को आश्चर्य मे डाल देती थीं क्योंकि अचानक वे अपने दातों को निकाल कर पास खड़ी हुई नर्स को थमाते हुए सख्त आवाज मे कहती "जरा सावधानी से रखना, इनका मूल्य बहुत अधिक है—मेरी रोजी!"

भोजन के उपरान्त बर्तनों को साफ करके वे अपनी कुर्सी पर बैठीं। बगल मे उनकी वर्गाकार मेज थी जिस पर टेलीफून, पत्र पत्रिकायें, किताबें, परचे, हस्तलिखित कागज, सिगरेट का डिब्बा, एक फूटी हुई प्लेट जिस पर सिगरेट की राख गिरायी जाती थी सब कुछ रक्खा था। डिब्बा खोल कर उन्होंने एक सिगरेट निकाली, जलाया और कुछ सोचने लगीं। ऊपर

से उनका चेहरा बिल्कुल शान्त था पर भीतर दिमाग में बड़ी उलझन थी ।

लगभग दस मिनट बाद उन्होंने फोन उठाया । बात चीत शुरू हुई ।

"कुमारी बिन्दु आप हैं ?" दूर से एक थकी हुई आवाज सुनायी दी ।

"हाँ, डाक्टर स्त्रीरत्न ।"

"आज बच्चा पैदा हो गया।"

"कौन सा बच्चा ?"

"बिन्दु, देखो बेवकूफी मत करो । वही बच्चा जिसकी पैदाइश के लिए तुमने उस सुन्दर जापानी युवती को भेजा था । तुम भूल कैसे गयीं ?"

"ओ, हाँ, हाँ, ।"

"बिन्दु, तुम्हें मेरी बात सुनाई दे रही है ।"

"अगर आप इतने जोर से न बोलें तो बेशक मुझे आपकी बात सुनाई दे ।"

डाक्टर स्त्रीरत्न समझ गयीं कि कुमारी बिन्दु थकी हुई हैं और तुनकना चाहती हैं ।

"मैं जोर से बोलती हूँ इसलिए तुम नहीं सुन पातीं—इसका मतलब ?" उन्होंने पूछा, "क्या बेहूदी बात है ।" उनका स्वर ऊँचा हो गया, "बिन्दु मैंने फैसला कर लिया है, मैं इस बच्चे को ले लूँगी ।"

अपनी इस महत्वपूर्ण घोषणा का प्रभाव जानने के लिए वे चुप रहीं लेकिन कुमारी बिन्दु भी मौन रहीं ।

"मेरी बात सुनायी देती है बिन्दु ?"

"हाँ" कुमारी बिन्दु जोर से बोलीं, "बिल्कुल ठीक सुनायी देती है । लेकिन हमारा कायदा यह नहीं है कि उन औरतों को बच्चे दें जिनके पति नहीं हैं ।"

डाक्टर स्त्री तपाक से बोली, "अनाथालय में कितने पति हैं ? मुझसे तो तुमने यही कहा था कि तुम उसे अनाथालय में रख दोगी । वहाँ उसे पेचिश हो जायगी और वह मर जायगा । दस बच्चों को यही हो चुका है इस साल । मैं उसे ऐसा ग्यारहवाँ नहीं बनने दूँगी । मैं उसे रख लूँगी और अगर कोई तुम्हें परेशान करे तो मेरे पास भेज देना ।"

दिन गरम और बड़ा था और आज गमगीन गर्भवतियों की तादाद बहुत अधिक थी। कुमारी विन्दु इन यौन समस्याओं से ऊब गयी था और इसीलिए अब उन्हें कोई फिकर नहीं था कि उनकी नौकरी कायम रहती है या नहीं। इधर कुछ दिनों से वे सोच रही थीं कि ऐसी जगह नौकरी के लिए दर्खास्त दूं जहाँ के स्त्री पुरुष बुड्ढे हों और जहाँ इस प्रकार की समस्याओं की गुंजाइश कम हो।

"अच्छा, बहुत ठीक है," उन्होंने फोन पर "कहा, मेरा ख्याल है लोग एक बच्चे की बहुत परवाह नहीं करेंगे और यह तो मैं जानती ही हूँ कि कोई भी उसे गोद लेने के लिए तैयार नहीं है।"

"मैं उसे गोद लेती हूँ," डाक्टर स्त्रीरत्न जोर से बोली।

"अच्छी बात है," कुमारी विन्दु रूखे स्वर में बोलीं, "मुझे उम्मीद है आपको पछतावा नहीं होगा। माँ से उस बच्चे की बाबत जरूरी कार्यवाही कराकर मैं उसे आप को सौंप दूँगी।"

"बहुत अच्छा" डाक्टर स्त्रीरत्न ने फोन का रिसीवर रख दिया और अपनी कुर्सी पर बैठी सिगार का कश खींचते हुए विचार मग्न हो गयीं।

४

जब जोशुई के सामने सलोने का त्याग करने के लिए कानूनी कागज आये तो वह कुछ ठिठकी। सोचा उसने यही था और इसलिए उसे दस्तखत करने ही थे। लेकिन फिर भी वह अपने आपको ऐसा करने में असमर्थ पा रही थी क्योंकि उसके हृदय में एक असफलता की विचित्र भावना भर रही थी। कागज पर किसी का नाम नहीं लिखा था सिवा उस एजेंसी के जिसने उसकी मदद की थी और उसे कुछ भी पता नहीं था कि बच्चा कहाँ, किसके पास जायगा। यह उसे अपनी शक्ति के बाहर

बात मालूम होती थी कि एक ऐसे कागज पर दस्तखत कर दे जिसके द्वारा सलोने किसी एक व्यक्ति को नहीं बल्कि एक एजेंसी को समर्पित किया जा रहा हो।

"क्या कोई बच्चे को लेने के लिए तैयार नहीं है?" उसने कुमारी बिन्दु से पूछा।

"यह तुम्हारे ही हित मे है कि इस सम्बन्ध में तुम कुछ भी न जानो," रूखे स्वर में कुमारी बिन्दु ने कहा।

जोशुई ने यह सुना और कोई उत्तर नहीं दिया और तब अचानक भावना के आवेश में उसने अपना सर झुकाया और तेजी से अपना नाम उस लाइन पर लिख दिया जिसके नीचे 'माँ' लिखा था। उसने यह शब्द पढा। हाँ, वही माँ थी और उसी को इसका अधिकार था कि बच्चे को इस प्रकार समर्पित कर दे और यही वह कर चुकी थी। आँसू उसकी आँखों में भर आये और उसकी लम्बी पलकों में झूलने लगे। कुमारी बिन्दु को उन आँसुओं को देखने की फिक्र नहीं थी। उन्होंने कागज उठा लिया और सोख्ते से उसे सुखा दिया।

"मेरा खयाल है, अब सब काम पूरा हो गया," उन्होंने कहा, "अगर कभी तुम्हें बच्चे का समाचार जानने की इच्छा हो तो हमें पत्र लिखना और अगर उसके सम्बन्ध में कभी कोई बताने लायक बात होगी तो हम तुम्हें लिखेंगे। लेकिन कोई भी समाचार अच्छा समाचार नहीं होता। और मैं तो सलाह दूँगी कि तुम उसे बिल्कुल भूल जाओ।"

"धन्यवाद" जोशुई ने बेहोश जैसी हालत में कहा। वह उठी, अपनी आँखें धोई, अपना झोला लिया और 'नमस्कार' और अधिक धीमे स्वर में कह कर वह चल दी।

"नमस्कार" कुमारी बिन्दु ने कहा।

इस प्रकार जोशुई बाहर खिली हुई धूप में निकल आयी। उसका मन विषाद से भरा था, यद्यपि दुःख स्वयं उसकी करनी का फल है। डाक्टर से उसने वादा कर रक्खा था कि आखिरी बार अपनी परीक्षा कराने के लिए वह उनके पास फिर आयेगी। इस वादे को भी उसने

तोड़ दिया होता अगर डाक्टर स्त्रोरल एक असाधारण महिला न होतीं। वह बहुत दृढ थीं, गरम मिजाज था, फिर भी दयालु और सबसे बड़ी बात यह कि वे सचमुच एक महिला थीं। एकाध बार जोशुई के मन में आया था कि वह डाक्टर से कुछ अपने सम्बन्ध में बात करे किन्तु उनसे बोला नहीं गया। वह जैसी थी वैसी ही अपरिचित अनजान बनी रहना अच्छा था। अबकी डाक्टर की परीक्षा समाप्त होने के बाद वह कुबेर को पत्र लिखेगी, कुबेर उससे मिलने आयेगा और उस मुलाकात के बाद वह तय करेगी कि उसे क्या करना है। कम से कम इतना तो उसे मालूम था कि वह एलेन को कभी पत्र नहीं लिखेगी, कभी उससे मिलेगी नहीं क्योंकि यद्यपि उसके लिए उसका प्यार अब भी बना था। लेकिन अब वह प्यार ऐसे व्यक्ति के लिए था जो मर चुका था या जो कभी जिन्दा था ही नहीं। जीवन जैसा उसे बिताना था, परिचित था। यह बात उसके दिमाग में नहीं आयी कि यहाँ केलिफोर्निया में ही त्याग और निवृत्ति का जीवन बिताया जा सकता है। अब केलिफोर्निया उसके लिए एक दूर की जगह हो गयी थी यद्यपि वह उसी के आसमान के नीचे उसी की सड़कों पर चल रही थी।

डाक्टर के कमरे में उसने प्रवेश किया। उसका चेहरा पीला, शान्त और स्वस्थ था, डाक्टर स्त्रोरल बड़ी बेकली से उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। कुमारी बिन्दु ने उन्हें सूचना दे दी थी कि जोशुई को अपने बच्चे के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं मालूम और कहा था कि उसे कुछ मालूम भी नहीं होना चाहिए। डाक्टर ने होशियारी से काम लिया था और उन्होंने कुमारी बिन्दु के इस सुझाव पर सहमति या असहमति कुछ भी नहीं प्रकट की थी। उन्हें क्या करना है इसका निश्चय वे कर चुकी थीं और जैसे ही जोशुई उनके सामने अपना झोला अपने हाथों में लिए हुए, बैठी, उन्होंने शुरू किया—

"तो मैं तुम्हें बताती हूँ" डाक्टर स्त्रोरल ने तेजी से कहा। उनकी प्रसन्न दृष्टि जोशुई के सुन्दर पीले चेहरे पर टिकी थी, "मैं चाहती हूँ कि तुम्हें सब कुछ मालूम हो जाय, लेकिन कृपा करके कुमारी बिन्दु को कुछ मत

बताना। मै उस सरल साधु हृदय महिला से झगडा नही मोल लेना चाहती यद्यपि वह हमेशा बेवकूफी किया करती है।" वे आग की ओर झुक गयी और विषय की महत्ता से दबकर उनके स्वर धीमे पड गये, "तो मैं तुम्हे बताती हूँ कि तुम्हारे बच्चे को मैं रक्खूँगी। मे चाहती हूँ कि तुम्हें यह मालूम हो जाय कि तुम्हारा बच्चा मेरे पास रहेगा और यह भी कि वह एक असाधारण बच्चा है। ऐसे किसी शख्स को देकर जो उसकी महत्ता को न समझे, इस बच्चे को बर्बाद नहीं किया जा सकता। मैं उसका लालन पालन करूँगी, उसे शिक्षा दूँगी, उसे समझाऊँगी कि कैसा वह एक महान् व्यक्तित्व है, कैसे वह अपने इस छोटे से शरीर मे समूची दुनियाँ को समेटे हुए है।" डाक्टर ने अपने छोटे मोटे मोटे हाथ फैलाकर दुनियाँ का विस्तार समेटने की कोशिश की। "मै उसे एक महान् व्यक्ति बनाऊँगी। कैसे? इसलिए कि वह स्वय ही एक महान् व्यक्ति है।"

जोशुई ने आश्चर्य और विह्वलता के साथ यह सब सुना। वह भी आग झुकी। पट्टी बँधे हुए व्यर्थ के दूध से बोझिल उसके पयोधरों म पीडा हो रही थी —दूध के वे स्रोत जिनम, नर्स का कहना था, तीन तीन बच्चों के लिए पर्याप्त दूध भरा था। 'तो मैं जान सकती हूँ," उसने साँस ली "मे अब जानती हूँ कि मेरा बच्चा कहाँ है।"

"हाँ तुम जान सकती हो," डाक्टर स्त्रीरल ने दृढ स्वर में कहा, "तुम्हे जानना चाहिए। और में तो तुम्हे बता रही हूँ कि वह अद्भुत बालक है तथा मैं तो चाहती हूँ कि अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तुम कुछ समय के लिए बच्चे को अपनी गोद में ले लो। तुम मेरे छोटे से घर आजाओ और अपनी इच्छानुसार मेरे पास रुको।"

"ओह, बहुत बहुत धन्यवाद आपको," जोशुई ने कहा। उसका सारा सङ्कल्प ढह गया, "बडी कृपा है आपकी। मैं अधिक नहा रुक सकूँगी, लेकिन हाँ एक रात।"

"चली आना," डाक्टर स्त्रीरल ने कहा, "यह रही चाभी तुम घर चलो, मैं उसे लिए आती हूँ। तुम सोने वाले उस कमरे म लेटोगी जिसम बच्चे का पालना है। मैं कोच पर लेटूँगी। जैसे भी हो कम से कम दो दिन

तुम उसे अपने पास रक्खो। मैं यहाँ व्यस्त रहूँगी। इच्छा हो तो और अधिक रुकना।"

"लेकिन आप कैसे—" जोशुई ने लोगों से भरे आफिस में चारों ओर नजर दौड़ाई।

"मैंने प्रबन्ध कर लिया है," डाक्टर स्त्रीरत्न ने कहा। मेरी एक पड़ोसिन है, बड़ी दयालु प्रकृति की, उनके नाती पोते हैं लेकिन वे स्वयं अभी बहुत बुड्ढी नहीं है। उनकी अपनी कोई सन्तान जीवित नहीं है। मैं जब यहाँ दफ्तर में रहती हूँ तब वे बच्चे को सभांलती हैं। इसी प्रकार काम चल जायगा। बुड्ढी औरतें बच्चों को बहुत प्यार करती हैं—हम लोग जानती हैं कि ये बच्चे ही जीवन के सत्य अर्थ हैं, अतीत और भविष्य के बीच की कड़ी। तो अब तुम घर चलो और अपने बच्चे से मिलने की तैयारी करो। भोजन के समय मैं स्वय उसे ले आऊँगी।"

जोशुई ने उस भद्दे मोटे हाथ से चाभी ले ली। एक क्षण के लिए अपना सर झुकाकर उसने अपना कपोल डाक्टर की हथेली पर रख दिया और तब उठ कर चल दी क्योंकि मुँह से बोल नहीं फूट रहा था। धीरे-धीरे वह जा रही थी यह सोचती हुई कि वह क्या करने जा रही है। आखिरकार अब वह अपने बच्चे को गोद में लेगी—बच्चा जो उसका और एलेन का है। वह उसे गोद में ले सकती है, नहला सकती है, खिला सकती है—। और जब वह सो जायगा तब क्या करेगी? वह उसके लिए कपड़े सिलेगी, छोटे-छोटे उपहार जिन्हें यह दयामयी महिला सभाँलकर रक्खेगी जब तक कि वह बडा न हो जाय ताकि वह भी समझ सके कि उसकी माँ उसको प्यार करती थी। इसलिए वह एक दूकान के सामने रुकी। वहाँ उसने रंगीन सुन्दर कपड़े खरीदे, सुइयाँ खरीदीं, रंगीन रेशमी तागे खरीदे और वह सब कुछ लेकर वह घर के पास पहुँची। घर उसे कुछ परिचित सा मलूम हुआ क्योंकि जाने क्यों वह डाक्टर स्त्रीरत्न से मिलता जुलता था। चाभी लगा कर उसने दरवाजा खोला और अन्दर गयी। यह सलोने का घर था। वह खड़े होकर अपने चारों ओर देखने लगी। कमरा तमाम तरह की चीजों से भरा था जो अस्त व्यस्त थीं। इस बड़े कमरे के एक छोर का दरवाजा सोने

के कमरे में खुलता था। उसमें एक पुराना लोहे का पलँग पड़ा था—बहुत साफ, एक नया पालना जिस पर नीले रंग की पालिश थी, नये और छोटे छोटे चादर और कम्बल वहाँ ढेर भर रक्खे थे। बिस्तर अभी ठीक से बिछाया नहीं गया था। उसका दिल भर आया, गला रुँध गया पर वह रोयी नहीं। उसने अपनी हैट उतारी, जैकेट उतारी और अपनी आदत के अनुसार बड़ी सफाई और चुस्ती से चादरों को बिछाने लगी, कम्बलों को ठीक करने लगी, अपने सलोने का पहला बिस्तर बिछाने लगी।

इस प्रकार वह पवित्र सप्ताह प्रारम्भ हुआ।

दोनों महिलाओं को एक दूसरे से अलग होने में एक सप्ताह लग गया। डाक्टर स्त्रीरत्न की गोद में सलोने घर आया और जोशुई ने उसके लिए जो बिस्तर तैयार किया था उस पर लिटा दिया गया। दोपहर का समय था, दिन गरम था लेकिन मकान के अन्दर हवा ठंडी थी। जोशुई ने बिजली का पंखा चालू कर दिया था और उसके नीचे बर्फ की सिल रख दी थी। मेज के पास उसने दूसरी कुर्सी लगा दी, रेफरीजरेटर खोला, जो कुछ भोजन तैयार था, प्रस्तुत किया, ठंडी सलाद बनायी, दूध और अंगूर की शकर के डिब्बे मिले जो सलोने के लिए थे। लेकिन उसकी समझ में नहीं आता था कि बच्चे के लिए दूध कैसे बनाये। और तब अचानक उसे फिर अपने स्तनों में पीड़ा महसूस होने लगी। क्या वह अपने सलोने को अपना दूध नहीं पिला सकती थी?

जब डाक्टर सलोने को घर लायीं तो अपनी आँखों के इशारे से संकेत करते हुए उसने जैसे डाक्टर से प्रार्थना की।

"अच्छी बात है, पिला दो," डाक्टर स्त्रीरत्न ने खुले दिल से कहा, "समय आने पर मैं इस स्रोत को भी सुखा दूँगी। लो, बच्चे को लो।"

सो जोशुई ने आनन्द विह्वल हो सलोने को गोद में ले लिया और सोने वाले कमरे में जाकर दरवाजा बन्द कर लिया और वहाँ उसने सलोने को अपना दूध पिलाना शुरू किया। बच्चा बिल्कुल अनजान, आश्चर्य चकित सा था। अभी तक वह शीशी से दूध पीता था और अब उसे माँ के कोमल स्तनों को पाकर आश्चर्य-सा हो रहा था। और तब अचानक

जैसे वह समझ गया और उस स्वर्गीय सुधा को घूँट भर भर पीने लगा और उसकी बड़ी-बड़ी आँखें उसके चेहरे पर टिक गयीं। सलोने की आँखों में आँखें डालकर जोसुई देखने लगी—। उसके मन का दुःख जैसे उमड़ पड़ा, वह रोने लगी। उसके बड़े बड़े आँसू सलोने के चेहरे पर गिरने लगे। अपनी हथेली से उसने आँसुओं को पोंछ डाला और प्यार के आवेग में काँपती हुई वह उसकी ओर देखती रही।

दूध पीकर बच्चा तुरन्त सो गया। जोसुई ने उसे उसके बिस्तर पर लिटा दिया और उसके चेहरे को उसके हाथ-पैरों को देखती हुई खड़ी रही। एलेन के चेहरे की आकृति उसे उसमें दिखायी दी। होंठों का घुमाव वैसा ही था लेकिन ठुड्डी की दृढ़ता उसके पिता की थी; हाथ उसे अपने जैसे मालूम हो रहे थे; कन्धे अनजान व्यक्ति के से जान पड़ते थे—न उसके जैसे न एलेन जैसे। तब उसने आँखों पर नजर डाली। सलोने की पलकें अमरीकी पलकें थीं लेकिन आँखें एशियाई। पलकें एलेन जैसी नहीं थीं, वे किसी अनजानी अमरीकी महिला की सी पलकें थीं जिन्हें जोसुई न जानती थी, न जान सकती थी।

दरवाजा खुला और डाक्टर स्त्री रत्न चुपचाप अन्दर खड़ी हो गयीं। दोनों महिलाएँ बच्चे को देखने लगीं।

इस प्रकार यह सुन्दर सप्ताह, प्रारम्भ हुआ। एक रात और पूरे दो दिन तो इन तीनों प्राणियों के एक हो जाने में लगे। जोसुई ने डाक्टर को सलोने के जीवन का छोटा सा इतिहास बताया और यह कथा सुनाते हुए उसे वे बातें याद आयीं जिन्हें वह भूल चुकी थी, जिनकी उसने कभी चिन्ता ही नहीं की थी कि वे कब घटित हुईं।

इस प्रकार दोनों के दिल एक दूसरे के लिए खुले। और सुनाने के लिए केवल जोसुई के पास ही इतिहास नहीं था। डाक्टर [illegible] इतने दिनों से अमरीका में अपना मुँह बन्द किये थी क्योंकि आखिर सुनाये तो किससे। वहाँ सुनकर समझने वाले कहाँ थे! इसलिए नहीं कि सुनने-वालों के पास हृदय नहीं था बल्कि इसलिए कि उन्होंने यह सब देखा नहीं था जो हृदय को पिघला देता है—लाखों की [illegible] निराधार, बेघर,

बच्चों, बुड्ढों, बच्चों की अकारण निर्मम हत्या। डाक्टर ने यह सब देखा था और जीवन की आखिरी साँस तक उसे भुला नहीं सकती थीं।

"पहले तो हम लोग विश्वास ही नहीं कर सके कि मिश्रित रक्त के बच्चों की हत्या की जाती है। वहाँ तुम्हारे रक्त की मिलावट का प्रश्न नहीं था। मिलावट न हमारे रक्त की थी, जर्मन रक्त से। उन लोगों का कहना था कि उन्हें केवल शुद्ध रक्त के बच्चों की जरूरत है मानों मानव रक्त जहाँ भी पाया जाता है शुद्ध नहीं है। तुम्हारा रक्त मेरे रक्त से भिन्न नहीं है—वही लाल खून हम दोनों के शरीर से निकलता है यद्यपि मैं एक बुड्ढी कुरूप यहूदी महिला हूँ और तुम एक सुन्दर पूर्वी युवती।"

और तब सलोने को अपनी गोद में लेते हुए डाक्टर ने बताया कि वह उनके विश्वास की विजय था। "कितना सुन्दर है यह बच्चा! यह मेरे इस विश्वास को सिद्ध करता है कि मानव जातियों का सम्मिलन चाहे जिस स्तर पर हो—परिणाम उसका अनुपम ही होगा। समझीं?"

सलोने को रात के अलावा और कभी अपने बिस्तर पर सोने—का मौका ही न मिलता। दिन भर वह गोद में, बाँहों में सोता था, कभी जोशुई की कोमल गोल बाँहों में, और कभी डाक्टर की मजबूत छोटी छोटी बाहों में। प्यार से वह चारों ओर ढका था। दोनों उसका दुलार करती थीं। उसकी प्रारम्भिक स्मृति जो जीवन भर उसके साथ रहने वाली थी, प्यार से भर गयी। संसार का सबसे अधिक सुखी और स्वागत पानेवाला बच्चा था वह।

और इस प्रकार सप्ताह का अन्तिम दिन आ गया और जोशुई जाने के लिए तैयार हो गयी। पहले तो वह इस दिन के लिए मन ही मन डर रही थी, लेकिन अब जब वह दिन आ ही गया तो वह उसके लिए तैयार हो गयी। सलोने का उसे इस घर से बाहर नहीं ले जाना था। वह यहाँ सुरक्षित था। इस घर के बाहर न उसका स्वागत था न किसी को उसकी प्रतीक्षा थी। इस घर में कोई उसका प्रतिद्वन्दी नहीं था। इस वृद्ध महिला के विशाल हृदय में, जिसने जीवन और मृत्यु की पूरी विभीषिका देख ली थी, प्यार ही प्यार था—समूची मानव जाति के लिए और सलोने के लिए।

वह यहाँ सुरक्षित था।

"रुको न मेरी बच्ची," डाक्टर स्त्रीरत्न ने कहा, "हम सब एक साथ रहेंगे—हम तीनों। मैं काफी पैदा कर लेती हूँ।"

लेकिन जोशुई को रुकना नहीं था, "यह सलोने मेरा नहीं है," उसने कहा, "अगर मैं रुकूँगी तो एक न एक दिन वह मुझसे अपने पिता के सम्बन्ध में पूछेगा। इस प्रश्न का आघात मैं न सह पाऊँगी। मैं उसे कोई उत्तर न दे सकूँगी। मुझे जाने दीजिए।"

वह जाने के लिए कृतसंकल्प थी। बच्चे में छिपा हुआ जो एलेन था उसे भी छोड़ने का उसने निश्चय कर लिया था क्योंकि उसके चेहरे को देखते हुए कभी कभी वह सब कुछ उसे दिख जाता था जो एलेन के चेहरे पर उसने देखा था—वह प्रसन्न आनन्द जिसका भान उसके दिल को तोड़ देता था क्योंकि वह इतनी जल्दी समाप्त हो गया था।

सो उसने अपना दूध सुखाने की दवा ली, अपने स्तन बाँधे और जाने के लिए तैयार हो गयी। वह सैन्फ्रासिस्को जायगी जहाँ कुबेर उसकी प्रतीक्षा कर रहा है और उससे मिलने के बाद वह तय करेगी कि उसे क्या करना है। उसके हृदय में शान्ति थी—मृत प्रेम की शान्ति। जब चलने का क्षण आया, उसने सलोने को अपनी गोद में ले लिया। फिर उसे डाक्टर स्त्रीरत्न की गोद में दे दिया और पीछे हटकर जापानी ढंग से झुककर अभिवादन किया। "धन्यवाद" उसने कहा, "धन्यवाद। इस समय और अपने तथा सलोने के जीवन भर आपको नहीं भूलूँगी। धन्यवाद।"

"कभी वापस आ जाना," डाक्टर ने कहा। सलोने को वे अपने कन्धे से चिपकाये थीं।

जोशुई ने झुककर फिर अभिवादन किया। "धन्यवाद" उसने फिर कहा। लेकिन वह बात, जो वह जानती थी कि जीवन भर वह वापस नहीं आयेगी, उसने नहीं कही। उसने सदा के लिए अपने सलोने को उन्हें सौंप दिया था। अतीत और भविष्य के बीच में अब कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था।

५

सैन्फ्रासिस्को के स्टेशन पर कुबेर प्रतिक्षा कर रहा था। उसने सोच समझ कर अपनी वेशभूषा बनायी थी और मन ही मन उसे मजा भी आया था इस वेषभूषा के बनाने में। कुछ भी हो अपने व्यक्तित्व की सुन्दरतम अभिव्यक्ति सुखदायक होती है और उसका विचार था कि जीवन में जो कुछ भी उसके लिए हो उस सब को वह इस सतर्कता के साथ रह कर सुख पूर्वक स्वीकार कर सकेगा। उसकी अपनी शक्ति और सामर्थ्य के बाहर जीवन का इतना अधिक भाग था कि जो उसकी पहुँच के भीतर था उन्हीं को शक्तिभर सँवारने, सभारने मे उसे सन्तोष मिलता था। दूर के पहाडों पर कुहरा छाया हुआ था लेकिन सूरज चमक रहा था।

ट्रेन ठीक समय पर आयी और जोशुई से पहले उसी ने देखा। वह सुन्दर थी और अब फिर छरहरे बदन की हो गयी थी और यद्यपि उसके हृदय में आया कि वह दौड़कर उससे मिले लेकिन उसने सयम से काम लिया उसे आशा थी कि अपने पुराने प्रेम से जोशुई मुक्ति पा चुकी है लेकिन अपने प्रेम को वह उस पर भार नहीं बनाना चाहता था। वह अपने आप को बहुत ही कायदे से रखना चाहता था। वह समझता था कि अगर जोशुई चाहे तो इन्कार करने का पूरा पूरा अवसर उसे मिलना चाहिए। अपनी ईमानदारी से ही वह दबा जा रह था। यह उसकी शक्ति से बाहर था कि समाचार पत्रों में जो खबर छप चुकी थी और जिसका प्रभाव जोशुई के ऊपर काफी पड़ सकता था उस समाचार को उसे बताये बिना वह अपने सौभाग्य पर खुशी मनाये। उसने यह तय कर लिया था कि यह समाचार वह जोशुई को पत्र में नहीं लिखेगा बल्कि आमने सामने उसे जबानी बताएगा और उसकी सुन्दर चमकती हुई आँखों में उस समा-

चार का प्रभाव पड़ेगा।

उसने अपनी हैट उतार ली और चुपचाप धीरे से उसके पास गया और पश्चिमी ढङ्ग से अपना हाथ बढ़ाया। झुक कर अभिवादन करने वाली जापानी प्रणाली से लोगों का ध्यान हठात् उसकी ओर खिंच जाता।

"जोशुई" उसने कहा।

जोशुई ने उसे देखा नहीं था लेकिन अपना नाम सुनकर वह घूमी।

"ओह, बड़ी कृपा की आपने।"

उसने बड़े सहारे से उससे हाथ मिलाया और फिर जल्दी ही अपना हाथ खींच लिया।

"मेरा खयाल है कि यह तो लगभग निश्चित था कि मैं स्टेशन पर आकर आपसे मिलूँ," उसने उत्तर दिया।

दोनों साथ साथ प्लेटफार्म को पार करके स्टेशन के बाहर निकले। कुली सामान लिए पीछे पीछे चल रहा था। जोशुई के चेहरे की ओर देखने से कुबेर अपने आप को न रोक सका। जोशुई का चेहरा पीला नहीं था जैसा कि उसका भय था। वह शान्त दिखायी देती थी, उसके कपोलों पर हल्का सा रङ्ग था और उसकी काली आँखों में सन्तोष झलक रहा था। उसकी अवस्था कुछ अधिक हो चुकी थी। वह अधिक शान्त थी, अधिक गम्भीर थी और कुबेर की दृष्टि में इन सब बातों से उसका सौन्दर्य और भी बढ़ गया था।

उसने एक गाड़ी रोकी, जोशुई को बिठाया और खुद भी उसकी बगल में बैठ गया। "मैंने प्रबन्ध किया है कि हम दोनों साथ ही भोजन करेंगे," उसने सकोच के साथ कहा, मन ही मन सोचता हुआ कि कहीं उसने अपना कदम बहुत आगे तो नहीं बढ़ा दिया।

"बड़ा आनन्द रहेगा" जोशुई ने कहा।

उसने ड्राइवर को होटल का नाम बताया और फिर झुककर बैठ गया। जोशुई उससे कुछ हट कर बैठी थी और हाथों को मोड़ कर अपने चमड़े

के बैग पर रक्खे थी। वह एक बहुत सादा सूट और सफेद ब्लाउज पहने थी और भूरे रङ्ग की छोटी सी हैट लगाये हुए थी। कुबेर को वह पहले की अपेक्षा कुछ अधिक अमरीकी मालूम पड रही थी और यह सोचकर उसे कुछ हल्का सा धक्का लगा। लेकिन फिर उसे याद आया कि इसके पहले उसने कभी उसे पश्चिमी पोशाक म देखा ही नहीं था। और तब यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ कि इस पोशाक से उसका सौन्दर्य कम नहीं पड़ता था जैसा कि अधिकाश जापानी औरतों का पड़ जाता था।

लेकिन कुबेर का बातचीत शुरू करने का कोई विषय न मिला। आखिर वह क्या कहे? बच्चे के सम्बन्ध मे वह कोई प्रश्न नहीं करना चाहता था। वह यह भी नहीं जानना चाहता था कि बच्चा जीवित भी है या नहीं, अथवा उसने बच्चे का क्या किया। अब उस बच्चे से जोशुई का कोई सम्बन्ध न था बशर्ते कि जो समाचार कुबेर उसे सुनाना चाहता था उसे सुनकर उसका दिमाग बदल न जाय। वह यह भी नहीं जानता था कि आखिर जोशुई के मन में है क्या?

चन्द मिनटों बाद जोशुई उसकी ओर घूमी और हल्की सी मुस्कराहट के साथ बोली, "आप अच्छे तो हैं!" उसके शब्द विनत और मधुर थे।

"बिल्कुल अच्छा हूँ," उसने उत्तर दिया।

"और आपके माता पिता?"

"वे भी आनन्द से हैं" उसने उत्तर दिया।

"यह बड़ा अच्छा समाचार है।"

"आप भी बिल्कुल अच्छी दिखायी पडती हैं।"

वह हँसी, "तो फिर हम सभी अच्छे हैं।"

सौभाग्य से होटल नजदीक ही था। गाड़ी रुकी। कुबेर ने ड्राइवर को किराया और इनाम दिया और दोनों उतरे। उसके मन में आया कि वह जोशुई का हाथ अपने हाथ में लेकर आगे बढे लेकिन वह बडा शर्मीला था। वह आगे आगे रास्ता दिखाता हुआ बढा। यह एक छोटा किन्तु मँहगा होटल था और उसने पहले से ही अपना स्थान रिजर्व करा

लिया था और भोजन का आदेश दे रक्खा था। वह अमरीकी होटल में आया था यद्यपि जापानी होटल में जाना उसे ज्यादा पसन्द था क्योंकि जब तक जोशुई अपना निश्चय प्रकट न करदे वह लोगों की नजर में खुल-कर उसके साथ नहीं आना चाहता था।

उनकी मेज खिड़की के नजदीक थी जहाँ से खाड़ी का दृश्य दिखायी देता था। सफेद कपड़ा उस पर बिछा था, तश्तरियाँ बिल्कुल साफ थीं। सब कुछ कायदे से था। मेज पर कुछ फूल थे जो उसने खरीदे थे।

अपनी कुर्सी पर जो उसके लिए बहुत छोटी मालूम होती थी, वह पीछे की ओर झुक कर बैठ गया और पहिली बार उसे प्रसन्नता और आराम का अनुभव हुआ। वह बोला, "तो आज आप को वही खाना होगा जिसके लिए मैंने आदेश दे रक्खा है। यहाँ का सबसे उत्तम भोजन यही माना जाता है और हमारे एशियाई भोजन से बहुत भिन्न भी नहीं है।"

"मैं भूखी हूँ" वह बोली, "जब से मेरे मन का विषाद चला गया तब से मेरी भूख फिर लौट आयी है।"

यह एक अच्छा समाचार था कि वह अब दुखी नहीं थी और कुवेर खिलकर मुस्कराया और उसे तब याद आया वह समाचार जो जोशुई को सुनाना था। उसने सोचा शोरवे के आने तक वह और रुके। शोरवा आया, दोनों पीने लगे, कोई बोला नहीं क्योंकि यही शिष्टाचार था। दूसरी चीज आने तक काफी अवकाश था। "कुछ ऐसे भी पदार्थ होते हैं जो हमारे आने से पहले तैयार नहीं किये जा सकते हैं" कुवेर ने कहा।

"हमें कोई जल्दी तो नहीं है, क्यों?" वह बोली।

"नहीं" उसने बताया। अपनी खुशी को छिपाते हुए अपने सफेद रूमाल से उसने अपना मुँह पोंछा, गला साफ किया, "बिल्कुल नहीं। दर असल मैं तो इस अवसर का स्वागत करता हूँ। आपको सुनाने के लिए एक समाचार है मेरे पास। मैं नहीं समझता कि आप उस समाचार को अच्छा समझेंगी या नहीं।"

"समाचार?" जोशुई ने दुहराया। उसका दिमाग तुरन्त एलेन की ओर गया लेकिन उसका कौन सा समाचार हो सकता है? या

हो सकता है उसके माँ बाप का समाचार हो।

बड़ी सतर्कता श्रौ तक्लीफ़ के साथ—ऐसी जिसे जोशुई समझ सकती थी—कुबेर ने शुरू किया, "इस पिछले पखवारे म ही मुझे मालूम हुश्रा है कि इस केलिफोर्निया राज्य क न्यायाधीशों ने यह फैसला किया है कि अब श्वेताङ्ग श्रमरीकियों के लिए जापानी लडकियों से शादी करना कानूनन जायज है।"

एक गहरी भेदक दृष्टि से कुबेर ने जोशुई की श्रोर देखा। जोशुई ने उसमें छिपे हुए प्रश्न को समझ लीया श्रौर उसकी श्रोर देखती हुई बोली, "तो इससे मुझे क्या?"

"मैंने सोचा कि श्रापको यह मालूम हो जाना चाहिए," वह बोला "मैंने सोचा शायद इसका कुछ प्रभाव पडे यानी यदि श्राप चाहे तो यह समाचार उस श्रमरीकी को लिख सकती है जिसका नाम मैं नही लूगा। अब श्राप दोनों के लिए एक साथ रह सकना सम्भव है।"

"हम दोनों के लिए कहीं भी एक साथ रह सकना सम्भव नहा है," वह बोली, "वह सम्भावना श्रब जाती रही।"

उसका दिल फूल उठा, उसकी धडकन धीमी पड़ गयी। "तो श्रापका मतलब यह है कि श्राप उन्हे नहीं लिखना चाहतीं?"

"यह मेरे चाहने, न चाहने का सवाल नहीं है," जोशुई दृढ स्वर में बोली, "बात यह है कि मैं लिख नही सकती।" तब उसका दिल थोडा सा खुला, "क्या श्राप नहीं समझ पाते कि मैं उसे लिख नहीं सकती? श्रब कानून से कोई मतलब नहीं है। श्रमरीकी जैसा है उसे श्रब मैं जान गयी श्रौर वह जीवन के लिए पर्याप्त नहीं है।"

कुबेर का दिल तेजी से धडकने लगा।

"तो श्रापका मतलब यह है कि श्रब श्राप के दिल में उसके लिए—"

जोशुई ने वाक्य पूरा किया, "प्यार नहीं है? हाँ, शायद नही है—श्रौर शायद श्रभी है भी। लेकिन उस सबसे भी क्या? प्रेम भी पर्याप्त नहीं है, मेरे लिए वह भी पर्याप्त नही है। शायद श्रमरीकियों के लिए है पर मेरे लिए नहीं है। श्रौर यह श्रब मैं समझ गयी हूँ।"

एक लम्बी गहरी साँस लेते हुए कुबेर बोला," तो क्या इसका अर्थ यह है कि आप जापान वापस चलेंगी !"

' हाँ, जैसे मेरे पिता वापस गये थे ।" इसी समय बैरा बेमी के तश्त रखें लेकर हाजिर हो गया। कुबेर के सामने उन्हें रखते हुए वह बोला, "महोदय, श्रीमती जी के लिए तो आप स्वयं ही परोसना चाहेंगे" उसने सुझाव दिया।

कुबेर आश्चर्य चकित हो गया। भद्दे ढंग से उसने बर्तनों को अपने हाथ में लिया और तब असहाय सा जोशुई की ओर देखता हुआ बोला, "इसके पहले मैंने यह सब किया ही नहीं।"

"मुझे दीजिए." जोशुई ने अपने पतले पतले हाथ बढ़ाए और तेजी और सौजन्यता के साथ बर्तन ले लिए। वह बड़ी कुशल थी, "अपने प्लेट उठाइए, मैं आपको परोसती हूँ।"

कृतज्ञतापूर्वक उसने अपनी प्लेट उठायी। "धन्यवाद" वह बुदबुदाया। जोशुई को देखते हुए उसने सोचा कि यह बड़े सौभाग्य की बात थी जो उसने भारत से आये हुए मोतियों को सुरक्षित रख छोड़ा था। कोमल स्वर में वह बोला, "यद्यपि मैं मेजबान हूँ लेकिन सारा काम मुझसे कहीं अच्छा तो आप स्वयं कर रही हैं।"

वह मुस्करायी और कोई उत्तर नहीं दिया। इस महान् असहाय सरीखे पुरुष की सेवा बिल्कुल स्वाभाविक थी और जोशुई ने महसूस किया कि अपने शेष जीवन भर वह यही करती रहेगी।

६

वर्जीनियाँ के उस छोटे से कस्बे में मध्य ग्रीष्म का यह दिन काफी गरम था—बिल्कुल बेजान सा यद्यपि पेड़ों पर हरे पत्ते लदे थे और फूल खिल रहे थे।

श्रीमती केनेडी [illegible] होने के [illegible] थीं।
अपने बेटे के [illegible] के लिए [illegible] देखने के लिए। [illegible] चाहती थीं और [illegible] भी [illegible] पहुँचने [illegible] एलेन [illegible] दूसरे के नजदीक आ रहे थे। पिछले [illegible] से बीमार होकर—एक ऐसी प्रकार [illegible] समझ में नहीं आ रहा था [illegible] दया से [illegible] रहती थी—श्रीमती केनेडी ने [illegible] के साथ [illegible] और [illegible] का [illegible] कभी अपनी जबान पर नहीं लायीं। बेटे [illegible] देखकर वायु परिवर्तन के लिए बेटे को लेकर वे [illegible] चली गयीं। एक महीना वहाँ बिताया लेकिन कभी भी उससे एक सवाल नहीं पूछा। एलेन ने अपने पिता से बात की श्रीमती केनेडी ने तब भी उनसे कुछ नहीं पूछा। श्री केनेडी ने ही उन्हें बताया कि [illegible] अपनी बीवी को [illegible] लेकर चली गयी और उसने अपने सम्बन्ध में एक शब्द भी सुनना नहीं दिया। एलेन ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया, किराये का मकान छोड़ दिया और घर वापस चला आया।

"भगवान की दया है," वे केवल इतना बोलीं।

श्री केनेडी ने इसका कोई जवाब नहीं दिया लेकिन उनसे जवाब की आशा भी नहीं की जाती थी। [illegible] सबने समझ लिया था कि इस सम्बन्ध में अब कुछ कहना नहीं है। किसी का इसमें दोष नहीं था और शायद विदेशी होने पर भी इस लड़की ने समझ लिया था कि कोई भी स्त्री अपने इकलौते बेटे को यों छोड़ नहीं सकती थी। श्रीमती केनेडी ने एलेन के साथ बड़ी शान्ति बरती जैसी पहले उन्होंने कभी नहीं बरती थी। [illegible] उनका वात्सल्य प्रशान्त, और आलोचना [illegible] और [illegible] श्रद्धा की आशा अपेक्षा करती थीं। लेकिन [illegible] विरोध भी करने देती थीं और उनके व्यवहार में [illegible] गयी थी।

"क्षमा कीजिए, अपने सम्बन्ध में मुझे स्वयं सोचने और निर्णय करने दीजिए," एलेन बार बार छोटी से छोटी बात में उनसे यही कहता। वह बिल्कुल आज्ञापालक नहीं रह गया था, बहुत परेशान करता था ठीक वैसे ही जैसे बचपन में लेकिन श्रीमती केनेडी उसकी हर ज़िद मान लेती थीं क्योंकि वह फिर घर वापस आगया था।

खिड़की के पास खड़े होकर वह बड़ी कामना से दोनों को देखती रहीं। दोनों भीग रहे थे लेकिन दिन गरम था और कोई परवाह न थी। दोनों सुन्दर थे—लम्बे स्वस्थ। लेकिन सैन्धवी से कहना था कि वह अपने-आप को मोटा न होने दे। विवाहित स्त्रियाँ, प्रायः बच्चे होने पर मोटी हो जाती हैं यद्यपि स्वयं उनका वजन कभी एक पौण्ड भी नहीं बढ़ा था।

रेशमी पर्दा उन्होंने फिर गिरा दिया और जाकर अपने ठण्डे कमरे में टहलने लगीं। तब घण्टी बजायी, पुराना खानसामा, हरी तुरन्त हाजिर हुआ।

"हरी देखो कुछ आसव निकाल कर लेजाओ और एलेन और सैन्धवी को दे आओ," उन्होंने आदेश दिया।

"जी"

"ख्याल रखना, काफी बरफ छोड़ देना और चाँदी की तश्तरी ले जाना। मुझे यह पुरानी तश्तरी पसन्द नहीं है जिससे तुम काम लेते हो। चार ग्लास ले जाना। मुमकिन है तुम्हारे मालिक और मैं खुद शामिल हो जाएँ।

"जी"

वह चला गया और श्रीमती केनेडी बैठ गयीं, सोचने लगीं, उनके और श्री कनेडी के वहाँ जाने से कुछ बाधा तो नहीं पड़ेगी। सम्भव है सैन्धवी और एलेन के विवाह का प्रस्ताव ही हो जाय। पिछले पूरे महीने भर वे यही सोचती रही थीं कि किसी भी दिन, किसी भी रात एलेन आकर उनसे कहेगा "माँ—सैन्धवी ने आज वादा कर लिया—"

वे कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गयीं अपने बाल सँभालते हुए, आँखें बन्द कर लीं, मुस्कान उनके होठों पर खिल रही थी और इसी दशा में वे प्रतीक्षा करती रहीं।

७

सैन्धवी एक हरे तौलिए से अपने बाल सुखा रही थी। उसके पैरों के पास घास पर लेटे हुए एलेन ने एक सवाल किया, "क्या हरा तौलिया तुमने इसलिए चुना है कि हरा रग तुम्हें पसन्द है ?—क्योंकि तुम्हें मालूम है कि हरे रग म तुम सबसे अधिक खूबसूरत मालूम होती हो और तुम्हारे नहाने की पोशाक भी हरी है—!"

"नहाने के कमरे से आते हुए जो भी तौलिया मेरे हाथ पड़ा, मैने ले लिया," सैन्धवी ने कहा, "लेकिन हो सकता है कि मैंने इसे इसीलिए उठाया हो कि यह हरा था। कुछ भी हो नीले रग का तौलिया ता मैंने न उठाया होता। हो सकता है मेरा चुनाव सोच समझकर रहा हो।"

"भली भाँति सोच समझकर—हमेशा की तरह," एलेन ने उसे चिढ़ाते हुए कहा।

"हो सकता है"

एलेन अपने घुटनों के बल बैठ गया, "कितनी बेवकूफी से भरी बात हम लोग कर रहे हैं।"

"हमने हमेशा ऐसी बात की है," सैन्धवी ने स्वीकार किया, "मुझे याद है जब तुम लगभग दस वर्ष के थे तो मैं सोचा करती थी कि तुम शायद सबसे अधिक मूर्ख लड़के हो।"

"लेकिन तुम मुझे पसन्द करती थीं।"

सैन्धवी कुछ हिचकिचायी। वह सदैव सतर्क थी, "हो सकता है कभी कभी पसन्द भी किया हो।"

सैन्धवी की सतर्कता से वह झुँझलाया और अचानक उसी को लेकर उसने जैसे निश्चय कर लिया कि इस सतर्कता को वह कुचल देगा।

"देखो सैन्धवी, अब समय आ गया है कि हम लोग फैसला कर डालें।"

सैन्धवी तौलिए से अपने बाल मलती रही। उसने उत्तर नहीं दिया।

"सैन्धवी, इस तौलिए को रख दो।" उसने आदेश दिया और उसकी तरफ बढ़ कर उसने तौलिये का एक छोर पकड़ कर छीनने की कोशिश की। सैन्धवी ने भी मजबूती से पकड़ लिया और दोनों में रस्साकशी सी होने लगी।

"फिर बेवकूफी!" वह चिल्लायी।

एलेन ने अचानक तौलिया छोड़ दिया, अच्छी बात है। लेकिन जिस तरह से तुम मेरे साथ पेश आती हो, उससे मैं परेशान आ गया हूँ। तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं क्या कहना चाहता हूँ। लेकिन तुम कभी मुझे मौका नहीं देतीं कि मन की बात कहूँ। तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकतीं—मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ।"

सैन्धवी ने तौलिया फेंक दिया, "अच्छी बात है, कहो। यह मसला भी तय हो जाय।"

"सैन्धवी!"

उसकी नीली आँखें जल रही थीं, उसके होंठ एक दूसरे से सटे हुए थे और एलेन को कुछ अस्पष्ट भय सा लगा। क्या उसने जरूरत से ज्यादा भरोसा कर लिया था?

"कहो," सैन्धवी ने आदेश दिया।

"अच्छी बात है, कहे देता हूँ," अचानक रुष्ट होकर वह बोला, "मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ शादी कर लो—तुम यह जानती हो और बहुत अरसे से!"

"यह बात है! मैं तुमसे शादी नहीं करना चाहती। वक्त आ गया है कि तुम समझ लो।"

ये शब्द उसने जैसे एलेन पर चोट से करते हुए फेंके। एलेन उन्हें सहन न कर सका, सुना पर विश्वास न कर सका। उसे सैन्धवी पर भरोसा था। हफ्तों से वह सोच रहा था कि सैन्धवी उसके साथ शादी कर लेगी। वह सोचता था कि उसी के कारण सैन्धवी ने अपने अन्य प्रेमियों से इन्कार

कर दिया था।

"मैं नहीं मान सकता कि तुम जो कहती हो वही तुम्हारा मतलब है," अचानक उसके स्वर सयत और मर्यादित हो गये। वह उठ कर बैठ गया और अपने नगे पैरों से चिपके हुए घास के टुकडे साफ करने लगा।

सैन्धवी ने अपने बाल सुखाने बन्द कर दिये, विषाद भरी दृष्टि से वह एलेन की ओर देखने लगी और मन ही मन उसे आश्चर्य होने लगा कि क्यों उनके बीच प्रेम की सम्भावना ही समाप्त हो गयी थी। एकान्त में भी वह कभी अपने विचारों का विश्लेषण नहीं कर पाती थी, अपने अभिप्रायों को परख नहीं पाती थी, आकर्षण और विकर्षण की शक्ति ही उसे रास्ता दिखाती थी और इधर महीनों से उसे एलेन में कोई आकर्षण नहीं दिखाई दे रहा था। साहचर्य का पुराना आभास तो बना था पर उसका आनन्द जाता रहा था। एलेन की उपस्थिति से उसके हृदय में किसी प्रकार का उद्वेलन नहीं होता था।

"लेकिन मेरा ख्याल है मैं जो कहती हूँ मेरा वही मतलब है," उसके स्वरों से अतृप्त वासना झलक रही थी, "मै चाहती हूँ कि मेरा मतलब यह न होता।"

तब एलेन को मालूम हो गया कि सैन्धवी उससे प्रेम नहीं करती, यद्यपि यह असम्भव मालूम होता था क्योंकि, जैसा उसकी माँ हमेशा से कहती आयी थीं, वे दोनों एक दूसरे को प्यार करने के लिए ही बने थे और उसकी माँ हमेशा ठीक कहती थीं।

"मै इसे स्वीकार नहीं कर सकता," उसने गम्भीरता के साथ कहा, "मैं अनुभव कर रहा हूँ कि इतने दिनो तक मै इसीलिए जिन्दा रहा हूँ कि हमारी शादी हो। अगर तुम जोशुई की बात सोच रही हो—"

"मैं बेशक जोशुई की बात सोच रही हूँ," सैन्धवी ने कहा।

"तुम्हें सोचने की जरूरत नहीं है," उसने कहा, "वह सब खतम हो गया—जैसे कभी कुछ हुआ ही नहीं था। मुझे ताज्जुब है कैसे मैंने अपने आप को उस जाल में फँस जाने दिया। मैं बहुत लम्बे अरसे तक घर से बाहर रहा और—यद्यपि तुम्हारे लिए शायद इसका कोई मतलब



न हो फिर भी मैं आशा करता हूँ कि तुम इसका मतलब समझोगी—मैं कभी भी और किसी जापानी औरत के साथ नहीं घूमा फिरा जैसा कि प्रायः लोग वहाँ करते थे।"

एलेन को विश्वास न हो सका कि सैन्धवी उसकी बात सुन रही है। उसके बालों के छोटे छोटे गुच्छे हवा में उड़ते हुए उसके चेहरे को एक ताजगी, एक बचपन की सी सुन्दरता दे रहे थे। एक मूर्ति की तरह वह निश्चल खड़ी थी।

मैदान की तरफ देखती हुई वह बोली, "मेरा ख्याल है कि जोशुई ने तुम्हें क्यों छोड़ दिया, यह मुझे मालूम है। उसे मालूम हो गया था कि उसे बच्चा होने वाला है।"

"नहीं" वह चिल्लाया, "नहीं, कम से कम यह बात तो झूठ है। उसने मुझे बताया होता।"

"मैं तो नहीं समझती कि उसने तुम्हें बताया होता," सपना सा देखती हुई सैन्धवी बोली। "वह जानती थी कि जब तुम्हारी माँ उसे नहीं चाहतीं तो उसके बच्चे को कब चाह सकती हैं। इसीलिए वह तुमसे अलग जाकर एकान्त में रहना ठीक समझी।"

"मेरी माँ को दोष मत दो।" एलेन आवेश से बोला, "इसमें उनका दोष नहीं है और तुम जानती हो। तुम जानती हो कि कानून इसमें बाधक है।"

"ओह! रहने भी दो।" पास के पेड़ के सहारे झुकती हुई अपनी बाहों को मोड़कर बोली, "जैसे अमरीका में केवल वर्जीनियाँ ही एक राज्य है।"

"यहाँ मेरा घर है," उसने कहा।

"अरे जाओ भी!" वह बोली और उसकी आँखों से आँसू टपक पड़े।

वह उठ खड़ा हुआ और बाँहे फैलाये हुए उसकी ओर बढ़ा, "प्रिय सैन्धवी—"

वह पीछे हट गयी और तेजी से बोली," मुझे मत छूना, मैं बर्दाश्त नहीं कर सकूँगी।" झुक कर उसने अपना तौलिया उठाया और तेजी से

उसने विषाद को वह समझ गयी थी। "मैं सोचता हूँ कि फिर फौज में चला जाऊँ माँ," उसने कुछ अनिश्चित स्वर में कहा।

"ओह, मेरे बच्चे" वे रो पड़ीं और एलेन की ओर अपने हाथ फैला दिये।

"माँ, यह क्या!" वह बोला और माँ की बाहों में बँधने के बजाय सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

८

डाक्टर स्त्रीरत्न अपने घुटनों पर नहाने का एक बड़ा सफेद तौलिया रखे बैठी थीं। "हाँ तो अब उसे उठाओ और मेरे घुटनों पर बिठादो," उन्होंने अपनी पड़ोसिन से कहा, "मैं उसका बदन सुखाऊँ और पाउडर लगाऊँ।"

पड़ोसिन ने सलोने को उठा कर उनकी गोद में रख दिया। वह अभी अभी नहला कर बाहर लाया गया था। अपनी ताकत भर वह सीधा बैठा था और डाक्टर की ओर मुस्करा रहा था। जब तक उसे कोई तकलीफ न होती थी, वह मुस्कराता रहता था कभी डाक्टर की ओर कभी पड़ोसिन की ओर और कभी दोनों की ओर। और तकलीफ उसे तभी होती थी जब उसकी दूध की बोतल मिलने में देर होती या जब कभी प्यार से उसे रुलाया जाता। उसकी आँखें हल्की काली और बड़ी थीं और उनका हल्का तिरछापन उन्हें और भी सुन्दर बनाता था और इन आँखों पर लम्बी और तिरछी पलकें थीं जो पहले कभी एशियाई आँखों पर नहीं दिखाई दी थीं। उसके दृढ सीधे शरीर को, उसके सबल कन्धों को, उसकी कमल जैसी कोमल हथेलियों को, उसके सुन्दर प्रसन्न छोटे से चेहरे को उसके चचल होठों और उसकी सुन्दर नुकीली नासिका को देखकर डाक्टर स्त्रीरत्न के तनमन में आनन्द की

लहर दौड़ गयी। उन्होंने उसकी देह सुखाना बन्द कर दिया।

उन्होंने अपनी पड़ोसिन को सम्बोधित किया, "जरा देखिए तो; सलोने के हाथ तो देखिए, उँगलियों की स्थिति तो देखिए—अँगूठे के साथ पहली और चौथी अंगुली बाहर की ओर खुली हुई हैं और दूसरी, तीसरी बन्द हैं। यह बर्मा और श्याम की एक नृत्य मुद्रा है जो वहाँ से और देशों को गयी है, जापान को भी। इसका अर्थ यह है कि एशियाई नृत्यमुद्राओं के निर्धारकों ने बच्चे की प्रारम्भिक अभिव्यक्तियों को नृत्य की पहली भङ्गिमा के रूप में स्वीकार कर लिया था।"

पड़ोसिन विद्वान नहीं थी। लेकिन उन्होंने सलोने के हाथों को आदर के साथ देखा। दोनों हाथ जैसे चिड़ियों की तरह उड़ रहे थे। लगता था अपनी प्यार की गोद में बैठा हुआ वह बच्चा हवा में ऊपर उठने की कोशिश करता था। मुस्कान और कपोलों में पड़ने वाले हल्के गड्ढों से उसका चेहरा खिल रहा था—इतना प्रसन्न जैसे निर्झर की जल धारा हो, जैसे उषा का बिखरता हुआ प्रकाश हो। उन्हें यह बच्चा अपने बच्चों से बिल्कुल भिन्न दिखायी दे रहा था—वे बच्चे जो भुक्खड़ से थे, जिनमें से एक अब जवान हो गया था और किसी द्वीप के जंगल में अपना जीवन बर्बाद कर रहा था। अपने अन्य पड़ोसियों से जब वे सलोने का बखान करतीं तो वे कहते, "एक जापानी बच्चे के लिए आप का दिल क्यों इतना आपे से बाहर रहता है?"

"सलोने जापानी नहीं है," वे उत्तर देतीं, "मैंने आज तक जितने भी बच्चे देखे हैं वह उन सबसे भिन्न है।"

"हाँ," पड़ोसिनें बड़ी निर्दयता से उत्तर देतीं, "साफ तौर से कहें तो, कि तुम्हारे बच्चे को एक जापानी ने मार डाला है।"

अपने बेटे का नाम सुनते ही उनका दिल टूट जाता था। फिर भी वे कहतीं, "सलोने ने उसे नहीं मारा, इतना तो निश्चित ही है।"

लेकिन वे मूर्ख पड़ोसी उनकी भावना को कैसे समझ सकते थे!

अब धीरे धीरे सलोने में एक अद्भुत परिवर्तन आ गया। एक क्षण वह हँसती किरण सा प्रसन्न रहता और दूसरे क्षण उदास हो [illegible]

उसके चेहरे पर विषाद की गहरी छाया फैल जाती। वह डाक्टर स्त्रीरल की ओर एक उलाहना भरी दृष्टि से देखता, उन्हीं को वह दुनियाँ का सबसे महत्वपूर्ण प्राणी समझने लगा था। उसका कमल सा कोमल गुलाबी मुँह काँपने लगता, बड़े बड़े आँसू उसकी पलकों पर लटकने लगते—एक नयी विभूति ये सुन्दर आँसू।

"जल्दी," डाक्टर स्त्रीरल चिल्लाती, "वह भूखा हो गया है। हम लोग बहुत वक्त बरबाद करती हैं।" और तब झट से बोतल आती। हाथ में लेकर वे देखतीं बोतल बहुत गरम या ठंढी तो नहीं है। वे अपने सलोने को कपड़े पहनातीं। दूध पने में इस विलम्ब को सलोने मुश्किल से बर्दाश्त करता। और तब डाक्टर माफी सी माँगती हुई बोलती, "ये लो अपनी बोतल। मैं जानती हूँ मैं बहुत सुस्त हूँ।"

और इस नन्ही सी उमर में ही वह अपने हाथ फैलाता, बोतल लेकर उसे मुँह में लगा लेता। डाक्टर स्त्रीरल की बाँह का तकिया बनाता हुआ वह लेट जाता, दूध पीकर उसका मन खिल उठता और अपनी प्रसन्न गम्भीर मुद्रा से वह डाक्टर स्त्रीरल के मुँह को निहारता जो उसपर प्यार बरसाता था।

"मैंने कल बच्चे की परीक्षा पूरी कर ली," डाक्टर ने कहा।

"अच्छा, तो आपने यह किया ही," पड़ोसिन तेज रोष भरे स्वर में बोलीं। उन्हें यह एक बहुत बड़ी निर्दयता से भरी भरी बात मालूम होती थी कि सलोने जैसे छुटे और सब दृष्टियों से सुन्दर स्वस्थ बच्चे की परीक्षा की जाय। जैसे उसे भी परीक्षा की जरूरत थी, जैसे कोई ऐसा भी है जो उसे सर्वश्रेष्ठ मानने से इन्कार कर सकता हो।

"मैंने सब प्रकार की परीक्षाएँ पूरी कर लीं—स्नायविक परीक्षा समेत," डाक्टर स्त्रीरल ने अपनी गम्भीर अधिकार पूर्ण स्वर में कहा, "और मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि सलोने की प्रतिभा की मात्रा जितने भी इस उमर के बच्चों को मैंने जाँचा, उन सबसे अधिक है—आश्चर्यजनक रूप में अधिक।"

"मैं आप से कह देना चाहती हूँ कि सलोने को आप एक साधारण

मानव शिशु मत कहा करें ।"

डाक्टर स्त्रीरल्त की आँखें ऊपर उठ गयीं, "आखिर क्यों ?" वे बोलीं ।

"ऐसा कहने से लगता है जैसे वह भी और बच्चों की तरह है। लेकिन ऐसा नहीं है। वह सर्वाधिक सुन्दर, चालाक बच्चा है—सबसे प्यारा।"

सलोने ने पड़ोसिन की आवाज सुनीं अपनी आँखें उधर घुमायीं और वे स्नेह विह्वल हो उठीं ।

डाक्टर स्त्रीरल्त अपनी हँसी न रोक सकीं, "आप तो उसे पसन्द नहीं करतीं।"

पड़ोसिन ने अपना हाथ अपने मुँह के सामने लगा लिया, क्योंकि मुस्कराने से उनके टूटे दाँत दिखायी पड़ जाते थे। "मैं नहीं जानती ऐसा क्यों है—कुछ समझ में नहीं आता—इतने बच्चे मेरे हुए, उनमें से एक हमेशा के लिए विदा भी हो गया लेकिन जब कभी सलोने मेरी ओर देखता है तो जैसे भीतर स्नेह उबल सा पड़ता है ।

सलोने ने बोतल मुँह से हटा दी, दूध उसकी ठुड्डी से बह चला और वह मुस्कराने लगा वह स्वर्ग का देवदूत—घूमकर डाक्टर की ओर बड़े तपाक से देखने लगा। अब डाक्टर उससे क्या कहें ?

डाक्टर ने उसके हँसते हुए चेहरे की ओर देखा और अचानक उन्हें वे मरे हुए बच्चे याद आ गये—भूख से तड़प तड़पकर मरे हुए बच्चे, गला घोंटकर मारे गये बच्चे, सङ्गीनों से छेदकर गोलियों का शिकार बनाये गये बच्चे—बच्चे जो इसलिए मारे गये कि वे अपने माँ बाप की सन्तान थे—कोई यहूदी, कोई कैथोलिक, कोई विद्रोही—वे जिनसे घृणा की जाती थी, वे जिनसे भय की आशंका थी—वे जो विद्रोही थे। उन्हें यह बर्दाश्त न हुआ कि सलोने इन यादगारों को—इनकी छाया को उनकी आँखों में देख पाये। वह इतना समझदार था, इतना बुद्धिमान जैसे उसके छोटे से दिमाग में संसार की सारी ज्ञान विभूति सिमट कर समा गयी हो। उन्होंने उसे उठाकर कन्धे से लगा लिया और उसके कोमल भूरे बाल उनके गाल पर छा गये। सलोने अभी से सबल, शान्त, हास्यप्रिय और समझदार हो

गया था। उसकी वर्तमान सत्ता को डाक्टर खीरन ने समझा, उसकी भावी गरिमा के सम्मुख वे नत शिर हो गयीं—वे जिन्हें विधाता ने इस महान् विभूति की योग्य धात्री बनाया था, वे कालगति से खेली आजीवन कुमारी—डा० खीरन! अज्ञान उनके सलोने को समझ नहीं सकता था—उनका अज्ञान जिनका मस्तिष्क सकुचित था, जिनका हृदय छोटा था लेकिन वे समझ सकती थीं, समझती थीं। अनगिनत खाये हुए बच्चों में इस एक बच्चे को उन्होंने बचा लिया था।

"यह कैसा कुसुम हास है," वे अपने ही को संबोधित करती हुई सी बोलीं, "यह कौन-सी कली यहाँ खिल रही है।"

और वे विजय गर्व से उल्लसित, आनन्द से उद्वेलित आगे पीछे हिलती हुई अपने सलोने की पीठ थपथपाती हुई बैठी रहीं।

※ इति ※